

श्रीभक्तिशिरोमणि

जिममें

गरपूर्ण रामायणकी कथा बहुत रोचक
छन्दों में वर्णित है ॥

जिसको

श्री ^{त्रि} ^{वध} ^{सम} ^{सचन्द्र} ^{रामचन्द्र} पु० या निवासि परमभक्त महात्मा वेष्णव
शिष्य व वारहवकी प्रदेशान्तर्गत न-
रौली ग्रामनिवासि नम्बरदार अयोध्यासिंह
वर्मा के पुत्र भगवन्तसिंहने बनाया ॥

प्रथम बार

उत्पन्न

लखनऊ (सी. आई. ई) के छापेखाने में उपा
सन् १८९९ ई० ॥

य महाकृत है यहका इम छापेखाने में ॥

इस मतवे में जितने प्रकारकी काव्यकी पुस्तकें छपी हैं उनमें से कुछ नीचे लिखी जाती हैं ॥

नदीनसंग्रह ॥

जिसमें अकभयहारी कुञ्जविहारी रामकथिरोराणि श्रीकृष्णचंद्र और श्रीराधिकाजी के लीलात्रिपयक जानामकरके अत्युत्तम कवित्त और सवैयादि अर्णित हैं जिमको हफीजुल्लाहखां सांडीनिवासि मुबारिक सदसी साजाबगापुर गजने बंगर थाना बघोली स्टेशन जिला हरदोई ने अपने शौकीन दोस्तों के दिलवहलाने के निमित्त आनि परिशयमे संग्रह किया ॥

षट्शततुकाव्यसंग्रह ॥

हफीजुल्लाहखां संग्रहीत जिसमें वान्त, शिष्य, वर्षा, गरद, हेमन्त, शिशिर छजोन्मत्तुओं के कवित्त व सवैया अत्युत्तम लहलहे रंगिले परम सुहृदुह रसमिले, अपने रसि पर व रंगीन गवीयतुवाते महाराश्यों के कवित्त तिलादारथ बड़े छंद कर लिसेगये हैं ॥

अमतरद्विणी - ॥

मुन्गी हफीजुल्लाहखां संग्रहीत इसमें चित्र विचित्र मोमयिक द्रव्यपक्ष व प्रत्येक ऋतुओं के निमित्त सवैया हरएक कविक बनाये हुये संग्रह किये गये हैं इसकी उत्तमता देखनेही से मालूम होती है ॥

हफीजुल्लाहखां का हजारा ॥

पर जानामकरके बहुतही उत्तम रसन २१२४ कवित्त लिखान २ गा तमनीर भी बनी है ऐसा ग्रन्थ कविता का हुआ आजतक देखने में नहीं आया उत्तमता देखने शसिक पुरुषों के लिये अत्यन्त आनन्दकारी है ॥

भक्तिशिरोमणि का सूचीपत्र ॥

बालकाण्ड

अध्याय

- | | | | |
|----|---|-----|-----|
| १ | गणेशादि सन्निदेव व गुरु आदि वन्दन पश्चात् संक्षेप से सर्व्व | | |
| | रामायण वर्णन | | १२ |
| २ | सुरों की स्तुति से नभवाणी व मनुसपत्नीक वर प्राप्त पश्चात् | | |
| | रामादि चारों भ्रातों का जन्मोत्सव वर्णन | | १७ |
| ३ | श्रीरामचन्द्र जीकी बाललीला वर्णन | | २६ |
| ४ | श्रीरामचन्द्र जी की बाल लीला व विद्याध्ययन वर्णन | | ३६ |
| ५ | श्रीरामचन्द्र जीकी केशरलीला वर्णन | | ४६ |
| ६ | श्रीरामचन्द्र जीकी जन्मोत्सव वर्णन | | ५५ |
| ७ | श्री विश्वामित्रजी का अवध्रागमन व रामलपण यात्रा ताडकी | | |
| | सुगन्धादि व प्रग्रहल्या उद्धार जनकपुर आगमन श्री जनक | | |
| | विश्वामित्र समागम वर्णन | | ६६ |
| ८ | श्री रामचन्द्रजी का पुष्पवाटिकावलीकन वर्णन | | ७७ |
| ९ | श्री रामचन्द्र रङ्गभूमि आगमन वर्णन | | ८५ |
| १० | श्री रामचन्द्र धनुभङ्गकरण सीता जयमाल मेरान वर्णन | | ९३ |
| ११ | श्री रामचन्द्र परशुराम सम्वादे-विविध विलास वर्णन | | १०४ |
| १२ | श्री रामचन्द्र अयोध्या आगमन श्री शूरथ महाराज प्रति वृत | | |
| | वार्त्ता श्री रामचन्द्र ब्याह हेतु नृप वरात सजि गमन वर्णन | १०४ | ११६ |
| १३ | श्रीराम ज्ञानकी व भरतादि ब्याह वर्णन | ११६ | १३२ |
| १४ | श्री रामचन्द्र कलेवाकरण वर्णन | १३२ | १४७ |
| १५ | श्री रामचन्द्र वरात अयोध्या प्राप्त वर्णन | १४७ | १५८ |
| १६ | श्री रामचन्द्रादि सुख शयन वर्णन | १५८ | १६३ |

इति बालकाण्ड समाप्त ॥

अयोध्या काण्ड

१ भरत शकुन नन्दोद्रेगमन तावत् आगमन विधि सन्देश श्री राम-
चन्द्र प्रति कथन वर्णन १६४ १६६

अध्याय	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
२	श्री रामचन्द्र राजतिलक हेतु पुर मगत सजन कैकेई प्रति मन्थरा छल कथन वर्णन	१६६	१७६
३	कोपभवन कैकेयि धरदान दशरथ करुणा वर्णन	१७६	१८६
४	श्री दशरथ महाराज त्रिपाद जानकी रघुनन्दन कौशल्या प्रति विदा, मांगन, सुमित्रा लपण सम्बाद, सीता लक्ष्मण सहित प्रभु नृप पास आगमन वर्णन	१८६	१९७
५	श्री रामचन्द्र वनयात्रा शृंगबेरपुर आगमन सचिव सम्बाद वर्णन	१९८	२०५
६	श्री रामचन्द्र प्रति निपाद पात्ता, पथ चरित्र, प्रभु सीता लपण सहित बाल्मीकि मुनि आश्रम प्राप्ति वर्णन	२०६	२१६
७	श्री रामचन्द्र चित्रकूट विलास वर्णन	२१६	२२३
८	सुमन्त अयोध्यागमन नृप तनुत्याग भरत चित्रकूट गमन वर्णन	२२३	२३६
९	श्री भरतजी को समाज सहित चित्रकूट निकट आगमन वर्णन	२३६	२४८
१०	श्री भरतजी को चित्रकूट आगमन श्री रामचन्द्र मिलाप वर्णन	२४८	२५७
११	चित्रकूट जनकदूत आगमन वर्णन	२५७	२६७
१२	श्री जनक सुनैना सम्बाद भरत गुण वर्णन	२६७	२७४
१३	श्री भरत पुरगमन हेतु प्रभु आज्ञा वर्णन	२७४	२८१
१४	श्री भरतजी को मुनि वेप नन्दिग्राम वास वर्णन	२८१	२८६

इति अयोध्याकाण्ड समाप्त ॥

आरण्य काण्ड ॥

१	जयतनेत्रमंग प्रभु अत्रिमुनि समागम, अनसूया पतिव्रतधर्म व०	२८७	२९२
२	विराधवध, शरभग कथा, अगस्त्य समागम, प्रभु पंचवटी वास वर्णन	२९२	२९७
३	लक्ष्मणप्रति प्रभु ज्ञान, वैराग्य, भक्ति वर्णन	२९७	३०१
४	लक्ष्मण को शूर्पणखा के काननाक काटना और श्रीरामचन्द्र करके खरदूषण त्रिशिरादि वध वर्णन	३०१	३०५
५	श्रीराम करके मायामृग वध चरावण करके मायारूपी सीता हरण वर्णन	३०५	३११
६	जटायु उद्धरण तथा शवरी कथा वर्णन	३१२	३१६
७	पपातट श्रीरामचन्द्र नारद समागम वर्णन	३१६	३१६

आरण्यकाण्ड समाप्त ॥

किष्किन्धा काण्ड ॥

अध्याय	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
१	श्री रामचन्द्र सुग्रीव मित्रता, बालियध वर्णन	३२०	३२६
२	सुग्रीव राजप्राप्ति व रामकरके वर्षा शरदऋतु लक्ष्मणप्रति घ०	३२६	३३०
३	सुग्रीव करके पठाई हुई वानर ऋक्षों की सेनाओं को चतुर्दिशि सीताको खोजना सपाति अगदादि समागम तथा हनुमान् को समुद्र उल्लघन विचार वर्णन	३३०	३३५

इति किष्किन्धाकाण्डसमाप्त ॥

सुन्दर काण्ड ॥

१	श्री जानकीजी समीप हनुमान् प्राप्त वर्णन	३३६	३३८
२	श्री हनुमान् जानकी संवाद वर्णन	३३६	३४५
३	श्री हनुमान्जी करके धाग उजारन निश्चर मारन लङ्का जारन वर्णन	३४५	३५३
४	श्रीरामचन्द्र को ससैन्य समुद्र तीर प्राप्त वर्णन	३५३	३५७
५	श्रीरामचन्द्र करके पीडित समुद्र को विप्ररूपधर श्रीरामचन्द्र जी से सेतुबन्ध उपाय कथन	३५७	३६४

इति सुन्दरकाण्डसमाप्त ॥

लङ्का काण्ड ॥

१	श्रीरामचन्द्रजी को सेतुबन्धन व रामेश्वर स्थापन पश्चात् सुबेल शैलागमन वर्णन	३६५	३६६
२	अंगद व रावण का संवाद वर्णन	३६६	३८२
३	प्रथम युद्धमें कपिल जयप्राप्त वर्णन	३८२	३८६
४	श्रीलक्ष्मणहित रामधिरु व हनुमान्जी को सजीवनी गृहीता गमन वर्णन	३८६	३९३
५	श्रीरामचन्द्रजी करके कुम्भकरण उध वर्णन	३९३	३९५
६	श्रीलक्ष्मणजी करके मेघनाद वध वर्णन	३९५	३९८
७	श्रीराम रावण के समर में जाम्बवात को पदप्रहार रावण पर करना पश्चात् रावण मूर्च्छा वर्णन	३९८	४०६

अध्याय	॥ इति विषय ॥	पृष्ठसे पृष्ठतक
८ रामकरके रावण वध वर्णन		४०६ ४०६
९ विभीषण राज्य ग्राम व पुष्पकारुड रामको ससीता व ससैन्य		
१० भरद्वाज आश्रम प्रागमन और रामकरके प्रठाये हनुमान का		
११ अबधागमन वर्णन		४०६ ४१५

इति श्रीमद्भक्तिकारण्डसूत्रम् ॥

॥ उत्तर कारण्ड ॥

१ श्रीरामचन्द्र को अयोध्यागमन भरतादि मिलाप व निज मंदिर गमन वर्णन	॥ इति ॥	४१६ ४१६
२ श्रीसीता रामचन्द्रराज्याभिषेक व सुरमुनि आदिस्तुति वर्णन		४२० ४२७
३ श्रीरामचन्द्र को वशिष्ठ प्रति कपिसमाज की प्रशंसा व सुयोवादि निज भवन गमन वर्णन		४२७ ४३०
४ श्रीरामचन्द्र राज्योत्सव वर्णन		४३० ४३४
५ श्रीरामचन्द्रजी की सभामें द्विज, श्वान, गृध्र, उलूक, काकको फिरियादी होके जाना और अपना २ पूर्वजन्म के वृत्तान्त को कहके श्रापदातार वर्णन		४३४ ४३

इति उत्तरकारण्डसूत्रम् ॥



समस्त देवताओं के प्रति
श्रद्धा, शक्ति, प्रेम
बीकानेर, (राजपुताना)

भक्तिशिरोमणि बालकाण्ड

सौरा ॥

विघ्नहरण गणराय वाहन मूपक वदन गज ।

चरण कमल शिर नाय बंदों श्रीगिरिजा सुवन ॥

गणपति होहुसहाय देहु बुद्धि करि स्वच्छ मति ।

करहु कृपा अंब आय जोरि पाणि अस्तुति करौ ॥

क० ॥ एक दिज आनेन द्विरेद पंचआनेन सुवन विघ्न भानन

बदत वेद गाथही । सिद्धि शिवसार गुण रूप के अगार मोद मं-

जुल उदार अविध पूर्ण ज्ञान पाथही ॥ दानि ऋद्धि सिद्धि बुद्धि

विस्तृत सुयश चारु वंदनीय लोक सब अग्र देव माथही । भाग्य-

वंत जोरि हाथ अवनि नवाय माथ करत प्रणाम वास्वार गण

नाथही ॥ सो० ॥ बंदों शारद माय मातु अनुग्रह कीजिये । वै-

ठहु रसना आय जाते बल बाणी लहीं ॥ दो० ॥ बंदों हर गिरिजा

चरण वास्वार शिर नाय । जासु कृपा वारिधि अगम विनु प्रयास

तरिजायें ॥ छपै ॥ भाल चंद्र शिर गंग अंग शुभ भस्म विराजै ।

कुंद इंदु दर गौर मौर शिर व्यालन राजै ॥ अम्बकाब्ज त्रयमंजु

कंठ विष परम मुहावै । रंजित बाल कुरंग माल मुंडन छवि छावै ॥

कृपा जन जानिकै ॥ भुजंगप्रयात छन्द ॥ नमो अञ्जनी गर्भसंभूत
 कीशं । नमो ज्ञान वैराग्य अम्बोधिईशं ॥ नमो हेम वर्णांग केशोर
 रूपं । नमो कोटि कामाभिरामं अनूपं ॥ नमो वीर वाणैत विख्यात
 लोकं । नमो भक्त आनन्ददं हारशोकं ॥ नमोकेलि बालार्क ही ग्रास
 कर्ता । नमो लोक त्रैशोक संताप हर्ता ॥ नमो धीर गंभीर श्रीराम
 दूतं । नमो द्रुष्ट दर्पापहं वायुपूतं ॥ नमो बुद्धि विद्याकरं तेजराशी ।
 नमो ऋद्धि सिद्ध्यादि दाता विनाशी ॥ नमो मर्कटाधीश सुग्रीव
 मित्रं । नमो शील संतोष धामं पवित्रं ॥ नमो भूरि वैदेहि शोका-
 पहारी । नमो कौतुकै वाग विध्वंसकारी ॥ नमो अक्षहाकीश वीरो
 अशंका । नमो दाहनं हेम लंकेशलंका ॥ नमो वज्रगातारि माना-
 पहर्ता । नमो लंक उत्पात प्रारम्भकर्ता ॥ नमो वध्वारीश द्रोणा-
 द्विधर्ता । नमो कालनेमारि संहारकर्ता ॥ नमो प्राणसौमित्रदा-
 नंदकारी । नमो राघवेन्द्राति शोचापहारी ॥ नमो कुम्भकर्णाम्बुदं-
 नादत्राशं । नमो कारणं रावणादी विनाशं ॥ नमो यातुधानारि
 भूभारहर्ता । नमो विप्र गो साधु आनंदकर्ता ॥ नमो नन्य श्रीराम
 भक्ताख्य लोकं । नमो देव वृन्दापहं त्रासशोकं ॥ नमो वंध्य त्रैलोक्य
 आनंदरासी । नमो मंगलागारदाता सुपासी ॥ कवित्त ॥ ज्ञान गुण
 वंतधीर साहसी सबलवंत वीर यशवंत कारअंत प्रेत भूत के । शील
 सम तोष वंत बांकुरोति तेजवंत बुद्धिवंत चातुर अनन्त राशि बूत
 के ॥ वेदहू पुराण सन्त शास्त्र अनन्त यश गावनालहंत ऐसे अंत
 राम दूतके । भाग्यवंत आपतंत प्रबल प्रतापवंत नौमि नौमि नौमि
 पद प्रज्ञ वायुपूतके ॥ वेदविद ज्ञान खानि साहेव सुजान दिव्य जा-
 न्त जहान गुणदेव वन्दिछोर के । काम क्रोध लोभ मान मोहमद
 द्रोह सिंधु शोषक अगस्त्य ग्रासकार रवि भोरके ॥ पालन तवानि

दानि कानि दास भवित्रास देत शुभ साजि काज तासु सब वोर
 के । भाग्यवंत रामदूत साहसी कृपाल वीर नौमि नौमि नौमिपद
 केशरीकिशोर के ॥ सवैया ॥ जै हनुमान सुजानवली प्रणतारति
 मोचननाम तिहारो ॥ आगम वेद पुकार यशै निज दासनके बहु
 काज सुधारो ॥ राघवदूत प्रताप महापद सेवत संकट शोच निवारो ॥
 पायँन माथ धरै भगवंत द्रवो जन जानि समीरकुमारो ॥

दो० बंदों श्री गुरुदेव पद हरण अखिल भवभार ।

विधि हरिहर सेवत जिन्हें सकल सुमंगलसार ॥

बंदों गुरु पद पंकज धूरी । जासु कृपा नाशै दुख भूरी ॥

बचन भानु नभ हृदय प्रकाशो । होत मोह तम सघन विनाशा ॥

बंदों सन्त संभा सुखेदाई ॥ जोरि पाति पायँन शिरनाई ॥

राम नाम जेह पोत सुहावा । ज्यहि चदि पतितपार भवपावा ॥

सुमिरतजिनहि सकल दुखनाशै । शमनकुमति उरसुमति प्रकाशै ॥

जे बिनु कारण पर उपर्कारी । कृपासिन्धु सेवका दुखहारी ॥

बन्दों विप्र चरण जलजाता । नमतजाहि हरि शंभु बिधाता ॥

द्विज पद सकल सुमंगल मूला । हरणकठिनकलिकलुपसमूला ॥

दो० बन्दों सुर मुनि नागनर शीश नाय कर जोरि ।

जानि दास निज आस उर पूरण कीजे मोरि ॥

बन्दों विधि पद पंकज धूरी । जासु प्रभाव प्रगट जग भूरी ॥

बन्दों सादर च्चेद पुराना । जेचित करहि राम गुणगाना ॥

बालमीकि आदिक कवि ज्ञाना । जिनरघुपतियशविशदबखाना ॥

करउँ प्रणाम चरण शिरनाई । करहु कृपा सब होहु सहाई ॥

प्रणवो खल जन्म मन क्रमवानी । परसुख दुख सुख बड़ परहानी ॥

बारहि बार विनय सुनि मोरी । हरियश करत करवै जनिखोरी ॥

बन्दों अवधपुरी सुखरासी । संतत जहँ सियराम निवासी ।
सरयू सरि बन्दों सुखदाई । ज्यहिदरशन अधजातनशाई ॥

दो० बन्दों श्रीदशरथ पद कौशलादि सब रानी ॥

जिन पाये सुत रामसम दुलराये सुख मानि ॥

बन्दों सकल अवधपुर वासी । जड़ चेतन खग मृग सुखरासी ॥

बन्दों जनक नगर सुपुनीता । आदिशक्ति जनमी जहँ सीता ॥

बन्दों जनक सुनैना रानी । जिन जामात लहे धनुपानी ॥

बन्दों जनक नगर नर नारी । जिन साँदर प्रभुरूप निहारी ॥

पुनि बन्दों सुसरि वरधारा । पावन करणि हरणि अधभारा ॥

चित्रकूट बन्दों सुख रूपा । कीन निवास जहां सुरभूपा ॥

बन्दों सकल भालु अरु कीशां । जिनहिं प्राणसमप्रियजगदीशां ॥

सब सन विनय करौ कर जोरे । पूरण करहु मनोस्थ मेरे ॥

दो० बन्दों तुलसीदास पद गहे कृपाको पन्थे ।

सुलभ जीव उद्धारहित रचि दीन्हे बहुग्रन्थ ॥

गीतावलि कवितावली छंदावलि सुखदात ॥

मानस वरवै छप्प अरु कुंडलिका शुभसात ॥

शतिसैया बाहुक विने रामाज्ञा प्रश्नेन ॥

अरु विराग संदीपिनी सिय मंगल सुखदैन ॥

इत्यादिक औरौ बहुत रचे ग्रन्थ सुखधाम ॥

पढ़त सुनत जिनके सुजन लहत सुवाञ्छितकाम ॥

धन्य धन्य तुलसी जगत कृपावन्त विनु हेतु ॥

भवसागर के तरणको रचि दीन्हे दृढ़ सेतु ॥

वार वार करजोरिके पुनि पुनि शीश नवाय ॥

तुलसिदास पदपद्म युग बंदों मन ववकार्य ॥

विद्या बुधि बलहीनमें दीन तुम्हारो दास ।
 हरियश चाहत गावनो करिये पूरण आस ॥
 वंदौ श्रीरामायणहिं सकल जगतं सुखदानि ।
 जीवन धन संतन सुजन राम सुयश बखानि ॥
 आगम वेदपुराण पै मथित्यहि तुलसीदासो ।
 काढि सुमार्तसघृतं अमलकीन्हे जगतप्रकास ॥

अवधपुरी जग विदित अनूया । राम घाट पावन सुखरूपा ॥
 त्यहि समीप सोहत शुभधामा । पूरुव मुखेहि द्वार अभिरामा ॥
 तहें गुरु वैष्णव दास निवासो । जिनके दरश किहे अचनासा ॥
 ज्ञान विराग सकल गुणधामा । राम नाम सुमिरहि वसुयामा ॥
 शांतरूप अति मृदुल सुभाऊ । समचित हृदय क्रोध नहिंकाऊ ॥
 कहैं लगिकहौं अमित गुणमानी । हरि अवतरे मनहुं निजआनी ॥
 देश देश के संत अपारा । आवत है तिनके नितद्वारा ॥
 तिनके हेत छावनी छाई । देत तहों सब संत टिकाई ॥
 दो० अशनसुधा सम संतनन्ह करेखावहिं बहुभांति ।

परमानंद छायो तहों रहत सदा दिनराति ॥

यह कीरति व्यापी सब ठई । जहें तहें मिलि संतन सबगाई ॥
 कस्यो स्वगुरु अस्थान बखानी । अब निजकहौं जन्ममाहे भानी ॥
 अवध पश्चिमै योजन साती । वाराणंकि जिला विख्याता ॥
 तीनकोस त्यहि पूरव जानौ । ग्राम नरौली नाम बखानौ ॥
 दो० ग्रामाधिप ताके भये क्षेत्रवंश राठोर ॥
 नाम भवानीसिंह ते रहे धर्मरणशूर ॥
 हरिपद छंद ॥ कोशिक गोत्र शिपाहै दक्षिण औरहु दक्षिण
 पयो । कात्यायनहै भूत्र मुशावा माध्यंदिनी सुहायो ॥ ययुवंद

उपवेद अहो धनु अरु शिव देव बखानौ । पाराशर विशिष्ट अरु
सांकृत त्रय परवर यह जानौ ॥

दो० भये भवानीसिंह के सुवन भित्तारी सिंह ।

प्रगटभये तिनके बहुरि सुवन अयोध्यासिंह ॥

तिनके सुत जन्मेउभै नीतिपाल भगवंत ।

नीतिपाल मोसन अधिक देत सबै म्वहितंत ॥

वनइससै सत्ताइसै सम्वत शुक्रे सुवार ॥

श्रावण नौमी असितको भयो सुजन्म हमार ॥

काव्यकला में निपुण नहिं पूरण हूँदैन भक्ति ।

विनयकरौ ताते सबहि निजनिज दीजे शक्ति ॥

श्रीगिरिजाप्रतिशंभु जो कही कथा समुझाय ।

तुलसीकृत मानस सुमत कहिहो मैं स्वइगाय ॥

एकवार कैलाम शिव राजत शिवा समेत ।

जानि समय करजोरिकै ब्रौली शिवा सचेत ॥

नाथ कृपाकरि हरि कथा कहौ मोहिं समुझाय ।

जो सुनि प्राणी पावई भवनिधि पार सुभाय ॥

प्रथम कहों श्रीरामको जन्म चरित सुखदानि ।

बालकैलि वरणै विहुरि सकल सुमंगल खानि ॥

गीतिकांड ॥ मुनि संगगे जिमि रामलक्ष्मण असुरगण जि

मि माखऊ । मखराखि मुनिगण अभय करि जिमि नारि गौत

ताखऊ ॥ ज्यहि भौति क्रीन्हो भंगधनु मुख नृपन कारिख लाय

ऊ । जिमि भेटि संशय जनक परशाधरहि गर्व छड़ायऊ ॥ जिमि

ब्याहि चारों बन्धु सानंद अवधपुर आवत भये । ज्यहि भौति रघु

पति राजहित भय सजतपुर मंगल नये ॥ जिमि बचन पितु रघु

वीर सानुज सहित सियवनका भये जिमिराम केवट भेटि उरभेरि
 तरत जिमि सुरसरि भये ॥ जिमि कीन वास प्रयाग प्रभु जिमि
 वाल्मीकि मिलापभो । किय चित्रकूट निवासपै जिमि शमनसर्वकर
 तापभो ॥ जिमि अवध आय सुमंत दशरथ प्राणी जिमि त्यागन
 किये ॥ जिमि भरतकरि नृप क्रिया सादर संग सब पुरजन लिये ॥
 जिमि राम जह तह जाय सब अवलोकि प्रभु सुखप्रायकै ॥ प्रभु
 सीख धरिशिर पादुका लै अवध निचसे आयकै ॥ पुनि राम सानुज
 सहित सिय ज्यहि भौति वन आगे चले । करि स्वच्छ कानन मारि
 बहुखल घुन्द मुनिगन दुखदलै ॥ जिमि पंचवटि कै थानलखनहि
 ज्ञान उपदेशत भये ॥ ज्यहि भौति शूर्पणखाइ तह जिमि काननासा
 त्यहि हये ॥ जिमि शमनभै खरदूषणादिक हाल जिमि रावण सु-
 न्यो । मारिच सन जिमि जाय वरण्यो सुनत जो त्यहि मनगुन्यो ॥
 करि कपट ज्यो मायाहि सिय दशकरि खल हरि लैगयो । जिमि
 राम कीन्ही क्रिया निजकर गीधकी जग यश छयो ॥ पुनि मारि
 ज्योहि कबंध शवरिहि सुगति प्रभु दीन्ही सही ॥ ज्यहि भौति पंपा-
 सरहि आये भई नारद वतकही ॥ जिमि पवनसुत मिलि रामको
 सुग्रीव पहँ जिमि आन्यऊ श्रीराम ज्यो बधि वालि यकशर तिलक
 सुगरहि ठान्यऊ ॥ कपिनाथ ज्योहित खोज सीतहि विपुलकीश प-
 ठायऊ । जिमि विवर पैठेकीश मिलि संपाति हाल विताग्रऊ ॥ जिमि
 नांधि सागर पवनसुत वैदेहि को धीरज द्वियो गीधविधिंसि कानन
 जारिपुर जिमि गवन पुनि प्रभुपहँ कियो ॥ कुशलार्त कहि सिय
 राम सों जिमि राम संग सैना लिये ॥ जिमि नीरनिधि के तीर
 सह सबभीर प्रभु डेरा किये ॥ ज्यहि भौति आयो तह विभीषण
 तिलक जिमि साख्यो प्रभु ॥ जिमि बंधि सेतु समुद्र उतरे रामसंग

कंपिदलीसंभ्रमां ज्यहि भांति, अंगद-लंक-गीय-दशकंठ-मल-ज्य
दिलमेल्यो । जिमि-राम शाशनां भीलु, कंपिदल-जाय-गदं-लंक
हल्योऽ॥ अय-सुद्ध-बहुं-विभि-दोउ-दिशि-घटकण-आदिक-ज्योमरे
वननाद-भी-पुनि-बद्ध-ज्यो-दशकंठ-रघुपति-रणभिरें ॥ ज्यहि भांति
मारस्यो राम-रुवण-राज-दै-त्यहि-आयको-सिय-सहित-राजे-एक
थल-कृत-विनाय-मुनि-सुखायको ॥ अदि-पानं-पुपक-राम-सिय
सह-बंधु-कपि-सेना-लिये-करि-अभय-सुरमुनि-साधु-संजन-गे-
धीन-जिमि-अवधहि-किये ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥
हे-दो-अवध-आयि-मिलि-भरत-जिमि-कोशल-राज-कुमार-ज्य-ह
आ-आ-राज-वेठि-दीन्हे-सवाहि-सुख-सुख-दारा-अपार ॥ १० ॥ १० ॥
- १० ॥ १० ॥ सो-सिवा-चरित-पुनीत-अति-कहिये-सोहि-कृपा-व
॥ १० ॥ १० ॥ सुख-सुख-गिरिजाको-मथ-तव-वरण-त-भै-राशि-भाल ॥ १० ॥ १० ॥
भि-सो-॥ स्वइ-यंह-चरित-पुनीत-तुल-सिदी-सु-मान-स-रंच्यो ॥ १० ॥ १० ॥
श्री-भ-हरण-सकल-भव-भीत-राम-भक्ति-दायक-अमल ॥ १० ॥ १० ॥
- १० ॥ १० ॥ स्वइ-हरिय-सुख-दायक-गिरा-सु-पावन-करन-हित ॥ १० ॥ १० ॥
- १० ॥ १० ॥ कहि-कहक-भै-गायि-निज-मति-सम-मान-स-सु-मती ॥ १० ॥ १० ॥
- १० ॥ १० ॥ मान-स-मित-ते-जो-अच्छ-उचरै-वारित-कौय ॥ १० ॥ १० ॥
- १० ॥ १० ॥ किरियन-संशय-सी-कहै-अथन-ही-भै-होय ॥ १० ॥ १० ॥
- १० ॥ १० ॥ राम-चरित-दायक-अमल-राम-भक्ति-सुख-दाति-॥ १० ॥ १० ॥
- १० ॥ १० ॥ सोई-चरित-पुनीत-भै-धरे-मुखा-मै-आनि ॥ १० ॥ १० ॥
- १० ॥ १० ॥ जेताते-भै-यहि-अर्थको-भक्ति-शिरोमणि-नाम ॥ १० ॥ १० ॥
- १० ॥ १० ॥ भै-स्यो-सुजन-जन-वृष्णिकै-दानि-भक्ति-अभिसार ॥ १० ॥ १० ॥
- १० ॥ १० ॥ श्री-वृष्ण-समे-वृष्ण-शुभ-समस्त-साधु-ग्रासी-॥ १० ॥ १० ॥
- १० ॥ १० ॥ वृष्ण-वृहस्पति-इह-जको-कीन्ही-कथा-प्रकासी ॥ १० ॥ १० ॥

दो०, सीतापति ॥ पंद्रपिडायुग ॥ वन्दो, न वारहिवार, नी तपा
 जिनको सुयशः प्रताप गुण पावत निगम व पार ॥ ॥ ॥
 कवित्त ॥ हार दुष्कृताके अंत औनि देवताके पाँल साधुवन्द
 ताके दातृ, भुक्तिभुक्तिलाके है। दुष्टकाष्ठताके, दाहताके, कारताग्नि
 चंडदास नै स्वशोकताके नाशकारताके है ॥ भाग्यवन्त ताके लोक
 सिधुतार ताके पोतरक्षक सुधर्मताके सुख धर्मताके है ॥ ज्ञानही प्र
 काश ताके मोहतम नाशताके कारताधि जनकसुताके भरताके है ॥
 दानि बुद्धिताके, बल तेज विद्यताके, कार बुद्धि भाग्यताके शक्ति
 भक्ति विज्ञताके है। कार अर्चताके फलदातृ वाँछिताके, दार अन्ध अ
 ज्ञताके भानुहार मन्दताके है ॥ भाग्यवन्त ताके कार जीवशुद्धताके
 द्रासा मीन अम्बुताके दानि अद्धिसिद्धिताके है। काम क्रोध लोभ
 ताके दन्द मद मोहताके हारताधि जनकसुताके भरताके है ॥ ध्यान
 करताके हर पापताप ताके सुखशय सर्वताके जागज्योति ज्ञानता
 के है। शील समताके तोषधीर क्षमताके दिव्यं वीतरागताके ही
 प्रकाश कृत्यताके है ॥ हार पीरताके धुरधार धीरताके धर्मवर्म सं
 सृताके प्रोत्, पुष्ट सैसुताके है। भाग्यवन्त सत्यताके शान्ति नय
 सौख्यताके दातृताधि जनकसुताके भरताके है ॥ उपापबूलताके
 जार तेज गोत्रताके नाश मोहनकुताके तेज त्वरड सुविताके है।
 कोश मृदुताके सीव शुद्ध मंजुताके लोक तीनि हेरि ताके समना
 नता सुताके है ॥ भाग्यवन्त ताके सैसु पुण्यके पतीके क्रन्द तीनि
 तापताके पाँल वन्द ताके है। दानि फल अर्थ ताके धर्म काम
 मोक्षताके स्वच्छताधि जनकसुताके भरताके है ॥ सेव्य करताके
 भरताके हरताके औ सुशेहा गणेश ताके आसि नित्यताके है। का
 रणीक ताके शेरि दिव्य यशताके योर चारिहूपताके लोक तीनि

व्यापताके है ॥ भाग्यवन्त श्रोणताके चीकने चमकताके चोखे च-
टकीलताके खानि मंजुताके है । दीनजन पालताके दुष्टगने शाल-
ताके कारतांघ्रि जनकसुताके भस्ताके है ॥

इति श्रीमन् भगवत्सिंहवर्मोत्तमज भगवन्तसिंहविरचितार्था भक्तिशिरोमणि
प्रथमस्कन्धो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥

दोष श्रीगुरुचरण प्रणामकरि सिंघ सुधर अहिय आनि ।

॥ श्रीरामचरित भगवन्त किंचु मति सम कहत बखानि ॥

सवैया ॥ दशकंठकियो तर्पपुंजदियो वर आननचारि तवै त्य-

हिका ॥ बरपाइ जिते नरनाग सुरासुर कालहु आसिकरै यहिका ॥

मनभावत राजअखण्डकरै नितनावत मार्य सवै ज्यहिका ॥ लहिबै-

भव नीच अनीति रुंयो जगमे न खल्यो खल सो क्यहिका ॥ धर्म

दिये करि लोपसवै जगब्यापि अधर्म अनन्तरहाहै त पातक भार

अपारभयो ब्रसुधासन सो नहि जातसहाहै ॥ कम्पित भूसुर साधु

सवै प्रभुसों करजोरि सुकारि कहाहै । नार्थ अनाथनार्थ हरौ दुख

नार्थ निशाचरदित महहै ॥

कायगिरा, भगवन्तलगतो, त्रित, दम्प्रतिको हरिपर्यन्तमा ॥ देखि
 महातप, दम्प्रतिको प्रगटे, प्रभुशक्ति, सहानन्दकारी । मांगड्ड जोवर-
 भाव मनै करजोरि गिरा तव भूप उचारी ॥ आपु समाज चहौ सुत
 नाथ पतोहलहौ इनकी अनुहारी ॥ जानि यही, रत्निरानिकह्यो
 भगवन्त पुजी मनआरा तुम्हारी ॥ १० ॥
 दो० मुनि हरिवाणी मुदित मन भय वर वाञ्छित प्राय ॥
 ॥ ११ ॥ कछु दिनपर तनुत्यागि द्रौवसे अमरपुरजोय ॥
 ॥ १२ ॥ कौशल्या दशरथ स्वईगभयो अवधे नृपआर्य ॥
 ॥ १३ ॥ अतिनको सुयश प्रताप गुण कहौ कौनविधि गाय ॥
 ॥ १४ ॥ एकवार मनमाहि भूप यह कीन विचारा दिह्यो पुत्र
 विधि नाहि भयो पन चौथहमारा ॥ गुरुहि सुनायो जाइ तुरत आ-
 पन दुखभारी ॥ कहै वशिष्ठ धरुधीर भूप है है सुतचारी ॥ मुनि तुरत
 बोलि शृङ्गीरपै सुतहित कीन्हो जाग तव ॥ भइ सिद्धि यज्ञ हवि
 पाय नृप किये उभै त्यहि भागसव ॥ सादर तव भूपाल बोलि प्रिय
 रानिन लीन्हा ॥ कौशल्याहि दिय अर्ध अर्ध के द्वैदल कीन्हा ॥ कै-
 केइहिदिये एक शेषके युगुलवनयाये ॥ कौशल्या कैकुई हाथ महि-
 पाल गहाये ॥ तिने मुदित सुमित्रहि भागद्वउ दीन परम सुखपाय
 कै ॥ इमि कछुककाल सुखयुतगयो जन्मसमयभयो आयके ॥
 ॥ दो० ॥ जन्मसमय श्रीरामको जानि मुदित तिहुलोक ॥
 ॥ १५ ॥ सचराचर आनंद जगत भयो गयो तनशोक ॥
 ॥ १६ ॥ अवधपुरी राजत परम वाजित गगन निशानि ॥
 ॥ १७ ॥ बरषि सुमन जयजयकरत शोभित विबुधविमान ॥
 ॥ १८ ॥ सर्वेया ॥ भासभयो शुभयोग नक्षत्र सुवार विराजतेहै सुखदीई ।
 मध्यसमय तिथि नौमिघरी शुभ ताछिन में प्रगटे रघुराई ॥ आनंद

दो० गुरु पद प्रज्ञ प्रणाम करि रामसिया शिरनाया ।
 बाल चरित श्री रामको कहौ सकल सुखदाय ॥
 चैत्र शुक्ल चौदशिन रविवारा । लिपवाये अजिरादि अंगारी ॥
 माणिमय चारि चौक, पुरवाये । कलश थापि घृत दीप धराये ॥
 सादर मुनिवर चरण परखारे । श्रुतिविधि गौरि गणेशपधारे ॥
 पूजा कीन्ह अनेक प्रकारा । धूप दीप नैवेद्य अपारो ॥
 शुभ स्वरूप रचि भीति बहोरी ॥ पुनि हरदी पीठा लैघोरी ॥
 चित्रित सदन किये बहुभांती । सुखमा अमित न सो कहिजांती ॥
 सिजि पट शृण्ण सुवन सुमाई । लै उखंग बैठी छविछाई ॥
 पुनि पूजे पट कलश सोहाये । तंदुल सेंदुर हरंदि चढाये ॥
 धूप दीप कीन्ही सुखदाई ॥ धी गुर सानि अशनि करवाई ॥
 करि पुट पानि रानि शिरनायो । जाति बंधु तव भूप बुलायो ॥
 विविध भांति भोजन करवाये । विप्रन्ह सकल दिक्षिणा पाये ॥
 देत अशीप चले निज धामा । यहि विधिकीन्ह छठी अभिरामा ॥
 दो० गो गयन्द बाजी पुष्ट मेषि मुक्ता समुदाय ॥
 विप्रन्ह दिये निरश बहु सोनहि कहै सिराय ॥
 माधव कृष्ण चार्ण भृगुबारा । गुरुवशिष्ठ कहै बोलि भुवारा ॥
 कीन्ही चारहौ वेद विधाना जाइ न सो मुख एक बखाना ॥
 ध्वज तपताक तोरण रचवाये । बहु विधि बंदनवार बनाये ॥
 गोमय अजिर लिपाया बहोरी । चारि चौकतहँ माणिमय पूरी ॥
 मुनिवर पितर देव पुजवाये । रानिन सुवन सुमेत बोलाये ॥
 लै सुत बैठी चौक मँभारा । विप्रन्ह वेद गिरा उचारा ॥
 गावहि गीत सकल पुरनारी । मन अति मुदित देखि सुतचारी ॥
 मुनिवर सघृत होम करि ताही । नाम लिख्यो पीपरदल मांही ॥

दो० पूजन करि त्रैवार स्वइ शिशु श्रुति दीन्ह सुनोय ।
 हिरण्य गर्भ कहि राशिको नाम सकल सुखदाय ।
 स्मृतः स्मृतः ज्ञो । सर्वहिः सर्वोपरि गुणधाम ।
 तसु राम अस नाम कहि सकल लोक अभिराम ॥
 जन्म पुण्य भादिप्रदको ज्ञेय है ईश्वर न जानि ।
 जन्म जन्म हेमनिधिं शशिको मुनिवर कह्यो बखानि ॥
 विश्वः भवती पोषत ज्वई सर्वोत्तम गुणधाम ।
 भवभंजन यश जामु कहि तासु भरत अस नाम ॥
 अश्लेषा पद प्रथम को जन्म है अभिराम ।
 वर्ण इकार इकार स्वर डील त्रिज निधि नाम ॥
 जीके सुमिरण मोत्रते होइ शत्रु क्षम आसु ।
 पुत्र सुमित्रा केर लघु नाम शत्रुहने तासु ॥
 अश्लेषा चरणोदिकर जन्म है अक्षर जानि ।
 स्वर ईकार है नाम शुभ डील धराधर भानि ।
 सब लक्षण युत भूमिधर रामभक्त गुणधाम ।
 तत्र सुमित्रा जेष्ठ त्यहि कहि लक्षण शुभ नाम ॥
 भांग्यवड़ी तिन जीवनकी इतसों निशिवासर जे रतिलै है ।
 लोक सदा सुखदा तिनको यश तीनिहुं लोकनमें न समै है ॥ हो-
 इहि परि विना श्रमसो भव किंकरहू यमकेन सतै है । रामकृपा भ-
 गवंत नितौ परलोकहु लोक महा सुखैपै है ॥
 दो० यहिविधि मुनिवर नामधरि पुनि पुनि दीन्ह अशीशनी ।
 परमानंद भगवंत सुनि रानिन्ह इसहित महीश ॥ ०१६
 स० चारिहुरूप अगार अक्षुपम देखत मातु सब सुखिपावै । वा-
 रहिवार लगाय हिये मुख चूमि मयंक प्रमोद बढावै ॥ संतत ध्यावत

शम्भु जिहै जन योगि निरन्तर ध्यान लगावै । ताहिभरे भगवंत उछंग अनंदित सो जननी पय प्यावै ॥ जाहि अखेद अंभेद अ-
 छेद अजन्म अनंत सदा श्रुति गावै । शङ्कर शेष सुरेश जलेश
 दिनेशहु जाहि निरन्तर ध्यावै ॥ नारद शारद व्यास गणेश थके
 कहि जा यश अन्तन पावै । ताहिभरे भगवंत उछंग अनंदित सो
 जननी पय प्यावै ॥ जा पदपङ्कज ध्यान किहे अध जन्म अनेकन
 को जरिजावै ॥ नाम लिहे भव सिंधु अपार बिना श्रम गोपद सो
 तरिजावै ॥ संतत लोक अनंदकरे परिणाम सुभाय प्ररम्पद पावै ।
 ताहिभरे भगवंत उछंग अनंदित सो जननी पय प्यावै ॥ जननी
 सुत सुन्दर गोद लिहे मुख शोभित पोड़श पूर्ण कला ॥ अरविद
 शुभाक्ष सजै भृकुटी मनमोहत भाल डिठौन भला ॥ चिबुका धर
 चारु कपोल वने छविदेत अनंत सुकंठुगर्ला ॥ वसुधाय वसौ भग-
 वंत हिये यह रूप अनूपम रामलला ॥ अति पंकज पाणि सजै प-
 हुँची नख ज्योति अपार जगै अमला ॥ उर ब्राल बिभूषण नाभि
 भली त्रिवली शुभदायक चारिफला ॥ कटि चारु नितम्ब उरु शुचि
 जंघ विलोकत जो अध पुंजदला ॥ ग्रह रूप वसौ भगवंत हिये
 रघुवंश विभूषण रामलला ॥ वनजीरुण कोमल पाय भले अस्ता-
 लिस चिह्न वने अमला ॥ अँगुरीन दिये नख ज्योति मनो नग-
 लाल जड़े कल कंजदला ॥ छवि देखत मातु निहाल सवै करि
 मानत जीवन को सफल ॥ शिवा मानस पंकज भृंग वसौ भगवंत
 हिये छवि रामलला ॥ श्री गुरु गुरु गुरु गुरु गुरु गुरु गुरु ॥ ०१ ॥
 दो० । स्वस्ति कोण विषु पद्म श्री हलि मूशाल अहिवाना ॥ ०२ ॥
 ॥ ०३ ॥ अर्धरेखे अर्धवज्र वज्र नभ अंकुशा पादपानी ॥ ०४ ॥
 ॥ ०५ ॥ मुकुट चक्र ज्यवादिंड नर सिंहासन शुभमाल ॥ ०६ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ चौविंशत्पद दक्षिणः चिह्नं विशालः ॥
 ॥ मित्रगो पदः पृथ्वीः कुम्भं दरः अर्धचन्द्रः षट्कोणः ॥
 ॥ जिम्बूफलं जिवी चंद्रिका शक्ति विदुः त्रै कोणं ॥
 ॥ अमीः कुंडः सरजूः गदा मीनः पताक मरोले ॥
 ॥ त्रिवली धनुः तूणीरः विधुः वीणा वंशि विशाल ॥
 चतुर्विंशः शुभं चिह्नं त्रैवायं पदः अभिरीमः ।
 महारिमायणं मेः अमितं कह्यो महातम वामः ॥
 यह छवि नखशिख लालक्री देखि देखि पितु मात ॥
 महामोदं पावत मनहि दिवस न जानहि जात ॥
 एकदिन सुत अनरस लख्यो कह्यो कौशलामाय ।
 काहुहि दुष्टै नारिजनु दीन्हैसि नजरि लगाय ॥
 कः भोरहीते आहु मेरो लालन उदास माई पावत न दूधनेकु
 रोवै चार बारहै ॥ वैठेहू न ठोढेरहै सोवत न पालने मे कौन मै उपाय
 करौ शोचिही अपारहै ॥ बोलिलै वशिष्ठ वेगि आय माथ हाथ धारि
 पढिकै नृसिंह मंत्र मेढयो फेर फारहै ॥ जासु नामलेत कोटि संकट
 शमनहित ताहि मातु कौशला करावै फूकभारहै ॥
 नृसिंह मंत्र तंत्र शास्त्रे ॥
 नमो नृसिंहाय हिरण्यकेश्यपवक्षस्थलविदारणाय त्रिभुवन
 व्यापकाय भूतभेतः पिशाचः शाकिनी डाकिनी कीलोन्मूलनाय स्तं
 भोद्भव समस्त दोषान् हनहन शरशर चलचलो कम्प कम्प मयं
 मथ हुंफट् हुंफट् हुंफट् ॥ महारुद्र जापिर्यत्त स्वाहा ॥
 एकवार शिव सहजा ॥ सुभाये ॥ पावनं भस्म सकल त्तजलाये ॥
 करिभृंगी ॥ इमेरु लौ लीन्हा ॥ कौशलपुरी ॥ पयाना ॥
 घर घर आगम कहत ॥ सिधाये ॥ अवधनाये ॥ द्वारे चलि

सुनि कौशल्या लीन्ह बुलाई । आसत, दीन परम, सुखदाई ।
 करि आदर बहुविधि महतारी । भेले चारु चरण सुतचारी ।
 पुनि पुनि दीन्ह अशीशे पुरारी । भये छकित अवि सिंधु निहारी ।
 गोद मोद निधि बालक लयऊ । तन अति पुलक मुदित मन भयऊ ।
 तव कर कमल जौरे करि माती । ब्रौली ब्रुपन अपरम सुखदाता ॥

दो० स्वामी गुण आबे सकल कहिये ग्रामे जौन ।
 जो कछु भंगिहौ आपु सो देव सत्य हम तौन ॥
 सुनि बोळ्यो योगी बचन सुनहु कौशला साया ।
 बड़े भाग्यको पुत्र तत्र गुण नहिं कहे सिराय ॥

तोटक छन्द ॥ अति सुन्दर बालक मातु अहै । गुणसागरको
 कहि पारलहै ॥ कृत दर्शन शूल हरी सुतही ॥ यहिते सुख पुअ मिली
 तुमही ॥ कछु देहहि काल व्यतीत जने । मुनि माँगिन प्रेहहि एक
 तवै ॥ तिनके संग देहहु जाय इन्है ॥ इति निश्चर देहहि सु ख तिनहै ॥
 मिथिलापुरको पुनि जीवहिंगे । धनुखंडिन कै यश पावहिंगे ॥ दय
 प्रत्र बुलाय वरात तवै । अति होइहि ब्याह उदाह सवै ॥ चहुँ बन्धु
 विवाहि पुरावहिंगे ॥ यश निर्जर प्रावत गावहिंगे ॥ शुभगीत छ
 न्द ॥ यह करी अद्भुत कर्म सबही दुष्टगण संहारि है । सुर साधु
 महि दिज पालि तीनिहु लोक यश विस्तारि है ॥ सुख भूरि सम्पति
 पूरि तुम्हरे भवन कवहु न खागिहै । यह सत्य सत्र हम कहत माई
 भूँइनि वसु लागिहै ॥

सो० पुनि बोळ्यो स्वइ वैन सुनहु केकई मातु तुनु ।
 ॥ पुत्र सकल गुण प्रेन । लक्षण कही विचारि सब ॥
 ॥ शुभगीत छन्द ॥ यह भक्त मन क्रम बचन रघुपति चरण रति
 अति लाइहै । वसु ग्राम रामहि ध्यान रसना नामरस शिचिपाइहै ॥

पुर जिनक होइहि व्याहः पावेनु सुयशः तिहुँ पुर, छाइहै । इमि कहउं
 आगुम सत्य भाई व्यर्थ नहि, केहुँ जाइहै ॥
 सो० सुनहु सुमित्रा मायः सकल सुलक्षण पुत्र तव ॥
 आगम कहौ सुनाय सत्यहि सौं नहि भूउ कहु ॥
 शुभाति छन्द ॥ अति वीर दउ, रणधीर वोकै शत्रु जाके छर
 डरैत श्रीराम पद पाथोजरति मन काय वृत्र संतत करै ॥ मिथि-
 लेशः पुर सँग राम जेनहुँ व्याहि पुनिः सब जाइहै ॥ भगवन्त जंग
 यश गाइ पावन पार भत्रनिधि पाइहै ॥
 सो० सुनि शिवके शुचि वैन भई मगन रानी परम ॥
 सुक्यायणि बहु दैन लागी सुवन छुवाय सब ॥
 छन्द ॥ धरि माथ इनके हाथ दीजे नाथ आशिर्वादही । क-
 ल्याण जाते होइ संतत डीठि मूठि बिनशही ॥ नहि निकट आवै
 रोग कबहुँ बाल रोदन न करै । इमि कहत जोरे हाथ जननी वार-
 वारहि पांपरै ॥
 सो० सुनि योगी सुख पाय बोल्यो सुने माता वचन ॥
 डिरहौ अनहि नशाय डीठि मूठि बाधा सकल ॥
 छन्द ॥ कबहुँ न रोई बाल पलना गोदमें सुख सोइहै । सब उँव
 रहि है नेक तनमें रोग ए न होइहै ॥ यहि भोति कहियोगीश
 पुनिकरि नादभंगी चलिदियो ॥ भगवन्त चारिउ, कन्धु, सुन्दर
 रूप, धरि लीन्ह्यो हियो ॥
 सो० सुनि शिवके वर वैन भई मुदित माता सकल ॥
 सुन्दर शिशु सुख दैन वार वार लावहि हियो ॥
 दो० नख शिख सजि भूषण वसत वर पलना पौढाय ॥
 मातुः कुलावहि लालनहि हर्ष न हियो समाय ॥

क० श्यामंतन पीतभीन भांगुली अनूप साजि लालनै सु
 आनि मध्य पालनै लिटावई । देखि रामचंद्र रूप भाधुरी सुमोद
 कन्द प्रेमसों उमंगि चारु बालकेलि गावई ॥ शम्भु सनकादि शुक
 नारदादि योगिवृन्द कोटिनै उपायकृत्या ध्यान जोन आवई । भा
 ग्यवंत स्वामिसों प्रगट्ट आनि भूपभौन ताहि मातु कौशला सु
 मोदसों भुलावई ॥ लघु लघु लाल लाला कोमल चरण जंघ जानु
 औ नितम्ब कटि सिंहही लजैरही । सुन्दर गेभीरनाभि मंजुल उदर
 बाहु पांडुची विशाल शोभ कंजपानि दैरही ॥ चारु चिबुकाधर
 कपोल दन्त नासिकाक्ष पूरण मयंक आस्य पुंज भास दैरही । भा
 ग्यवंत रामशिशु रूप ना बखानि जात अंग अंग प्रत्य कामकोटि
 छवि दैरही ॥

दो० भाद्र कृष्ण रविव्रैदशी पुष्य नक्षत्र अनूप ।
 भूम्युपवेशन रामको कीन्ह मुदित मनभूप ॥
 विप्र वृन्द गुरु बोलि पठाये । विविध भांति मंगल संजवाये ॥
 तनि वितान आंगन लिपवाई । पूजि बराहस भूमि सुहाई ।
 पुनि अन्हवाये बाल सुखदाता । भूषण पट साजि बहुविधि माता ।
 अस्त्र शस्त्र बहु वस्तु धराई । वैठावत महि सुत सुखदाई ।
 गावहि मंगल सादर नारी । करहि वेदधनि भूसुर भारी ॥
 बहु विधि दान याचकन पाये । देहि अशीश मोद मन छाये ॥
 कोशल पुरी मुदित नर नारी । निरखहि छवि तनमन धनवारी ॥
 त्यहि अवंसर कर हर्ष अपारा । को अस कहि जो पावहि पारा ॥

दो० भूपति रानी मुदित अति पुनिपुनि सुवन निहारि ।

विप्रन दीन्ह दान बहु मणि भूषण धनवारी ॥

जासुनाम जपि सकल सुख विनुश्रम आत धायत ॥

सुतः ताके मुखहित मातुःपितुःकरते अनेक उप्रायै ॥ १ ॥
 पहिसुख सहिते दिवसं कञ्चु गयऊ । पुनि अनप्राशन आवत भयऊ ॥
 द्वितीया मार्ग शुक्ल शशिः पूषान मिथुन लग्न शुभ परम अद्वपा ॥
 पूषति मुदित बोलि मुनिराजू । अनप्राशन कर सज्यो समाजू ॥
 वेविध मूर्ति भोजन नवनवाये । पटसंचारि भौति जो गये ॥
 जाति बन्धु नृपा न्योति पशये व सुत त सकल सादर जलिआये ॥
 तव सुत सकली उवदिह अर्हताई । मुन्दरु पट भूषण पहिराई ॥
 लै नृपा गोदा सुवन सुखदाई । ससवारं मुखे आस नृपुवाई ॥
 पुनि अचवाय प्रोचि सुखलीन्हा । दान मान बहु भौतित कीन्हा ॥
 पुत्रन मातु निकट पहुँचाये । पुनि सवहिन भोजन करवाये ॥
 अचै प्राने दीन्हे । सव कंहा । कहिन जाय जस भयो उवाह ॥
 सवैया ॥ कहि जाते न सो मुख एक महा मुदवाय । खो नृपके
 सदनै । गुण गावत मागध सुत भलो यश प्रावत चंदि कद स्त्रभने ॥
 भगवन्त विलोकत मातुःपित्रा सुत जीवन्को विज । अन्तर्गने ॥
 मुनि योगिन दुर्लभ स्वामि स्वई व्रश प्रेम भयो न्दरुयान् जतने ॥
 कुरडलिया ॥ रामै जननी एकदिने पलजा । मन्थ सुताय ।
 इष्टदेव श्रीरह हित प्राक्वनायो जाय ॥ पाकतन्नाशो जाय मुदित
 पुनि भोग लगायो । सुतहि विलोक्यो खात पुनन सोवत स्वह
 प्रायो ॥ प्रायो भ्रम मनमाहि निरखि पुत्रहि द्वैतासे । स्त्री उगीसी मातु
 विलोकत पावत रामै ॥ मातै विकल विलोकिके राम दिखो मुस
 ज्ञयायन अद्भुतरूप अखंड निज तव दीन्खो देखसय ॥ तव दीन्खो
 द्वेखराय रोम रोमन प्रतिजके । कोटि कोटि शब्दांड अमित सूख
 शशि ताके ॥ ताके सरिसर सिन्धु भूमि हरि शम्भु विधाते । देखि
 चरित बहु भौति वितै कीन्ही तव माते ॥ सवैया ॥ कस्ता जगके

तुमहीं प्रभुहौ तुमहीं सब जीवनके भरता । भरता सब दासनके तु-
महीं तुमहीं, परिणाम अहौ हरता ॥ हर, तामरसोद्भव विष्णु रचौ तु-
महीं पुनि, भार क्षमा धरता । धरता अवतार दशौ तुमहीं तुमहीं
शमनासुर के करता ॥

॥दो॥ सुनि बोले यह चरित मम कतहुं न जाने कोयं ।

॥१॥ जन्निउ कह कवहुंन हमैं तव माया प्रभु होय ॥

॥२॥ एवमस्तु कहिरूप शिशु भये बहुरि श्रीराम ।

॥३॥ नाना विधि लागे करन पुनि चरित्र अभिराम ॥

॥४॥ चित्रशुक्ल नौमी परम पावनी अति सुख रूप ॥

॥५॥ वर्ष गांठि श्रीरामकी कीन्ह मुदित मन भूप ॥

॥६॥ सवेया ॥ आनंद मंगल आजु अहै पुरुष कि गौंठि सु राम-

ललाकी ॥ वाजंत ब्रिन खात्र सुदंग सुसोहत ताल भली तबला

की ॥ पाय सुदान अशीसत याचक पूरण आश भई सकलाकी ॥

गावतहै भगवन्त सदा कलकीरति दायक चारि फलाकी ॥

दी ॥ चारि सुवन चारौ सुभग चारौ फल दातारि ॥

॥ चारु अजिर खेलैं नृपति लेखि सुख लहै अपरि ॥

॥ सवेया ॥ नृप जोगन खेलत चारितनै छविजात कहीं नहिं सो

सकला ॥ मुख पूरणचंद्र विलोचन चारु विलोकत जो अघओघ

दला ॥ तन श्याम विभूषण बाल सजे फलके श्रुति पीत भंग

अमला ॥ छवि सागर नागर वासकरो भगवन्त हिये नित रामल-

ला ॥ कचकुंचित चिकन शीश भले अति उन्नत बाल सुभाय

धला ॥ दरग्रीव महाछवि सीव मनोहर भजु अतीवसजे कहुला ॥

भंगुली तन श्याम सुपीत लसै घन मध्य मनो चमके चपला ॥ भग

वन्त उरातर नित्त बिसौ प्रभु भव भय भजन रामलला ॥ प्रगान्पुर

किंकिणि लंक सजे सुनि शब्द मुनीशान ध्यानचला । शुचि नाभि
 मंभीर भली त्रिवली उर आयत दाम लसै अमला ॥ पहुँची युग
 पाणि अनूपवनी मुख सुन्दर पंकज मान दला ॥ नितवासकरो भ-
 गवंत हिये करुणा मुखसागर रामलला ॥ विहरै नृप आँगन बाल
 चहुँ छवि देखत मातु सुखी सकला । चलिबैयन बैयन दूरिकछू पुनि
 लागत लीटने भूमितला ॥ कहूँ छाहँ विलोकि धरै भूपटै किलकै-
 यन कै मुखे बंदकला ॥ छविसिधु बसौ भगवंत हिये नित वंशाविभू-
 पण रामलला ॥ हित खेलन मोगत चंद्रकवौ करि रोदन ठानत हे
 मचला । कबहुँ लखि कागधरै त्यहिको चलु बैयन बैयन भूमि थ-
 ला ॥ कहूँ बैयन और भकैयन दै तुतराय सु बोलत बोल भला । गुण
 सागर आगर रूपवसौ भगवंत हिये नित रामलला ॥ विहसै लखि
 भूरि खिलौननकी दमकै दैतिर्या ह्युति ज्यौ चपला । तुतराय पुका-
 रतमातनकी सुनि आनंदभूरि लहै सकला ॥ इतराय उठाय लगाय
 हिये छविदेखत अबककै अपला । करिये प्रभुवास हिये भगवन्त सदा
 जनरंजन रामलला ॥ मातुगह कर लोलनकी सिखवै शुभचालन
 आँगनमाहीं । प्राँव उठाय धरावत भूपर नूपुरशब्दसुने किलकाहीं ॥
 छोड़त है अंगुरी जननी न गिरै हर पायनमें लपटाहीं । कौनप्र-
 कार कहीं छविसो मनभावत है मुखे आवत नाही ॥ दीनसे बैठाय
 महीपर आपहु वैठिगई तह माई । वस्तु अनेक दिखावति है दिग
 राखत बातनमें भरमाई ॥ पायसुवीच चले भजि बैयन दीन खि-
 लौनन डारि तहोई ॥ मातुगहै जब धावति है तब ठानत आँगनमें
 मंचलाई ॥ देहरि द्वारपरै किदिले तब मातु उठाय नधावत धरै ।
 धरैगई भरि अंगसवै निज आँचरसों जननी गहिभारै ॥ लागत
 रावने लखवै ल गोदलगाय हिये चुचुकारै न आँसुनप्रोखि मि-

मीयसु क्षीरहि वारणकै धन-प्रोणडुलारै ॥ सुन्दरसेज, सर्वारि-क्षीला
 शै-पौदित् मातु । महासुखंपावै ॥ खन्तमनैयनकै कहिं भैयन वारहि
 मार हिचे लपटावै ॥ कोमल, पाणिगहे मुखचमत् प्रेमअतीव नहीय
 तमावै । सो सुखमा भगवन्तकहै किमि भावतही मुखमें नहिं आवै ॥
 द्वीव जकि गुणगण अंगम अति पावत निगम न पार ॥
 सो प्रभु अपने भक्तहित करत चरित्र अपार ॥
 काकभुशुण्डी दिवस एक आयो भूपति भौन ॥
 त्यहिसन जो चरितकियो कहौ कलुक अवतौन ॥
 जानुपानि धाये धरण ताहि देखि रघुनाथ ॥
 भाज्यो सो जहँ जहँ गयो पाँछेहि देख्यो हाथ ॥
 कवित्त ॥ फिरत भ्रमित मन त्रसित न थिरहोत विकल बिलोकि
 म दीन्हो मुसक्यायहै ॥ हँसतहिजाय सुख दीख जो चरित्रहीस
 मित अनूप मोपै जातसो न गयिहै ॥ लोक लोकपाल यमका
 तहू त्रिदेवजाल भूमि सर सरित पयोधि जनवायहै ॥ देव मुनि सिद्धि
 योगि नाग नर भूत भेत विविधप्रकार दीख सृष्टिसमुदाय है ॥
 दोष देखत सो चक्रित भयो विहसे तव रघुनाथ ॥
 विहसेतही पुनि कागस्त्रइ वाहक निकस्यो आयु ॥
 योही नितानिवचरित बहु करत कृपा सुखकन्द ॥
 जो सुनि सादर जीवकर छटिजात भवफन्द ॥
 छपै ॥ संतचित आनंदरूप कृपापूरण गुणरासी ॥ सर्वोपरि
 परधामे सदा सबके उरवासी ॥ वन्दत पद विधि शम्भु जाहि सन-
 कीदिका च्यावै ॥ आगम निगम पुराण शेष ज्यहि नेति बतवै ॥
 स्वडा स्वामि भक्तहित भूप्रगटि कृतचरित्र भवभय हरण ॥ मनुवचन
 कीय भगवन्तगहु चरणकमल ताके शरण ॥ कवित्त ॥ धन्यहै अवध

जामें लीन अवतार-राम धन्य आँगनाई जामें खेलको खेलतहैं ।
 धन्य तात मातु सब देखही समोद जौन चारित अनुपारामचन्द्रजू
 करतहै ॥ धन्य धाम धन्य त्रास धन्य लोगे धन्य भाग धन्यधन्य नैन
 जौन रामको खलतहै । धन्य अत्रा धन्य वस्त्र धन्य क्षीरनीर धन्य
 धन्य धन्य सुर्व हेत राम जो लगतहै ॥

इति श्रीमन्मयोध्यासिंह उर्मात्मजमंगवन्तसिंहविरचितायोमालिशिरोमणिग्रन्थ

श्रीरामचन्द्रबाबलौलावर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

दो० वन्दौ श्री अवधेशसुतः चारित परमउदार ।
 कृपा दृष्टि करि देहु बेर पूजै आश हमार ॥
 मातु सकल आनंद भरी देखत शयोमलगात ॥
 यथा रंक गथ पाय बहु हर्षने हिये समांत ॥

रागवसन्त ॥ नृप अजिर खल खलें कुमार । कहि जात नहीं सु-

खमा अपार ॥ पदपद्म चारु शुभलालिलाल । कृत शब्द सुधुर नूपुर
 सुजात ॥ दलकमल पदज अतिशय विराजै । निखज्योति मनी
 उडुगण समाज ॥ मणि जटित पुरट किकिणि विशाल । वर लंक
 शोरसो करत जाल ॥ नाभी अनूप शुभरोमराज । उरविभपाद श्री
 बत्सभ्राज ॥ पहुंची अनूप करकंज सोई । लखि कंठ मंजु छवि कंबु
 मोह ॥ कडुला विचित्र नख बाघ मालि । वरवदन विडु मसि लसत
 भाल ॥ कुलही अनूप शिर सुभग अंग । अंगुली सुपीत सुति प्रदल
 भंग ॥ छविभाम राम आनंदकंद वसो । भाग्यवन्त उर व्योम चन्द ॥
 दो० रामरूप शोभा अमित क्यहि विधिकहौं वखानि ॥
 शेष महेश गणेश बुधि जाको कहत सकानि ॥
 ब्रह्मा शिव सनकादि ज्यहि पावत ध्यानहु नाहि । सो प्रभु नाना विधि चरित करत भूपगृह माहि ॥

१०० जिनके इन पद गेम नहिं नहि चरित्र आधार
 १०१ मातु जठर जन्मे बृथा केवल पुहुमी भार ॥
 १०२ माता एकदिन अजिर लिय हली ठाढि रघुनन्द ।
 १०३ कक्षो तात देखहु विशद उयो व्योममें चन्द ॥
 सो सुनि एकटक रामजी लागे चितवन ताहि ।
 १०४ वारवार करकंज सों निकट बुलावत वाहि ॥
 तुतुरे तुतुरे कहत है मातु लेव हम याहि ।
 भूख लागि खावै यहै और कह्यु हम नाहि ॥
 अस कहि पुनि लागे तबहि रोदन भूमि मँभार ।
 मानत है नाही करत जननी यत्न अपार ॥
 तस्करके बल रति है दुर्बलवल भूपाल ॥

१०५ मूरुखके बल मौन है केवल रोदन वाल ॥
 १०६ स० मातुकरे तब शोच हिये हम नाहक चन्द्र इन्है दिखरावा ।
 कौन उपाय करौ नहिं मानत मांगत है मनको निजभावा ॥ और
 वहाँ ज्वड़ खाउ लला तुम जातकहूँ शशि नाहिन खावा । भोति
 अनेक कह्यो जननी पर लालन के मन एक न आवा ॥ आवत
 गोद न रोवत है कहि चंदहिलेव अबै हममाई । शोचत मातुखड़ी मन
 में क्यहि भोति भलाहम चन्द्रहिपाई । जो लयदेउ ललाकरमें खलि
 जाहिर है यहि काल चुपाई । जानत है न अबू भकछु हम का कहि
 इनको समुझाई ॥ तौ एक भाजनमें भरिके जलले कर ऊपर दी
 उठाई ॥ आवहु चन्द्रबुलावत है हित खेलनके तुमको रघुराई । फो
 धरयो धरणि मह सो कहि लेहु लला गहि चन्द्रहि लाई ॥ ताहि
 विलोकि हँसै रघुनायक धारणकी करकंज चलाई । भाजनमें क
 डारिधरे पुनि बाहर आवत सो शशिनाही ॥ भोक्त है पुनि पा

तरे तहँ देखिपरै नहिं तापरैछाहीं । तौ पुनि रोइकहै जननी हम
लेवँ शशी निजहाथनमाहीं ॥ वारि विपे यहँ भलकतहै पर हाथन
मे गहिनेकु न जाहीं ॥

॥ दो० ॥ अतिसमीप ब्रह्म चन्दहै कहौतो लोवों धाय ।

॥ सुनि लोलनके वचनवर कछो मातु सुसंख्याय ॥

॥ तव मुखलखि सकुचै शशी जावै दुरि पातलि ।

॥ ताते आवै हाथनहिं करेण यही लाल ॥

॥ सुनि विहसे प्रभु मातुतव लीन्हो गोद उठाय ।

॥ दूधप्याय दुलराय पुनि दीन्हो ताहि भुलाय ॥

॥ रामचन्द्र विधुतन्तलखि मातुलहत मनतन्त ।

॥ देहु नाथ निज तन्तवर गावत यश भगवन्त ॥

॥ सहिविधि कृपासिंधु स्थिराई करत चरित भक्तन सुखदाई ॥

॥ देखिमातु पितु अति सुखपावै महामोद मनमाहिं बढावै ॥

॥ कछुक दिवस धीते पितुमाता चूड़ाकर्म कीन्ह सुखदाता ॥

॥ तीसखर्प शुक सितआंगो भृगुदिनतिथिदशमीशुभपायो ॥

॥ कन्यालभन जानि सुखदाई पठये वोलि भूप मुनिराई ॥

॥ मुनिमुनि मुदित भूपगृहआर्ये विधिवत चूड़ाकर्म कराये ॥

॥ गानि निशान वेदधुनि होई याचकजन पावत मनजोई ॥

॥ नृप सव्रजाति बन्धु बुलवाई सादर सवकहँ अशनकराई ॥

॥ विप्रन दानदीन बहुभाँती देहिं अशीप न सुदकहिजाती ॥

॥ अधिकउछाह अवधपुर छाये घरघर वाजहि मोदवधाये ॥

॥ सब नर नारि मुदित मनमाहीं सुखसंयुत निशिवासर जाहीं ॥

॥ रामचन्द्र सुखचन्द्र निहारी जननि जनक पावहि सुखभारी ॥

॥ दो० ॥ सुखमा सुखवहँ अमित अति कहिकविसककोताहि ॥

॥ १ ॥ पिदसुखं शरसुखं वेदसुखं अंगमनिगम-गमनाहिं ॥ १ ॥
 खेलहिं अंगन चारिउ भाई ॥ करहिं अनूप चरित सुखदाई ॥
 अति सुंदर चारिउ सुकुमारा । पावहिं लखि सुद मातु अपासा ॥
 राम श्याम तन अंगित सुर्हायो । प्रीत भंगुलि पूषण विद्यायो ॥
 हसुकि हसुकि अंगन विचधवि । एकहि एक लपटि पुनि जावै ॥
 लखराय गिरि फिरि उठि लपटै । आजत निरखि छुवुन एक भपटै ॥
 मणि खमन भौकहिं निज छौही । लागत नार्चन देखत ताही ॥
 चलहिं भ्राजि पुनि हंसि हंसि गई । प्राञ्छे लागि जाति तिन्ह माई ॥
 मातहिं लखि करिके सुख सुखा । कहहिं लागि हमरे अति भूखा ॥
 जासुखा न शर चर माहीं । प्रिय पित लखि कउ पावत नाही ॥
 जासु रोसा प्रति भुवन अपारा । जो प्रभु पावत तसु संसारा ॥
 रोवत सुह जननी । के पास । नैन लनि आये सुइ आसि ॥
 भेम उगगि जननी उरलाये ॥ आशु पोंछि अयुपनि कराये ॥
 ॥ दो ॥ पुनि सुन्दर लैके अशुन सवहिन दियो खनाय ॥
 ॥ १ ॥ चारिपयाय सुख पोंछि कुरि लीन्ह उ गोद उठाये ॥
 महिप्रकार शिशु चरित सुहाये । करहिं अनेक जाहिं नहिं गाये ॥
 मुनिजव जाहिं श्याम नित लोवै ॥ निगम गाम ज्यहिं तिति वतवै ॥
 सो निज भक्त हेतु तनु धारी ॥ कसुत चरित संसृत दुखेहारी ॥
 इमि सुखयत कहुं काल वितायो । पोंचौ स्वर्ग मार्ग शुभ जायो ॥
 दशमी धरि कहेवातिगी उदरांजा । कृष्ण वेध कर साजि समाजा ॥
 नृप नरु विप्र बोला सब लीन्हे । जाति कुटुम्ब निमंत्रण कीन्हे ॥
 संगल समाज कसकल गृहसाजे । भौति भौति ब्रोजन तदुजाजे ॥
 विमल श्रेणिका अजिर वेताई । अति विचित्र तहें शौक सुदाई ॥
 हेम कलश दीपक धरितापै । स्वप्न अमित जाइ कहि कापै ॥

शिशुना सवारीमातु लै मोदी ॥ वैठी चोके मध्य सहस्रोद्रामा
 पुत्रनकर धरि विविध मिठाई । कंछुकु वोरि दधि दीन खवाई ॥
 सीक वोरि रोचन श्रुति लाये ॥ स्वर्णकार तव निकद बुलायेना
 दो० परमानंद ते अटित अति लीन बोधि शिशुकानक
 मेई निछावरि विविध विधि करहि नारि विहुगान ॥
 सोलाछन्द ॥ लीन्है तव भूपाल बोलि सब जाचक वृन्दा
 मणि भूषण वीरं भूरिदौ कीन्ह अनन्दा ॥ कखाये पुनि अशक्तिस
 वहि सादर सुखमानी ॥ निप्रन दीन्हैदान अमित अस्तुति प्रभानी ॥
 मुदिताशिम सब देहिं चिस्त्रीवै सुतचारी । दिन दिनी इनेते नाथ
 हर्महि होई सुखभारी ॥ गावहि गुण जे भे देव सुमन संकुली अरि
 लाये ॥ किणविध उत्साह जाहिं मुख एक न गाये ॥
 दो० जिनके नाम प्रतोपते जन्म मरण दुखा जाय ॥
 भूप भवनसो प्रेमवशा रह्यो कान वैदेवाया ॥
 परमी असन्न भूप सेव रानी देखत सुत चारो छवि खानी ॥
 कोशलेपुर नित नवल उछाहू चिहुँदिशि उमगत मोदी प्रवाहू ॥
 मंगल मोदी सब्यनित तोके मंगल मय मुन्दर सुत जाके ॥
 छवि समुद्र नहिं वरणि सिराई ॥ लख शतकोटि मदन बलिजई ॥
 अञ्ज अरुणपद कोमल लाला ॥ जगतनखनद्युति विशद सुजीला ॥
 रुनु भुनु धुनि पेजनियां करहीं ॥ मुनि स्व ध्यान मुनिनके टरहीं ॥
 कहिन जायकटि किंकिणिशोभा ॥ उर मणिमाल देखि मनलोभा ॥
 बाहु विशाल विभूषण भूरी ॥ करमूढ करज सनख श्रुतिरूरी ॥
 दो० पूरण शशि सुखमा वदन चिबुकाधर ॥ द्विजमंजु ॥
 नासा शुचि सीपज लसत ललित अक्ष नवकजु ॥
 लघु लघु कुंडल करण विराजे ॥ गोल कपोलन मे छवि छाजे ॥

मत्प्रथमधनुसम मृकुटि विशाली ॥ तिलक अनूप सोहि वरभाला ॥
 शीशु चोतनी सुभगे सुहाई ॥ पीतप्रसेन भूप्रणे द्विविध्याई ॥
 नखशिख सुत सुंदर सुखदाता ॥ निरखिनिहालहोहिं पितुमाता ॥
 सानुज सखन सहित रघुसई ॥ खेलहिं खेल महींपन जाई ॥
 भोजन हित नृपुणो लि प्रठावें ॥ सखनसैसीजछांड़ि नहिं आवें ॥
 कौशल्य सुतवा आपुड जिई ॥ चलहिंसाजितकि आवतमाई ॥
 कहहिजननिवलि सुतकछुखाहू ॥ चोलत तुमहिं बैठि नरनाहू ॥
 दो० ॥ सुनि जिनतीके वचन भुआये चलि तवसाधु ॥ नाना ॥
 विविहसि भूप रज गौरि दिग बैठायें गहि हाथ ॥ शीतली ॥
 कीरीदु छन्द ॥ जेवत पै थिरलि तनेही लखि औसरु भोजिले
 किलकावत । आवत फेरि समीप नही बहु आतिना सोमहिपाल
 बुलावत ॥ संगति जाय सखन मिले खिलेला अपारन दुंदि म-
 चावत । जा सुखको तरसै विधि शंकरा बाहि सुभाय क्षमापति पा-
 वता ॥ ग्रामवेषु छवि देखि छकै धरजाय सखीन सुवैन सुनावहिं ॥
 धन्य सखी जिनवासपरोसि विलोकत जे निशि दोसि रहुवहिं ॥
 हौं जंत्रते लखिरूप सखी उन्न मोहिं जेही तवते कछु भावहि । त्रा-
 हतहै मने मोर यही लिय गोद करौ । वसुयाम खिलेलावहि । खेलतद्वीर
 तिलोकि कबौ पुरलोग उदास उद्वेग भंकारहिं । छुमि निशेश सु-
 खामल कोकरु सुंदर मिष्ट सुमेवहि धारहि ॥ भौति अनेकन प्यार
 करे सुखताकि प्रठावत वेगि अगारहिं । कोशलताथे कि भास्यवडी
 भगवन्त लहै कहि शेषत प्रारहिं ॥ सुत ॥ जगदी हा
 दो० । कवहुं प्रात मिलिकरि सखा दार सुकारति जाय ॥ ० ॥
 ॥ खेलन हित सुनि तुरत तव जाय जगप्रतिभाय ॥
 ॥ सुंदर छंद ॥ निशि वीतिगई सुत प्रात भयो उठियेसुर सन्तनके

हितकारी। श्रुति क्षीणभई नभ तारनकी चकवाक लह्यो सुख पेखि
 त्तमारी। निज संगसखा संव श्वेलनको बहुवार गये नृपद्वार पुका-
 री। अब सोवनकी अहि वैखडी भगवन्त जगावेति है महतारी।।
 सुनि सुंदर वैन उठे रघुनन्दा कृपा सुखकन्द स्वचन्द अचारी।। धद-
 नांम्युज सोकुम्हिलाय रह्यो ब्रश आलस नैन सके न उधारी।। श्रुति
 कुडली लोल कपोलनेपे अलके घुघुवारि लिसै अतिकारी। जनु च-
 दहि घेरि घटा भगवन्त छटापट पीत किहै उजियासी।। सुखधाम
 विराजत राम महाछवि कोटि मनोज लंजावनि हारी। जननीयुगे
 नैन चकोर सशांक समास्यरही पल रोकि निहारी।। पुतरी जिमि
 दारु विलोकि रही ब्रश प्रेम दशा तनकेरि विसारी। छविमान सुधा-
 समकै भगवन्त सुखाम्युज धोवत लै शुचिवारी।।

दो० बदल धोइ करवाइ किछु रुचिर कलेऊ माय।

भूपण वसन सवारि तन दीन्हो द्वार पंथये।।

कवित्त। शोभ मुखपानकी अधर अरुणानकी मधुर सुसकान
 की चिबुक दैतिमानकी। निसा छविमानकी कुण्डल श्रुतिकान
 की कमान भौहतनकी कमल अखियानकी।। कुचितालकान
 की भलक टोपियानकी सुपीत वसनानकी लिसनि वपुषानकी।
 भूपके ललानकी समान सुखमानकी न आन रुपमानकी वखाने
 सोन मानकी।। सानुजे सखान राम खेले चाउगान मोदपुंज ऊ-
 मगान जो ब्रखानि प्रावनाहीमें। चंगको उड़वै आसमान लौ च-
 दावै एकएकसो लड़वै पंच लावै भूरि ताहीमें।। भविस नचावै
 भूमि मन्नको अचावै एक कोडरा खचाय वैठि जावै आपु वाहीमें।
 लूकि पुनि जावै एक दूदने सिधावै देखि चावही चदावै कौन भांति
 सो सराहीमें।। श्यामश्याम अंगमै सुपट पीत रंगमै कि विजु

तव प्रभु चरित, लपण सबगावा । सुनितन पुलक, मोद मन छावा ।
 तव करजोरि, कछो, द्विजवाता । को पति कहीं, गयो तवमाता ।
 अवध नृपति, दशरथ अँगनाई । तहँ अवतार लीन तिन्हजाई ।
 कछु, दिन गये जनकपुरमाही । हमहुँ आइ प्रकटव पुनि ताही ।

दो० सुनि सीताके वचन द्विज शुचि, सुन्दर सुखदैन ।

संकल लोकपति राम कहँ जानि हिये अतिचैन ॥

सिय इच्छा विनुश्रम अवध गये, आइ ततकाल ।

कह प्रभु द्विजपाये सुरभि नायो तव प्रदभालि ॥

कवित्त ॥ जैति जैति राम तौ प्रभावहै अपार नाथ अज्ञतावे

वश्य मंदबुद्धि में न जानी है । आपुके समानि ईश दूसरो न ईश

और लोक है न आन ज्यो सु आपु सुखदानी है ॥ कीरति कलाप

लोक, लोकनै प्रसिद्ध आपु भाग्यवंत दीख में वियोन स्वामि

सानी है । फेरि पंकजाक्ष कोर ओर दासहेरि नाथ कीजिये क्षमासे

जौन ढीठतातिथानी है ॥

दो० सुनत वचन सनमानि बहु विदा किये द्विजसोई ।

गयो भवन अतिमुदितमन प्रभु प्रभाव जिय जोइ ॥

सवैया ॥ रामचरित्र विचित्र महा कहि कोकवि कोविद पारहि

पावै । नेति वदै ज्यहि वेद सदा चेतुराननहुक अगम्य लखावै ॥

शेष थकै कहि पारनहीं अरु शारिदकी वर बुद्धि लजावै । पावन

हेत गिरा भगवन्त कच्छुक यथामति सादर गावै ॥

सुनहु शिवा संतन सुखदाई । बहुविधि चरित करहि रघुसाई ॥

कबहुँ प्रात उठिकै भगवाना । सीनुज करि सरयू अस्नाना ॥

करि भोजन ताम्बूलन खाई । सहित मोद मन चारिउ भाई ॥

लीन्ह सकल निज सखा हँकारी । वन मृगया हित कीन्ह तयारी ॥

दो० विविध भक्ति भूषण वसन अंग अंग सजे बनाय ।
 वरणिसेके नहि सहसमुख सो सुखमा समुदाय ॥
 कवित्त ॥ सोहै शीश चौतनी सुभग धुंधुवारी लटे कुण्डल अ-
 नूप गोल गालनपै भलकै । पङ्कज बदन चारु सुखमा सदन देखि
 लाजत मदनमाल मुक्ककंठ हलकै ॥ जरीजरवफत ऊन रेशमी पो-
 शाक साजि छोरन दुशाल गुच्छ मोतिभा मुछलकै । पानि चाप
 वानघारि खंचिकै निपंग लंक रूपता विलोकि सो अपल होत प-
 लकै ॥ साहनी बोलाय दीन शासनै तेजाय वेगि जाति जाति
 अश्वनै लयायकै तयारहै । ताजी तूरकानी मूलतानी फीरगानी
 देश अरब इरानी रूम काबुली खंधारहै ॥ काशमीरि गूजराति का-
 डियाहुवार कच्छि भांगंधी दरबई मरहट्ट माड़वारहै । औरहू अ-
 नेक देश देशके तुरंग साजि आनि जो बखानि जात नाहि वैशु-
 मारहै ॥ सैदली कूपूरि जर्द तेलिया बलख चीनि नोकरा कुमैत सब्ज
 धानिया सुरंगमे । कुल्लोकार सुरखा सोनीहुला समुद श्याम करन
 वदामि जाल सोहै हर्द रंगमे ॥ किस्मिसी अंगूरि लाखि दूधियाँ
 सु ईलमासि फूलवारि गरसैत गूलदार अंगमे । तामड़ा मुसुकिं
 चूरि सीरगा सैजाफि और भाग्यवन्त वाजिहै अनन्त रङ्ग रङ्गमे ॥
 सुंदर अनूप नव्य जातरूप हीर आदि रचित सुजीन चारु पूजी
 जखन्दनै । भाग्यवन्त गूधि आल चोटिनै लगाय पान कञ्चन
 रकोव मञ्जु खीचि पुष्ट तंगनै ॥ दूमची लंगाम हेम वागे दिव्य
 रेशम कि हैकल हैमेलहै अमोल पेशवन्दनै । कामदार ज्योति
 वान डारिके सुजीनपोश कायजासमेत लाय वाजि शोभकन्दनै ॥
 सबैया ॥ सानैदराम संबधु सखा सब कूदि सवार भये बरवाजी ।
 औरहू गजेकुमार अनेक विभूषण चीर सुअंगनै माजी ॥ शीश

धरे कइ कीट मनोहर काहुकि टोपिनकी छवि छाजी । बांधिके
पगरी अगरी छविजात कही नहिं सोति विराजी ॥ कइ पट्टन
भारि दुपट्टन बांधि सुखोरहि पृष्ठि उलट्टतहै । उरमाल अनूप
लिये करमें कइ लंकजरी सु लपट्टत है ॥ अनमोल बढे सुदुशा
लकई लखिभास्कर भा ज्यहि हट्टतहै । चरनौ किमि रंगदुशालन
के एक एकनते वर ठट्टतहै ॥ कवित्त ॥ कासनी सुरंगसेत काहिली
वदामि नील सुंदली गुलाबि जई वैजनी अंगूरिया । नारंगी सहावि
ऊदि जौजई गुलालि सब्ज धानिया विलाखिलाल किस्मिसी अ
वीरिया ॥ कोचकी सजाफरानि मंगियाहु आसमानि शर्वती चुनौ
टियारु पिरतई कपरिया ॥ सुर्मई जंगालि मंजु कंजई सुभाग्यवन्त
कोकई स्वनाहुला सिंगरि औ भंजीठिया ॥ अङ्गन अनूप दिव्य
भूषण विराजमान हेमहीर माणिक सुजाल ज्योति जागती । कुं
डल सकान शुभ जासिका बुलाक सोह मंजुल सुमाल मुक्क कम्बु
कण्ठ हालती ॥ रूपके अगार वै किशोर भेसवार वाजि भाग्यवन्त
तासमै कि गाउमै सु क्यागती । साधिवाग आसनै लगाय दंग
वाजिनै सुचालनै चलाव जो वखानि मोन आवती ॥ सवैया ॥
राजकुमार नचावत वाजि चलावतहै बहु सुंदरचाली । परन बांधि
सुदरन धावत कोइ चलावत पोइरुहाली ॥ कोइ कुदावत भूमिखडे
सुजभावत कोइ फँदावत नाली । कौन प्रकार कहै भगवन्त सुएकन
सो गति एक निराली ॥ देवन व्योम अनन्द भरे लखि फूलन की
भरि भूपरलाई । पावन कीरति राघवकी भगवन्त रहे सब सादर
गाई ॥ जातबले मृगयार्थ जने प्रभु आपत सो जल चनै प्रभुताई ।
नाघत शैलनदी नदनार अट्टे सु अरण्या गंभीरत जाई ॥ देखिपरे
मृगया उतरे सुतरे निज वाजिनते मदभारे । ज नि पुनीत कुरंग

कृपाकर लै धनुवाण तिन्हें तकिमारे ॥ रामवधे निजनाण जिते मृग
 ते तुरजै हरिधाम सिधारे । प्रेखि प्रभाव कहै सुरजै प्रभु जै प्रभु जै प्रभु
 औ धंदुलारे ॥ कवित्त ॥ खेलिकै शिंकार भानु अस्तकाल जानि
 फांदि वाजि ह्वै सवार वेगि भोनही सिधाये है । वेगता विलोकि
 तौ न हारती है मन गति पावही न पार पोत गौनह लजाये है ॥
 हंस वंश भूपण कृपाल रामचन्द्र कन्द आनन्द स्वच्छन्द मध्य औ ध
 सद्य आये है । भाग्यवंत पावन सुयरा शोक दावन सुताप त्रे न
 शावन कृलाप वंदि गाये है ॥ शुभगीत छंद ॥ जै राम पूषण वंश
 भूपण अमल प्रंकज लोचन । सुखसिन्धु पूरणकाम शोभाधाम
 भौभय मोचन ॥ कृत चरित संसृत तरण कलिमल हरण सुर मुनि
 रंजन । आनन्द कन्द स्वच्छन्द व्यापक विश्व खल दल गंजन ॥
 इमि सुयश गावत वंदि पावन राम धर आवत भये । शिरनाय भू
 पति पांय आशिप पाय पुनि भीतर गये ॥ लखि मातु सानंद धाय
 लीन्ह्यो लायउर चारौ तनै । कहि सकन शारद शेष सुख सोजौ नभा
 जननी मनै ॥ पोशाक सकल उतारि पुनि मुख धोइ मन आनंद
 लह्यो । लखि तान भोजन करहु सुन्दर जाय वलि जननी कह्यो ॥
 मुनि मातुके चरवेन करुणा ऐन सानुज आयकै । भगवन्त कीन्ह्यो
 अशन सादर मातु परस्यो चायकै ॥

दो० । जूठनिको गरजी करै अरजी जन भगवन्त ।

दीजे करि मरजी सपदि हरजीवन निजतन्त ॥

सुभग सेज पुनि चारौ भाई । कीन शयन सुखमा अधिकई ॥
 प्रात जागि सानुज स्थराई । गुरु पितु मातु चरण शिरनाई ॥
 शासन लहि कारज पुर करही । लखिलखि भूप मोद मन भरही ॥
 पुज्जन देखि चरित सुखपावहि । जहतह विमल रामगुण गावहि ॥

कथा अनेक कहहिं मुनि ज्ञानी । सादर सुनहिं सकलसुखमानी ॥
 कवहुं आपु प्रभु कहहिं बुझाई । सुनहिं सप्रेम मुदित सब भाई ॥
 नारदादि मुनिवर नित आवैं । सादर प्रभुपावन यश गावैं ॥
 यहि विधि अवधपुरी रघुवीरा । करहिं चरित भजन भव भीरा ॥
 ॥ छप्यै ॥ जो प्रभु अंगम लखात शेष शारद शिव वेदै । नारद
 शुक सनकादि लहत ब्रह्महु नहिं भेदै ॥ जासुनाम वल सृजत
 लोक विधि नाशत ईशा । पालत विष्णु प्रभावं जासु आज्ञा सब
 शीशा ॥ स्वइनाथ सकल साकेतपति करुणाकर जन दुखहरण ।
 धरि मनुज देह अवधेश गृह करत चरित संसृत तरण ॥ स्वइ सु-
 कृती शुचि साधु स्वई पंडित स्वइ ज्ञानी । स्वइ दाता धनवान चतुर
 सोई गुणखानी ॥ स्वइ पावन मन वचन कर्म रोई नयनागर । जप
 तप तीरथ सफल तासु सोई सुख सागर ॥ तजि कपट सकल ध्रुव
 प्रीतिकरि रामदास जो हैरहै । भगवंत प्रशंसत संत त्यहि जीवन
 फल जग स्वै लहै ॥

इति श्रीरामचन्द्रकेशोरत्नोत्तमवर्णनोत्तमचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

दो० रघुपति जन्म चरित्र शुचि मे कहु कह्यो बखानि ।
 सीय जन्मकर चरित अब कहां सकल सुखदानि ॥
 सीतासम पावन करण सीतायश सुख कन्द ।
 सीता जन मन दुख हरण गावत सीता वृन्द ॥
 विप्र चन्द्रशर्मा रह्यो एक परम हरिभक्त ।
 नारि चंद्रभागा सु त्यहि दोऊ विषय विरक्त ॥
 हरिसनेह सम्भारि हिय नैमिष वन चलिजाय ।
 युगलमंत्र जपि तपअमित कीन्है दोउ सतिभाय ॥
 सबैया ॥ साधन सिद्ध भयो दिन पूर्ण सशक्ति प्रभू तव दर्श

दिखायो । है सुप्रसन्न कह्यो वर मोंगहु जो मनमे अभिलाप रहा-
यो ॥ कै पुटपानि प्रणाम कियो अति प्रेमभरे द्विजवैत सुनायो ।
शक्ति सुता करि नाथ लहौं सुजमात्र चहौं तुम सो मन्त्रभायो ॥
सिद्ध मनोरथ भे तुम्हरे सब योंकहि फेरि कह्यो प्रभु वैना । है जन-
कापु जवै मिथिलापति होव तहां यइ रानि सुनैना ॥ अंशन संयुत
है तनया मम शक्ति तवै प्रकटी तव ऐना । हौमिलिहौ जिमि आनि
तुम्है तहँ सो सु प्रसंग सुनौ सुखदैना ॥

मनु शतरूपा तप बहु कीन्हा । तिन्ह कहँ मै प्रथमै वर दीन्हा ॥
अवध नृपति ते हैहहि जाई । तिनके तनय होव हम आई ॥
तहँ जामात्र होव अस भापा । करिहौ तव पूरण अभिलाषा ॥
भये बहुरि प्रभु अंतरधाना । द्विजमनमाहि परमसुखमाना ॥
कछु दिन गये त्यागि तनु दयऊ । मिथिलापुर प्रकटतदोउभयऊ ॥
भूप जनक अरु रानि सुनैना । सब गुणखानि सुकृतसुखऐना ॥
राज करत बीते बहुकाला । एक समय तहँ परेउ दुकाला ॥
भूप बुधन तव कह्यो हँकारी । करिय युक्ति वरपै ज्यहि वारी ॥
दो० तव तिन कह नृप इन्द्रमुख जो कीजे यहि काल ।

तौ पुनि वरपै चारि बहु जग सब होइ सुकाल ॥
कीन्हँ तुरत स्वइ भूप उपाई । चाभीकर कर हल बनवाई ॥
शतानंद अरु भूपति रानी । जोतन लगे परम सुखमानी ॥
जव प्रद्वार घूमि हल आयो । सप्तमभू यक विवर लखायो ॥
तहँ पुनि प्रकटयो एक विमाना । अति सुन्दर नहि जाय बखाना ॥
अमित प्रकाश अमित छविछाजै । आदिशक्तित्यहिमाहि विराजै ॥
मध्य भूमिजा वैम किशोरी । राजत सकल सखी चहुँओरी ॥
रूपराशि वण्णौ किमि शोभा । लखि रतिकाम कोटिमनलोभा ॥

वरपि सुमन सुर नृपसन किहेऊ । पूरण शक्ति मुता तव भयऊ ॥
 दो०, याते यश पैहौ । अमित हैहै । सब मनकाम ।
 ॥ १ ॥ परब्रह्म यहि हेतु नृप आवहिगे तव धाम ॥
 मोदकछंद ॥ मानि सुताकर भाव महीपति । सेवहुलै घरजाय
 इन्है अति ॥ भूप विनै बहुभाति । किये जन्म । तौ सिय पूर्व चरित्र
 कहे सब ॥ फेरि विदेह विनै करियोकह । है शिशु देहु सु आनंद
 मो कहै ॥ लीन तवै शिशुरूप सियाधरि ॥ अन्तरधान विमान
 दियाकरि ॥ आनंद आनि सुता तव घर्महि । श्राद्धकिये अरु जात
 सुकर्महि ॥ माधव नौमि सुमंगल दिनमहि । शुक्ल सु पुण्य लिये
 सिय जन्महि ॥ विप्रन दान दिये बहुराजन ॥ वाजहि भाँति अन-
 कन वाजत ॥ आनंद मंगल छाँय स्वोपुर । भूपति मोद अपार
 लह्यो उर ॥
 लावनीछन्द ॥ आजु मिथिलेश घरमाई । सुतागुणरूपमे जाई ॥
 सुमन्नभदेव भरिलोये । नगनरनारि सुनिधाये ॥ लिये कर हेमकी
 थारी ॥ चलीं सब आरती बारी ॥ दो० ॥ भूप सदनभे भौर अति
 परमानंद स्वो छाँय । बंदी मांगध सूतगण गावत गुण समुदाय ॥
 शब्द तिहुँलोकमे छाई १ सखी सब मंगलै गाई । जनकपुरधूम
 है छाई ॥ लिये नृप बालि याचकहै ॥ किये तिनको अयाचकहै ॥
 दो० ॥ दान पाय नृप हाथ सरि । आनंद धरपापाय । उमगिचल्यो
 हे जनकपुर याचक सिंधु अधाय ॥ फिर पर द्वारना जाई २ हरप
 नरनागि सुरलोकै । दुवन दुखरेनि जिमि कोकै ॥ वधाई द्वार पै
 वाजै । मनो घन व्याम म गाजे ॥ दो० ॥ कउ नाचत गावत कऊ
 सस्वर दे दे ताल । मची कीच मगवाचरग परमानंद पुरवाल ॥
 रङ्ग पागस जनुपाई ३ जनक सम पुण्य काको है । मुता शक्त्योदि

जाकी हे ॥ नहीं ज्यहि ध्यान मुनि पाये ॥ स्वई भवि अङ्ग नृपलाये ॥
 दो० ॥ जन्म समय भो सीयके उत्सव आनंद जौन ॥ कहि न सके
 भगवत सो शेष शारदा तौन ॥ निगम हू नैति करिगाई ॥ ४३ ॥
 दिन प्रति अधिक मोदपुर छायो ॥ शुक्ल चतुर्दश रवि दिन आयो ॥
 कीन्ह छेंडी भूपति युत प्रीती ॥ जस कहु लोक वेद शुभरीती ॥
 जृतिया ॥ ज्येष्ठ कृष्ण गुरुवारा ॥ कीन्ह वारहौ सुदित भुवारा ॥
 लोक वेद विधि करि ॥ अमरगो ॥ गानि गुरु नाम धरन तव लागे ॥
 सुमि ॥ भयेति ना सुजा ॥ कहई सीता विद ॥ प्रबन्ध ॥ अहई ॥
 पितु यश हेत ॥ जानकी नायो ॥ अरु मैथिलि सम्बन्धिक ग्रामा ॥
 नामकरण यहि विधि गुरु कीन्ह ॥ पुनि आशीस भाति बहु दीन्हा ॥
 मुनि नृपराणि परम सुख मानरी ॥ द्विजज बोलि दीन्ही बहु दाना ॥
 दो० ॥ दिन दिन कन्या बेट लइमि शुक्ल पक्ष ज्यो चन्द ॥ ॥ ॥
 ॥ देखि देखि पितु मातु मन लहत परम आनन्द ॥ ॥ ॥
 नारद मुनि ॥ आयो ॥ एक वारा ॥ करि प्रणाम लो भवन शुभरा ॥
 तुरत सुतानुप ॥ आनि ॥ देखाई ॥ देखि ॥ रूप ॥ हरये ॥ मुनिराई ॥
 बोले मुनि सुनु भूपति ॥ बैना ॥ तिव कन्यका सकल गुण एना ॥
 जिन रंजन ॥ अंजन ॥ भवभारा ॥ आदिशक्ति खीन्हे ॥ अवतारा ॥
 परब्रह्म ॥ त्रिभुवन ॥ पति ॥ रामा ॥ यहि कहै ॥ रंमिलिहै ॥ सुत धाम ॥
 औरहु लक्षणा ॥ अमित ॥ अनूपा ॥ कहि पुनि श्रमन कीन्ह मुनि भूप ॥
 मुनि मुनि के वर वचन पुनीता ॥ धिखिलीन्ही ॥ उर ॥ अन्तर ॥ सीता ॥
 कछु दिन गये ॥ सुनेना ॥ रानी ॥ जन्मी ॥ अपर सुता ॥ मुख दानी ॥
 दो० ॥ नाम उमिली ॥ तामुकर ॥ अति सुदारी ॥ गुण धामि ॥ ॥ ॥
 बहुरि उभय जन्मत भई सुता कुशच जवाम ॥ ॥ ॥
 नाममांडी जैति ॥ जो श्रुतिक्रमति लघु जानि ॥ ॥ ॥

रूप शील गुणधामचहुँ प्रकटी नृपगृह आनि ॥
 हरिपदबन्द ॥ और अमित दासी तिनकेरी, आनि जन्म तह
 लीन्ही । मन वच कर्म, बालपनही-ते चितसेवन, महँ दीन्ही ॥
 अधि सिधि, आदि बंधूदेवनकी निमि वंशिन घरआई । धरिधरि
 सुन्दररूप जनकपुर भई प्रकट समुदाई ॥ खेलहिं एकसंग सादर
 सब करहिं चरित सुखदाई । बोलनि हँसनि देखि सुनि-सानँद, मातु
 पिता बलिजाई ॥ जासु चरण सेवत निशिवासर, उमा रमा ब्रह्मानी ।
 आदिशक्ति छविधाम जनकपुर भई प्रकट स्वइआनी ॥ जनकराज
 महाराज भाग्यवडि, को कहि पारहिषायो । अण्ड अनेक अमल
 जाको यश रह्यो छाइ सबठायो ॥ यहिप्रकार सियजन्म भूपगृह क-
 रत, चरित भौसेतू । अब सुनिये चितलाय कहौ शुभ सीयस्वयम्बर
 हेतू ॥ सवैया ॥ एकसमय शिवशंकरको मिथिलाधिप कीन तपोव्रत
 भारी । आयकह्यो शिव माँगहु सो वर जो मनमें अभिलाप तुम्हारी ॥
 कै सुप्रणाम कह्यो नृप मोकहँ देहु यहै वर एक पुरारी । सन्तत आपु
 धरे ज्यहि ध्यान स्वई प्रभु हौं भरिनैन निहारी ॥ तौ निज दीनशरा-
 सन शम्भु कह्यो नृपसो यहिपूजहु जाई । याहियते ममनाथ मिली
 भगवन्त तुम्है दिनयें क्लृआई ॥ मानि नरेश महेश कि वानि लगे
 धनु पूजन नैहँ लगौई । आठहु याम यहै मनकाम कवैप्रभु देखिय
 नैन अघाई ॥ कुण्डलिया ॥ आई एकदिन आपुनहि धनुथल ली-
 पनरानि । बोलिपठई जानकिहि, तुरत तहाँ तिन आनि ॥ तुरत
 तहाँ तिन आनि वामकर धनुलय लीन्ह्यो । दक्षिण कर मलभारि
 रुचिर चौकादे दीन्ह्यो ॥ धरित्यहिठामु, धनुपपुत्ति भवन सिधाई ।
 पूजन हित नृपजाय दीख चिता मनजाई ॥

दो० । भवनआइ पुनि हालसव रानिहि, पूछेउ राउ ।

सुनि रहिगे घुपसाधिकै गुनिमन सुता प्रभाउ ॥
 शौच-विशः पौढे नृपजाई ॥ स्वप्ने शिव असदीन वतई ॥
 धनुषण गहो सुतावर हेता ॥ उठिप्रभात नृप हृष समेता ॥
 कीन्ह प्रतिज्ञा शिवधनु जाई ॥ खण्डनकरी बरी सिय सोई ॥
 रंगअवनि रचि धनुष ॥ धराई ॥ देश देश नृप निवति बुलाई ॥
 वाणासुर रावण ॥ बलराशी ॥ वीर सुधन्वा भूपति काशी ॥
 इनसम अमित भूप बलवाना ॥ रङ्गभूमि बैठे करि माना ॥
 तवहिं भूप वंदीजन बोली ॥ कहेउकहहु सबसन प्रणखोली ॥
 ते उठाइ ॥ द्रुमुजा विशाला ॥ बोले सुनिहु सकल महिपाला ॥
 सवेया ॥ शङ्करचाप कठोर गरुअति जानतको जगमैनहिंजाको ॥
 राजसमाजमे शूर शिरोमणि जो करि है कइ भजनयाको ॥ होय
 चहै स्वइ रङ्ग कि राउ विचार ॥ विना वरि है सिय ताको ॥ कान ल-
 गाय सुनौ सब भूपति सत्य कहौं प्रणदै करि हाँको ॥
 दो वंदीजनके वचन सुनि नृप सब सहित हुलास ॥
 उठि उठि आसनते तवहिं आये शिव धनुपास ॥
 रावण वाणासुर सुभट जानत सर्व संसार ॥
 करन लगे बकवाद तव ॥ दोऊ आप भेभार ॥
 (रावण) स० ॥ देहु हमें इत शङ्करचाप कितै बरह राजकुमारि वने
 तावो ॥ जाहि उठाइ गये नृपहारि सुकै द्वय तीनिक दूक बहावों ॥
 हौं निज बीस भुजानवले यहि राजसमाजहि आजु देखावों ॥ का-
 रिखदै मुख राजनके लै राजकुमारिहि लङ्का सिधायों ॥
 (वाण) स० ॥ रेंदशकन्ध महामतिमन्द ॥ त्रिसौ दृगअन्ध नि-
 लज्ज सदायो ॥ जानतहैं न प्रभात शिवै जिन पानकियो त्रिष-
 कीरति दायो ॥ नाश कियो त्रिपुरासुर जो दृग तीसर सोलिके

मैन जरायो । तासु शरासन तोरुनको खरको असीले मुख तू खल
 आयोः । तजि वाद विनादिहि वादि सवै हठ्याडिं पराक्रम आनि
 करै । अत्र आजु सुराज समार्जुनमे जति कादरता निज चित्तधरै ॥
 शिवचाप सुभेरहुते गरुहै परसै जब पाणि तु जानिपरै । दश मुसुडने
 ताहि विखरडनकै सुख पाय सुलै यश जायघरै ॥

(रा०) दो० रे वदीजन कुदिलेते मुने न वात हमारि ॥
 राजसभामि क्यो नही लावत राजकुमारि ॥

(बाण) दो० हे रावण जो बल तुम्हैतौ किन तोरौ चाप ।

॥ तिनही तिन तोरे किमि पाइहौ राजपुत्रि को व्याप ॥

॥ (रावण) दो० ॥ जे भुजदण्ड प्रचण्डन सो वरिण्डन शत्रु अखंड

दहाहै । खरिण्ड अखरिण्डत पीश जलेश भुरेश दिल्यो पवि पुष्ट महा

है ॥ सुलक सौ शिवशैल उगारि जिय्यालीहि कलि कराल गहा

है । सोइ बने मम त्रिस भुजा यह तुच्छ पिनाक पुरान कहा है ॥

(बाण) दो० ॥ क्रीह प्रशंसतु अप्रहितें मुख शरि नदिये करि

जाहि विधातें । ताहि नही कछु पात अहै जु बनीय कहै बहुभा-

तिनवातें ॥ वातेनते नहि काजसरे यह नाहक मूढ लडावत घातें ।

होइजु बीसभुजात्र बलै कस आय शरासन चोरत नातें ॥

(रा०) दो० अहो बाण वादत कहा तरे भुज हतसारी ॥

॥ हैन सिकत इनते कछु इलीन्हें केवल धरि ॥

(बाण) दो० हे रावण मम भुजको जानिसि तैन प्रभावि ॥

॥ थोरों सो कछु कहतहीं नहिं करि बहुत बढाव ॥

॥ केवित्त ॥ हौं त्रिज पितृका प्रद भूजन क्रो जित जवा प्रावन

सुभीय प्राप्ति भुजन प्रनिसिया ॥ देखि तव रावण फिरत फेरि

भावने सु सार्तहू रमात लोके जावतै विलामिया ॥ लोके भुजदण्डन

अखण्डनपै आपने सुकरो क्षिति मण्डल को छत्रक प्रभासिया ।
भाग्यवन्त जानै कौन केतिकुधौ वरि, शोश शीशानपै दीन जाय
भुजन उसासिया ॥

(रावण) सबैया ॥ ब्राह्म वखानत काह ब्रथामुल, बाहुनके बल
पुञ्ज प्रतापहि । होतेहु वीरु प्रमाणिक जो बल पूरणहोत भुजानमें
आपहि ॥ तो किन लेतेहु भूवलमें बर वहुिनके बल आपने प्रापहि ।
जो करतूति सुकै जगमे परा काहेन लेतिहु जीति कलापहि ॥

(बाण) दो० पितुआनों काकेभवन सकल लोकदियदान ।
परब्रह्म रस लीनि सो प्रजीति दान मैदान ॥

कुण्ड ॥ सीरियो सब सुखकाज ज्यहि माख्यो खल वलवान ।
यधु मुखै भ्रम से सुभट जिन जीत्यो मैदान ॥ जिन जीत्यो मैदान
भुवन त्रैपालन करतौ ॥ पूरण ब्रह्मसमाने रचेत सोई संहरता ॥ सं-
हरता महि भार नेति जेहि वेद पुकार्यो । मांगन हित स्वइनाथ
हाय बलिप्राहि पसार्यो ॥

(श०) दो० हे बाणासुर भ्रम स्रया यहै बकवाद कलाप ।
बुभियनिहि गुलिजाइगो शिवे चापतेआप ॥

(बाण) क० ॥ ओरहीते और कहु कीन्हीं करतार ज्यहि जानी
नहि जात गति अतिरौ प्रबलहै । आण इत पूरण मिलनेकाज आज
हम गयो मिलि कहां आनि रावण अवलहै ॥ वादि बकवाद गयो
नाहकरे भाइ यह भूलिना सुनाए गारि अणराउ फलहै । भाग्यवन्त
कीरिति सुहेतहौ दखव चाप करै नृप आप मुत्रि राजही अचलहै ॥

(रावण) स० ॥ शरणा नाम वली भट आख्य सकै जग सोकि
हमे कहु कोरे । औरनकीन बखान करौ । यमराजहु सुखजुरे कर
जोरे ॥ नेकु नही बलवान तुम्है वतुवान कहा सुखसंभुव मेरे ।

तौ घृग मोहिं पुकारि कह्यो घरजाउँ जु आजु विना धनुतोरे ॥

दो० राजसभा तिनुका सरिस मय करि लेखीं वान ।

भूपसुताको देखि पुनि देखीं धनुपपुराने ॥

(वाण) सवैया ॥ रावण बातवनावतहै तु उठावत, क्योंहिं शंभु

शंरासन । आदिहिं वादिकरै चक्रवादि सुत्यागत क्यों कवादिन

आसन ॥ रे जड़ जानतहै कि नहीं जगज्जाहिर तै सुनिजै मदेना-

शन । पूरण क्यों मन भावतहोइ न जावत पूरकरै नृपशासन ॥

(रावण) भुजंगप्रयात छन्द ॥ रहे क्या वृथा काज वे लाज

माखी । न आवै तुभे बात रे वाणभाखी ॥

(वाण) बड़ोहैजु वातूलतै बाहुवीहा । कहै जो रुचै तोहिंसो रे अलीहा ॥

(रावण) करैगो तुक्या मोररे भुरिवाहाकरैगो हमेसेहिंसीताविवाह ॥

(वाण) जु साहसैवोहैं करीतौ दशारे । करैगो स्वई आजु हौ

राकसारे ॥

(रावण) सवैया ॥ भृंग सों वासुकि भूत गणेश सुगंगमनो

मकरन्दसुहेना । धूरिसो भूरि उड़ै प्रदगौरि मृणाल सो बाहु भयो

बलपेना ॥ आयुधसर्व समेत सुताहि उद्ययक्रिये गति पद्मसचैना ।

जानत वानहै वातसवै बर बाहुबलै भूमजानिततैना ॥

दो० वाणपिनकि पुरान में पलमें । लेवा । बढ़ाय ।

तुमहूँ तौ करि बलकहूँ देखीं । याहि उठायी ॥

(वाण) भेरे गुरुको धनु । यह रावन । सीता मेरी मातु सुहावन ॥

हुँ भौंति असमजस जानी । गवनेउ वाणभवन सुखमानी ॥

(रा०) दो० हौं विनुलीन्हे सीयकहूँ तौलगि टरीं नआन ॥

जौलगि सुनौ न दासको आरत शब्दसुकान ॥

येते महँ कहूँ राकसहि हत्यो वीर कउबान ॥

आरतशब्दसु तासु सुनि रावण कीन पयान ॥
 सत्रैयो ॥ सिंह समान पर्यो लखि एकन एकनको दरस्यो जिमि
 च्याला ॥ एकन व्याघ्र लख्यो कर लूवत एकन लाग यथा नल
 ज्वाला ॥ शम्भु समान लख्यो धनुवान गये ढिग भोक्कइ अंध भु-
 वाला । वातसवै जियजानि सन्नान किये उठिगौन गवे दशभाला ॥

दो० सबलभूप यहिबिधि सुकल गे मन समुझि प्रताप ।
 अबलभूप ज्वलकै थके टेरउ न शंकर चाप ॥
 बरियाई मोग्यो तवहिं व्याहा सुधन्वा राय ।
 भूपत दीन्हो कोपिदल सजिपुर घेस्यो आय ॥

छप्पै ॥ तासो जनक नरेश समर बहुभांतिन कीन्हा । जब त्यहि
 चह्यो सकोप आगि पुर चहुंदिशि दीन्हा ॥ तब सुमिरेउ मिथिलेश
 शंभु निज पठै सहाई । परदल सहित संहारि लीन त्यहि देशवसाई ॥
 छै सुथिर बहुरि मिथिलेश नृप धनुषयज्ञ कर साजकिय । बदि प्र-
 थम दिवस कातिक नृपन लिखि लिखि पत्र अपार दिय ॥

दो० पत्रपाय सजि साज बहु निज निज सकल नरेश ।
 चले परम आनंद मन पावनपुर मिथिलेश ॥

रशिभीमनखयोप्यासिहवर्मात्मजभगवतोर्सेहचिरचितायाभक्तिशिरोमणिप्रथवी

शामकीजन्मोत्सववर्णनोनामपंचमोऽध्याय ५ ॥

राम सीयकर जन्म सुहावा । निजमति सरिस कहुकमगावा ॥
 मुनि आगमन कहीं अवगाई । सादर सुनहु सुजन चितलाई ॥
 विश्वामित्र गाधि सुतजानी । सुसरितदवन थल भूलजानी ॥
 मुनिगण सहित करहिं तह त्रासा । भये इखित अति दनुजनत्रासा ॥
 लागहिं करन योग मुख जत्रहीं । आय विध्वंस करहिं खल तवहीं ॥
 तव मुनि हृदय मंत्र अम आना । कोशलपुर प्रकटे ॥ भगवाना ॥

लावहु जाय मोगिमें तिनका । ते दूजबंधु शमन करि इनका ॥
 करि हे मम मखकै रखवारी । अस विचारि मुनि तुरत सिधारी ॥
 दो० कोशलपुर प्राची दिशा सोरह योजन पाहिं ॥
 विश्वामित्र ऋषीश को शुभ आश्रमहै ताहिं ॥
 कार कृष्ण पञ्च दिवस मुनिवर कीन्है पयान ॥
 नौमीदिन आयि अवध करि सरसू अस्नान ॥
 द्वारपाल यक भेजिके दीन्ह्यो खरि जनार्ण ॥
 मुनि दशरथसानंद उठि सादर भेटयो आयी ॥
 त्रोटकबन्द ॥ करि दरदणामि ऋषीश्वरको । लये सादर भू
 चले घरको ॥ शुभ आसन बैठन को सुदिये । पुनि पूजन मोड
 भेति किये ॥ जुतरानि विनय बहु भेति कियो ॥ सुत चारिहुलै पर
 भेलि दियो ॥ छवि देखि मुनीश प्रसन्न हिये ॥ पुनि वारहि क
 जरीश दिये ॥
 दो० तव करजोरि महीपकह मुनि आयो ज्यहि काज ॥
 कहउ करत सो नाथ मे देर न लैहुँ आज ॥
 सबैयापी देव धरापदिज गो मुनि रखक सत्यव्रती मम बैन
 नीजे । निश्वर घोर सतावत मोहि करै मख आश्रम देत नहीजे
 सो दुखमानि भयो तव याचक धर्म विचारि भलो यशलीजे । स
 नुजसामहि देहु महीपति भारहि दुष्टन सो दुखबीजे ॥
 दो० गाधिसुवनके बचन इमि मुनि नृपगये सुखाय ॥
 जैसे परसत तुहिनके कसलजाय मुरकाय ॥
 पुनि धरिधीर महीप कह मोग्यो मुनि न विचारि ॥
 राम लपण किमि देउ दूज जीवनप्राण हमारि ॥
 सबैया ॥ मोगहु धनु महीधन कोप सरोपदियो सब शी

यामै । धामहु वामदियो विनखेद करौ इनकारण रचकतामै ॥ प्राण
समान प्रियाकछुदेह न देउ स्वऊ मुनि एक छनामै । राउर काज
दियो सबआज वनै यकदेत न केवल रामै ॥ हे मुनिराज विचारकरौ
सुकुमार कहाँ सुतहैं ममवारे । राकस घोर कठोर कहाँ गिरिसों ब-
लवान महाभयकरे ॥ जे धनुवानगहै नहिं जानत बालसखा संग
खेलनहारे । ते लरि है किमि संयुगमें मुनि मॉग्यहु तौ नहिं योग
विचारे ॥ किरीटछन्द ॥ रामसनेहमई मुनि वानि कह्यो ऋषिराज
सुनो महिपालक । चातुर वीर बड़े रणधीर न जानिय आपु इन्है
करि बालक ॥ रक्षकहैं सुर साधुनके अरु घोर तमीचर वृन्दन घा-
लक । मानिसही ममवानि महीपति द्यौ चलिभेटहिं मो दुखेजालक ॥

दो० तव वशिष्ठ बहुभौति सों समुभाये नरनाह ।

जग मंगलके काज सुत दीजे सहित उच्चाह ॥

कुण्डलिका ॥ दीजे नृप मुनिराज कहैं पुत्र परम सुखमानि ।
निश्चरदलि मखराखिके वेगि मिलहिगे आनि ॥ वेगि मिलहिंगे
आनि लाभ इनको अतिहोई । होई जगयश आपु विलेव कीजे
नहिं कोई ॥ कोई भौति न आन गुनियमनमें मुनिलीजे । लीजे
आयसुमानि मुनिहिं सादर सुतदीजे ॥

दो० गुरुवशिष्ठके वचनमुनि नृप द्रउतने बुलाय ।

दीन सोपि मुनिराज कहैं कुल सवरीति सिखाय ॥

सवैया ॥ मानि पिता गुरु मातु समान सदा मुनिसेवनमें चि-
तलायो । वैन कठोरकह्यो न कभू जन याचक दानदिह्यो मनभायो ॥
भूलिलख्यो परनारि दिशा नहिं सम्मुख शत्रुन पीठि तकगयो ॥ कै
मुनि कौशिककाज सवै सुत आतुर लौटि घरे निजआयो ॥ छप्यै ॥
पितुआयसु धरि शीश वेगि सानुज रघुराई । जननि जनक शिर-

नाय मुदितमन आशिपपाई ॥ लीले कर धनुवान कसे सुन्दर कटि
भाथा । श्याम गौर द्धुवन्धु निरसि लाजत रतिनाथा ॥ मुनिराज
परम आनन्दमन जपतपकर फल जनुमित्यो । बहुभाँति नृपहि
आशीपदय राम लपण संगलेचल्यो ॥

दो० चलतसयय हनुमानको दीन छोरी रघुराय ।
कह्यो कछुक दिनम तुम्हें मिलवै वनमे आय ॥
कवित्त ॥ जात मग ताडका करारूप व्योममाहि आवत वि-
लाकि मुनि रामही बतायो है । देखिताहि राघवेश कौशिकै कह्यो
कि नाथ कामिनी विहीन नाह नामशकगायो है ॥ ताहपै न सा-
मुहे समर कौन भौति याहि मारिये न रीति वंश क्षत्रियो अहायो है ॥
होय जैस आयसु कृपालको करौ म शीघ्र राउरे के काज हेत तात
यो पढायो है ॥

दो० रामचन्द्रके वचनमुनि कह मुनि कौशिक यह ।
पातकमग्न यह राकसी मारिय विनु संदेह ॥
सुनत राम एकै विशिख तामुप्राण हरिलीन ।
दीनजानि त्यहि दीनहित तुरतहि निजपददीन ॥
कन्या यक्षसुकेत यह हती रूप आगार ।
घटज शाप कृपभइ कीन्हे हरि उद्धार ॥
प्रभुप्रभाव लखिके रूपस हृदय हर्ष अतिकीन ।
विद्यानिधि भगवान कह विद्या बहुविधि दीन ॥
सत्रैया ॥ लाग न प्यास सुधा ज्यहिते न घटै बल तेज तनोपर-
चावै । सुन्दर मङ्गलमे मगदायक त्रासहु नीद समीप न आवै ॥
विघ्न निवारण शत्रु विदारण संग अनेकन जे गनिजावै । आयुष्य
सिद्धि समर्पि सर्वे निज आश्रमलै प्रभुको सहचावै ॥

दो० पौडश विधि पूजन किये दिये मूल फलखान ।
 प्रातःसमय शुभ जानिके बोले श्रीभगवान् ॥
 ॥ सबैया ॥ निर्भय यज्ञकरो तुम जाय मजे धनुवान खड़े हम
 आहै । आयसुपाय अरम्भ किये मख देखत धूम निशाचर गहै ॥
 लैदल धायचल्यो जवहीं प्रभु माख्योवान विनाफरकाहै । लागतही
 शतयोजन पार पयोनिधि जायमरीच गिराहै ॥ रामचहोरि सुधारि
 शरासन जारया पावकवान सुवाहै । लक्ष्मण सेन संहार किये सब
 रावस एकन भागि वचाहै ॥ शोक मये मुनि वृन्दनके मख प्रेरण भे
 ऋषि मोद लहाहै । देव अनन्दभर भगवंत कर नभजे जयकार महाहै ॥
 दो० पुनि मुनि बोले राम सौ तात जनकपुर माहि ।
 ॥ अद्भुत एक कौतुक अहै चलहु देखिये ताहि ॥
 ॥ सबैया ॥ कीन विदेह अहै अणयो शिव चाप कठोर जुके दलि
 डारि । सादर ताहि वरी तेनया महिपाल जुरे बहुगे सबहारी ॥ टारि
 सक्योधनु नेकु क्यहु नहि रावण वाणहि हारि सिधारी । दूरिकगे
 चलिके रघुनायक राजहि धर्म कुसकट भारी ॥
 दो० धनुपयज्ञ मुनि जनकपुर रघुकुल कमल पतंग
 ॥ राम लपण द्रुप वन्धुवर हरपि चल मुनिस्वर्ग ॥
 छप्ये ॥ नराकार एक शिलापरी अगे प्रभुदेखा । पूंछेउ कौशिक
 पाहि कहाँ मुनि हाल विशेषा ॥ गौतम ऋषिकी नारि परम सुं
 दरि गुणखानी । ऋषि तेनुधर विबुधेश वंचि त्यहि सौ रति ठानी ॥
 ऋषि आय देखिकरि कोप तव दीन शाप सुरराज कहै । भगएक
 हेत आयो इहा हाय सहस तवदेह महै ॥ वनाक्षरी ॥ देखि ऋषि
 याहि फेरि कोपिके कुशापदीन पाहन स्वरूप द्वेके तोहू दुःख भोगु
 जाय । कीन्हीं जव अस्तति अपारम्भि दीनभापि रामपद धरि-

लागि जाई पाप तू नशाय ॥ इन्द्रहू अपारकीन अस्तुती कहा कि
जाउ चाप धुनि सुनि अक्षहैहै कछू कालपाय । सोईहै अहल्या
यह चाहती चरणधूरि कीजिये कृपा स्वराम दीजिये चरण छाय ॥
दो० सुनत राम त्यहि शीशनिज दीन्ह्यो चरण छुवाय ।

दिव्यरूप है करनलागि अस्तुति अति हरपाय ॥

मात्रात्रिमंगी छन्द ॥ जैजै रघुनन्दन असुर निकन्दन हर अघ
वृन्दन भारमही । यश अमल अनन्ता तव भगवन्ता कह श्रुति संता
पारनही ॥ सब गुण गण भारा रूप उदारा प्रभु सुख सारा आप
अहै । ज्यहि दरश प्रभावा में गतिपावा सकल नशावा पाप अहै ॥
में जड़ मतिपर्मा पूरुव जन्मा अमित कुकर्मा करत भई । करि कृपा
कृपाला पदरज भाला धरि अघजाला दूरिकई ॥ किमि विनय सु-
नाऊँ पद शिरनाऊँ यह वरपाऊँ रामप्रभू । तव चरणन माहीं प्रीति
सदाहीं रहन छुटाहीं नाथ कभू ॥ भावत मन पाई वर सुखदाई पद
शिरनाई हरपभरी । जैजै बहुभाखी प्रभुउरसाखी निज पति लोकै
गमनकरी ॥ सुर देखत हरपे प्रभुपर वरपे सुमन जैति जय व्योम
कही । यह कीरति पावन परम सुहावन विशद तिहूँपुर छायरही ॥

स० ॥ विनु कारण राम कृपालसदा शरणागत पालक वानिहिये ।
अपराध अपार करी ऋपिनारि कृपाकरिकै गति ताहिदिये ॥ अस-
जानि नितै भगवन्त भजौ करुणाकरको दृढ़नेम लिये । नतु जा-
इहि जन्म अकार्य वृथाफल कौनकहौ जगमाहिं जिये ॥

पुनि सानेद सानुज रघुनाथा । गमन कीन्ह आगे मुनिसाथा ॥
पहुँचे जाइ देव सरितीरा । सानुज करि प्रणाम रघुवीरा ॥
पुनि मुनिसन पूछेउ रघुराई । क्यहिविधिनाथगंग महिआई ॥
अरु उत्पति क्यहिविधि भै गंगा । कहहुनाथ सो सकल प्रसंगा ॥

पुनि मुनिकह तव कुलमें ताता । भयो सगर नृप जग विख्याता ॥
 केशि सुमति युग तिय तिन रहेऊ । विनसुत दुखित भूप मन भयऊ ॥
 त्रियन सहित नृप कानन जाई । सुतहित, तपकीन्हे अधिकारै ॥
 भृगु तव आइ, देन वर लाग्यो । एक पुत्र केशी तिय मांग्यो ॥
 दो० सुमतिकह्यो प्रभुदीजिये म्वहिसुत साठिहजार ।

एवमस्तु कहि भृगुगये आयउ नृप आगार ॥

तशि सुवन असमंजस जयऊ । अंशुमान तिनके सुत भयऊ ॥
 असमंजसहि शिशुन बध दोषा । घर बाहिर किय नृप सहरोषा ॥
 षठिसहस्र सुमति सुत जाई । ते रणधीर, वीर, सब भाई ॥
 पति सगर यज्ञ जब कीन्हा । छाड़्यउ वाजि इन्द्र हरिलीन्हा ॥
 पाताल कपिलमुनि नेरे । बाँध्यो नहि प्रायो नृपहेरे ॥
 पठ्ये सुत साठिहजारा । तिन दूँढयो सब जगत मँभारा ॥
 हँपाये महिखोदन लागे । पहुँचे जाइ कपिलके आगे ॥
 खिहय मुनिहि वचन कहु कहेऊ । खोलत पलक भस्म सब भयऊ ॥
 दो० अंशुमान कह बोलि पुनि कह्यो भूप समुभाय ।

सुत नहि आये जाय तुम लावहु खोज लगाय ॥

गीतिकाछन्द ॥ सुनि तातके इमिवैन सादर अंशुमान सिधा-
 । मगरुड मिलि ज्यहि भौति भे सुत नाश हाल बतायऊ ॥
 गरुडमुनि पहँजाय किय बहु विनय हय तौ पायऊ । स्वगनाथ
 अंशुमान सो कहि वचन ऐस सुनायऊ ॥

० गंगा जो आवहि अवनितरै पितृ तव आसु ।

अंशुमान सों भापि इमि गे स्वगपति हरि पास ॥

ल्लिका छन्द ॥ अंशुमान भौत आइ । हाल भूपको सुनाइ ॥

। पाय बोलिलीन । विप्रवृन्द यज्ञकीन ॥ राज अंशुमान दीन ।

भक्तिशिरोमणि ।

गोन काननापुकीन ॥ तोमरछन्द ॥ बहुभाति स्वातपकीन । पुनि
 त्यागिते तनुदीन ॥ अशुमान पुत्रदलीप । तिन्ह राजदे सुमहीप ।
 धनगौन आपहुकीन ॥ तपके सुत्यागि तनुदीन ॥ ॥ ॥ ॥
 धागीरथ दलीपके भयऊ । जिनकी सुयश लोकतिहुच्यऊ ।
 सुतहिं राजदै नृप वन गयऊ । करितेप कठिन तहां त्यजमस्यऊ ।
 पुत्र भगीरथ के काकुस्था । भये जवहिं सब भांति समर्था ।
 तिनहिं राज दे गे नृप कानन । कीन अमित तप लखितुरानन ।
 आइ कह्यो मांगहु वरराई । जोरि पाणि कह नृप शिरनाई ।
 नाथ कृपांकरि दीजे याही । आवहिं गंग अवनिके माही ।
 सुनि अजकहा शिवहितुमध्यावो । तिनते मांगि एस बरलावो ।
 गंगहि महि हम छोड़ी जवही । राखहिं सोकि जटनमे तवही ।
 ॥ दो० ॥ तव भागीरथ शम्भुको बहु प्रकार तप कीन ।
 राखव सुरसरि सोकि हम द्वै प्रसन्न बरदीन ॥ ॥ ॥
 पुनिअस्तुति विधिसो नृपकीन्ही । तव सुरसरिहि छोडि अजदीन ।
 हाहाकार । करत सोधई दीन शम्भु निज जटा बढा ।
 त्यहि मह सुरसरि धार समानी । नृप एक तह रही भुला ।
 भागीरथ । ॥ ॥ ॥ । गहिंकर जटा गारि शिव दी

तनु महँ कलुक, पसेऊ, बहेऊ । त्यहि क्षणविधिवरदेन जु गयऊ ॥
 सुकृती लखि ऋषिकेर पसीना । पोछि कमंडल में धरि लीन्हा ॥
 तासु अंश प्रकटी, जो धारा जात, सुभई पताल मंकारा ॥
 परभावती नाम त्यहि अहई । अमित प्रभाव पार को लहई ॥
 बलिहि छलन नामन जव गयऊ । तीनि पैग सहि मांगत भयऊ ॥
 नापत तनु यहि भाति बढायी । पग पताल यक स्वर्ग लगाये ॥
 ब्रह्मलोक पहुँच्यो पग, जवही । चीन्हियोइ अजलीन्हैउ तवहीं ॥
 दो० धर्यो कमंडल माहि लै तासु अंशकी धार ।
 रही भागीरथ हेतमहि गंगा नाम उदार ॥
 भागीरथ संग सो चली करत लोक निस्तार ।
 गंगा सागर में मिली नृपपितृन करिपार ॥
 यहि प्रकार गंगा अवनि आई जग विख्यात ।
 सहिमा अमित अनुपहै जो नहिं कहे सिरात ॥
 कवित्त ॥ पावन करणि लोक जीवन, हरणि शोक दोष दुख
 रिद करत अध भंगाहै । अमित प्रभाव जाको पावत न पार वेद
 पित पुनीत वारि होत शुद्ध अंगाहै ॥ ज्ञान प्रकटावे तीनि तापको
 टावे दार, मुक्ति के अटावे वेगि दिव्य जातरहाहै । घोर भवतारिवेक
 मरण मारिवेक वीगरी सुधारिवेक भूतलेक गंगाहै ॥ दर्श जासु
 त्म शतमज्जत विशतवारि पीवत सहस्र जन्म संचिताघजावई ।
 सो ब्रह्म वारि जाहि शीशपै पुरारि धारि वेद औ पुराण जाकी
 नेत्य कीर्ति गावई ॥ दानमख योग जप नेम व्रत पुण्यभूरि गंग
 प्रसन्नान सम तुल्य एकनावई । भाग्यवंत प्रकट प्रभाव लोक तीनि
 ाहि सेवत सुभाय जाको मुक्तिजीव प्रावई ॥ जैसे वाज लावाको
 रूपटि एक धावालेत कंदनके वृन्द यथा मारुत उडावई । जैसे तुल

राशिकरै दावानल जारि छार निविड निशांध यथा भानुभा मित्य-
वई ॥ जैसे लघु व्यालन शिखंडि धाय खाय जात परत तुपार यथा
कंज सूखि जावई ॥ तैसे भगवत धार गंगाजूकी लोक माहि पापन
कि राशि एकक्षण में नशावई ॥

दो० सुरसरि कथा विचित्र अति मुनि हरषे भगवान ।

सहित ऋषिन मज्जन किये विप्रन दिय बहुदान ॥

पुनि सानुज मुनि संग प्रभु मिथिलापुर कियगौन ।

आय दीख शोभा परम कहत वनै नहिं तौन ॥

कवित्त ॥ वापी कूप सरित तड़ाग सोहैं नानाभाँति वनज वि-
काश जामे रङ्ग रङ्ग द्वै रहे । पुष्ट बंधान मणि जटित विचित्र वारि
पूरण सुधासौ रसमत्त भुंग लैरहे ॥ डोलत सुगन्ध मंद शीतल पु-
नीत वायु वृक्षन विहंग जाल शोर घोरकैरहे । कैरहे सनान ग्राम
नारिनर भाग्यवंत आनंद अपार ठौर ठौरपै सुछैरहे ॥ चारौ ओर वाग
वन बाटिका विराजे भूरि फूल फल भारनसौं डारै भूमि नैरही । वृक्षन
लतानके वितानसे तने है पुंज तासुमध्य पक्षिन कि भीनीशब्द
हैरही ॥ हाट्वाट चौहट नगर द्वार द्वारपर आनंद अपारहोत भारी
छवि छैरही । भाग्यवन्त कौन भाँति शोभसो वखानिपाव देखतहि
जामु अमरावती लजैरही ॥

दो० पुर वाहेर जहँ तहँ विपिन सरिसर कूप समीप ।

निज निज लीन्हें सेनसंग उतरे विपुल महीप ॥

सवेया ॥ कौशिक देखि अनूप तहां एकदायक मोदभली अम-
राई । पावन भूमि समीप नदीसर फूलसवृक्षलता नवछाई ॥ मंदि-
रु बहु देवनके नहिं मज्जन पूजनमें कठिनाई । है सब भाँति सुपास
इहां मनभावत मोरहिये रघुराई ॥

दो० भलेहिनार्थ कहि मुदितमन तहँ मुनिवृन्द समेत ।
उतरे भलथल जानिकै सानुज कृपानिकेत ॥
मिथिलापति मुनि आगमन मुनिलै संग समाज ।
मिलन हेतु आये तहां उतरे जहँ ऋषिराज ॥
सवैया ॥ कीन्ह प्रणाम मुनीशहि भूपति दीन्ह अशीश ऋषी-
श्वरज्ञाता । लीन्ह विठाय समीप नृपै पुनि सादर पूछतभे कुशला-
ता ॥ वांग विलोकनगेजु रहै त्यहि औसर आवतभे दउ धाता ।
श्यामल गौर किशोर उभै क्यहि भांति कहां छविसो सुखदाता ॥
भूप विदेह विदेह भये सुविशेषि विलोकत रास निकई । प्रेम भरे
युगनेन चकोर निहारिहै मुखचन्द्र लुभाई ॥ राज समोज सवै वश
प्रेम न देहदरा सुधिकेहु रहई । धीर हदै धरि कौशिक सौ पुनि
पूछत भूपति यो शिरनाई ॥ नाथ अहँ क्यहिके युग बालक ये गुण
धाम सुभाय सुहाये । कै मुनिपुत्र कि राजकुमार कि व्यापक ब्रह्म
दिहै इत आयै ॥ की धरि काम उभैवपु संग कि भूप क्यहु तपकै फल
पाये । मोमन जानि विगग सदारत देखि इन्हें सुख ब्रह्म विहाये ॥
हे नृप आपु कहै सर्वनीक न होहि अलीक सुवन तुम्हारे । प्राणिज
हालागि लोकविषे सबहीक अहँ यइ प्राणन्यारे ॥ कोशलराज
कुमार दि मोमख रक्षकहै रणरक्षर मारे । नाम सुराम बडे लघु ल-
क्ष्मण देखन यज्ञ इते पगुधारे ॥

दो० मुनि मुनि वचन विदेह कह नाथ कृपा बडि कीन्ह ।

मोहि कृतार्थ करन हित आपु इते पगदीन ॥

सवैया ॥ सउर तेज प्रताप महा जिन क्षत्रिय है ॥ पदवी दिज
लीन्ह । दूसरि मृष्टि रचै सुलगेरु त्रिशंकुहि स्वर्ग पठे तुम दीन्ह ॥
हौ परस्वार्थ सदारत कौशिक राजकुमारन संग सुलीन्ह । दुष्ट म-

राय तराय तिया ऋषि मोपर आय कृपा वडि कीन्हें ॥ छप्पै ॥ पुनि
सादर नरनाह विनै बहुभांति सुनाई। सहित लपण रघुनाथ मुनिनि
पुरचले लिवाई ॥ दायक सुख सब काल सदनलै तहां टिकाये
करि पूजन बहुभांति पाय आय सु घर आये ॥ पुनि ऋषिन स
हित रघुनाथ शुचि अशन, पाय विश्रामकरि । सह अनुज सुदित
बैठतभये रह्यो दिवस यकयामभरि ॥

इति श्रीमदयोध्यासिंहधर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिप्रथेविश्व-
मिप्रागमनश्रीरामचन्द्रयात्राताडकासुवाह्लादिवधग्रहल्याउद्धारजनकपुर
प्रागमनश्रीजनकविश्वामित्रसेमागमवर्णनोनामपद्योऽध्याय ॥ ६ ॥

दो० लपण हृदय अति लालसा देखन पुर मिथिलेश ।

जानि राम मुनिराज सन बोले, वचन सुवेश ॥

सवैया ॥ उत्सवनाथ महा मिथिलापुर शोभ अपार छई सबठाई ।
है धनुयज्ञ टिके बहुभूप जहाँ तहँ वाजत मोद वर्धाई ॥ देखन ल-
क्ष्मण चाहतहैं परनाथ सकोच करै न जनाई । पावहुँ मै भगवन्त
जु आयसु लावहुँ साथहि जाय दिखाई ॥ कवित्त ॥ धर्मसेतु पा-
लक सदाहौ रामचन्द्र तुम काहेन कहहु-ऐसि रीति कुल स्यावहु
दर्शनाभिलाप तौ विकल पुर नारि नर जायकै देखाय रूप चित्त
हरि ल्यावहु ॥ अवला अवलइत आयना सकत आपु देखे विनुपर
अधमरी तिन्है ज्यावहु । प्यासे छवि नैनन चकोरनको भाग्यवन्त
चन्द्रमुख सुखमा पियूप रस प्यावहु ॥

दो० मुनि पदपद्म प्रणामकरि रामलपण दोउबन्धु ।

हरापि नगर देखन चले रूपराशि-गुणसिन्धु ॥

कवित्त ॥ श्यामगौर गातमंजु राजत सुपीतपट सुखमा निधा-
कामकोटि भा लजाये हैं । सोहत निपंग लंक शायक कोदंड हा-
नाग मणिमाल छवि ऊपमा न पाये हैं ॥ पूर्णचन्द्र आनन-प्रकाश

मान भाग्यवन्त चौतनी अनूप भाल तिलक सुहाये हैं । आये ग्राम
देखन नगर नरनारि सुनि धाम काम त्यागि सब देखिबेको धाये है ॥

दो० देखि सहज सुंदर युगल बन्धु सकल गुणखानि ।

पावहिं सुख पुरजन परम सफल विलोचन मानि ॥

आठौसखि सियकी सुभग निरखि भरोखन जात ।

सहित प्रेमसानंद सब कहहि परस्पर वात ॥

चारुशीला वचन ॥

दो० सखिइन कोटिन कामकी लीन जीति छवि आहि ।

शोभा मुर नर नाग मे सुनियत असि कहूँ नाहि ॥

सवैया ॥ विष्णुहि चारि भुजा सखि हैं चतुराननहृ के अहै

मुखचारी । व्याल कपाल विभूति जटाधर आनन पञ्च सदा त्रि-

पुरारी ॥ और कई असदेव नहीं छविबान इन्है उपमा जु विचारी ।

मोहन जो यह रूप निहारि कहौ जग मे अस को तनुधारी ॥ ल-

क्ष्मणा वचन ॥ कवित्त ॥ भूप दशरथ के कुमार युग यहै सखि

कौशिक कि राखि मुख दुष्टन सहारे है । गौतम कि नारिवश

शापभै उपल ताहि देखिकै चरण धूरि ज्ञाय मगतारे है ॥ गौस्जे-

लपण नाम तनय सुमित्रा लघु श्याम राम नाम ज्येष्ठ कौशला

के बारे है । रूपगुण धाम ये द्विवंधु मुनिराज संग चाप मुख देखनार्थ

इतै पशुधारे हैं ॥ हेमा वचन ॥ सवैया ॥ सुन्दर श्याम स्वरूप अनू-

पम जात नहीं सुखमांगकही है । मोहनरूप अहै सखि ये चट मोहि

रही सिय देखतही है ॥ जानकि योग यहै बरहै अरु योग इन्है सिय

क्या दुलही है । जो तकहै मिथिलेश इन्हें करि है तजिकै प्रण

व्याहु सही है ॥ क्षेमावचन ॥ सवैया ॥ जानि चुके सहिपाल इन्है

मिलि सादर श्री ऋषिराज मुलैकै । जाय सुभाग दिये शुभ गंदिर

भोजन पान सुपास सबै कै ॥ हैं सब यद्यपि गो प्रथमै पर दुस्तर
 वात अहै सखि एकै । त्यागहिं गो प्रणभूप नही विधि वश्य हयी भजि
 हैं अविवेकै ॥ वरारोहा वचन ॥ सबैया ॥ दानि उचित्त अहै फल जो
 विधि तो मिलिहै सियको वर याही । जो विधि योग संयोगवनै भल
 यों कृतकृत्य सबै है जाही ॥ आवहिं नांत ग्रही त्ततु दुर्लभ जाय
 सकै तियद्वार सुनाही । पुराय पुराकृत भूरि उदै जवहोइ संयोग सखी
 इन पाही ॥ पद्मगंधा वचन ॥ सबैया ॥ ज्यो मिथिलेश सुता छवि
 आगरि त्यों सु अनूपम रामललाहै । उत्तम वंश उमै कुलभूषण
 लोक प्रकाश्य सु कीर्त्यमला है ॥ मोदमयी भगवंत द्विरूप विलो-
 कत जन्म भयो सफलाहै ॥ कैस संयोग वन्यो इनको ग्रह व्याह सखी
 सबहीक भलाहै ॥ सुलोचना वचन ॥ सबैया ॥ शुभश्यामल वैस
 किशोरलला अतिमुन्दर कोमल गातअहै । तिमि गोरिमनोहरि
 भूपलली भलयोग वन्यो सब लोग कहै ॥ पर भूपकिये प्रणदुर्घटहै
 शिवचापदलै स्वइ व्याहुलहै । सु कठोरमहा नहिं योग्यइन्है अवरैव
 बड़ी सखि एकयहै ॥ सुभगा वचन ॥ सबैया ॥ कउकोउ कहै इनको
 सजनी लघु देखतहै सुप्रभाव महा । पदपंकज धूरि छुये जिनके
 ऋपिनारि तरी अघभूरिदहा ॥ शिव चापदले बिनु सोकिरहै यग-
 तीति तज्योजनि सत्यकहा । विधि चारु खूब विचारि रच्यो दोरूप
 इन्है जस योगचहा ॥ यहि भांति सखी सब आपुसमें कहि बैनरहीं
 प्रभु ओरचितै । फल लोचन देतसबै भगवन्त सवंधु गये मखभूमि
 जितै ॥ पुरवालक सादर प्रेमभरे प्रभुसोकरि वातरहै सहितै । धनु
 यज्ञ थली यह नाथभली रचनाहुत देखहु आयइतै ॥ सुनि प्रेमभरे
 तिनके प्रभु बैन कृपाकरि आपु उतै चलिजावत । लखि शील सु-
 भाव सनेह महा सब बालकवृन्द हिये सचुपवित ॥ शिशुमादर

संगलगे प्रभुके सुखमाद्भुत रंगधरा, दिखरावत ॥ ज्यहि ठौर जहां
ज्यहि बैठकहै, मृदुवैनन सो कहि नाम त्रैतावत ॥ कवित्त ॥ विस्तृत
विचित्र, चारु चाप मखभूमि यह देखिये सुशोभकैस मंचनावलीको
है । हेममणि जटित, विमलवीच वेदिका सुभाग्यवन्त, सुखमा अन-
न्त या, थलीको है ॥ ग्रामलोग देखत इहोपै सब वैठि वैठि, बैठक
अनूप अत्र भूपमंडलीको है । बैठक वहारदार इतै पुर नारिक आ-
सनय दिव्य, मिथिलेश लाड़िलीको है ॥

दो० रूढ़ अवनि शोभा परम निरखि रास, सचुपीय ।

शिशुन-प्रेमवश जानिकै, अनुजहिं रहे देखाय ॥

सवैया ॥ तात तको धनुयज्ञ मही कसि मंजु प्रभा सब ठामहि
छाई । कंचन भैवर मंचन जाल जटे, मणिभा लखि काम लजाई ॥
क्यावरणौ यह वेदिभली छवि, अद्भुत को नहि देखि लुभाई । आ-
नि विरञ्चि मनो सुखमा तिहुँलोकन क्री, यह राशि लगाई ॥ जा
प्रभुके अनुशासनते भगवन्त सकलवमोहि सुमाया । सुदर सर्व-
विभौ परिपूरण देत अहै रचिलोक निकाया ॥ सो प्रभु दीनदयाल
सदा कहि नेतिजिन्है श्रुति सन्तत गाया ॥ चक्रितहै मखशाल तके
निज भक्तनपे करि दृष्टि सुदाया ॥ कौतुकदेखि चले गुरुकेदिग जानि
विलम्बहि है उर आयो । जाडर सों डरके डरहोत, स्वभक्ति प्रभाव सु-
स्वामि दिखायो ॥ सुन्दर प्रेमभरे कहि वैनन बरस वालन भौन प-
ठायो । है भगवन्त सवै फल लोचन सानुज आय, मुनी शिरनायो ॥
रोलाछन्द ॥ निशि आगेभन विलोकि दीन कोशिकमुनि शासन ।
सहित ऋपिन रुचनाथ कीन तव संध्योपासन ॥ कहहि कथा मु-
निराज सुनहिं सादर चितदीन्है ॥ विगत निशा गुंगायाम शयन-
मुनिवर तव कीन्है ॥ १ ॥

दो० चरणकमल, चापनलगे सहित प्रेम दोउभाय ।

जिनके पदपङ्कज नितहिं रहे योगिजन ध्याय ॥

मदिराक्कन्द ॥ ध्यावतहै जिनको नित शङ्कर नारदहू गुणगा-
वतहै । गावतहै यश वेदपुराणहु आगमनेति वतावतहै ॥ तावतहै
तनको जेन योगिनही लखितेउहु पावतहै । पावतहै भगवन्त न
अन्त अनन्त महन्तहु ध्यावतहै ॥

दो० ते द्विबन्धुवश प्रेमगुरु सेवत पद जलजात ।

लहिनियोग कीन्हेशयन प्रात जागि दोउभ्रात ॥

सकलशौचकरि नित्यक्रिय मुनिवर आर्यसु पाय ।

चले सुमनवीनन मुदित राम लपण दोउभाय ॥

जायदीख नृप वागकी शोभा सकल अपार ।

नानाविधि फूले सुतरु करत भ्रमर गुंजार ॥

सवैया ॥ कुन्द कंदैल जुही कचनार अनार लवंग सुचम्पक
जाही । फूलि रहे सघने तरुहैं नवपल्लव शोण भुके महिमाही ॥ वृ-
क्षन नव्य लता उरभी । तिनमध्य विहङ्ग भरे चुचुहांहीं । गुञ्जत भृंगन
की अवली कहिजात प्रभाद्भुत वागकि नाही ॥

दो० अजब अजब फूले सुमन हुमनदेत अतिशोभ ।

जिनहिं निरखि सुरराजको होत सद्य मन क्षोभ ॥

कवित्त ॥ सुंदर सुगन्ध मिष्ट मंजुल प्रकाशमान सूखमा अपार
समतान फूल तूलाहै । कोमल कलाप सेत चिकन विलोकि जाहि
चञ्चरीक वृन्दनको सद्यमन भूलाहै ॥ देवता निहाल कर हारचित्त
मैनहूक आनंद अगार औ सुंदर स्वच्छमूलाहै । संकुल प्रसूननको
शीशताज भाग्यवन्त वेला सुरसीला क्यालवेला फूल फूलाहै ॥
कोमल अतीव मंजु माधुरी करनिमोद जात जा सुगन्ध मन्द ठौर

और पेली है । सोहेत सुरङ्ग दिव्य चीकनी चटक जनु लीन सर्व
 फूलनकि सुखमा सकेली है ॥ पूरित सुरस भूरि पावनि चमकदार
 भाग्यवन्त गन्धताकि स्वच्छ याहवेली है । सुन्दरि सुदर नव्य ऊपमा
 न योग्य आन फूलनकि रानियालवेली क्या चंवेली है ॥ शोभित
 विचित्र कै सुदेखिये बहारदार पाखुरी अपार अंग अंग सब खूला
 है । कोमल विशेषि क्षीरफेनहुते जासुदल आवत सुगन्ध मन्द
 चारु सुकलमूलाहै ॥ अजब रसील स्वच्छदार गुच्छ शोण पीत भा-
 ग्यवन्त सूँघत मलिन्द मन भूलाहै । सुन्दर-गँभीर गोल पावन अ-
 मोल सर्व फूलनमे फूल एक गेदा फूल फूलाहै ॥ अद्भुत सुगन्ध
 ज्यौन कुन्द कचनारन मै सेवती कदम्बहूकि गन्ध मन्दकारी है ।
 पावन विचित्र स्वच्छ कोमल सफील जासु सुखमा अपार देखि
 कंज गतिहारी है ॥ होत है प्रसन्न चित्त सूँघत नशात खेद फूलनि
 अनूप जो लगतकेन प्यारी है । भाग्यवन्त कौन भाँति पाँउमे वखानि
 शोभ फूलन समाजमें गुलाव छविन्यारी है ॥ सगुट सुगन्ध कोकि
 सुखमाको शाल मंजु कोमल न मल श्वदागक बहारहै । चिकनन्व-
 कील मिष्ट तीक्ष्ण सुवास जासु छूवतहि जात अंग-अंगकै पसार
 है ॥ उत्तम निकट औ सरस आवदार खूब भाग्यवन्त ऊपमा न
 आन मो विचारहै । जैसोय विचित्र चारु मीथिलेश वागमाहिं फूलन
 में फूल गूलशब्बो सुखसारहै ॥ फालसा करौद आंव आमरूत तूत
 सेव जामुनी अंगूर आडु गोदनी अनारही । नारजी अजीर रम्भ
 दाख पक्क नासपत्र पेसता बदाम औ संरीफली छुहारही ॥ का-
 गदी चकोतरादि निम्बु मिष्ट भूरि पूरि भाग्यवन्त लांगली प्रनस
 बिल्वतारही । अगणित सुमेवनाम पारपाव कौनडार भूमती अव-
 नि पै सफल फूल भारही ॥ सुवैया ॥ कंचन मै महि सुन्दरि चारु

विशाल वनी मणिमै बहुक्यारी । पातिन पाति लगे दुर्म संकुल
 थालहन पूरण निर्मलवारी ॥ रौसन्नकी गति क्या वरणौ मग पन्न
 की रहि छाहि उज्यारी ॥ श्रीमिथिलाधिप वाग विपे भगवन्त सबै
 छवि सोहत न्यारी ॥ चातक हंस चकोर मयूर करै धुनि कोकिल
 कीर सुमैनां । गुञ्जत भौर जहाँ तहँ संकुल डोलत पौज भली सुख
 देना ॥ वासकिये जहँ नित्यरहै भगवन्त लिये । ऋतुराज सुसैना ।
 कौनसि वस्तु अहै जगमै नृपनागम जो हरवक्त मिलैना ॥ कुण्ड-
 लिया ॥ ताके मधि सरसुभगयक सोहत परमविचित्र । मणिमै शुभ
 सोपान त्यहि पूरण सलिल प्रवित्र ॥ पूरण सलिल प्रवित्र वनज
 विकसे बहुरंगा । कूजत जलखगवृन्द विविध गुञ्जत तहँ भृगा ॥
 गुञ्जत शृङ्ग समोद उडत पैकज रसछाके । सुरसर प्रभा अपार त-
 दापि समता नहि ताके ॥ तु जे कसो कहे ॥ ३१ ॥
 दोउ धौगप्रभा दोउ बन्धु लखि भये मुदित मुदमूल ॥
 माली अन बोले कि हम चहन लेन दलफूल ॥
 सवैया ॥ श्यामल गौर किशोर मनोहर कोटिन काम प्रभा व-
 लिहारी । आपुअहै किनके सुत सुन्दर औ क्याहिमंग इतै पगुधारी ॥
 कीन निवास कहाँ क्याहि मंदिर आजु भई धनिभाग्य हमारी । सो
 सुखजात कहाँ भगवन्त न मोहि भयो जस आपु निहारी ॥ हैं हम
 श्रीअवधेश तनै मुनि संग इतै मरदखन आये ॥ श्रीमिथिलेशवर
 पौरिटिके दलफूल लिये गुरुदेव पठाये ॥ शासन वेदय पूछिलिये
 विनु मालिहि फूलछुवे न सुभाये ॥ ताहित पूछत मालिकहो दल
 फूल लयावहि जाय मुहाये ॥ कवित्त ॥ कोशलिश चक्रवर्ति जा
 नतै जहान नाम वेडक सुरशपे सिहासनाछ पावही । तासुपुत्र
 आपु जामु कीरति प्रसिद्ध लोक आइये सुधागहो हुमावली देखा

वही ॥ कञ्जहू ते कोमल अतीव मंजुपाणि आपु कंटकसंवृक्ष फूल
 छोटैगडि जावही । रावरो न योग्यदेहु आयसु कृपाल मोहिं फूल
 फल दल वेगि तूरि हम लावहीं ॥ छप्पै ॥ सुनु माली ममबै न धर्म
 सेवक यह रीती । स्वामिकाज निज हाथकरै सन्तत सहप्रीती ॥
 जो तुम्हरे रुचि होय वैडि गुरुदिग लिखि मोहीं । दल फल फूल उ-
 तारि डालि लायो सजिवोही ॥ निज पाणि तूरि दल फूल सुडि
 लैजावै गुरुपहँ हमहिं । असि कठिन सहतक्षत्रीय करि तुच्छ कहा
 कंटक सकहि ॥

दो० रामवचन सुनि वंदिपद कह्यो मालि करजोरि ।

नाथ कृपाकरि हाथ निज लेहु पुष्पदल तोरि ॥
 घरीछन्द ॥ लागिलेन फूल ज्योहिं । आइ वागसीय त्योहिं ॥
 सवैया ॥ त्यहि औसर आयसु मातु सियाहित पूजन गौरि सखी
 संगलै । शुभ गावत गीत सुआइ तहां सर मज्जनकैगई गौरिनि-
 लै ॥ करि पूजन प्रेम समेत विनै बहुभांति किये धरिमाथइलै ।
 करि मातुदया वरदेहु यहै वर सुन्दर मो अनरूपमिलै ॥ त्यागि सिया
 संग एक सखी सुविलोकन जातभई फुलवाई ॥ देखिसि सो द्रउ
 बन्धु तहां छवि सिन्धु रही वशप्रेम लुभाई ॥ विद्वलगात पसेउ वहै
 अति आतुर लौटि सियो दिग आई । तासु दशा सखि देखि कहै
 कहकारण मोदयतै कह पाई ॥ देखत वाग द्विराजकुमार सुश्यामल
 गौर उभै छविऐना ॥ आननचन्द्र प्रभा भगवन्त विलोकत पागि
 चकोर सुनैना ॥ चोरि लिह्यो चित घायलकै म्वहिं मारि कटाक्षन
 केशरपैना । रूप अनूप कह्यो किमिसो सखि बैन अनैन न नैनन
 बैना ॥ सुनि बैन मनोहर तासु सखी हरपी सब आपुसमाहिं कह ।
 नृप पुत्रअली स्पइ है य सुना मुनिसंगम आयजु कालिहरहं ॥

भगवन्तु लिये जित मोहि सबै नरनारिनको निज रूपमहें ॥ छवि
 लोग जेहां तहें बुरातहें चलि देखहुं देखन योग्य अहें ॥
 दो० राघवी दर्शन हेतु सिय चक्षुरहे अकुलानि ॥
 ताते त्यहि सखिके वचन अतिशै सियहि सुहोति ॥
 ताहि अग्रकरि जानकी सहित सखिन सानन्द ॥
 बली लै जितही रहें सानुज रघुकुलचन्द ॥
 कंकण किंकण नूपुरन सुनि खराजिवनैत्र ॥
 ताहि हृदै गुनि अनुज सन कहत मधुर इमिवैन ॥
 कवित्त ॥ पैदर सुगुल्म लता वाजिन समाज सोह शीतल सु-
 गन्ध मन्द मारुत मंतगहै । पल्लव रसाल रथ चढि फूल चापधारि
 सेनापति राजऋतु लीन्दे सेन संगहै ॥ रम्भ ध्वज जानकी प्रताप
 बल सखी शब्द नूपुरादि कंकण कि होत यो उतंगहै । भाग्यवन्त
 साजिके सदल विश्वजीतिवैक हुंडुभीय दीन जनु भूपति अनंगहै ॥
 दो० बहुरि चितै त्यहि ओर प्रभु सिय सुखमा हिय आनि ।
 हृपासिन्धु निजबन्धु सन पुनि बोले मृदु वानि ॥
 सबैया ॥ तात तको छविराशि अनूपम श्री मिथिलेश सुता
 यह सोई । कारण जा धनुयज्ञ अहै सुनि आवत भूप भये सब कोई ॥
 पूजन गौरि लयाइ सखी इत रूप अलौकिक देखत जोई । मोमल
 स्वच्छ सुभाय सदा तजि सीम गयो निज शोभित होई ॥
 दो० यहिविधि गे बातें करत लतन ओट सुख ऐन ।
 चकित निरखि श्रीजानकिहि कहे सखिन इमिवैन ॥
 सबैया ॥ चैतनि शीश अनूप सजे श्रुति कुण्डल लोल चले
 अमलाहै । अधनुवाण कटाक्ष सकोर सु आनन पूरण चन्द्रकलाहै ॥
 हास विलास है मनको मणिमाल लसै अति कम्बुगलाहै । क्यों

नहिं देखत सीय उतै विच कुंदलता दोउ ठाढ़ि ललाहै ॥ श्रीरघुन-
 दन रूपप्रभा अति देखतही मिथिलेश किशोरी । देह देशा सुधि
 भूलि सबै वश प्रेम अतीव सु द्वैगइभोरी ॥ त्यागि निमेषलगीं अ-
 बलोकनि ज्योंदिशि पूरणचंद्र चकोरी । दीन कपाट दृगंचल सीमहिं
 आनि हृदै मग अक्षन ओरी ॥ १०० ॥
 दो० जानि विलंबकरि मातु भैधरि उर मूरतिश्याम ।
 सहित सखिन पुनि जानकी गई गौरिके धाम ॥ १०१ ॥
 श्रीगिरिजापद वंदिकै युगल जलज करजोरि ।
 बोली सीता वचन मृदु मातु विनय सुनु मोरि ॥ १०२ ॥

किरीटबन्ध ॥ जय जय श्री गिरिराजकुमारि । सदाशिवप्राण-
 प्रिया अविवासिनि । गावतनेति किहे यशवेद त्रिमोहनि विश्वसवे
 उरवासिनि ॥ उत्पतिकै जग पालिहारौ वरदानि सुरासुर ज्ञान अका-
 सिनि । मातु मनोरथ पूरकरौ मम आनंदरूप स्त्रछंद विलासिनि ॥
 सेवत तोहिं सुभाय मिलै फलचारि विनाश्रम हैं गिरिनंदिनि । जा-
 हिर लोकप्रभाव अहै तव अञ्जतरूप सुरासुरवंदिनि ॥ गोर मनो-
 रथ भौति भली तुम जानहु मातु त्रिताप निकंदिनि । देवि विनय
 सुनि मोरि कृपाकरि पूरण आश करौ निजछंदिनि ॥ गिरिजावचन ॥
 सवैया ॥ मम सत्य अशीप य सीय सुनौ तव जैहहि पूर मनोरथ
 है । मुनि नारद बैन पुनीत सदा सब हैहहि सत्य गये कहिज्वे ॥
 करुणाकर शील सनेह त्वया ज्वइ जानत जानन जागतिकै ।
 भगवंत रंगो मन जाहि नितै मिलिहै वर श्यामल सुन्दर स्वै ॥
 दो० गिरिजाशिप सुनिजानकी पुनिपुनि करिसुप्रणाम ॥
 सहित सखिन सानंद मन गमन कीन्ह निजधाम ॥
 इत सातुज रघुवंशमणि आये कौशिकपास ।

करिप्रणाम, सब हाल प्रभु कीन्हे । तुरत प्रकास ॥
 नृप, मिथिलेश विगाहें हम जाई । मालिहिं प्रथिं मुद्रित, दूउ भाई ॥
 लगे लेनदल फेला ॥ पुनीता । सहित सखिन त्रहि अवसर सीता ॥
 गिरिजा प्रदू पूजन तहें आई । रूप अनूप, वरणि नहिं जाई ॥
 नख शिख अमित सीयकै शोभा । देखि अनाथ, मेरो मन, क्षोभा ॥
 उनहुँ हमहिं अकटक रहि देखी । सहित सखिन, परिहरी निमेषी ॥
 पुनि युत सखिन गौरि गृह जाई । करि पूजन जेव भवित सिधाई ॥
 तव हम लपिण सहित इत आये । मुनि मुनि कौशिक अतिसचुपाये ॥
 लहि प्रसून मुनि पूजन कीन्ह्यो । आशिवाद मुदित मन दीन्ह्यो ॥
 सो० चिरंजीवि, दूउ भाये, सफल मनोरथ होहिं सब ।

मुनि सातुज सचुपाय, बार बार, बंदत चरण ॥ ७ ॥

दो० पुनि भोजन करिकै मुद्रित बैठे मुनि संसमाज ।

करि प्रणाम कर जोरितव बोले श्रीगुराज ॥

निमिवंशी । रघुवंश को एकै कुल, रवि होय ।

उत वशिष्ठ गौतम इतै है प्रोहित क्यो दाय ॥

बोले मुनि किं वशिष्ठ है प्रोहित घरके दोउ ।

पर गौतम इत होनको कारण मुनि ये सोउ ॥

गीतिका छन्द ॥ एक समय निमि मखहेहु निउता सकल ऋषि
 राजनदिये । नहिं लीन न्योत वशिष्ठ सुरूपति काजलगि स्वर्गहिं
 गये ॥ निमि बोले, तौ ऋषि गौतमहि निज भौन प्रोहित करि
 लिये । मख पूरणांत वशिष्ठ आय कुराप तव राजहिं दिये ॥ नृप
 प्राणतन मे हीन निमिहू शोप मुनि तनु तजिदियो । विधिकी कृपा
 मुनिराज, पुनि तनुपाय अति हरपित हियो ॥ तुम करहु पलकन
 वास तिनतनु निमिहि ऋषि गौतमकहा । पुनि देह निमि मथवाय

मैथिल पुत्र उपजाये तही ॥ ऋषि-गौतमाशीर्वादते यह कुल वि-
देही है गयो । भगवन्तः यार्ही हेतुते यहि माहिंप्रोहित है भयो ॥

दो० विगत द्योसनिशि आगमन जानि गुरायसुपाय ।

चले मुदित संध्या करन राम लपण द्वउभाय ॥

प्राचीदिशि शशिउदैलखि सियमुखसम सुखपाय ।

वहुरि कहेउ सीतास्यसम नाहिन यह निशिराय ॥

कवित्त ॥ बन्धुविपशत्रुराहु जन्मसिंधु रोगयुक्ते पातकी कलंकि

गुरुतीय रति ठानी है । पंकजको द्रोही दिन मन्द घट वट होत रह-

तन एकरस कोंक दुःखदानी है ॥ । विरही दुखावै नित व्योमवीच

धावै कल पलहू न पावै भूरि औरुण कि खानी है ॥ चन्द रंक ऊप-

मान योग्य पाव भाग्यवन्त आनंदको कन्द मुख सीय सुखदानी है ॥

दो० सीतानन शशि मिसुवराणि जानि निशा वडिराम ।

आय गुरुहि शिरनाय लहि शासन किय विश्राम ॥

इति श्रीमद्भयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहधिरचित्तमहेशिशिरोमणिग्रन्थे

श्रीरामचन्द्रवादिकात्रलोकनपर्यनोनाममहमोऽध्याय ७ ॥

दो० प्रात जागि प्रभु बन्धुसन बोले अतिमृदु वैन ।

तात लखहु पूषण उदै सकल लोक सुख दैन ॥

सुनिलक्ष्मणशिरनायपद जोरि जेलजयुगपाणि ।

प्रभु प्रभाव दर्शायकै कहेउ मधुर डमि वाणि ॥

सवैया ॥ भानु किये तम नाशे यथा तिमि राउर शङ्करचाप द-

लेंगे । हैहर्हि दुष्ट महीपे नखत्त मलीन सुपङ्कज सन्त खिलेंगे ॥

ज्योहि उलूक लुके दिन त्यो खलवृन्दन के नहि खोज मिलेंगे ।

चन्द प्रकाश तज्यो जिमि त्यो परशाधरहू निज गर्व दिलेंगे ॥

दो० यथा उदै रविके जगत प्रगट प्रकाश कलाप ।

तथा दत्तते शङ्करा धनुष-कैली आर्प प्रताप ॥ १ ॥
 ॥ तोमरचन्द्र ॥ सुनि वन्द्यके इमि त्वेन । विहसे कृपा सुख ऐन ।
 तोटकचन्द्र ॥ पुनि मज्जत सानुज रामभये । करि नित्यक्रिया गु
 पाहिं गये ॥ १ ॥

दो०-त्यहि अवसर आयसु जनक शतानन्द । तहि आय ।

क्रौशिक । मुनि पद्वि वन्दिके । कहे । वचन सुखदाय ॥

सि० ॥ पठ्ये मिथिलेश । हेम मुनिसो तुमा जायक हाल । केहौ स
 कला । हित शम्भु शरसन तोरक नृप । अवितामे बहु रक्षयेला ।
 करि हरि गये बल भूप बली पर नाहिन । सो क्यहुं नेकुहला । म
 शोच हरि प्रभु आय कृपा करि । लै संग लक्ष्मण रामलला ॥ १ ॥

॥ दो० शतानन्दके वचन सुनि कल्यो मुदित मुनिनाथ ।
 बोलि पठ्ये जनकानृप । चलहु लपण रघुनार्थ ॥ १ ॥

सीय स्वयम्बर काज हित आये । बहु अवनीश ।

आजु बड़ाई काहिधों देखी । देनै ईश ॥ १ ॥

कल्यो लपण जापै कृपा मुनिनायक तो होय ।

राजसभा के बीच में यश भाजन है सोय ॥ १ ॥

सुनि लक्ष्मण के वचन वर भये मुदित मुनिवृन्द ।

होहिं मनोस्थ सफल सब दिय अशीस सुखकन्द ॥

क० ॥ सानुज कृपाल रामचन्द्र मुनिवृन्द संग देखनार्थ चाप मख
 शालही सिधाये हैं । आय रङ्गभूमि में द्विचन्द्रुपाय हाल ग्राम नारि
 नर बालक सबुद्ध युवा धाये हैं ॥ देखि मिथिलेश भीरु भूरि बोलि
 भ्रुस्यं दीन आयसु सबन यथायोग्य बेटाये हैं । ताहीक्षण भाग्यवन्त
 रूपगुण शीलसिन्धु आनंद अगारद्वौ कुमारभूप आये हैं ॥

दो० जिनके उर अन्नर विषे रही भावना छेमि ।

नील रामचन्द्र मूरति मधुरातिना देखी तहँ तैसि ॥ ॥ ॥
 कौञ्ज सुत कौञ्ज सुहृद कौञ्ज विराट कौञ्ज इष्ट ॥ ॥ ॥
 कौञ्ज स्वामी कौञ्ज रिपु सखा कौञ्ज नृपति सरिष्ट ॥ ॥ ॥
 रामहि चितवत भाव ज्यहि सिय सनेह सो सुखखण्ड ॥ ॥ ॥
 शेष गणेश न कहिसकै क्योचरणे यहु मुक्ख ॥ ॥ ॥

सवैया ॥ राजत राज समाज उभै अवधेश कुमार प्रभा सुख
 एना । पूरण चन्द्र शुभानन सुन्दर मंजु विशाल सुपंकजनैना ॥
 गोल कपोलसजै श्रुति कुण्डल बोलत चारु अमोल सुवैना । शय-
 मल गौरकिशोर मनोहर को अस जो लखि रूप ठगैना ॥ चौतनि
 शीश सजै तिलकांकित भाल सुमेचक केशसुहाये । बाहु विशाल
 धरे धनुवार्न इकूल कसे कटि तून लगाये ॥ अंगन अंग अपार
 प्रभा भगवन्त तिलोक्त काम लजाये । देखिभये सबलोग सुखी
 छविसिन्धु उभै दशस्यंदनजाये ॥ ॥ ॥
 दो० चृष विदेह दउवन्धे लखि भै मन परमा निहाल । न
 नि मुनि पदपद्म प्रणाम करि कहे सकल निजहलि ॥ ॥ ॥
 कवित्त ॥ एकवार पूजनार्थ चापयल लेपिवेक आई आपु रा-
 नि नासुकन्यकै पठाई है । आइ सो उठाई चाप चारौकोर चौकादीन
 फेरि धरि बाहीयल भौनको सिधाई है ॥ देखिहौ संशोच पूछि रानि
 जानि हाल संवर्ष कीन मय प्रण चाप जोई तोरिपाई है । व्याहै मोई
 जानकी चदनदश वाण आदि संके न चढाय फेरि भौनगे लजाई
 है ॥ सवैया ॥ महिपाल बहोरि दिखाइ सबै मुनि कौशिक को शुभ
 रङ्गयली ॥ चितवै सब चक्रित वन्धु दूऊ चलि जाहि जहां जव जौन
 गली ॥ रुचि जाहि यथा भगवन्तरही सुतथाहि लख्यो प्रभुभा अ-
 मली ॥ मुनिराज कह्यो मिथिलेश कियो रचना अंति उत्तम शोभ

भली ॥ सब मंचन ते एक मंच विशाल प्रभा ज्यहिकी सब माहि
जुदै । मणि चित्रित कंचन म्मै भलकै अटकै तितही जितही मनु
दै ॥ मुनि संयुत राजकुमार तहां बैठाय महीपसु आसनुदै । भगवन्त
कहौ किमिसो सुखमा त्यहि मंत्र मनो युग चन्द्र उदै ॥

दो० रामचन्द्र मुखचन्द्र लखि नृपगण उडुप समाज ।

भयमल्लीन एकटक लखै ज्यों चकोर द्विजराज ॥

साधु भूप ॥ सवैया ॥ प्रतीत सबै रघुनन्दसू दलिहै शिवचाप
संदह नही । न दले तबहुं अस जानिपरै सिय भेलि इन्हें जयमाल
सही ॥ सुविचारि प्रताप बलै यश तेज गवांय पयानकरो घरही ।
सिय व्याहन आश विहाय सबै तजि मोह भजौ रघुनन्द नही ॥ दुष्ट
भूप ॥ सवैया ॥ तोरखहु शंकरचाप अहै अवगाह महा सिय व्याह
वभाई । है असको जग वीर बड़ो धनुभङ्ग बिना सिय जो लै जाई ॥
राजनकी गन कौन कहै एकवारजु कालहु संमुख आई । तौसु वि
वाहव सीय हमै महिसंयुग में त्यहि मारि हटाई ॥ साधुभूप ॥ क
वित्त ॥ व्यर्थही बजावतेहौ गाल तुम भूप सब आवत न लाज बैन
बोलौ न सँभारिकै । जानहु न तेज बल राघवलपणके राखे मुनि
यज्ञे असुखन्दमारिकै ॥ तोरि चापव्याहेंगे विदेहजा नशंक नेतु
गर्ववन्त भूपनको गर्व सर्व टारिकै । जानि जक्र मातु पितु राम
सीय भाग्यवंत लेहु क्यो न शोभ भरि नैनन निहारिकै ॥ सवैया ॥
लखि राघवसीय स्वरूप अनूप लहे हम तौ जगजन्म फला । सुख
जात कह्यो नहि जोहिभयो बहुजन्मन को दुखदोष दिला ॥ नहि
मानहु तौ तुम जाय करौ मनलागहि जो कहें जोड भला । कहियो
सुमहीप लगे भगवन्त लखै प्रभु आननचंद कला ॥ जानिसमेसु
विदेह शतानंद भेजि तहां सिय बोलि पठाई । आयसु मातु समोद

सखी सजि भूषण चरिः सुअंग वनाई ॥ गावत गीत मनोहर सादर
 सीतहिलै चलि संग लिवार्ई ॥ श्रीजुगदम्बिक रूप प्रभा भगवन्त
 कहै किमि शेष सकाई ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 दो० रंग अवनि आई ॥ जवहि निरखिरूप निरनारि ।
 ॥ ॥ ॥ भे मोहित ज्यों मृग मृगी दीपक ज्योति निहारि ॥
 ॥ ॥ ॥ छपै ॥ जनक नगर नर नारि राम सिय रूप निहारी । करहि
 विनय विधि प्राहि जोरि कर अंचलधारी ॥ हे विधि दीनदयाल कृपा
 करि यह वरदीजे । होय रामसिय व्याहु लाहु लोचन भरिलीजे ॥
 शिबचाप तोरि प्रणपालि नृप मुदित राम सीतहि वरय । मसि व-
 दन लाय भूपति सकल सकुचि जाहि निज र घरय ॥ रोला छन्दा
 बन्दीजनकी सुता एक ताको यहकोमा । होय स्वयम्बर सुताजासु
 जानै त्यहिधामा ॥ लै कन्या जयमलि जवहि भूपन दिग जावै ।
 तब तहैं ताके संग अग्र सो वचन सुनावै ॥ भूपन को कुल गोत्र
 राज्य पितु सह त्यहि नामा । वल प्रतापें यश कीर्ति सकल वरणै
 त्यहि ठामा ॥ सो कन्या सुनिलेइ बहुरि भावै मन जोई । तोभु भूप
 के कण्ठमेलि जयमाला देई ॥ जयमाला जो पाव ताहि भूपणधन
 देवै । यजमानी को हक सुता पितुसो सो लेवै ॥

दो० ताके संग लिय ज्ञानकी करसरोज जयमाल ।
 सहित सखिन आई तहां बैठे जहां भुवाल ॥
 एक औरते नृपन को नाम गोत्र कुल थान ।
 सीतासन सोई कन्यका लागी करै वखान ॥
 दिगपाल छन्द ॥ ये भानुदत्त पुत्र वीर बाहुनाम याको । हे कौ-
 शल कुल क्षत्री बंगदेश राजवाँको ॥ अति तेजवन्त शूर वीर सत्य
 शोचद्रानी । शुभ शांति शील विद्यारत धर्म भक्त ज्ञानी ॥ शिव

चाप जो न दूटै पितुशासन मनभावे । पहिरावो जयमाल सवै लोकन यशछावै ॥ ये चित्रकेतु पुत्र श्रीदत्तनाम याको । हे चंद्रवंश क्षत्री वैदर्भराज वाँको ॥ भलजान वाणविद्या गुणधाम वीरशूरो बल बुद्धि धर्मधारी श्री शम्भुभक्त्खरो ॥ शिवचाप जो न दूटै पितु शासन मनभावे । पहिरावो जयमाल सवै लोकन यशछावै ॥ ये हरिश्चंद्र पुत्र विष्णुदत्त नाम याको । हे पुरुवंश क्षत्री कर्नाटक राजवाँको ॥ गुणशील सिंधु ज्ञानी यशनाम लोकजानै । बलवंत धर्मधारी स्त सत्यसंध दानै ॥ शिवचाप जो न दूटै पितुशासन मन भावे । पहिरावो जयमाल सवै लोकन यशछावै ॥ ये सुयशकेतु पुत्र भानुवन्त नाम याको । हे कश्यपकुल क्षत्री देशद्राविण राज वाँको ॥ ये सत्यसन्ध ज्ञानी बुद्धि धर्मवन्त पूरो । श्रुतिशास्त्र रीति पालै गुणवन्त भक्त्खरो ॥ शिवचाप जो न दूटै पितुशासन मन भावे । पहिरावो जयमाल सवै लोकन यशछावै ॥ ये सत्यवंत पुत्र विक्रमध्वज नाम याको । हे भानुवंश क्षत्री महाराष्ट्र राजवाँको ॥ भलनीति धर्मज्ञाता बलवन्त प्रजापालै । ये जान चापविद्या गुण सिन्धु क्षमाआलै ॥ शिवचाप जो न दूटै पितु शासन मनभावे । पहिरावो जयमाल सवै लोकन यशछावै ॥ ये भावासुरपुत्र नाम खवणासुरयाको । हे आख्य दैत्यवंशी शूरसेन राजवाँको ॥ बलवन्त वीरएसो चढिलंक जीतिलायो । दशकण्ठ भगिनि व्याही यश पुञ्ज लोकछायो ॥ शिवचाप जो न दूटै पितु शासन मनभावे । पहिरावो जयमाल सवै लोकन यशछावै ॥ ये ब्रह्मदत्त पुत्र चित्रकेतु नामयाको । हे गर्गगोत्र क्षत्री गुजरात राजवाँको ॥ ये भ्रम्वन्त विद्या भलनीति रीतिजानै । हरिभक्त संतसेवी स्त सत्यसंधज्ञानै ॥ शिवचाप जो न दूटै पितु शासन मनभावे । पहिरावो जयमाल सवै

लोकन यशस्त्रावै ॥ ये पुत्र भूपकेकै जुधाजित्सु नामयाको । हैयव
 त्सकुलक्षत्री काश्मीर राजवाँको ॥ बुद्धिशान्ति शील विद्या गुण-
 वन्त वीरशूरो । अति तेजवन्त ज्ञानी प्रजापाल धर्मपूरो ॥ शिव
 चाप जो न दृष्टै पितु शासन मनभावै । पहिरावो जयमाल सबै लो-
 कन यशस्त्रावै ॥ ये सुकीर्तिवन्त पुत्र श्रुतिसेन नामयाको । है को-
 शल कुल क्षत्रीवन्तिका राजवाँको ॥ ये धर्मवन्त ज्ञानी हरिभक्त
 नीतिज्ञाता । तप्रेसत्य दयादानी मुनि साधुन सुखदाता ॥ शिव
 चाप जो न दृष्टै पितु शासन मनभावै । पहिरावो जयमाल सबै लो-
 कन यशस्त्रावै ॥ ये सुचित्रभानुपुत्र यशकेतु नामयाको । है गाल्हव
 कुलक्षत्री हरद्वार राजवाँको ॥ श्रीशंभु भक्तशूरो रतनीति रीतिदानै ।
 बलसिन्धु बुद्धिआलै धनुविद्या भलजानै ॥ शिवचाप जो न दृष्टै पितु
 शासन मनभावै । पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशस्त्रावै ॥ ये
 भानुभद्रपुत्र तुंगध्वज नामयाको । है गौतम कुलक्षत्री चीनदेश
 राजवाँको ॥ ये खानि बुद्धि विद्या गुणवन्त शूरभारी । नयधर्म ज्ञान
 रांशी बलवन्त खड्गधारी ॥ शिवचाप जो न दृष्टै पितु शासन मनभावै ।
 पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशस्त्रावै ॥ ये भूप यश केतु पुत्र
 श्रीवन्तनाम याको । है भानुवंश क्षत्री इलाव्रत राजवाँको ॥ ये दक्ष
 वाणविद्या शिव भक्त वीरशूरो । बल बुद्धि तेजराशी शुभधर्मवन्तपूरो ॥
 शिवचाप जो न दृष्टै पितु शासन मनभावै । पहिरावो जयमाल सबै
 लोकन यशस्त्रावै ॥ ये भूप गुणकेतु पुत्र शुभदत्तनाम याको । है क-
 श्यप कुल क्षत्री भद्राश्व राजवाँको ॥ गुणवंत भक्तशूरो वासुदेव इष्ट
 मानै । रत दान धर्म ज्ञानी श्रुति शास्त्र नीति जानै ॥ शिवचाप जो
 न दृष्टै पितु शासन मनभावै । पहिरावो जयमाल सबै लोकन यश
 स्त्रावै ॥ ये चित्रभानु पुत्र ध्वजकीर्तिनाम याको । है सोमवंश क्षत्री

हरिवर्ष राज वाँको ॥ तप तेजवन्त शूरो बल धर्मवन्त ज्ञानी । श्रीनि-
 सिंह पादसेवी है सत्यसन्ध दानी ॥ शिवचाप जो न दूटै पितु शा-
 सन मनभावै । पहिरावो जयमाल सबै लोकन यश छावै ॥ ये है सुपुष्ट-
 पुत्र धीरकेतु नाम याको । कुशकेतु वंश क्षत्री केतुमाल राजवाँको ॥
 ये मानइष्ट कामदेव रूपवन्त भारी ॥ यश तेजवन्त शूरो गुणवन्त
 क्षमाकारी । शिवचाप जो न दूटै पितु शासन मनभावै । पहिरावो
 जयमाल सबै लोकन यश छावै ॥ ये सत्यवन्त पुत्रधर्मकेतु नामयाको
 है उत्तमकुल क्षत्री स्म्यकेतु राजवाँको ॥ तपसत्यशौच ज्ञानी बुद्धि
 नीतिवन्त पूरो । गुणशील शांतिआलै हरिर्मत्स्य भक्तुरो ॥ शिव
 चाप जो न दूटै पितु शासन मनभावै । पहिरावो जयमाल सबै लो-
 कन यश छावै ॥ ये अस्तसेन पुत्र धीरकेतु नाम याको । है पुरुवंश
 क्षत्री कुरुखण्ड राजवाँको ॥ चाराहरूपसेवी बलवीर धीरदानी ।
 शुचिशांति शीलआलै नय सत्यवन्त ज्ञानी ॥ शिवचाप जो न
 दूटै पितु शासन मनभावै । पहिरावो जयमाल सबै लोकन यश
 छावै ॥ ये सन्नजित्सु पुत्र हरिवर्मनाम याको । है कोशल कुलक्षत्री
 किंपुरुपरजवाँको ॥ गुणवन्त ज्ञानमानी श्रीरामभक्त रुरो । श्रुति
 शास्त्र नीतिज्ञाता बुधिवन्त धीरशूरो ॥ शिवचाप जो न दूटै पितु
 शासन मनभावै । पहिरावो जयमाल सबै लोकन यश छावै ॥ ये
 भानुवंशक्षत्री दशरथ्य पुत्रमानी । है भरतखण्ड माही श्रीओधराज
 धानी ॥ श्रीरामनाम इनको पितुकीर्ति लोकछायो । ये सत्यसंध
 दानी यशनाम वेदगायो ॥ गुणवन्त वीरवाँके बहुदुष्ट वृन्दमारी ।
 मुनि कौशिक मखराखे मग गौतम त्रिय तारी ॥ शिव चाप जो न
 दूटै पितुशासन मनभावै । पहिरावो जयमाल सबै लोकन यश छावै ॥
 ये भानुवंश माहीं दशरथ्य पुत्र ज्ञानी । है लक्ष्मण नाम इनको लघु

बन्धु रामजानी ॥ विद्यावल शील शक्ति तेजवन्तं वीरं शूरो । गुणः
वन्त बुद्धिराशी, शुचि धर्मवन्तः पूरो ॥ शिवचापः जो न, दूटै पितु
शासन मनभावै । पहिरावो जयमाल सबै लोकन, यश छावै ॥

दो० यहिविधि सों सब नृपनके कहेनाम गुणगाय ।

सहित सखिन पुनि जानकी वैदी आसन आय ॥

राम सीय शोभा अतुल निरखि देव समुदाय ।

वर्षिसुमन कहि जैतिजै हर्ष न हृदौ समाय ॥

इति श्रीवैश्याभिरुच्यर्मात्मजभगवतां सहस्रचरिते भौहिशिरोमणिग्रन्थे

श्रीरामचन्द्ररुमिभ्रागीमनःपुनोत्तमश्चष्टमोऽध्यायः ॥

दो० यहि अवसर वंदीजनन पठये जनके बुलाय ।

कह्यो कहौ सब नृपन सों प्रणहमार तुमजाय ॥

मुनि शासन नरनाहको भाट सहसंदश सद्यः ।

भुज उठाय बोले वचन राजसभाके मव्य ॥

मुनहु वचन भूपति सकल चितलगाय दै कान ॥

जनकराज महराजको प्रण हिम करै वखान ॥

क० ॥ रेख बज्रदन्त ज्यो गयन्द को तथाहि प्रण जानिये वि-

देहराज लोक वेद ख्यातहै । शङ्कर पिनाक शैल शम्भुते गरु अ-

पारं भूमिही के सह रचि दीनज्यों विधातहै ॥ परमकठोर कूर्म पृष्ठिहू

ते पुष्टवाण रावणादि वीर बौवदीन जाल खात है । सोई यह शम्भु

चांपातोरि है जु आजु ताहि व्याहि है विदेहजा कहत सत्यवातहै ॥

रङ्गराज शीशताज आज या समाज सोइ लेइ जो प्रचण्ड दण्ड

शम्भुको उठाइहै । खैचितोरि डारि है जु याहि शूरवीर कोइ कीरति

कलाप तासुलोक लोक छाडहै ॥ भाग्यवन्त कण्ठताहि भेलिमाल

जैकिशोरि आनंद समेत व्याहि जानकी मुपाडहै । होय बल तो-

रिवे समान सो धरै पिनाक राजन समाज मुख कारिख न लाइहै ॥
 नाम परधाम धन हेत देत प्राणहट्टि मानत न मातु पितु काम क्रो-
 धलै रह्यो । देतहै प्रजे प्रचण्ड क्लेश बंधि सेतु पाप पुण्य को वि-
 नाशिकै अधर्म मार्ग मे वह्यो ॥ त्यागि सत्य धारत असत्य काल
 कौन्यहूम देतहै न दान अग्निलाय ग्राम जे दह्यो । भाट बैन मानि
 कै कलंकरूप भूपऐस शङ्कर पिनाक को न भूलि हाथसे गह्यो ॥
 ज्ञानधर्म लेशनाहिं मानहीन पितृदेव साधुन सताव देतगारि
 माय वापही । शत्रुवीर संयुग बिलोकि देत पीठिताहि विप्रन को
 दानदै सु फेरि लेत आपही ॥ नित्यही मदान्ध पंथ जानहीन वेद
 शास्त्र काम क्रोध वश्य याम आठ कृत्य पापही । राजन समाज में
 पसारि हाथ भाट बैन भापही छयो न भूप ऐस शम्भु चापही ॥

सवैया ॥ जिनके नहिं धर्म दया मनमें गुरु साधुन की नहिं
 सेवकरै । परनारि सदारत लाज नही शरणागत को नहिं दुःखहरै ॥
 प्रतिकूल सुपंथ कुपंथ चलै पितु मातन सो वसुयाम लरै । मुख का-
 रिख लागहि गो तिनके इमि भूपतिना शिव चापधरै ॥

कवित्त ॥ चंद्र सो प्रकाशमान कीरति कलाप लोक पावक स-
 मान दीप्ति जाग जासु चंडहै । भाग्यवन्त बुद्धिवन्त ऐस ज्यों सु-
 एकदन्त तेजवन्त भूरि ज्यों प्रसिद्ध भारतण्डहै ॥ भूमिभार धारिवे
 मधीरमान शैव जैस पौनहूते पुञ्ज जौन वीर वरवण्ड है । रङ्गभूमि
 मध्यआजु होइ जो महीप ऐस लेइ सो उठाय वेगि चंद्रमौलि दंड
 है ॥ कैतौ भूपरूप धारि शङ्कर समाज मॉफ आये होइ लेइ ते
 उठाय सद्य चापहै । कालकूट तेज ते जरत देखि देव दैत्य कारु-
 णीक शम्भुताहि कीन पान आपहै ॥ खोलिनैन जोर मैन त्रिपुर
 दनुज दुष्ट मारेवान

॥ ६ ॥ लोकनागकारक

मुजैन ताप्रहारेके भवाब्धि घोरतारके प्रसिद्ध जा प्रतापहै ॥ कैतौ
 विधि सारिखे प्रतापवन्त होय भूपजासु यश विस्तृत कलाप ठांव
 ठांवई । भाग्यवन्त बुद्धि तीव्र चातुरी प्रसिद्ध जासुलोक रचिदीन
 जो सकल सृष्टि जावई ॥ शैल सरिताल जाल दिग्गज समुद्र सात
 कानन अपार जीवजन्तु को गनावई । होय जो प्रचंड ऐस आय
 सो दलै पिनाक जानकी समेत जै त्रिलोक आजु पावई ॥ कैतौ
 हरि आपरूप भूपको अनूपधारि आये या समाज मध्यहोय शोभ
 शालहै । कोलरूप धारिजे हिरण्य अक्षपातकीक दीनबंधु मारे आपु
 पैठिकै पतालहै ॥ वीनहै कमठ पृष्ठिधारण सुमंदराद्रि गावत सुयश
 चारु जाको वेदजालहै । भाग्यवन्त स्वामि सो सबल भूमिभार हार
 तोरही उठायंचाप शङ्कर विशालहै ॥ सवैया ॥ कै गणनायक सों
 वरदायक जाहि सुगंसुर शङ्कर ध्यावै । विघ्नविनाशन वानिअहै सु-
 मिरो ज्यहि सिद्धि सवै जनपावै ॥ जासुप्रभाव महाप्रथमै पदपंकज
 पूज्य सदा सब ठावै । जो इमि होय महीप कऊ भगवन्त स्वई यह
 चांप उठावै ॥ कै हरिचन्द समान हुवैसति कीरति जासु चहुँदिशि
 छई । कै पृथुसो गहि वर्वस जे लिय धेनु स्वरूप धराहि दुहाई ॥
 कै रघुसों जिन पीठिलही रिपुनाहिन नानहि याचक पाई । दृष्टि
 दिये परनारि नहीं इमि भूपचहै धनुलेहि उठाई ॥ कै नृपवान स-
 मान कऊ परिपूरण जो सब धर्महिपालै । कै सुदिलीप समान जिन्है
 डरगो हरि वारिप्रिये यक आलै ॥ कै जिमि सागर जासुत सागर खो-
 दिगये सब पैठि पतालै । कै सुग्रयाति दधीचि भगीरथ ज्यों नृपसो
 शिव शासगदालै ॥ छप्पे ॥ देवदनुज मुनि सिद्धमनुज गंध्रवादि
 कपाला । पितृनाग शशि भानु यक्षमारुत यमकाला ॥ गिरिसरि
 सिधु अपार जहाँल गि वेदन गयि । रत्नभूमि के माहि आजुने सब

चलिआये ॥ त्यहि सभामध्य वंदी वचन कहत सबहि गोहरायके
बलहोय जाहि सो उठि तुरत तोरै शिवधनु आयके ॥

दो० सुनि विदेह प्रण भूपसव उठे तुरत अभिलाखि ।

परिकर कटिकसि बांधिके चलत भये मनमाखि ॥

सत्रैया ॥ निज इष्टनवदि महीपति मानि सुधाय सकुछ पिनाक

धरै । तजि एक दियै ग्राहिएके लियै इमि वारहिंवार सुजोर भरै ॥

बल बुद्धि उपाय अनेक करै पर नाहिन सो कहुं नेकुटरे । दय ल-

ज्जित हारि गँवाय बलै तव आसन ओर पयान करै ॥

दो० तव सहस्र दंश भूपमिलि शिवधनु एकहि संग

लागि उठावन नहिं दख्यो क्रियोमान तिन भंग ॥

सवैया ॥ श्रीहत भूप समाज भये सब देखिय ज्यों दिन चद्र

कला है । हारिगये करिभूरि बलै सब भूपनको धनुमान दला है ॥

घोर कठोर शरासन शम्भु रुती नहि छांडत भूमि तला है । ज्यों जिन

कारिहि नैन सती मनप्रावन नाकहुं रंच चला है ॥ शिवचाप सु

मेरुहुते गरुभो नहि छांडत जो तिलमात्र धरै । नहि हालत डो-

लत है तनकौ जनु जामतभो यह शेषशिरै ॥ शिव आप चढ्यो

यहि ऊपरकै गरुता स्वड नाहिन देतुमुरै । लियभार उदै गिरिअस्त

किधौं धनुरूप धरयो महिंजानि परै ॥

दो० नृपसमाज गति देखिके उठे जनक अकुलाय ।

बोले वचन सक्रोध तव भूपन सबहि सुनोय ॥

सवैया ॥ नाग सुरीसुर भूपजिते धरि मानुप्रदेह इते सब आये ।

तोरनको धनु कौनकहै नृपकाहु न रथक भूमि छडाये ॥ कीरतिजै

वडि दिव्यसुता जनु पावनहार न ब्रह्मउपाये । जाहुघरै अब गर्व

करै जनि कोउ धरापर वीर न जाये ॥ जो जनत्यो भटहीन मही

करत्यों इमि तौ प्रथमें प्रण मैना । जो करिकै अव ताहि तजौ मम
 धर्म नशै भल कोउकहैना ॥ पुत्रिकुमारि रहै हमकाकरि कर्म लिखा
 कइमेटि सकैना । जाउघरै मुख कारिखदै सियव्याह विरञ्चि कियो
 लिखवैना ॥ श्रीमिथिलाधिप वैनलगे इमि लक्ष्मणके उर ज्यों शर-
 पैना । राघवत्रास न बोलिसकै रिसशोण भयो मुख पंकजनैना ॥
 ठाढेभये करसम्पुट कै शिरनाय कहे प्रभुसों इमिवैना । नाथ विदेह
 कहे कटु ज्यों रघुवंश समाज कहै तिमि कैना ॥ कवित्त ॥ भूपमि-
 थिलेश आपुवात ना सँभारि कीन तुच्छका पिनाक रामशासन जु
 पावऊं । गेंदसो उठाय भौन चौदहौ समान घटभूमि को पटाके फोरि
 मेरुको उखारऊं ॥ शेष केशधारि खैचि भूमिदेउँ वोरिसिधु सिधुलै
 रसातल मभारभरि आवऊं । भाग्यवन्त देउँ करिदिग्गज यकत्रसर्व
 भूमिसापिनाक शंभु ख्यालही उठावऊं ॥ सवैया ॥ सत्यकहौ नहि
 भूठकछू रघुनायक जो, तव आयसु पावौं । तौ यहिराज समाज
 विप्रे मिथिलाधिपको निजबूत दिखावौं ॥ पंकजनाल समान च-
 ढाय पिनाक लिये शतयोजन धावौं । तोरिमिलै रजदेउँ करौंनहिं
 तौ कर ना धनुवान उठावौं ॥ तामरसखन्द ॥ लपण कहे इमि वैन
 जवैहै । डरतभये मुनि भूपसवै है ॥ डगमग भू सव दिग्गज डोले ।
 जनकशके जब लक्ष्मण बोले ॥ जनमनमोद सिया हरपानी ।
 सुख रघुनंद लहे मुनिज्ञानी ॥ पुरजनहीं अतिशै सचुपाये । रघुवर
 सैनहि वंधु क्षमाये ॥ सहित सनेह लगे निज राखा । तव प्रभुसों
 मुनि कौशिक भाखा ॥ सवैया ॥ रामउठौ शिवचाप दलौ मिथि-
 लाधिप को दुखमेटहु भारी । शोचहरौ य सभाक सवै भगवन्त करौ
 सुरसंत सुखारी ॥ चाप उठाय मुरेचुप जे मुख कारिख दै गवनै घर
 भारी । पंकजनाल समान करौ यहि खंडन सद्य पिनाक पुरारी ॥

सुनतै गुरुवेन उठे रघुनन्द हृदय निहिं हर्ष विपादलये । पदना
सुभाल सुधायचले मधिवेदि पिनाक समीप गये ॥ भगवन्त प्र
पुर लोग निहारि रौंभारत आपनि पुरयभये । सुरसानंद वर्षि ।
सून सवै नभसंकुल इंदुमि शब्द दये ॥

दो० सीयमातु लखि रामतनु अति कोमल छवि ऐन ।

सखिन समीप उलायकह सहित प्रेम मृदुवेन ॥

हरिपदबंध ॥ देखौ सखि यहि सभामांभ हे वैठे चतुर अपारा ।

यह अनुचित अतिहोत वातहे कोउ न करत विचारा ॥ गरुड कठोर

कहां शंकरधनु येतौ अति सुकुमारे । रावण वाण महाभट जाको दे

खत गवहिसिंधारे ॥ अपरभूप बलवंत बलै करि परमहार सब पायो

त्यहि करषणहित राजकुमारे अब मिलि सकल पठायो ॥ सोलखि

होत हृदै भरे दुख वरजत कउ न अहावै । हंससुवन किमि कहै

सखीरी मंदरमेरु उठावै ॥ सुनिबोली सखिधेन गनौनाहि तेजवन्त

लघु रानी । देखत लघु रवि उदैहोत ज्यहिं तीनि भुवन तमहानी ।

प्रणव भत्रलघु विवश जासुहै विधि । हरि हर सुरसर्वा । कहै गयं

ताको वश अपने राखत आंकुश सर्वा ॥ अस विचारि संदेह को

जनिइनहि अतुलबल जानौ । विनहि प्रयारा शंभुधनु दलिहै मा

सत्यमम वानी ॥ सखी बचनसुनि मातुसुनेनै भईधीर मनमाही

लगी लखन भगवन्तरूप छवि प्रेमजात कहि नाही ॥ सवैया ॥

क्षण रामहि देखि सिया मनमाहिं उठी अतिशै अकुलाई । घोर

ठोर शरासन शङ्कर रावणवाण सके न उठाई ॥ ये अति कोम

क्यो दलिहै प्रणठानंत नीकभयो नहिराई । काहकहो मतिभोरि

भइ देखत ना भलाई ॥ हे गणनायक शम्भुशिवा

भंजन रंजन कृपाकरिये प्रभु सेव कि

तव आजुहि लाई ॥ पूरख आशकरो मनकी धनु कौतुक भंगकरै
रघुराई । कै हित मोर हरोगरुता धनु राघव बहिन होहु सहाई ॥ जो
हमरे मनकाय गिरा रघुनायक के पद प्रीति भली है । तौ मिलिहै
न संदेह कछू करि है ममआश सबै सफली है ॥ जापरजाहि सनेह
मिलै त्यहि आवत संतत, रीतिचली है । सो मुन जानि चितै प्रभु
ओर ठन्यो प्रण प्रेम विदेह लली है ॥

दो० अन्तर्यामी रामप्रभु हरणभक्त दुखघोर ।

कीन्ह्यो प्रण सियजानिकै लखत भये धनुओर ॥

लणलाल देख्यो चहत प्रभु भंजन भवचाप ।

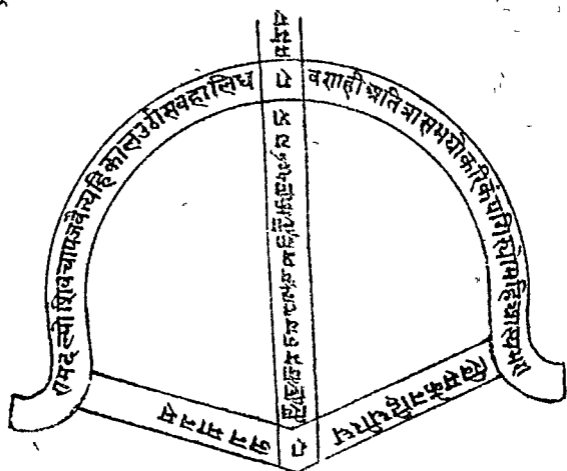
कमठ कोल अहिदिग्गजन दियेसजग करिआप ॥

त्यहि औसर प्रभु मनहिमन गुरुपदपंकज ध्याय ।

अतिलाघव आतुर परम शिवधनु लीन उठाय ॥

छप्यो। वामपाद अंगुष्ठदावि गोसायक दीन्हा। बायेकर गहि मध्य
दाहिने दूसर लीन्हा ॥ रोदा खेचि चढाय बहुरि दहिने गहिबीचा ।
दुमक्यो दामिनि सरिस भयो नभ इव जवईचा ॥ भयो कठिन घोर
गम्भीर त्यहि समथ शब्द त्रिभुवन भस्थो । सब लखत दलत काहु
न लख्यो राम खण्ड द्रुमहि धरयो ॥ कवित्त ॥ हालउर्वि गुर्वि अदि
दिग्गज सकंपमान उछल समुद्र दिग्पाल गे सनाका है । कोलहू
कमठ व्याल जालभे विकल चौकि शङ्कर विरञ्चि काहहोत भो ध-
माकाहै ॥ देवगण चक्रित विमान भानु चंद्रमाक धाय लड़िजात एक
माहि भे धड़ाकाहै । भाग्यवन्त लोक लोक छायगो प्रचण्ड शोर
खंड्यो रामचन्द्र दंगडखेचि ज्यो तड़ाकाहै ॥ सवैया ॥ रामदण्यो
शिवचाप जवै त्यहिकाल उठी सब हालिधरा । रावणही अतित्रास
भयो करिकम्प गिरयो महि आस्यभंरा ॥ राखिसक नहि धीरधरा-

धर राजन मानस मान जरा । राखिलियो भगवन्तनृपै प्रणलोक
तिहूं यशराम भरा ॥



कवित्त ॥ कुलिशकठोर दंड वीरवरिवंड भूरिहारिगे उठायरंच
काहु तौन मोराहै । बाण दशकंधवीर वीरताको मान जिन्हें देखत
लगाय बांवगौने भवन ओराहै ॥ प्रबल प्रचंड तेजवन्त भूपमंडल
क नाशभो प्रताप ज्यों मलीन चंद्रभोरा है । भाग्यवन्त कौशलकु
मार ता समाजमध्य सेमि बीच सारिखे पिनाकशंभु तोराहै ॥ ब्यो
देव दुन्दुभी बजाय भापि जैति जैति वर्षही प्रसूनपुंज क्षोणि बां
भोराहै । वंदीसूत मागध कलाप कीर्तिगानठान जैति जैति शब
लोकतीन पूरि घोराहै ॥ भाग्यवन्त ता समय कि मोदना बखारि
जात रामचन्द्र जा क्षणे पिनाक शंभु तोराहै । रंगऔनि नारिन
सानेदास्य रामचन्द्र देखे एकटक ज्यों चक्रोर चन्द्रओराहै ॥ श्या

कंद आभंग अम्बर सुरंगपीत कुंडल अनूप दिव्यभूलै गोलगाल
 पै । चन्द्रमास्य चारुनव्य पंकजाक्ष वंक भौह सूखमा निधानहै ति-
 लक उच्चभालैपै ॥ श्यामकेश वेशवाम वाम सोहशीश श्रोण चौ-
 तनी सुवोध एतवार शोभजालपै । भाग्यवन्त रूप सूपमान आन
 काम कोटि वारडार अंगनांग कौशलेश लालपै ॥ छप्यै ॥ नवलक
 मखदल नयन अमलकल जनन दरदहर । सजलजलद तनलसत
 वसनभल चमक पटलहर ॥ वदन अधरवर दशन हसन मद मदन
 हतन कर । अनद सदनतन सकल लखतमन परमहरपभर ॥ जय
 सकल हरनभव भय दलन धनप जनक कर पनपलन । यश भनत
 अमरनर शमन अघ चरण शरण दशरथललन ॥

दो० शतानंद आयसु तवहि राम हृदय जयमाल ।

मेली सिय छवि देखिकै भै सबसभा निहाल ॥

लखिलखि गलभल माल सुर हरवर जयजय गाय ।

धनिधनिभनि कलफूलधलै भरिकरि हरिपरआय ॥

कवित्त ॥ कंचन सुथास्वारि आरती सवारि नारि दूव दधि

रोचना सुरभि धारि फूलनै । वांधिकै

भ्रमेलजाल मंद मंद वाम वृन्द आ-

वर्ती करत गान देवदार भूलनै ॥ वा-

जत निशान व्योम इन्दुभी विमान

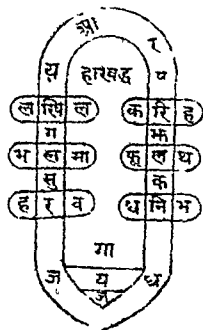
साजि वर्षही प्रसूनमाल देव सानुकूल

नै ॥ भाग्यवन्त आरती उतारिवारवार

देखिपावती अपार मोद हीय मोदमूल

नै ॥ दोहा ॥ सियशोभा अद्भुत अ-

मित देखि दुष्ट महिपाल । जहँ तहँ



आपुसमाहिं तौ लगे वजावनगाल ॥ सवैया ॥ साजि गयंद तुंग
 स्थै चढि कूडिसनाह सुअसन धारो । धायहुवेगि गोरिपै सिय
 छीनि लियोदुवांधि कुमारौ ॥ जो वरजै मिथिलेरा कछु रणसेनस-
 भेत तिन्हें पुनि मारौ । काजसरै नहिं चापदले विनुजीति लिये नृप
 वृन्द अपारौ ॥ सोरठा ॥ सुनि दुष्टनके नैन साधुभूष बोले वचन ।
 सूभततुम्हें न नैन जक्कमातु पितु राम-सिय ॥ वादिवजावत गाल
 नृपौ सब लाज अहै क्यहुं लेशनराई । तेजप्रताप गरूर गुरु बल
 नाक पिनाकहि संग सिधाई ॥ स्वैवलकी कछुसाधन कै सुरदृष्ट प्र-
 साद अवै कहुं पाई । है असिबुद्धि तुम्हें ध्रुव तौ चतुरानन आनन
 कारिख लाई ॥ ज्यो खगनायकको बलिभाग चहै बलकै खल पावन
 कागा । ज्यो खगोश नहोश चहै खुद मत्तगयंदनके रिपुभागा ।
 ज्यो हरिसों प्रतिकूल चहै गति पावन कै मतिमन्द अभागा । त्योहि
 बृथा सिय व्याहन को तुम सारिप दुष्टल लालच लागा ॥

दो० वरकेवर रघुनाथजी वरवर पौरुष शाल ।
 वरसम तुम वरवर करत व्यर्थ भूतपति जाल ॥

शक्तिश्रीमदयोध्यालिहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितातेभक्तिशिरोमणिग्रन्थेश्वीरामचंद्र
 धनुभगकरणसीताजयमातमेतनवर्णनोनामनवमोऽध्याय ६ ॥

कुंडलिया ॥ सीता राघव प्रद्वपद वंदौ सब सुखदानि । निरय
 निवारण भौशमन शरण सुखदकी वानि ॥ शरण सुखदकी वानि
 भजत हरि हर विधि चरना । नामलेत अनयास सुकृ जीवन भौ
 मरना ॥ नाकभूमि पाताल सुयश जा आख्य पुनीता । ताकि
 शरण भगवन्त पाहिनित राघव सीता ॥
 यहिप्रकार जे कुटिल भुवाला । रहे वजाई व्यर्थ सब गाला ॥
 तव सीताहि सब सखी सयानी । चलीं ख्यवाडि मातुपहं आनी ॥

गुरु समीप गवने रघुवीरा ॥ धनुपभंग सुनि राव्द गंभीरा ॥
 परशुराम त्यहि अवसर आये । देखत भूप सकल डरपाये ॥
 सवैया ॥ गौर कलेवर भूतिलसै भलिभाल त्रिपुंड्र सजै छवि
 ऐना ॥ शीशजंटा मुखचन्द्र प्रकाशित वंक्र सु भू, रिसलोहित नैना ॥
 चारुजनेउ सुमाल गरे मृगछाल विशाल लिये सुखदैनाना । लंक
 वितून कसे धनुवान गहेकर कंध कुठार सुपैना ॥ कवित्त ॥ देखि
 कै कुठार पाणि वेपकी करालताति भूपवृन्द खौफखाय धाय माथ
 नाये है । बाप सोप नाम भाखि राखि पांशुपाँव माथ भूरि मानि
 प्रांस वेप वामको वनाये है ॥ फेरिनैन हेरही सुभाय जासुओर ता-
 सु जान गै खुटाय आयु लेनप्राण आये है । आगतौ विदेहराज
 नायमाथ बोलिपुत्रि मेलिपाँव पायकै अशीप मोद छाये है ॥ स-
 वैया ॥ कौशिक आयमिले पुनि सादर पंकजपाँय द्विवंधुनडारी ।
 राम सुलक्ष्मण नायइन्है अबधेश कुमार विमोहितकारी ॥ रामस्व-
 रूप प्रभाति विलोकि थके थृगुनन्द निभेपविसारी । दीन अशीप
 भेली भगवन्त भयेसुनि सानुज राममुखारी ॥ फेरि विलोकि वि-
 देहदिशै कहुं उत्सव क्या तव मंदिरआजू । कारज कौनय भीखड़ी
 इत आनिजुरे सब देशनराजू ॥ भैम्रण कीन य तोरहि जोधनु व्या-
 हहि सो सिय तौन्यहिकाजू । आवतअ भगवन्त इतै सब देशनके
 नृप सोजिसमाजू ॥

दो० ॥ नृप विदेह के वचनसुनि परशुराम रिसठानि ।

बोले रेजइ जनकते डारे करि वडिहानि ॥

परशुराम वचन ॥

कवित्त ॥ दीनशम्भु पूजनार्थ चापतोहि मंदबुद्धितासुते अनाद-
 रेन कीन नेकु काजै है । ठानतै पने नहीय कीन शङ्क शङ्करो कि

त्रासहू न राखिमोरि स्वहीन लाजहै ॥ तोरे चाप दुष्टकौन केसीसे
 लुकान वैठ तिक्षण कुठार अग्निदाही तौन आजहै । वेगि दे वताप
 मोहिं मूढ सो विदेहनातु उलटौ धराहि सद्यजाहँलौ तु राजहै ॥
 विम्बछन्द ॥ मुनिपरशुरामवानी । रिस अधिक माहिसानी ॥
 सभयरामजानी । भयकहत आपवानी ॥ राघववचन सवैया ॥ नाथ
 अहाँ तवदासमहीं यह शम्भुशरासनकेर दलैया । ५७
 कहौ किनमोहिं कृपाकरि सोइकरौ यहिठैया ॥ भाविहि काहकरौ
 प्रभुमे यहतौपि रहै ममहाथ दुटैया । सोकर छूतहि दूटिपरयो मुनि
 नायक है ममदोष नरैया ॥ परशुरामवचन दोहा ॥ करणी करिकै
 शत्रुकी बनाचहौ अवदास । तजिसमाज कीजै समर त्यागिजीव
 की आस ॥ लक्ष्मण वचन सवैया ॥ खेलत दूटिगई धनुहीं बहुकीन
 कवों रिसयों न गुसाई । याधनुपै ममता क्यहि कारण आजुप्र
 भृगुनाथ बढाई ॥ सौँचिकहौ मुनिजानत ना हम प्रीव रहै य तुम्
 अधिकाई । दूटिगयो जनि व्यर्थकरौ रिस हैनकछू रघुबीर लगाई
 परशुराम वचन कवित्त ॥ एरेमन्द वालक सँभारि बैन बोलु क्यों
 अज्ञके समान मोहि ज्ञानतू सिखावई । घोर शम्भुचाप जो प्रसिद्ध
 तीनि लोकमाहिं ताहितू समान सर्वधानुही बतावई ॥ जानकीर
 रामतोहिं खेदिकै सँहारि दुष्ट डारिहौ कलाम जो बदन फेरिलावई
 भाग्यवन्त मानु सत्यशीघ्रही करौ न जोपि परशुराम नामतौ न
 आजुते कहावई ॥ लक्ष्मण वचन सवैया ॥ हे भृगुनन्द सुनौ मम
 जान अहै सगरे धनु एकहिनाई । लाभकहा यहि तोरनमें करछूतहि
 दूटरह्यो घुनखाई ॥ मारतहौ मुनिगाल मृषा तजिईश वियोकरि काह
 सकाई । जोपिनही यह नामप्रिया द्विजबोली लियो कड और ध
 राई ॥ परशुराम वचन कवित्त ॥ जानना प्रभाव मोर कानना सुने

सुभाव मारहुँ न तोहि मूढबालक विचारिकै । देखु या कुठारधार जाहि
 सो यकीसवार क्षत्रिने संहारि भूमि क्षत्रहीन कारिकै ॥ दोन सोपि
 विप्रन समाज मै न जानतौ न साहस भुजादि वीर संयुग पछारिकै ।
 सोई है कुठार बालगर्विन विनाशकार तातमात शोकदेन मंदमोहि
 रारिकै ॥ लक्ष्मण वचन सवेया ॥ भृगुनन्द सुनो मै सत्य कहौ
 प्रकमानि तुम्है द्विजनातडरौ ॥ नतु छीनि कुठार तुम्है हतिकै कुल
 क्षत्रिन दावलयतु सगरौ ॥ परधर्म तुम्है रखवार वडोवधकै शिरपातक
 भूरिप्ररो ॥ भगवन्त डरौ पुनिराधवको नतु कौतुकही तवगर्वहरौ ॥
 कवित्त ॥ चारवार मोहि क्या देखायतो कुठार तानि चाहतो उडाय
 देन फूकतै पहारहै । कूहडेकि वातियाहौ विप्रदेव अत्रमैन तर्जनी
 विलोकि शीघ्रहोत जो संहारहै ॥ गायविप्रदेव साधु मारिवे मशूर
 नाहि मानि विप्रनातवैन साहत तुम्हारहै । जानि वीरकीन बाद की-
 जिये क्षमासमान कोटिवज्र वैनधार व्यर्थही कुठार है ॥ परशुराम
 वचन कवित्त ॥ कौशिक सुनीय मन्द बालक य देह खोट चाहताहै
 जानवेगियमके अंगारहै । भानुवंश चन्द्रम कलङ्करूपहीन शङ्क
 अंकुश विहीन शोभ्य भोकिदेन भारहै ॥ लीजिये वराज जोपि
 चाहहु उवार याहिरोम वलवरीता सुनायकै हमारहै । भाग्यवन्त टेरि
 मे कहौ न खोरि मोरि फेरि डारिहौ संहारि याहि काढिके कुठारहै ॥
 सवेया ॥ ज्वड़धार कुठार कराल भयो बहुवीर महीपन के घर घा-
 लक ॥ स्वइ आजहु हाथ बन्यो हमरे सुनुर मतिमन्द महीपति
 बालक ॥ कस बोलत वैन सभारि नही जड़ जानत नाम न क्रोध
 कहालक ॥ मुख लागहिगो खल जा हमरे तो देहुँ सोपि अवे
 त्वहि कालक ॥ लक्ष्मण वचन कवित्त ॥ आपुही अब्रत की-
 र्ति आपुकी बखान कोन कहावार भूरिशक्ति जोन फेरि गविहू ।

रोकें रिस-सहो न मुनीश दुःखहीय-मोहि वीखती गारीदेत शोभ
 को न पावहू ॥ शरणा वखानकरै शस्ता समर आपु कायरत्त कामहै
 प्रलाप सो न लावहू । भार्गवेश वार-वार हांक यों लगाव आपुमोहि
 लागि मानों बेगि कालको बुलावहू ॥ परशुराम वचन सवैया ॥
 ठानत बाद कठोरअहै शठ-वाल विचारि बंध्यों नहिं तोहीं । जानत
 मोर सुभाव नहीं कुलक्षत्रिन शत्रु सुभायन कोही ॥ आवत है त्वहि
 त्रास नहीं यह तिक्षणभार कुठारहिं जोही । चाहतहों बध याहिकरै
 अब लोगदियै जनि दूषण मोही ॥ विश्वामित्र वचन सवैया ॥
 भृगुनन्द क्षमा अपराधकरौ यह तोपि अबै अनजानतहै । वेश
 बाल स्वभाव न त्रासधरै तुमसों प्रतिउत्तर ठानतहै ॥ शुचि साधु
 सुजानअहै जगजे शिशुके गुण दोष न मानतहै । भगवन्त करौ
 असजानि कृपा मुनि साधु तुहैं सब भानतहै ॥ परशुराम वचन ॥
 कवित्त ॥ बालक विचारि तोहिं मारौ न महींपुत्र वार-वार लाव
 ज्वाव देतहौ बरायमें । हाथहै कुठार घोर क्रोधित सुभाव मोर द्रोही
 गुरुठाह अग्र रहौ रिस तायमें ॥ भाग्यवन्त सो तौ सब कौशिक
 तिहारो शील नातरु कठोरखैन हालद्यों ब्रतायमें । काढिकै कुठारघोर
 धारहीते याहि आजु गुरुते उच्छ्रण होत्यों थोरही उपायमें ॥ लक्ष्मण
 वचन कवित्त ॥ शीलमुनि रावरो जहान में न जान कौन भयो
 हे उच्छ्रण भांति आछे तात मायसो । रहिगो गुरुको ऋण वाढ्यो
 अति शोच तौन काढ्यो जनु मेरे शीश वैद्यो आपु स्वायसो ॥
 वीतिगये वार-भूरि ॥ १ ॥ है कलाप व्याज लावो ईश व्योहरे सु-

उपजावत क्रोधहिये हमरे ममहाथहिका खलु मृत्युचहे ॥ भल आ-
 पन चाहसि जो शिशुते लखि घोर कुठारहि मौनरहे । नंतु सत्य
 पुकारि कहौ सबते अब तोहि पठावत कालपहे ॥ लक्ष्मण वचन
 सबैया ॥ महिदेव कुठार दिखावत का द्विज मानितुम्हे मनमाहिडरे ।
 इमि और प्रचारत जोपिहमे लखतू पुनितागति जोनकरे ॥ द्विजदेव
 गये बढिधामहि मे प्रतिवीर कबो न मिल्यो समरे । भगवन्त सुन्यो
 खुवशप्रभाव न कालहु जेरण त्रासधरे ॥ राघव वचन कवित्त ॥
 सुधमुख दूधहे न कीजिये कृपालु कोह बालिभाव मानि याहि विप्रज
 क्षमाकरौ । रावरो प्रभाव जोपि जानतो कछुकनाथ भूलिहून आपुसो
 य लावतो वरावरौ ॥ बालक अयोग्य कामकृत्य जोपि देखिताहितात
 गुरु मात मोदपुञ्ज हीयमाभरौ । भाग्यवन्त शील समधीर हौ मुनीश
 ज्ञानि सेवक विचारि वैन बालहीय नाधरो लक्ष्मण वचन ॥ सबैया
 द्विजहैकरि धरिण अस्र किये पुनि क्षत्रिनके कुल घातकहे । त्रिनु
 कारण कोहि सुभावसदा अरु मास्तभे निज मातकहे ॥ उरमाहि
 दयाकर लेश नहीं रत हिंसहि मे दिन रातरहे । भगवन्त विचार करौ
 मनमें सुकृपाकि इन्हें कसिदात अहे ॥ परशुराम वचन सबैया ॥
 रामतवानुज पापमयी विष आननहे यहतो मुखपेना । गौरशरीर
 अहे मन श्याम सुभाय सुटेह तुम्हैय छजेना ॥ नीच कुबुद्धि महा
 यह बालक मीचुसमान हमे सु लखेना । ठीठ अतीव दवे तनको नहि
 बोलत मोहि वरावरि वैना ॥ लक्ष्मण वचन कवित्त ॥ पाप मूल
 क्रोधबश्य जासु हे अनीति लोग करत विचारि आपुलीजे देखि
 मनमें । त्यागिके सकल क्रोधकीजिये कृपालु छोह विप्रदेव स्वामि
 आपु संततांघ्रिजनमें ॥ दूटो चाप जुरेन रिसानि मुनिबडे आपुवादी
 हे हे पीर भूमिठाढे सो पगनमें । भाग्यवन्त प्रीव चापहोय जो अ-

तीव्र आपदेउतौ-जुरायकै गुणीय बोलिछनमें ॥ परशुराम वचन
 सबैया ॥ तनसुन्दर-ज्योघट हेमलसै मनमैलभरो विप्रको रसज्यो
 निकसे-जनुज्वाल कराल-महा-कटुवैन कहैज्वइ-वालकयो ॥ लघु
 भ्रातय राम-विचारि तुम्हार अवैलागि मै नहिं-याहि हत्यो ॥ कुश
 खात-चहौ यहि-वालक जो कटु-वैनकहै न-मना करिख्यो ॥ राघव
 वचन-कवित्त ॥ बालकारु-वरै सुभाव-तुल्य-एक-जानि-संतता वि-
 दूषे-नाथ-आपुनौ-सुजानहीं-सवरो-न-काज-सो-न-शायो-वालविप्र
 देव-दूटचाप-हाथ-मो-पराधवानहौं-महीं ॥ जानिदास-अपनो-कृपासु
 को-प-बन्ध-बध-कीजिये-कृपाल-जौन-शीशसो-सबैसहीं ॥ जायजा
 प्रकार-क्रोधकीजिये-प्रसिद्ध-तौनकरो-सो-उपावनाथ-ग्राही-काल
 शीघ्रहीं ॥ परशुराम-वचन-सबैया ॥ रामकहौ-क्यहि-भांति-मिटै
 रिस-हेस्त-बन्धु-अजौतु-अनैसो ॥ जोयहि-कण्ठकुठारन-दीन-तु-कीन
 कहा-पुनिमै-रिसकैसो ॥ नारि-महीपन-गर्भकहा-जु-कुठार-कराल
 बन्धो-कर-है-सो ॥ देखत-शत्रुमहीप-किशोर-अवैलागि-जीवत-अग्र-
 खडैसो ॥ महिपालन-जालन-घालन-जो-य-कुठार-सुकुंठित-भार
 भयो ॥ नहिं-हाथवहै-ज्यहि-घातकरो-वश-क्रोधहियो-ममजाततयो ॥
 प्रतिकूलभयो-विधिमोपरहै-त्यहिते-फिरि-मोर-सुभावगयो ॥ कसि
 वात-कृपाकि-हृदै-हमरे-स्वइ-आजुदया-इखभूरिदयो ॥ लक्ष्मण
 वचन-कुरडलिया ॥ जैसी-मूरति-आपुकी-विप्रताहि-अनुकूल ॥
 कृपावाउ-चलभंक-त्यहि-भरे-वचन-जनुफल ॥ भरे-वचन-जनुफल
 सुनी-यह-जातन-वाता ॥ जरे-कृपामुनिगातभये-रिसराखु-विधाता ॥
 ताप-व्याधि-उरहोयकरो-ओपधि-पुनि-तैसी ॥ जस्तहोय-जलद्वाव-
 रुचै-कीजे-मनजैसी ॥ परशुराम-वचन-सबैया ॥ देखु-विदेह-अहै
 यह-वालक-सोट-महाकटु-वालत-वैना-॥ देखन-व्याह-उद्धाह-चहै

नहिं जानवहे, सुकृतांतहिं ऐनाः ॥ आवत कालभयो त्रलियाकर
 दोपदिह्यो परिणाम हमैना । जोपि उवार चहौ यहिको, तौ ओटकरौ
 किन सद्यहि नैना ॥ लक्ष्मण वचन नाराचछन्द ॥ रूचै उछाह जौन
 आपु नैनमूदि लीजिए । परैन देखिकै कतौ वृथान क्रोधकीजिए ॥
 कितौ मुनीश जाहुवेगि काननै सिधायजूत भेजि दूत आपुको पठा
 वकै बुलायजू ॥ राघव प्रतिपरशुराम वचन, कवित्त ॥ तोरि शंभुचाप
 शठकरै है प्रबोध मोर कहै कहुवन्धु ताहिं दीनतू सिखाई है । आपु करै
 विनै बल छाड़ि दे कहाउवाजु तेनी रामनाम कैतौ, तोरु अस्त्र आई
 है ॥ त्यागि बलद्रोही शम्भुकरै कित्तयुद्ध आय भूपपुत्र मारौ तो हि
 नातौ युक्त भाई है । कहौ सत्यवचन सुभायन मूडल आजु देख या
 कुठार घोर क्षत्रवंशहाई है ॥ राघव वचन सवैया ॥ सूच्यहु दोषपरै
 कतहु शशि वक्रहिं ज्योनहिं घेस्त राहू ॥ लक्ष्मणकेर गुनाह अहै
 ममऊपर तौ मुनिव्यर्थ रिसाहू ॥ हाथ कुठार अहै शिर अग्ररुचै मन
 जो तजि क्रोध कराहू । जानि हमें भगवन्त स्वदास करौ रिसजाय
 यथा मुनिनाहू ॥ कसियुद्ध अहै प्रसुसेवककी तजि क्रोधमुनीश
 कृपाहिधरौ । धनुवाण कुठारधरे लखि बालक वीर विचारि सुक्रोध
 भरौ ॥ नहि चिन्हत जानत नाम अहै निजवंश प्रभात्र सुज्जाव करौ ।
 मुनिवेष जुहोत्यहुतौ धरतै शिशुपङ्कज पायन धूरि शिरौ ॥ कवित्त ॥
 क्षमौचुक बालक अजानकी द्विजन हीय चाहिये अपार कृपा क्रोध
 ना हृदैधरौ । रावरो न मोहि है बरावरी सुविग्रदेव पादकहां माथहै
 विचारहीय मे करौ ॥ रामनाम छोट मोर रावरो बड़ो है नाम एकै
 गुण मेरे चाप आपु माहि नौ भरौ । दाता दयावन्त दत्त तापसेद्रिजीत
 ऋजु क्षमा तृष्णातोप आपु सवै भांति हौवरौ ॥ परशुराम वचन
 छपै ॥ त्वहं वन्धु समग्राम निपट जानै द्विजमोही । मुनु जेमो मे

भगवन्त अहै अस को कवि जौ सुखमाँ सुरकी त्यहि गाय कहै ॥
 दो० ॥ यह सब कथा अनूप मै कह्यो यथा मिति गायै ॥
 ॥ १ ॥ अव सुनिप्रे चर अवधपुर पहुँचे ज्यहिविधि जाय ॥
 ॥ कौतिक कृष्ण वाणतिथि कहियाँ ॥ पहुँचे द्वैत अवधपुर महियाँ ॥
 ॥ द्वारपाल कयक तुस्त ॥ प्रठावा ॥ जाय भूप पहुँ खवरि जनावा ॥
 ॥ सुनत बोलि लीन्हो नरनार्थी ॥ आय दूत जनाये ॥ पद मथा ॥
 ॥ तुस्तहि दीन्ह पत्रिका ॥ काढी ॥ उठि नृपलीन हर्ष अतिवाढी ॥
 ॥ वांचत प्रेम उमँगि तन आयो ॥ गद्गद करठ नैत जल छापो ॥
 ॥ पुनि धरि धीर हृदय नर भूपा ॥ लागे गांचन पत्रि अनूप ॥
 ॥ हरिपदबन्द ॥ सिद्धि थीपद सत्ये दान जतपि शौच धीर नव
 ॥ धरी ॥ नीति धर्म धिर वीर शिरोमणि निगामनेति अनुसारी ॥ अति
 ॥ वंश अवतंस महीपति सकल लोक हितकारी ॥ महा राजा दशयात
 ॥ ज्ञाननिधि चक्रवर्ति रिपुआरी ॥ राजरत्न सरोजि दार्स लिखि
 ॥ शीरध्वज कहिनामा ॥ विविध भाँति करजो रिजाय शिर पहुँचै
 ॥ मोर प्रणामा ॥ कुशल अत्र तव कृपा कृपाकर सिद्ध कुशल तव
 ॥ चाहौ ॥ जाते मम कल्याण श्रवण सुनि मना परमानंद जाहौ ॥
 ॥ राम लपण दउ बन्धु रावरो सुवन भुवन सुखदाई ॥ तव ध्यासिन सा
 ॥ दर संग गवने विश्रामित्र सहई ॥ मारग चलत ताडकाँ मोर सि
 ॥ द्धाश्रम पुनि आये ॥ हति सुवाहु सहसेन राखि सख मुनिमन मोद
 ॥ वदाये ॥ श्रौतम ष्यपिकी नारि शाप प्रति मई उपलालखि ताको ॥
 ॥ चरण कमल रजि ह्याम दीन गति हरयो प्रसु तन नवक्रि ॥ दिव्य
 ॥ रूप द्वै तुस्त अहल्या गई स्त्रपति को धामै ॥ पुनि साजुजा सुनिसंग
 ॥ कृपालै गर्वन कीन्ह मीमात्रामै ॥ राजेन राजर पुत्र अर्जुपसु निरखि
 ॥ सकल नरनारी ॥ भये कृतारथ विना प्रमलहे मोद अत्र मारी ॥

सहित समाज नक्षत्र इत उदै होहु तरनाह ॥
 सुनि पत्रिका परम सुखदाई । लह्यो सभा सब सुखसमुदाई ॥
 त्यहि अवसर रिपुदहन समेता । आये भरत समीद निकेता ॥
 वृभक्त नृपहि प्रेम सरसाते । तात पत्रि आई कहवाते ॥
 राम लषण द्वजवन्धु हसारे । सुखसागर प्राणन के प्रारे ॥
 कहिये कुशल अहं क्यहिदेशा । सुनि पुनि वांच्यो पत्रिनरेशा ॥
 सुनत भये द्वजवन्धु निहाला तत्र दूतन दिग बोलि सुबाला ॥
 बोले अति विनीत मृदुवाणी । सरल सीनेह सुधा रस सानी ॥
 सबैया ॥ ममिप्राण प्रिया सुठिपुत्र उभै जवते मुनि कौशिकसार ॥
 गये । तवते तव आनन आजुभली सुधिपावत या हम सांचुभये ॥
 द्वजश्यामल गौरकिशोरकसे कटितून शरासन वानलये । पहिचा ॥
 नहुतौपि स्वभाव कहौ उनपै तुम जो निज दृष्टिदये ॥
 दो ॥ तातकहौ क्यहि विधि उनहि जाने जनकनरेश ॥
 सुनत हूँत सुसकायकै बोले धवन सुवेश ॥
 सबैया ॥ राजनराज शिरोमणि राउर चक्रवती सम और न ॥
 जायो । कौन प्रकार प्रशंसकरी जिन विश्वविभूषणकै सुतपायो ॥
 प्रह्वन योग नहीं चृपते यश पुञ्जप्रताप तिहंपुरछायो । सिंहसमान ॥
 प्रसिद्ध उभै गुणसागर नागर जाहि न गायो ॥ कवित्त ॥ शील ॥
 सम साहसी कृपाल क्षमाधाम राम रूपतानिधान अद्भ कामकोटि ॥
 चारहै । नीतिधर्म पूरण प्रतापवन्त शूरवीर तैसही लक्षणलाल जां ॥
 कुरे उदार है ॥ श्यामगौर वै किशोर माधुरी सुठौर ठौर सुखमा अप ॥
 पार विश्व चीर जैतवारहै । भाग्यवन्त आखितर आवतौ न तैस ॥
 और कौशालेश वैशज्यो द्विरावरे कुमारहै ॥ सीय के स्वयम्बर म ॥
 हीप दीप दीपजाल समिटे पिनाक शम्भु काहुना उठायो है । बाण

दशकण्ठीर, देखि जाहि, वॉवदीन- ताहि रामचन्द्र, कंजनाल सों
 चढ़ायो है ॥ विश्व, जैतवारे, भृगुतन्द, तौ, डलारे, देखि, डारिकै कु-
 ठारचाप पाँव, शीश, नाथो है । भाग्यवन्त, रावरेसमान, कौन भा-
 ग्यवन्त जासुदिव्य पुत्रन प्रभाव, लोक छायो है ॥ तारकचन्द्र ॥
 सुनि दूतनके मुख, वैत, कहे हैं । सुखपुञ्ज, हिये, अवधेश, लहे है ॥ क-
 हिजात न, मोदहृद, नृपजेतौ । निवछावरि, दूतन, देन, लगेतौ ॥ चर-
 लेत न जानि, अनीति, हिये है । मृडवैत नृपै, इमि, ज्वावदिये है ॥
 हम दूत सुनो, मिथिल, अधिप, के, हैं । तनुजा, इत, ब्याहनते, जहते है ॥
 महाराज अहै, धनतौ, इहिताको । यहिकारण, हाथछुवे, नहिं ताको ॥
 इमि, धर्ममई सुनि, दूतनवैना, । सुख भूरिलह्यो, सबही, उर, ऐना ॥
 ॥ दो० ॥ तव भूपतिलै, पत्रिका, दीन, वशिष्ठहिनेजाया । निनिह
 ॥ ॥ दूतन, निकट, बुलायके कही, कथा, सबगाय ॥
 ॥ कवित्त ॥ मारि, मग, ताड़का, ससेनके, सुबाहु, नाश, राखिकै, मुनीश
 यज्ञ जालशोक, दाये है । तारिकै, सुनारि, ऋषि, कौशिक, समेत, फेरि
 देखनार्थ, आपयज्ञ, आपहू, सिधाये है ॥ भूपवन्द, होरे, तत्र, राघव, पि-
 नाक, तोरि, भानिके, कुठारपानि, गर्वही, नवाये है । रामचन्द्र, व्याह
 काज, मोहि, सावरात, वेगि, बोलनार्थ, मीथिलेश, दूतपत्र, लाये है ॥
 ॥ दो० ॥ जो, आज्ञा, मुनिराज, तव, होइ, करों, स्वइकाज ।
 ॥ ॥ सुनिवशिष्ठ, बोलेवचन, सुनिये, नृप, शिरताज ॥
 ॥ ॥ सबैया, ॥ ज्यो, द्विजदेव, गुरुपद, सेवक, आपु, अहौ, तन, मान, स
 घाती । ज्यो, भगवन्त, पुनीतमहा, नृप, संततहै, तुव, कौशिल, सानी ॥
 आपु, समाने, नमो, सुकृती, जगहै, नहिं, होनेसबै, गुण, खानी, राजन
 राज, प्रशंस, करों, किमि, वेद, पुनीत, सद्रा, यश, भानी ॥
 ॥ दो० ॥ ज्यो, सरिता, विनु, चाहना, जान, सिंधुके, पाहि ।

बहुत उच्चाह कहां लागि गावों वाढै लयन्य निपारनहिं पावो ॥
 भूपति बोलि भरत तव खीन्ही सिजहु वरात सुआयेसु दीन्हा ॥
 शिरंधरि आयसु भरत सुजाना ॥ पठयो बोलि साहेनी ज्ञानपा
 आयतुस्त गा सोदर शिरनाये ॥ पाय भरत आयसु संवघाये ॥
 राम न्याह हित अति अनुरागे ॥ अथ गज राजि स्वोरन लागे ॥
 छपै ॥ सिरगा समुद्र कपूरि सेतसुजा अवलकवी ॥ श्यामकृ
 ण गुल्दार तकुलु गरार सुकवी ॥ कुला स्याह सुतीति जेवादा मि
 सुरंगा ॥ सुशकी पंचकलान नील कुमैत पिलंगा ॥ त्रहुवरेण वरण
 राजत उरे वरणिके को नाम कवि जगमगत जीन अकृति
 सुभग कवि न जाय सो भूरिवि ॥ कवि च ॥ साजि अहं वाजिन
 विविज चारु जीतधारि हेमहीर आदिमै जदित रेङ्ग रंगनै ॥ नो कता
 अत्तपदै लगाम हेम वागपाद गंधि आला खोटे शीशवांधि श्रीवां
 डने ॥ हेमची विशाल संजु कंचन रकीव सोह लोयके सुजेखेत्त
 खेति पण्डितंगनै ॥ भाग्यवन्त कौन भौति गाउँ मै सुशोभे जाल ज
 गमगाति ज्योतिपुंज भूषण तुरंगनै ॥ भाग्यवन्त कौशलेश द्वारमै
 अपारभीर वाजिन समाजकी खानि जोत जातहै ॥ भारत उच्चाट
 एक पुस्तक अहाय फेरि घूमि घूमि भूमि चारवार हिहिनातहै ॥ जमत
 जंकदि एक फफक्ति तुरायवाग मारिहीं स जोरधाय सोह दाविजात
 है ॥ प्राके दौरिधासिके सहीस वांधि जागुडोरि लावही सकोधते न
 भूमि वहरातहै ॥ टापत संकोष ओर चारिह सुताकि ताकि दर्दराय
 दन्तत लमीम जोर लावही ॥ चारवार भूमिपे पठके पांव घूमि घूमि
 फरिफर करत सुबंधनै तुरावहीं ॥ जातभूके पांवचारि लंकही न जाय
 दादि तानिके कनौटिकादि अक्षनै तकावही ॥ भाग्यवन्त जोस्दार
 वाजिन कि ऐठमुरे देखि देखि राज पुत्र जात मोद पावहीं ॥ साजि

॥ जगत्प्राणी सव सुखी सम्पदा धर्मवानपे जाहिं ॥ ७४ ॥
 ॥ कर्पा अस विचारि मन भूपमणि सजिवरते सानन्द ॥ ७५ ॥
 ॥ नैनलाम चिलि जूटिये रामव्याह सुखकेन्दो ॥ ७६ ॥
 ॥ सुनि गुरुशासन भूपतव दूतन सुथल टिकीय ॥ ७७ ॥
 ॥ ॥ ॥ आपुगये भीतर भवच शनिन निकट बुलाये ॥ ७८ ॥
 ॥ ॥ वाचिसुनाई पत्रिका रामे लिपण कुशलात ॥ ७९ ॥
 ॥ ॥ भई सुनते रानी मुदित धेम निहृदो समात ॥ ८० ॥
 ॥ ॥ रानिन विप्रन बोलिके दीन विविध विधि दीन ॥ ८१ ॥
 ॥ ॥ त्यहि क्षणको भगवन्त मुदा को कवि करै बखान ॥ ८२ ॥
 पुनि महिपाल द्वार चलि आये सादर याचक बुन्द बुलाये ॥
 बहुविधि दीन्ह निबिचरि भूपा ॥ धनमणि भूषण बसन अनूपा ॥
 देत अशीप सकल नर नारी ॥ जाहिं भवन सर आनंद भारी ॥
 पुर नर नारी मुदित त्यहि भाती ॥ जनु चातक पायो जल स्वाती ॥
 विविध भाति वाजहिं बहुवाजा ॥ लगे सजत्र सब मंगल साजा ॥
 राम सोय कर व्याह सुहायी ॥ सुनि सुनि नगर लोग सुख पावा ॥
 लगे घर घर ॥ होना अवधये ॥ मंगल मयै सब सदन सजाये ॥
 ध्वज पिताक पट चामर भूरी ॥ रत्ने सकल रचना अति रूरी ॥
 पुरशोभा किमि कहौ बखानी ॥ जहै अवतरे राम ध्वनि खानी ॥
 अमित उवाह अवध ॥ पुरहोई परमानन्द ॥ मगन नर लोई ॥
 सजि नवसप्त शृंगार सुवामा मंगल गान करहिं अभिरामा ॥
 भूप भवन शोभा ॥ अधिक ईशे प्रसहसमुख सकहिं न गहिं ॥
 अति सुन्दर शम्भु रथो वितानी ॥ मंगल बिस्तु सोह विधि नाना ॥
 वाजहिं वाजन दिदारा सुहाये ॥ विरदा बलि विद्वदी जन भाये ॥
 करहि वेद धनि भूसुर भूरी जय जय शब्द लोकाति हुं पूरी ॥

हुत उच्छ्राह क्लेशं जगि श्रावो । प्रादौ जयन्त्येति पारं हिं पीवो ॥
 धृपति शोचि श्रवत तत्र खीन्ही । सजहु वरात सुआयेसु दीन्हा ॥
 शिरे धरि आयसु भरत सुजाना । पश्यो वोलि साहनी नाना ॥
 आयतुरत गसादरा शिरताये । पाय भरत आयसु संवधायेवा
 समन्याह हित अति अनुरागे । अथ राज त्राजि स्वोरन ललागे ॥
 लप्ये ॥ तसिरगा समुद्र कूपरि सेतसुजा अवलक्ष्मी । श्यामक
 रण सुन्दर तकुल गरीरु सुरक्ष्मी ॥ कुला स्याह सुचीति जर्दनादामि
 सुरंगा । मुशकी पंचकल्याण नीज कुम्भैत पिलंगा ॥ त्रहुवरण वरण
 राजत तुरसा वरणि सकैको नाम कवि जगमगत जीन अन्ननि
 सुभग कहित जाय सो भूरिचित्रि ॥ कविच ॥ साजि अह त्राजिन
 विचित्र चारु जीनधारि हेमदीर आदिगै जदित रङ्गानै । नोक्ता
 अनुपदै लगामि हेम बागपाद गंधिआल जोडि शीशवांधि श्रीवां
 डनै ॥ हेमजी विशाल मंजु कंचन रकोष सोह लोयकै सुजेखन्द
 खैत्रि पृष्ठि तंगनै । भाग्यवन्त कौन भोति गार्डभै सुशो भेजाल ज
 गमगाति ज्योतिपुंज भूषण तुरंगनै ॥ भाग्यवन्त कौशलेश द्वारभै
 अपार भीर त्राजिन समाजकी वखानि जोत जातिहै । सारत उच्छ्राट
 एक पुस्तक अहाय फेरि घूमि घूमि भूमि आरवार हिं हिं नातहै ॥ जमत
 जकंदि एक फफकि तुरायवाग सारिहीस जोरथाय सोह दाविजात
 है । प्राक्के द्वोरि धारिकै सहीस वांधिवागुडोरि लावही तसको धते तत्र
 भूमि बहरातहै ॥ टापत सकोध जोर चारिह सुवाकि ताकि दुर्दसाय
 दन्तन लगाम जोर लावही । वारवास भूमिपै पठकि पांव घूमि घूमि
 फरीर करत सुबंधनै तुरावहीं ॥ जातभूकि पांव चारि लोकही नवाय
 डादि तानिकै कनौटिकादि अक्षनै तुरावहीं । भाग्यवन्त जोरदार
 त्राजिन कि पेटसुर देवि देवि राज पुत्र जाल मोद पावही ॥ साजि

॥ १ ॥ ज्ञान्याहीनः स्वस्वसम्पदाधिर्मानिपे जीहिं ॥
 ॥ २ ॥ असविचारि मन भूपमणि सजिवरात सानन्द ॥
 ॥ ३ ॥ नैनलामचलि जूटिये रामव्याह सुखकेन्द्रा ॥
 ॥ ४ ॥ सुनि गुरुशासन भूपतवद्वलन सुखल टिकाय ॥
 ॥ ५ ॥ आपुगये भीतर भवन शनिन निकट बुलाये ॥
 ॥ ६ ॥ वाचिसुनाई पत्रिका राम लपण कुशलास ॥
 ॥ ७ ॥ भीडसुनत रानी मुदित भेम निहृद समात ॥
 ॥ ८ ॥ शनिन विप्रन बोलिके दीनविविध विधिदान ॥
 ॥ ९ ॥ त्यहिक्षणको भगवन्त मुद कोकविकरेवखान ॥
 पुनि महिपाल द्वार चलिओये सादरन्याचक्र सुन्द बुलाये ॥
 बहुविधि दीन्ह निछावरि भूपा धनमणि भूषण वसन अनूपा ॥
 देत अशीप सकल नर नरिा जीहिं भवन उर आनंद भारी ॥
 पुर नर नारि मुदित यहिभती जनु चातक पायो जलस्वीती ॥
 विविध भाति बाजहि बहुबाजा लगे सजत्र सब मंगलसाजा ॥
 रामसीय कर व्याह सुहाधा सुनि सुनि नगरलोग सुखपावा ॥
 लगे घरघर होना विधीये मंगलमै सब सदन सजाये ॥
 ध्वज पीताका पट चामरभूरी शरवे सकल रचना अतिरूरी ॥
 पुरशोभा किमिकहौ वखानी जहे अवतरे राम छविखानी ॥
 अमित उछाह अवध पुरहोई प्रमानन्द जगन नितरलोई ॥
 सजि नवसप्तशृंगार सुवामा मंगल गानकरहि अभिरामा ॥
 भूपभवन शोभा अधिकंई शेष सहसमुख सकहिन गहि ॥
 अति सुन्दर शहरज्यो वित्ताने मंगल विस्तु सीह विधिनाना ॥
 वाजहि वाजन द्वार सुहाये विरदावलि गेवदीजन ग्राये ॥
 करहि वेदधनि भूसुर भरीन जयजय शब्द लोकातिहुपूरी ॥

महत् उच्चाह कहां खगि गावो । आढै जमिन्ध विपारनहिं । पावो ॥
 भूपति वोलि भरतु तव । खीन्ही । सजहु वरपत सुआयेसु दीन्हा ॥
 शिरधरि आयसु भरत सुजाना । पठये वोलि साहनी नोना ॥
 आयतुरत गान्सादर । शिरनाये । पाय भरत आयसु त सबघाये ॥
 रामव्याह हित अति अचुरागे । अश्र गज नाजि सुवोरन लागे ॥
 ब्रह्मै ॥ सिरगा समुद कपूरि सेतसज्जा अवलकवी । श्यामकः
 रण सुद्धार नकुल गारारु सुरकवी ॥ कृष्णा स्याह सुतीतिजैर्दवादा मि
 सुरंगा ॥ सुशुकी पंचकल्याण नील कुम्भैत पिलंगा ॥ त्रहुवरण वरण
 राजत तुरंग वरणिसकैको नाम । कवि जगमगत जीन अन्ति
 सुभग कहिन जाय सो भूरिचवि ॥ कविच ॥ साजि अहं वाजिन
 विचित्र चारु जीतधारि हेमही आदिगै जदित रङ्ग रंगनै ॥ नोक्ता
 अन्तपदै खगाम हेम वागपाठ गुंथिआल ज्योतिशीशवांधि श्रीवरां
 डनै ॥ दूमची विशाल संजु कंचन रकीत सोह लोयकै सुजेखन्द
 खैत्रि श्रुति तंगनै ॥ भाग्यवन्त कौन भोति राजभै सुशोभजाल ज
 रमगाति ज्योतिपुंज भूषण तुरंगनै ॥ भाग्यवन्त कौशलेश च्चारभै
 अपार श्री वाजिन समाजकी बखानि जोन जातहै ॥ भारत उच्चाट
 एक पुस्तक जहाय फेरि घूमि घूमि भूमि चारवार हिं हिंतातहै ॥ जमत
 जकंदि एक अफकि तुरायवाग मारिहीस जोस्थाय सौह द्राविजात
 है ॥ प्राक्के दौरिधारिकै सहीस वाधिनागडोरि लावही सक्रोधते ज
 भूमि बहरातहै ॥ टापत सक्रोध जोर चारिह सुताकि ताकि ददसय
 दन्तन लसाम जोर चावही न चारवार भूमिपै पठकि पांव घूमि घूमि
 फरफर करत सुबंधनै तुरावही ॥ जातभूकि पांव चारि लंकही नवाय
 डादि तानिकै कनौटिकादि अक्षनै तकावही ॥ भाग्यवन्त जोरदार
 वाजिन कि पेटमुरि देखि देखि राज पुत्र जाल मोद पावही ॥ साजि

॥ ज्योतिः सव सुखी सम्पदी धर्मवानपे जीहि ॥
 ॥ अस विचारि मन भूपमणि सजिवरात सानन्द ॥
 ॥ नैनलाम चलि लूटिये रामव्याह सुखकन्दो ॥
 ॥ सुनि गुरुशासन भूपतव दूतन सुखल टिकाये ॥
 ॥ आपुगये भीतर भवन शानिन निकट बुलाये ॥
 ॥ वाचिसुनाई पत्रिका राम लक्षण कुशलाति ॥
 ॥ भईसुनत प्राणी मुदित धर्म निहृदो समात ॥
 ॥ शानिन विप्रन बोलिके दीनविविध विधिदीन ॥
 ॥ ह्यहिक्षणको भगवन्त मुदा कोकविकरेखान ॥
 पुनि महिपाल द्वार चलिआये सादर न्यात्रक चन्द बुलाये ॥
 बहुविधि दीन्ह निष्ठावरि भूपा धनमणि भूषण वसन अनूपा ॥
 देत अशीप सकल नर नारी जीहि भवन तर आपनद्र भारी ॥
 पुर नर नारि मुदित ह्यहिमाती जन्तु चातक पायो जलस्वाती ॥
 विविध भाति वाजहि बहुवाजा लगे सजत्र सब मंगलसाजा ॥
 रामसीय कर व्याह सुहावा सुनि सुनि नगरलोग सुखपावा ॥
 लागे चरघर होन भवधोये मंगल मै सब सदन सजाये ॥
 ध्वज पताक पट चमिरभूरी रत्ने सकल रचना अतिरूरी ॥
 पुरशोभा किमिकहो वखानी जह अवतर राम च्चबिखानी ॥
 अमित उद्याह अवधे पुरहोई प्रमानन्द अगनि तरलोई ॥
 सजि नवसत शृंगार सुवामा मंगल गानकरहि अभिरामा ॥
 भूपभवन शोभा अधिकई शेष सहसमुख सकहिनि गई ॥
 अति सुन्दर शुभरूप विताना मंगल विस्तु सोह विधिनाता ॥
 वाजहि वाजन द्वार सुहाये विरदावलि भवदीजन मग्राये ॥
 करहि वेदधनि भूसुर भूरी जयजय शीवद लोक तिहुपूरी ॥

महत् उवाह कहां लागि आघोः वादैः प्रथमं परिपारं हिं पावो ॥
 भूपति बोलि भरत वखीन्है । सजहु वरात सुआयेसु दीन्हा ॥
 शिरधरिः आयसु भरत सुजाना ॥ पठ्यो बोलि साहेनी नाना ॥
 आयतुरत ॥ सीदरा शिरनाये ॥ पाया भरत आयसु संवधाये ॥
 राम आह हित अति अचुरागे ॥ अथ गज वाजि स्वोरन लागे ॥
 छपौ ॥ सिरगा समुद्र कूपरि सेतसज्जा अबलकवी । श्यामकृ-
 षण गुल्द्वार लकुल गारारु सुरकवी ॥ कृष्णा स्याह मुनीतिज देवादा मि-
 सुरंग ॥ सुरकी पंचकल्याण नील कुम्भैत मिलंगा ॥ त्रहुवरेण तरण
 राजत तरेण तरणिसके को नाम कवि जगमगत जीन अज्ञति
 सुभग कहिन जाय सो भूरिचवि ॥ कविच ॥ साजि अहं वाजिनं
 विचित्र चारु जीनधारि हेमही आदिगै जदित ॥ इह संगतै । लोकता
 अनूपदै लगमि हेम जागपाट गुंथिआला छोटि शीशवाधि श्रीवगं-
 डनै ॥ इमची विशाल संजु कंचन रकीव सोह लोयकै सुजेखेद
 खैति ॥ पण्डितंगनै । भास्यवन्त कौन भौति गाँव मै सुरो भंजाल ज-
 गमगाति ज्योतिपुंज भूषण तुरंगनै ॥ भास्यवन्त कौशलेय द्वारमै
 अपार श्री वाजिन समाजकी बलानि जोत जातहै । भारत उवाट
 एक पुस्तक बहाय फेरि घूमि घूमि भूमि चारवार हिं हिंतातहै ॥ जमत
 जंकदि एक अफक्ति तुरायवाग भारिहीस जोस्वाय सोह दा विनात
 है । पाके दौरिधारिकै सहीस वंथिनाग दोरि लावही सकोधते जु
 भूमि बहरातहै ॥ टापत सकैभ ओर चारिह सुताकि ताकि दर्दसय
 दन्तन लगाम जोर चावही । चारवार भूमिपै पटकै साव घूमि घूमि
 फरफर करत सुबंधनै तुरावही ॥ जातभक्ति पांचचारि लंकाही नवाय
 डायि तानिकै कनौदिकदि अज्ञतै तकावही । भास्यवन्त जोरद्वार
 वाजिन कि गेटमरु देवि देवि राजपुत्र जानमोद पावही ॥ साजि

॥ १ ॥ ल्योही स्व सुखी सम्पदी धर्मवानपे जाहिं ॥
 ॥ २ ॥ अस विचारि मन भूपमणि सजिवरते सानन्द ॥
 ॥ ३ ॥ नैनलाम चलि जूटिये रामव्याहा सुखकन्दो ॥
 ॥ ४ ॥ सुनि गुरुशासन भूपतव दूतन सुयल टिकीय ॥
 ॥ ५ ॥ आपुगये भीतर भवन शनिन निकट बुलाय ॥
 ॥ ६ ॥ वांचिसुनाई पत्रिका राम लपण कुरालास ॥
 ॥ ७ ॥ भई सुनत रानी मुदित धमनि हृदो समात ॥
 ॥ ८ ॥ डारानिन विप्रन वोलिके दीन विविध विधिदान ॥
 ॥ ९ ॥ ह्यहिक्षणको भगवन्त मुदा कोकविकरैखान ॥
 पुनि महिपाल द्वार चलिआये । सादर यात्रक छिन्द बुलाये ॥
 बहुविध दीन्ह निछावरी भूपा । धनमणि भूषण वसन अनूपा ॥
 देत अशाप सकल नर नारी । जाहिं भवन सर आनंद भारी ॥
 पुर नर नारि मुदित ब्यहिमाती । जनु चातक पायो जलस्वाती ॥
 विविध भाति वाजहिं बहुवाजा । लगे सजत्र सब मंगलसाजा ॥
 रामसीय कर व्याह सुहावात्र सुनि सुनि नगरलोग सुखपावा ॥
 लागे घरघर । होना भवधाये । मंगल मै सब सदन सजाये ॥
 ध्वज पताका पट चामरभूरी शरचे । सकल शचना अतिरूरी ॥
 पुरशोभा किमिकहौ वखानी । जह अवतरे राम छविखानी ॥
 अमित उद्याह अवधे । पुरहोई परमानन्द । भगन नितरलोई ॥
 सजि नवसप्त श्रृंगार सुवाभा मंगल गानकरहि अभिरामा ॥
 भूपमवन शोभा अधिकोई । शेष सहसमुख सकहिं न गहिं ॥
 अति सुन्दर शुभरच्यो वितानो मंगल विस्तु सोह विधिनाना ॥
 वाजहिं वाजन निद्वार सुहाये । विरदावलि निवदीजन प्राये ॥
 करहि वेदधनि भूसुरी भरीच जयजया शब्द लोकातिहुपरी ॥

इत उर्द्धाह कृहां लगि आये । वाढै अर्थनथ ॥ प्रारनिहि प्रीवों ॥
 भूपति बोलि अरतु तव खीन्ही । सजहु बरात सुआयेसु दीन्हा ॥
 शिरधरि आयसु भरत सुजाना ॥ पठये बोलि साहनी ज्ञाना ॥
 आयतुरत सांदर शिरनाये । पाय भरत आयसु सबधाये ॥
 रामल्लाह हित अति अतुरागे ॥ अथ गज वाजि सवारन लागे ॥
 छपौ ॥ सिरगा समुद्र कूपरि सेतसज्जा अबलकषी । श्यामकृ
 ण गुल्दार नकुल गरीरु सुरक्षी ॥ कृष्णा स्याह सुतीति जे देवा दामि
 सुरंगा ॥ सुरकी पंचकल्यान नील कुम्भैत पिलंगा ॥ बहुवरण वरण
 राजत तुरंग वरणसकै को नाम कवि ॥ जगमगत जीन अज्ञति
 सुसग कहिन जाय सो भूरिथति ॥ कविज ॥ साजि अहं वाजिनं
 विचित्र चारु जीनधारि हेमहीर आदिसै जदितार रङ्गनै । नोकतां
 अक्षपदै लगाम हेम वागपाद गुंथि आल छोटि शीशवांधि श्रीवरां
 दनै ॥ इमची विशाल संजु कंचन रकोत्र सोह लोचकै मुजेरखन्द
 खैचि शृष्टि तंगनै । भाग्यवन्त कौन भौति भाउं मै सुशोभजाल ज
 मगाति ज्योतिपुंजु भूषण तुरंगनै ॥ भाग्यवन्त कौशलेश द्वारभै
 अपार भीर वाजिन समाजकी इखानि जोत जातहै । भारत उच्चाट
 एक पुस्तक जहाय फेरि धूमि धूमि भूमि चारवार दिहिनातहै ॥ जमरा
 जकंदि एक अफकि तुरायवाग मारिहीस जोस्थाय सौह द्वाविजात
 है । प्राङ्गे दौरिधारिकै सहीस वांधिवागडोरि लावही सक्रोभते न
 भूमि बहरातहै ॥ टापत सक्रोध ओर चारिह सुताकि ताकि दुदराय
 दन्तव तरंगाम जोर चावही चारवार भूमिपै पठकि पांव धूमि धूमि
 फरिफरि करत सुबंधनै तुरावहीं ॥ जातभक्ति पांवचासि लंकही नवाय
 डादि तानिकै कनौटिकादि अज्ञनै तकावही । भाग्यवन्त जोस्दार
 वाजिन कि पेटमरि देखि देखि राज पुत्र जाल मोद पावहीं ॥ साजि

अङ्गचीर ऊन रेशमी अमोल चारु जरी जखफत आदि सोह
 है । धारि शीशपाग मंजु कलंगी विराजमान कुरडल सकनि
 राजमणि हीरहै ॥ भूपण अपार अङ्ग अङ्गनै सवारि दिव्य
 दुशाल लंक तृप्त वानभारहै । डावमें कृपानलाय धारिचाप व
 भाग्यवन्त राजपुत्र साजिभे तयारहै ॥ अतर लिंगाय पट कवड
 गुलाब खसमोतिया हिनादिजे अनूप गन्धदारहै । खायपान
 इलाइची मिलाय चारु हाथले रुमालनव्य भोगतिगुच्छ वारहै ॥ पाद
 त्राण पैन्हिप्राव छरेछैल रूपवन्त मंद मंदजात अङ्गवार कोठि मी
 है ॥ भाग्यवन्त राजपुत्र भरत समानवीर शत्रुहन आदि फादि बाजि
 भे सवारहै ॥ वैठिगांठि असिनै देवीरान साधिवाग वाजिन लगाय
 ढंग संग एक धांवही । जावत रुहाल कोइ दूलकी दुगामपोइ साहगाम
 चालकैकदम्मको वढावही ॥ ठांठे एकडोटे बाजिउमगि उछाटे एक
 मारिसरपट्ट नालि कट्टफादि जावही । भाग्यवन्त देखिजाल अ
 श्वन कलोल चाल राजपुत्र सासिमाज मोदपुंज पावही ॥ सोहत
 विशाल भुड भुडन गयन्दजाल अंग अंग पुष्टश्याम दीरघदतार
 है । जातरूप हीर मे अवारी चारु ज्योतिवन्त पन्नन प्रकाशपुंज भूल
 कामदारहै ॥ राजतउहार दिव्य ऊपर भलकदार कञ्चनजंजीर स्वच्छ
 भूम चारिवार है । भाग्यवन्त साजि अङ्ग भूपणाल चारु चारु भये
 खुवंशी लीग वारण सवारहै ॥ चारिअंग गाजत गयन्दमस्त धीर
 नाद हीत ज्यो अपारव्योम घनघहरात है । घण्ट घंठि शब्द जाल
 दीरघ अनूप सोह मन्दमन्द चाल देखि मैन वलिजात है ॥ बाजत
 निशान भौति भौतिने प्रमोदकार भुण्डन कतार बाधिचले पील
 जातहै । भाग्यवन्त कौन भौति गावे सो अपार शोभ देखत प्रभाव
 पुञ्ज शक्रहू सिहातहै ॥ सांडिया समाज ना बखानिजात भाग्यवन्त

राजत सवार पीठि शोभ जालदैरहे । काठिन प्रकाश पुञ्ज हीरन-
कि ज्योतिहोत मखमली उहार नव्यमोति गुच्छछेरहे ॥ माणिकस-
जातरूप जटित नकेल सच्छ पावन अनूप शब्द घूंघूरु मचैरहे ।
छम्मछम्म चलत कदम्भन वढाय संग सुतुर सवार पंथकेलि कोटिकै
रहे ॥ हेममाणिरचित प्रकाशमान तेजवन्त अमल विद्यावने वि-
द्याय रत्नरत्नहैं । चामरपताक ध्वज किंकिणी विराजमान झालैरे
समोति गुच्छटांकि त्रौअलंग है ॥ सोहत उहार दिव्य ऊपर सु-
कामदार सुखमा अपार देखि लोजत अनंगहैं । श्यामकर्ण पौनहूते
वेगवन्त साजि अंग लायेतास्थन माहिं सारथी तुरंगहैं ॥ भूपण च-
सन अंग साजि अस्त्रशस्त्र धारि स्थन सवार चले स्थी शोभकन्दहैं ।
वाजत निशान अंग सोहत अतीव यान देखत अनूप शोभ भानु
यानमन्दहैं ॥ शीविका सुखासन अनेक भांति भांति साजि तापर
सवार है सुचले विप्र वृन्दहैं । भाग्यवन्त सुखमा अपार ना वखानि
जाति धरेतनु चलेजात मानौ श्रुतीवन्दहैं ॥ बेसराशकट ऊंट भारन
लढाय जाल तम्बूसाकनात छोलदारी सामियनिही । डोरी चोवै
बादरसां मेखन के भारभूरि दरीदरा जाजिमै सुनारखानि खानही ॥
रेशमीसऊन सृति क्रोमल कलीन जाल तोसकै सुगीरदा अनेकन
विधानही । कूरसीसमोढ का पलंगन तखत चौकि अमित धराय
वस्तुपारको वखानही ॥ अमित विधान पंकनान को वखान नाम
बरस सुधासों भरे पात्रन अपारहैं । भेवासा मिठान भांति भांतिनै
भराय जाल चले लै अपार भार कावरे कहारहैं ॥ भूपण वसन हेम-
हीर आदि मालधन शकट लदायिकै सन्दूखन संभारहैं । भाग्यवन्त
सौज और जावत वरात योग्य त्रिलीमो अपार कौन प्रावै गनिपार
है ॥ साजितौ सुमंत आनि यानद्वै अनूपचारु सुखमानिधान कोटि

भानु तेज भ्राजहै । राजसाज सांजि एक दूसरो सुतेजवन्त जग-
 मग ज्योतिहात देखि भैन लाजहै ॥ तापर सवारकै वशिष्ठको हरिपि
 आपुत्रहै रथ भूपमणि वंदे गनराजहै । भाग्यवन्त सहित वशिष्ठ
 सोह भूपकैस मानौ देवगुरुसंगराजै सुरराजहै ॥ देखिकै वरात साज
 भूप कुल वेदरीति करिकै वजाय शङ्ख कीनतौ प्र्यानहै । भाग्यवन्त
 आनंद अपार ना वखानिजात वर्षही प्रसून देव व्योमछै विमान
 है ॥ वाजत निशानजाल वदत विरदवंदि मंगल किलापगान ग्राम
 तीयवन्तहै । छायो धूमधाम लोकतीनिहू प्रमोद होत सगुन अ-
 पारभये मंगल निधानहै ॥ चाराचाखु वाम अंगलेत हैं सुमोदकंद
 दाहिने मुखेन काग सिद्धिदा सुहायो है । सघटसवाल आवनारि
 अग्रधेनु वृच्छ प्यावत कुरङ्गसाल फेरि दाहिनायो है ॥ सोनुकूल
 त्रिभिधः सीर डोल श्यामावाम सुतरु विराज दर्श नकुल दिखा-
 यो है । मीनदधि आयो अग्रपुस्तकी सविप्रदोय दीनदर्शलोवाक्षे
 मकरी क्षेमगायो है ॥ चाखुशक्र धर्मराज वायस सरथु कुम्भभा-
 गीरथ बालदेवरारी दिव्यवामहै । धेनुभूमि मालमृग देवगन शो-
 भवन्त प्रवल त्रिदेव आवपौन अभिरामहै ॥ श्यामा अद्रिजाई
 संजुनकुल धनेश जानि मीनसरिजाल सिन्धुदधि शुभधाम है ।
 विप्रशुक्र वृस्पति सुपुस्तक विशाल वेदलोवा औध क्षेमकरी देवि
 दानिकाम है ॥ मंगलको खानि फल चारिहूको दानि हारकलुप
 गलानि मोदकंद सुखसारहै । धर्मको अगर भक्ति मुक्तिको मंडार
 चारु संतन अधार लोकजीवन उधारहै ॥ भक्तनको प्रान खलवृन्दन
 को ज्ञान मोहरातिको विधान ऋद्धि सिद्धिको सुधारहै । एसोराम
 सीयव्याह जानिहै सगुन सब सांचे होनकाज आनिभये एकवार
 है ॥ हुंकारादहोत अग्र चली सुवरातसांजि आनंद अपारदेव फू

लमालि वरपत । वाजत निशान भेरि हुन्दुभी पणवे भांभु शब्दे
 साहनाइका किचारुमन करपत ॥ आसपास भूमत मतंगनकेभुंड
 जातचीचरथ सूखमा दिनेशयान धरपत । चारिओर वाजिनसमाज
 पादचार सोह भाग्यवन्त कौशलेश देखिशोभ हरपत ॥ नाकनेटी
 करैनाच कौतुक विदूषकै सुटेरत नकीव फेर तूपकान घमकत । वेरख
 अनेक संगरंग फहरात व्योम भखडीबरदार ऊंचिकुंत फोक चमकत ॥
 खेलत अनेक खेल फरीगदा वांक सैफ वाने पट्टेवाज पंथ जातचले
 भूमकत । करै चटकला कोटिआनंद अपारहोत हाथी पै निशान
 अग्रजात चोव धमकत ॥ ऊंटजाति वेसरा शकट वृन्दवृन्द सोहपी-
 नस कहारे कंधलियेजात मटकत । सेवक समाजभूरि चौबदार सजे
 साज चलेजात पागशीश छोर मीठिलटकत ॥ वाजिवृन्द फेरत उ-
 मंगि वीरभरतादि साँडिया सवारजात अग्रदेह भटकत । भाग्यवन्त
 सूखमा बरातकी बखानि कौनदेखि विभु कौशलेश देवराजभटकत ॥
 सवैया ॥ जातनचाव्रत पन्थ तुरंगन रंगन रंग चलावत चाले । वा-
 गन तंगकिये असवार जभावत ठेकन ठोकत आले ॥ फेरत पेई
 कदम्भनके दमकें द्युतिदामिनि ज्यो पगनाले । क्यो भगवन्तकहै
 गतिवार्जिन मैनहुदै छवि अद्भुत शाले ॥ भूमकें भूमकें भूपकें
 छपकें सुउमंगि फफन्दि जकन्दिचले ॥ भटकें लटकें मटकें अटकें
 सुटकें वलकें दलमाहिं रले ॥ भगरें धंगरें डंगरें सगरें पकरेजकरे
 थभते न थलें । जुरतें फुरतें सुरतें वहुतें वरते चलते मग कोटिकले ॥
 भलकें मणिभूषण भूरिसजे अंग अंग अतीव प्रभा छलकें । छलकें
 छवि मारंगमें चहुंवालसि राजकुमार हुदै ललकें ॥ ललकें रविवाजि
 विलोकि गती सुरसंकुल जैजयके पुलकें । पुंतकें कुलकें अवधेश
 हिये भागवन्त सुभाग उदै भलकें ॥ खटकें कहुंपाते जुवात लगे

चकि चौकि चितै तनको भटके । भटके वलक्रोध फफन्दिउडे नम
जातचले मंगना अटके ॥ अटके मन देवविलोकि प्रभा पुनिआवत
भूमि कलापेटके । पटके न समीर सके फुरती ध्रुविवाजिन मै न हूँ
खटके ॥ खन कूदत खूदत पंथधरा चुचकारि सवासन वागहने ।
भूमकाय नचाय बढ़ायचले सब राजकुमार प्रमोदसने ॥ भगवन्त
कहै किमि भूरिप्रभा सुरदेखत व्योम विमान घने । वरपाय प्रसून
सुदुंडुभिदै पुनि सानंद जैजय शब्द भने ॥

दो० यहिविधि सुभग वरातसजि सकलराज अवतस ॥

चलेजात सानंद मंग को कविकरै प्रशंस ॥

इति श्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवतसिंहविरचितायाभक्तिशिरोमणिग्रन्थेश्री
जनकदूतत्रयोध्याआगमनश्रीदशरथमहाराजप्रतिदूतवार्ताश्रीरामचन्द्र

ध्याहहेतुनृपवरातसजिनामनवर्णनेनामपकादशोऽध्याय ६१ ॥

सो० वन्दौरघुपति पाय सुखदायक भञ्जन विपति ॥

पुनि पुनि शीश नवाय कहौ कथा भौभयहरणि ॥

जब सवरात चलन नृप लागे । दूतन दीन विदा करि आगे ॥

लै पत्रिका ग्रथमते आये । जनकराज कहै खवरि जनाये ॥

सुनिनृप लीन बोलि निजपासा । जायदूत सब हाल प्रकासा ॥

नृप दशरथकर पत्र विशाला । दीन हर्षि लीन्ह्यो महिपाला ॥

सभा समेत राउ सुखप्रागे । प्रेमस खोलि पढ़न पुनि लागे ॥

दो० स्वतिश्री सर्वोत्तमो पमायोग्य मिथिलेश ॥

गुणगण अंडित ज्ञाननिधि विदितकीर्त्ति सबदेश ॥

पहुँचे शुभ दरारस्थकी सादर विविध प्रणाम ॥

कुशल अत्र सब क्षेम तव राखै चन्द्रललाम ॥

भुजंगप्रयातछन्द ॥ लिखी हस्तभूपाल तव पत्रिआई ॥ कहौ

क्या प्रभापुञ्ज आनन्द दाई ॥ भयो मोद वांचे हृदय बीच भारी ॥

सुनेसो सभालोग हँगे सुखारी । लिखा हाल जो आपुं सो सर्व
जाना । कृपाकौशिकैकी सबै सिद्धि माना ॥ लिख्यो जोकि आँवो
इतै लै वराता । हुवै व्याह राघौ जुँरै नेहनाता ॥ भलीवार्त सीहँसवै
हीय भायो । पुनः पत्रिलै सो वशिष्ठै सुनायो ॥ भये सो प्रसन्नाति
दीन्है नियोगू । चलौलै वराता सुनीकोसयोगू ॥

दो० सोमै साँदर शीश धरि सुनिये नृप मिथिलेश ॥
आवत सहित वरात हौँ सद्य तुम्हारे देश ॥
वाँचिपत्र नृप सवहिँ सुनावा । सुनि सव सभापरम सुखपार्वी ॥
आवत जानि नगर अवधेशू । परमानन्द मगन मिथिलेशू ॥
मारग जहँ जहँ वास रहाये । तहँ तहँ सकल सुपास वनाये ॥
इहां भूप सव सहित वराता । करत निवास पंथ सुखदाता ॥
कार्तिक कृष्ण त्रयोदशि काही । पँचये दिवस जनकपुर माही ॥
पहुँचे सुनि आगमन वरातै । नृप मिथिलेश हृदै हसप्रातै ॥
अगवानी कर साँज्यो साजा । विविध भौँति वाज्रहिवहुँवाजा ॥
तुरग नाग रथ पैदचर जाना । सजिसजि लेनचले अगवान्ना ॥

दो० अशन वसन भूषण विविध दधिच्युरा सुखकन्द ॥
भरिभरि कंचुन भाजनन पठ्यदीन सानन्द ॥
अगवानिन देख्यो जवहिँ आवत सुभग वरात ।
चले वजाय निशानवर हर्ष न हृदै समात ॥
करिसादर अगवान वर बहुविधि मोद वढाय ।
बहुरि परस्पर एकमहँ भये दोउदल आय ॥
साँदर भूपहिँ भेटदै करिसन्मान वढाय ।
अतिसुन्दर जनवासलै दीन्ह्यो सवहिँ टिकाय ॥
त्रोटकछन्द ॥ पुरआइ वरात सुजानि सिया । महिमाकहुँ आप

प्रसिद्धि किया ॥ तुरतै सब सिद्धिर्न बोलिलिया । प्रथमै अणिमा
 महिमा द्वितिया ॥ तृतिया गरिमा लघिमाचतुर्थी । पंचई कहि
 पति सिद्धिफुरी ॥ छठि कामवसी करणी सतई । अरुईशत नाम
 कहे अठई ॥ तिनको इमि आयसु सीय दियो । पहनुाइ महीपकरी
 सवियो ॥ सुनि सानंद सिद्धिगई तहवाँ । जिनवास अनूपरही
 जहवाँ ॥ सुरलोक जुभोग विलास सबै । क्षणमें करि पूरण दीन
 तवै । प्रभुता सिय क्राहुन जानिंपरो । जनकैर्कि प्रशंसकरै सगरो ॥
 दो० मसिय महिमा रघुनाथजी गये तुरत सब जानि । पनी
 ॥ सुनि भये परम आनन्द प्रभु हृदय हेतु पहिचान ॥ तहां
 ॥ सुनि श्रवणन पितुआगमन राम लपण मुनिसाथ ॥
 ॥ कालचले मनहु सरवर निरखि तृपावन्त हित पाथ ॥
 ॥ कुंडलिया ॥ कीन्ह्यो मुनिहि प्रणाम नृप नृपहि लपण रघुरीप
 सानुज मुनि भेटे भरत रघुपति पद शिरनाथ ॥ रघुपति पद शिर
 नाथ वशिष्ठहि । सानुज वन्दे । पुरुजन भेटे राम निरखि छविधाम
 अनन्दे ॥ आनन्दे सुरवृन्द सुमन भूरि इन्द्रुभि दीन्ह्यो । गाय
 सुयश भगवन्त सफल जीवन जगकीन्ह्यो ॥

दो० क्रोशलपाल कृपाल दिग राजत सुवन सुचारि ।

जनु सुन्दरफल चारिहू सोहत नस्तनुधारि ॥

दक्षिण रघुपति मोक्षफल भरतधर्म अभिराम ।

लपणकाम रिपुहर्न अरघ राजत नृपदिशिनामि ॥

पुर नर नारि देखि अति शोभा । परमानन्द गगन मुनलोभा ॥

कहहि परस्पर सहित उछाहू । बड़भागी दशरथ नरनाहू ॥

जिन ऐसे सुत सुन्दर पाये । सब गुणधाम सुभाय सुहाये ॥

जिनके दर्शन पाय अनूपा । हम सब भये कृतारथरूपा ॥

न्यः धन्यः श्रीजिनकः सुनैना । होइहि व्याह इनहिं जिन ऐना ॥
 मैंहुं धन्य देखव उतसाहू । राय सियाकर सुन्दर व्याहू ॥
 हिविधि सत्तमन करहि विचारा । कोकहि सकै प्रमोद अपाराहा ॥
 हुं कहू नारिवृन्द मिलिसंगा । कहहिवचन इमिसहितउमंगा ॥
 सवैया ॥ संखिभूपति संग सुऔर अहै गुणसागर नागर बालक
 । लपनै अनुहारि जुगौर अहै तनश्याम मनोःधुवसमहिं स्वैदा
 व वैसुहि अङ्गमनोहरहै उनसो कहू रचक फेरनकै ॥ भगवन्त
 लाना करै छविते लखिआय उन्है निज नैनन ज्वै ॥ ३ ॥
 सहि विधु आनन छवि ऐना । वैसहि अमल कमलदल नैना ॥
 सहि भाल तिलक छविछाजै । वैसहि कानन कुण्डल आजै ॥
 सहि अधर दशन वृत्तिकारी । वैसहि मृदुमुसक्यानि पियारी ॥
 सहि वसन लसत सुठिअंगा । वैसहि कर धृत शर शारंगा ॥
 सहि मनमोहनि शुभचाली । वैसहि सकल दंगहै आली ॥
 सहि शील सुभावहु वैसा । वैसहि ववैसु अतीपहु वैसा ॥
 सहि अंग अंग छविधामा । भरत शत्रुसूदन शुभ नामा ॥
 सहि प्रीति रीति इनकेरी । कहहिं सखी जिन नैननहेरी ॥
 सहि ये सबके मन भावत । वैसहि अंग सुलक्षण जावत ॥
 सबके कहदै लालसा । येहू जो सखि समुझै मनहि विदेहू ॥
 सवैया ॥ जो रामुझै मिथिलेश हिये तौ देहि सु व्याहि इहैं चहुं
 भातै ज्योहि कुमारि कुमार तथा मिलयो ग्रह योग सुकैस वि
 धतै ॥ को सुकृती मिथिलाधिप सो शिवदीन जिन्हैं इनसो करि
 नाते ॥ यो भागवन्त सप्रेमरही बुनितागन आपसमें करिवातै ॥
 हैहहि व्याह इतै इनके जव मानि सुनात कवौ पुर ऐहै । कैकळुकाल
 निवास इहो पुनि प्रायविदा निजधामहि जैहै ॥ एहहि आनन

फेरि कवों जब भूप कुमारिन वेलि पठै हैं । या विधि चारिहु राज
 कुमार सदा पुर आवत जातहि रहै ॥ आवहिंगे समुरारि जव
 चहुँ राजकुमार महा छविऐना । श्यामलगौर किशोरधरे श्रुव चाप
 कटाक्ष सजे शरपैना ॥ लेव तवै मनभाव सुखै भगवंत विलोकि
 इन्है भरिनैना । है हहिं तृप्त सवै पुरनारि सप्रेम कहै इमि सुंदरवैना ।
 सुकृती हमसों जग कौन वियो मिथिलापुरमें लिय जन्महिज्यै
 अरु जानकिराम निहारिप्रभा सुकृतारथरूप गये सवहै ॥ पुनि ते
 खव व्याह उच्चाह अवै भगवन्त महानंददायक स्वै । परमोत्तमहै य
 व्याह सखी मनभावत लाहु लहै सवकै ॥ किरीटछन्द ॥ राजकुम
 उदार चहुँछवि कोटि मनोज निष्ठावरिगातन । व्याहहिं जो मि
 लापुर ये हिम मंगलगाय करै सफलतन ॥ जन्म जहां भगव
 मिलै वशा कर्म छुटै इनसों तहैनातन । होय सखी जबपुण्य बै
 पुरवै कस्तार तवै इनवातन ॥
 ॥ यहिविधि पुर नरनारिसव कहहिं मनायपुरारि ॥
 ॥ करिये प्रभुपूरण सकल मनअभिलाप हमारि ॥
 ॥ एक मास अरु सैंसदिन लग्नते प्रथमवरात ॥
 ॥ आवतभै ताते अधिक पुरप्रमोद सरसात ॥
 ॥ छप्यै ॥ यहिप्रकार सानंद सवहि कछुदिवस वितायो । हिमअतु
 अंगहनमास लग्न दिन सुंदरआयो ॥ ग्रह तिथि नखत सुवारयोग
 शुभमूल सुहायो । तुरत दिवअपि हाथ शोधि विधि लग्न पठायो ॥
 ज्वइ गनी जर्नकगेनकन इहांपठायो लिखि स्वइ सकलविधि ॥ सुनि
 भयेमुदित पुरजन परम लगन सुमंगल मोदनिधि ॥ तव प्रोहितक
 दीन्ह मुदित आयसु मिथिलेशू । साजि सुमंगलसाज बेगि लाव
 अवधेशू ॥ सुनत साजिसव साज शतानंद तुरत सिधायै । बाज

विपुलनिशान भूपजनवासहि आये ॥ लखि अवधनाथकर विभव
 बड़-लागतिनहि लघु अमरपति ॥ वचन-सुप्रेम-विनीतकह समग्र
 पावधारिय नृपति ॥ सुनि दशरथसानंद-गुरुहि अनुशासन ली-
 न्ह्यो ॥ करि कुलरीति-ससाज-गमन-सादर-नृपकीन्ह्यो ॥ मंगल
 समय विचारि देवफूलन-भरिलाये । चढिचढि सुभग विमान-व्याह
 देखन सब धाये ॥ मिथिलेश-नगर-शोभा-निरखि लागिलोक निज
 लघुसवहि ॥ सो विधिहि परम-अनरजकतहुँ लख्यो-न निज करणी
 जबहि ॥ तवशंकर बहुभांति सकल देवन-समुझाये । त्रिभुवनपति
 ज्वड स्वामि जासु-यश वेदनगाये ॥ सुमिस्त जाकरनाम-तरहि भव-
 सागर गानी ॥ करुणासिधु-उदार-भवजमंगल-गुणखानी ॥ सोइ
 रामसियाकर व्याहु-शुभ-दायक-सब-मन-कामफल । जनिकरहु हृदै
 आचरज-धरि धीर-देव देखौ सकल ॥ सुनि-मृदु-शंकर-वैन-सकल
 सुरगण-मनहरपे- । पुनि पुनि जेजैभासि-सुमन-संकुल-माहिरपे ॥
 दशरथ सहित समाज जातपथ सोहत कैसे । सुरबुद्धन के मध्य अ-
 सरपति-राजत-जैसे ॥ श्रीराम-लपण-रिपुहत्त भरत-जात-नचावत
 तुरंगवर ॥ भगवन्त परम-शोभा-निरखि उमासहित आनन्द-हर ॥
 ज्यहि-सुंदरवर वाजिराम असवार-विराजै । देखि सुभग-गति-तासु
 हृदै खगनायक-लाजै ॥ कहि न जाय-छविजाल-मनोरथनायक
 काजै । धरयो मनोहर-वेप्रवाजि कर-ज्यो रति-राजे ॥ मणिजटित
 जीन-जगमगित-द्युति-लसत-विभूषण-भरितन । निजरूप-गुण-वय
 वपुसन-लिय-मोहि-सो-त्रिभुवन-सवन ॥ सवेया ॥ चलते छवि
 पावतवाजि-महा-उपमा-क्यहि-भांति-कहै-कवि-के । तन-राघवश्याम
 प्रयोद-मनोपटपीत-लसै-इति-दामिनि-स्वै ॥ नगभूषण-भूरि-नक्षत्र
 सजै-वरहीवर-वाजि-विलोकतज्यै । अति-आनन्द-नाचत-प्रेम-मनो

लखिकै न ज्यो छवि मोहितहै ॥ गीतकाछन्द ॥ लखि रामरूप
 अनूप शङ्कर परमआनन्दमें पगे ॥ कहि जाय नहि सुख एकमुत्त
 अति नैनपन्द्रह प्रिय लगे ॥ हरप विरञ्चि विलोकि पै पछितानि
 दृग आठिभये । मुदपुञ्ज छानन हृदय विधिते लाहुहम डेवढ लये ॥
 सुरराज रामहि देखि नखशिख मुदित मन हुलस्यो हियो । हित
 परममान्यो ताहि करि जो शाप ऋषिगौतम दियो ॥ श्रीराम शोभा
 धाम लखि सुरवृन्द आनन्द पायऊ । भगवन्त जेजे भापि शकुल
 सुमन मोहि वरपायऊ ॥

दो० श्रीरघुनन्दन रूप छवि नखशिख सादर जोहि ।

रमासहित श्रीविष्णुकर गयो सद्यमनमोहि ॥

सवैया ॥ राघवश्याम शरीर अनूपम सोहत यो अतिपीतपटा

है । ज्यो नवनील पयोद विपे सुप्रकाशित मंजुल ज्योति छटा

है ॥ व्याह विभूषण भूरि सजे छवि देखत मैन कमान हटा है ।

यो भगवन्त विलोकि प्रभा मिथिलापुरभे नर नारि कटाहै ॥ होत

महानंद मारग मे छवि भापत सो मुख एक वनेना । वाजत जाल

निशानवदै विरदावलि वंदि हृदय सुखदेना ॥ आवत जानि वरात

भली भगवन्त लह्यो मनम अतिचैना । मंगलसाज सजे सुसवै

परछे हित दूलहरानि सुनेना ॥ कवित्त ॥ मंगल सवारी भूरि धूप

दीप फूलमाल द्ववदधि रचना कनकथार भारिकै । मत्तगज गा

मिनी सुभाभिनी शुभगजाल भूषण वसन अंग अंगन सवारिकै ॥

शची रमा शारदा संगौहि जे अमरतीय मिली रनिवास आनिवेष

वरनारिकै । गावत सुराग दिव्य मंगलीक वृन्दवृन्द चलीवारि आ

रती सरोज पाणि धारिकै ॥ आनन्द अपारहात वाजत निशानजाल

मुखमा कलाप मा ॥ सो ॥ त ॥ मुन्दर अनूप देखि ह

लह सुवेपराम-नारि वृन्द मोदपुञ्ज हीयमध्य पावती ॥ भाग्यवन्त
 द्वारचार पङ्क्ति सक्ल-रीति, आरती, उत्तारि, वारवार प्रेम छावती ।
 देत पटपावडे, लवाय लाय मण्डपै सुआसन, पधारि, दिव्य नारि
 गीत गावती ॥ चौपैयाछन्द ॥ लखि राम स्वरूपा परमअनूपा न-
 खशिख सुभग सुहैना । भरिनैन निहारी, अमित सुखारी भइमनसा-
 सुमुनैना ॥ तनमन वलिहारी, अरति उत्तारी पुनि, पुनि प्रभुहि वि-
 लोकी । अति प्रेम अधीरा, पुलक शरीरा, रहति प्रीति नहिरोकी ॥
 दो० मिले जनक दशरथ नृपहि सादर प्रीति समेत ।
 चले लिलाय सुमण्ड पहि अर्ध पावडे देत ॥
 सबैया ॥ निजपाणि सुजान विदेह सबैहित वैठन आसन ला-
 यदये । सनमानि विठाय वरासनपै पुनि पूजत प्रेम वढाय भये ॥
 भगवन्त विनै बहुभातिन कै सुखशंकुल आशिषपायलये । रघु-
 नन्दन आननचन्द्र प्रभालखि आनन्दही समुदाय छये ॥
 दो० जानि सुऔसर प्रोहितहि मुनिवर कथो बुलाय ।
 भयो समै अवकुर्वरि इत जावहु वेगि लिलाय ॥
 छन्द त्रिभंगी ॥ आयसु मुनिपाये तुरत सिधये खरि जनये
 रतिवासै । मुनि प्रोहित वैना अति सुखदेना मातु सुनैना सहुलासै ॥
 करि सकल शृंगारा, सियहि सवारा विविध प्रकारा शोभभली । संग
 सखीसयानी, छविगुण खानी लै महरानी वेगि चली ॥ सुखमा सर-
 साती वरणि न जाती निरखि वराती सिय आत्रत । अवधेश समेता
 सब मन जेता हरपनतेता कहि जावत ॥ ग्रहिविधि नृपजाई मण्डप
 आई वरणि न जाई छविभूरी । मुनिवर बहुभाती दिजवेदांती पढ-
 हि सुसांती छति पूरी ॥
 दो० कुलत्रिचार ज्योहार करि गणपति गौरि पुजाय ।

पुनि सादर श्रीजानकिहिं दीन्हें आसन आय ॥
 कमककलश मणि कोपरनभरि सुन्दरशुचिपानि ॥
 लागे धोवन रामपद सुदित राउ अरु रानि ॥
 कवित्त ॥ जेई पदपंकज यहेश हीय मान सर संतत निवास
 ध्यान योगी जन धारही ॥ जेई पद पंकज परसि जारि शोतम
 कि पाई गति प्रावत समान पाप भारही ॥ जेई पद पंकज सो
 शशभेव सीरति दिव पावत करणि लोक जीवन उधारही ॥ भाग्यवन्त
 भाग धन्य जनक सुनैनिकाक तेई पाय पंकज स्वपाणि जे पखार
 रही ॥ जेई पद पंकज भवाविध घोर पातचारु जेई पद पंकज
 कृतांत त्रास हारही ॥ जेई पद पंकज करन पाप ताप नास जेई पद
 पंकज हस्त भूमि भारही ॥ जेई पद पंकज सुनीन्द्र मनभृग वास
 वदत प्रभाव वेद पवित न पारही ॥ भाग्यवन्त भाग धन्य जनक
 सुनैनिकाक तेई पाय पंकज स्वपाणि जे पखारही ॥ जेई पद पंकज
 विरधि ध्याय रचै लोक जेई पद पंकज सेई शिद्धर संहारही ॥ जेई पद
 पंकज सुभिरि विष्णु करे त्रात जेई पद पंकज ध्याय शोपभूमि धारही ॥
 जेई पद पंकज पुनीत सेई भक्तजन पावत अमल भक्तिदानिफल
 चारही ॥ भाग्यवन्त भाग धन्य जनक सुनैनिकाक तेई पाय पंकज
 स्वपाणि जे पखारही ॥ जेई पद पंकज पुनीत कैसकृत ध्यानभये
 मुक्तपातकी विलद वेशुमारही ॥ जेई पद पंकज चारु लोकन प्रकाश
 कार सेवत सुभाय दानि वैभव अपारही ॥ जेई पद पंकज अधार
 सुर सिद्धि जालदीनन उद्धारवानि वेद जा प्रुकारही ॥ भाग्यवन्त
 भाग धन्य जनक सुनैनिकाक तेई पाय पंकज स्वपाणि जे पखारही ॥
 जेई पद पंकज अनूपचारु मंगलीक ध्यावत शमन कोटि विघ्न पाप
 हारही ॥ जेई पद पंकज मकल जग वन्दनीय विस्वित त्रिलोक पुत्र

कीरति उदारही ॥ कौनमोति गावै कवि उपमान औवै फवि सू-
 खमा निधानि जे सुलभ जीव तारही । भाग्यवन्त भाग धन्य जनक
 सुनेनिकाकतेई पाय प्रकज स्वपाणि जे पखारही ॥ १२५ ॥
 ॥ दो० जे पदपावन देवतन दुर्लभ कोटि उपाय ।
 ॥ ते पदपत्रा पखारही धनि रानी धने रायी ॥
 पुनि कर तल वर कुंवरि जु राई । शास्त्रोच्चार कीन्ह मुनिराई ॥
 पाणिग्रहण होत पुति भयऊ ॥ मुदित देवगण दुंदुभि दयऊ ॥
 सुखद मूलवर कुंवरि निहारी । रानी राय लहे सुख भारी ॥
 लोके वेद विधि सादर कीन्हा ॥ कन्यादाने भूप वर दीन्हा ॥
 पुनि करि होमा मुगाठि जु राई । होनलगी गी भवरी सुखदाई ॥
 निरखि कुंवरि वर अनंद मूलो ॥ मुदित देवनभ विरपहि फूला ॥
 वेद वेदहि विदीजनी भूरी ॥ परमानन्द निगरे नभ पूरी ॥
 भोवरि देत कुंवरि वर दोऊ निरखि निहालि होत सबकोऊ ॥
 दो० मलकत मणि सम्भन शुभंग सियरघुपति प्रतिष्ठाई ॥
 ॥ जनु तनु धरि रति काम बहु देखत सुन्दर व्याही ॥
 यहि प्रकार शुभ भोवरि फेरी अभिये सब मुदित जालि छविहेरी ॥
 त्यहि अवसर मुनि आयमु पाई । सियो शिर सेदुर राम लंगई ॥
 कहिनजाय छवि सो रजलाला । भूपितक्रियेशिहिजनुव्याला ॥
 पुनिमुनि शोभने लहिसियरामो । एकासन बैठे सुखधामा ॥
 निरखि परम शोभा सुखदाई । दर्शय हृदय लहर्ष समाई ॥
 रामव्याह सुखमा अधिकाई । कवन प्रकार कहो मै गाई ॥
 सकल भुवन भरि रहा उच्चाहू । कहि न सके शारदे अहिनाहू ॥
 कहो भगवन्त धन्य ते प्राणी । जिन सिय रामचरण रतिमानी ॥
 ॥ दो० तेव विदेह नृपसन कछो मुनि वशिष्ठ सनुपायी ॥

पुनीतभये ज्यहि खायलही जगजाल बंडाई । तामुख सीय सुओठ
 जूठ सुभिपुडदियो, मधुपर्क खवाई ॥ कानसुने यशचाह चढयो चि
 वाग भँभारि विलोकि अवाई । पूजन पारवतीक किह्यो बहु अ
 शिखाद लह्यो मनसाई ॥ पूर मनोरथ आजुभयो सब क्र्यों प्रग
 न सनेह सगाई । लैसियजू करकंज दियो रघुनन्द मुखे मधुप
 खवाई ॥ ये गुणधाम प्रवीनकला श्रुति, प्रण्वली, रणशत्रु देहे
 प्रावत पाँशु छुवाय किये पविनारि सुकीर्ति कदम्रलहे है ॥ बाल
 नान कढीघरते तुव घूमिय कौशिक संगरहे है । चूकयोहुखेल
 भोरि सिया तुम चातुरता रघुवीर गहे है ॥ बालपना सखिवृन्द
 संग यकेलिअहै न गुणी गुणवासी । लाघवताकर कामअहै भग
 वन्त मिलै ज्यहिं जैति हुलासी ॥ हारहुगी सिय जो इनके संगत
 हित राउरिवात नखासी । देहहिगारि तुम्है यअलि करि है पुरना
 सबै सुनि हाँसी ॥ कै यहि भौति विनोदमहा सुखमा मुख एक परै
 बखानी । राम सियाछवि देखिभली अलिबृन्द सबै विनमोल वि
 कानी ॥ प्रीतिकिरीति अपारअहै भगवन्तसकै त्यहि सो नरजानी
 जाउर भूरि कृपाकरिकै नितवासकरै प्रभु शारंगपानी ॥ एकसखी
 पदत्रानहिलै पटअन्तर मूँदि कह्यो मुसकाई । गुप्तअहै यह देबिलला
 वैठी मुखमूँदि लगौ यहिपाई ॥ याकुलमें वर आवत जो इन पूजत
 सो दल फूलचढाई । पावहुगे मनभाय फलै करिहौ इन पूजन जो
 चितलाई ॥ यो रचना युत वैनसखी सुनिराम मनै हँसि वानि प्र
 कासी । पूजितहै यह देवितुम्है हमरेपद यासम कोटिनिदासी ॥ यो

माधुरि मूरति ना तजिजातै ॥ याविधि हास बिलासहिमें सुख
संयुत वीतिगई बहुरातै । तै सुविदा सबधूटिनके जनवास पयान
किये दिगतातै ॥

दो० जनवासहिं पहुंचायके लोकरीति करवाय ।
बहुरि सखी सब कन्यकन लाई भवन लिवाय ॥
कवित्त ॥ कौनज्यवनार पुनि भूपति वरातबोलि प्रेमसौं पखारि
पांव पीठनै विठायके । हेमघट आनि भरि पूरि कै सुवारिपात्र दिये
पनवार फेरि सूपकार आयके ॥ पटरस चारि भाति व्यंजन सै-
वारि दिव्य सरिसंघर्षा के रत्नादगये पर्सिलायके । करि पंचकौर
लागे जेवन सुमोदधारि कहै भाग्यवन्त कौन भाति शोभ गायके ॥

दो० मीठा खट्टा तिक्क कटु अस्लक अरु नमकीन ।

येई पटरस जानिये भाखत सुकवि प्रवीन ॥

साभ्रयभोज्य अरुलेह्य पुनिचोष्य चतुर्विधि जान ।
अभ्रयकममे पुनि भेद बहुसो कह्य करौखानि ॥
मोदी मोदक खूरमा खाभादिक बहुखान ॥
अखनवत खल्वे जवन भदये भेद सो जान ॥
दालिभातु अरु खीचरी मालपुवादिक खान ॥
सैरसरखीडीरहत जिन भोज्य भेद सो जान ॥
दूधदही अरु रावड़ी हलवादिक जो खान ॥
अधिक रुसीले होतजे लेह्य भेद सो जान ॥

साखनसब तैस्कीरिका चदनी और अंचारो

बोष्य भेदसो जानिये बुधजन कौन विचार ॥

जिजेवत जार्निचसतावर नारि वृन्द हंसपाय ॥

सगीन्देनी गारी मधुर एकन एक लगायगी ॥

समय सुहावनि गारि, मुनि हरपत, नृपसत्ररात ।
 जैवत भयो प्रमोद जो सो नहिं बरोणि सिरांत ॥
 करि भोजन लै आचमन पाय पान सनमान ।
 जनवासहि आये मुदितसहस्रमाज-दशयान ॥
 राम व्याह उत्सव परम पावन पारअनन्त ।
 गिरा सुपावन हेत निज कह्यो कहुक भगवन्त ॥

इति धीमव्यसो ध्यासिंहवर्मात्मजसमुद्यन्तसिंहविरचिते भक्तिशिरोमणिग्रन्थे

श्रीरामजानकीविवाहवर्णनो नाम द्वादशोऽध्यायः १२ ॥

सवैया ॥ रामसिया सुखदानि सदासुमिरें सिधिदायकहैं जे
 जेऊ । मंगल मोदसई युग मूरति आगमवेद ज जानतु भेऊ ॥ ध्ये
 वत शम्भु विरञ्चि नितै कहिनेति वखानतहैं जिनृतेऊ । तापदवन्द
 कै भगवन्त कहै कहु गाय सुरामकलेऊ ॥

कीन्ह सैन पुनि सहित सम्राजो उठि प्रभात कोशल पुरराजा ।
 प्रात क्रियाकरि पाय सुपासा । नृपमणिगये मुदित गुरुपासा ।
 करि प्रणाम मुनि आयसु पाई । बैठे नृप आसन हारपाई ।
 बोले नृपा मुनि कृपा तुम्हारी । भयज पूर्ण अभिलाप हमारी ।
 एक मनोरथ अब मनजागा । पूरण करहु सुकरि अनुरागा ।
 विप्र वृन्द अब लेहु बुलाई । तिनहिं देहु बहुविधिसजिगाई ।
 मुनि मुनीश द्विज वृन्द बुलाये । आये लखि नृप पैदशिरनाये ।
 करि सन्मान सुधेनु मँगाई । सकलप्रकार सुसाज सजाई ।

दो० दीन्है नृप सादर द्विजन बहुविधि विनय सुनाय ।

भये मुदित मनभावती द्विज सुख आशिर्पपाय ॥

पुनि याचकत बोले नृप लीन्हा । मत्तभावतो दान तिनदीन्हा ।
 भये मुदितमत्त सुखन समाई । रुचि अनुहारि दानवर पाई ।

जयजय करहिं कुलाहल होई । अतिआनन्द भगनसर्वकोई ॥
 इहां जत कोनिज सुवन बुलाये । सहित सखनलक्ष्मीनिधिआये ॥
 कीन्ह प्रणामचरण शिरोनाई । बोले नृप लखि गिरासुहाई ॥
 तात वेणिजेनवासहि जाहू । राजतजहें दशरथ तरनाहू ॥
 विनय सुताय प्रजायसु पाई । करन कलेऊ हित सुखदाई ॥
 लाविहु चारिहु कुंवर लिवार्ई । सुनि लक्ष्मीनिधिप्रदशिरार्ई ॥
 ॥ दो० सादर सखन समेत तव है वाजिन असवार ॥
 ॥ जे जले तुरतसानंदमगः कौतुक करत अपार ॥
 आये जहें जनवास विराजा । बैठेदशरथ सहित समाजा ॥
 विभेव अपार वरण नहिं जाई । देखि जाहि सुराज सिहाई ॥
 उत्तरि तुरंग ते सुखन समेत । कहिनजाय उर आनंद जेता ॥
 अवधनार्थ कहें जाय सुहारे । संखन सहित मिथिलाधिपवारे ॥
 नृप गहियाणि निकट बैठाये । लखिद्वि सकलसभामुखपाये ॥
 तव श्रीनिधिभूपतिः सखजानी । जोरिपाणि बोले मृदुवानी ॥
 चारिहु कुंवर सुभाय सुहाये । करन कलेऊ भूप बुलाये ॥
 सो मसाविनय मानि अब लीजै । राजकुमारन आयसु दीजै ॥
 ॥ दो० सुनिलक्ष्मीनिधि वैनमृदु सादर सुतन बुलाय ॥
 ॥ जाहू कलेऊ करन हित कहेउभूप हरपाय ॥
 सुनिपितुआयसु चारिहु भाई । सखन समेत उठे हरपाई ॥
 भूपण वसन सकल तनसाजे । छविअवलोकि मदनशतलाजे ॥
 वाजिन फादिभये असवारा ॥ सानुज सब रघुवंश कुमारा ॥
 ज्यहि तुरङ्गपर राम सवारा । त्यहि द्विकहै कौनकविपासा ॥
 मणिमय भूपण अमित विराजै । हरि हरि छविलखिहरि हरिलाजै ॥
 चलत कलामग कोटिन करई । जलथलअनलअनिलनहिडरई ॥

समय सुहावनि गारि सुनि हर्षत नृपसत्ररात ।
 जेवत भयो प्रमोद जो सो नहिं वराणि सिरात ॥
 करि भोजन लै आचमन पाय पान सन्मान ।
 जनवासहि आये मुदितसहसमाज दशयान ॥
 राम व्याह उत्सव परम पावन पारअनन्त ।
 गिरा सुपावन हेत निज कह्यो कहुक भगवन्त ॥

इति धीमव्योष्यासि हवर्मात्मजसगयन्तसि हविरचिते भक्तिशिरोमणिप्रथम
 श्रीरामजानकीविवाहवर्णनो नाम द्वावशोऽध्यायः १२ ॥

सत्रैया ॥ रामसिया सुखदानि सदासुभिरै सिधिदायकहै जग
 जेऊ । मंगल मोदसई युग मूरति आगमवेदन जानित भेऊ ॥ ध्या
 वत शम्भु विरञ्चि नितै कहिनेति वखानतहै जिनतेऊ ॥ तीपदवन्दन
 कै भगवन्त कहै कहु गाय सुरामकलेऊ ॥
 कीन्ह सैन पुनि सहित सम्राजा । उठि प्रभात कोशल पुरराजा ॥
 प्रात क्रियाकरि पाय सुपासा । नृपमणिगये मुदित गुरुपासा ॥
 करि प्रणाम मुनि आयसु पाई । बैठे नृप आसन हरपाई ॥
 बोले नृप मुनि कृपा तुम्हारी । भयजपूर्ण अभिलाष हमारी ॥
 एक मनोरथ अब मन्जागा । पूरण करहु सुकरि अनुरागा ॥
 विप्र वृन्द अब लेहु बुलाई । तिनहिदेहु बहुविधिसजिगाई ॥
 सुनि मुनीश द्विज वृन्द बुलाये । आये लखि नृपपदशिरनाये ॥
 करि सन्मान सुधेनु मंगई । सकलप्रकार सुसाज सजाई ॥
 दो० दीन्हे नृप सांदर द्विजन बहुविधि विनय सुनाय ।

भये मुदित मन्तभावती द्विज सुख आशिर्पपाय ॥

पुनि याचकन बोलि नृप लीन्हात मन्तभावती दान तिनदीन्हा ॥
 भये मुदितमन सुखन समाई । रुचि अनुहारि दानवर पाई ॥

जयजय । करहिं कुलाहल होई । अंति आनन्द मगनसवकोई ॥
 इहां जतकीनिज सुवन बुलाये । सहित सखनलक्ष्मीनिधिआये ॥
 कीन्ह प्रणमिचरण शिरोनाई । बोले नृप लखि गिरासुहाई ॥
 तात वेणि जेजनेवासहि जेजाहू । राजत जहें दशरथ नरनाहू ॥
 विनय सुताय उरजायसु पाई । करन कलेऊ हित सुखिदाई ॥
 लाविहु चारिहु कुंवर लिवाई । सुनि लक्ष्मीनिधिप्रदशिरनाई ॥
 ॥ दोः सादर सखन समेत तव वै वाजिन असवार ॥
 ॥ ज्ञान जले तुरतसानंदमगः कौतुक करत अपार ॥
 आये जहें जनवास विराजा । बैठेदशरथ सहित समाजा ॥
 विभेव अपारवरणि नहिं जाई । देखि जाहि सुरराज सिहाई ॥
 उत्तरिह तुरंगाते सुखन समेता । कहिनजीय उर आनंद जेता ॥
 अवधेनार्थ कहें जाय जुहारे । सखन सहित मिथिलाधिपवारे ॥
 नृप गहिपाणि तिकट बैठाये । लखिछवि सकलसभासुखपाये ॥
 तव श्रीनिधिभूपति सखजानी । जोरिपाणि बोले मृदुवानी ॥
 चारिहु कुंवर सुभाय सुहाये । करन कलेऊ भूप बुलाये ॥
 सो मसाविनय मानि अव लीजै । राजकुमारन आयसु दीजै ॥
 ॥ दोः सुनिलक्ष्मीनिधि वैनमृदु सादर सुतन बुलाय ॥
 ॥ जाहू कलेऊ करन हित कहेउभूप हरपाय ॥
 सुनि पितुआयसु चारिहु भाई । सखन समेत उटे हरपाई ॥
 भूपण वसन सुकल तनसाजे ॥ छविअवलोकि मदिनशतलाजे ॥
 वाजिन फादिसये असवारा ॥ सानुज सब रघुवंश कुमारा ॥
 ज्यहि तुरंगपर राम सवारा ॥ त्यहि छविकहै कौतुकविपारा ॥
 मणिमय भूपण अमित विराजै । हरि हरि छविलखिहरि हरिलाजै ॥
 चलत कलामग कोटिन करई । जलथलअनलअनिलनहिडई ॥

कवहुँ उड़ि - अकाश को जावै । निजशोभा सुवसुनवकावै ॥
 वेग अपार, मरुतगति हारै । चलत चरण जनुभूमि न धारै ॥
 ॥ दो० ॥ जगवन्दन रघुनन्द को वाजिभनोहर देखि ।
 ॥ ॥ अमर नाग नर सिद्ध मुनि मोहित भये विशेषि ॥
 भरतवाजि छवि वराणिन जाई । समुद्र सुमुद्र सवास्त्रोगनदाई ॥
 चञ्चल सुभगा जीसुवरा चाली । करत निहाल सकलसुर आली ॥
 कमकिममकिजबचलत उतालै । पटल प्रभासम चमकहिनालै ॥
 अमित कलोल करत मगमाहीं । वनत एकमुख वरणत नाही ॥
 रिपुसूदन करवाजि विशाली । जम्पानाम ललित बलजाली ॥
 त्यहि छविसकल सर्भसहै न्यारी । चलत त्रैलुलीगत अतिप्यारी ॥
 लक्षण लालकर लक्ष्मी घोड़ा । जगसहै जासु अननहिं जोड़ा ॥
 अति वाक्कुरो चलत छवि देवै । सुर मुनि जनन जोरि चितलेवै ॥
 ॥ दो० ॥ लक्षणलालको वाजिवर अनुपम कला दिखाव ॥
 ॥ ॥ ज्यो पीवस धनधोर लखि नाचत मरि सचाव ॥
 अपर जिते रघुवंश कुमारा । ते वर वाजिन सकल सवारी ॥
 कौतुक अमित करत मगमाहीं ॥ सहित प्रमोद चले सबजाहीं ॥
 राम वाम लक्ष्मीनिधि राजै । लिये संगे निज सखासमाजै ॥
 छविअवलोकित अमित सुरहरपै । जै जै करत सुमनु बहुवरपै ॥
 यहिविधिसखन सहितरघुनन्दन । पहुँचे जनकनगर जगवन्दन ॥
 पुरतिय अनिरखि रामे छवि ऐना । श्याम शरीर सुजन सुखदैना ॥
 सोहत शीश सुौर अभिरामा । भालतिलक मञ्जुली छविघामा ॥
 अलकभलकलखिलकन परई ॥ आननप्रभा चन्द्रद्युति हरई ॥
 ॥ दो० ॥ निर्वपकज लोचन अमल भृकुटी कुटिल विशाल ॥
 ॥ ॥ श्रुति कुंडल नासासुचिर दर्शन औष्ठ छविशाल ॥

मृदुलः हासत्ररः सुन्दरः बोला । सोहतः उर मणिमालः अमोला ॥
 व्याह विभूषणः सकलः सुहाये । अङ्ग अङ्गः प्रति अति च्छविच्छाये ॥
 नारिचन्द्रः नखः शिखः लखिशोभाः । प्रेमविषयः तन मनः च्छविलोभा ॥
 लाजः काज गृहः सकलः विहाई ॥ निरखहिं रामरूपः सिवः धाई ॥
 प्रभु मुखा देखा प्रसमसुखः प्रावै । तन धन प्राणः सकल निउछावै ॥
 बोली कउज्जये दशरथः वारे । क्यहिकारण इत जात सिधारे ॥
 यह सुनि अपर कल्योः मृदुवानी । पठये बोलि इन्हि नृप ज्ञानी ॥
 करनः कलेकरी हेतु बुलाये ॥ लक्ष्मीनिधि संगजात लिवायै ॥
 दोष धनि धनि सजनी भागवडः हमसत्रकर यह आज । ॥
 जो भरिनैनन दीखे छवि रघुकुल मणि शिरस्ताज ॥
 ज्यहि कारणे सुनिजनः समुद्राई । नानासुखे सब भोग विहाई ॥
 करहि कठिनातपः योगेहि साधै । निशिदिन हृदय रूप अवराधै ॥
 सन्तत जाहि शम्भु उर धरही । ब्रह्मादिके सुरु सुमिरण करहीं ॥
 आगम निगम जासु व्यश गावै ॥ अंगजगमय कउपारुन पावै ॥
 सो प्रभु कृपासिंधु रिघुनायक । निज भक्तन सन्ततः सुखदायक ॥
 हमसब सादरः नयनन देखी । भयनि कृतारथ रूपे विशेषी ॥
 धन्यभाग्य मिथिलाधिपः वेटी । जो मिलिहै इन्हि भुजन समेटी ॥
 सुनि इमि वचन श्रवण सुखदाई । बोली अपर सखीसचुपाई ॥
 दोष भलो बनो संयोग यह बलिये भूपति ऐन । ॥
 हंसि हंसाय अवलोकिले वि सफलकीजिये नैन ॥
 यहि प्रकार सब मनहिं द्दिडाई । चली मुद्रित नृप भवनीसिधाई ॥
 सखा अनुज युत इत श्रीरामा । पहुँचे भूप द्वार अभिरामा ॥
 सुनि सिय मातुः परमसुख मानी । बोलि सुवासिन तुरंत सयात्री ॥
 सजि आरतीः अनेक प्रकारां । विविध मांति मंगल भस्थारा ॥

मंगल गान करत समुदाई ॥ परिछन करत चली ॥ हरपाई ॥
 जाय निकट रघुवर छवि देखी ॥ भई सकल वसप्रेम विशेषी ॥
 सासु हृदय सुख भयउ अपारा ॥ निरखिरूपे दूल्हा सुखसारा ॥
 करि आरती सुमंगल गाई ॥ परिछन कीन कुंवर सुखदाई ॥
 ॥ दोहा ॥ तबालक्ष्मीनिधि तुरंगते उतरि सहित आनन्द ॥
 ॥ ॥ ॥ सखनसमेत उतार्यऊ सांनुज रघुकुलबन्द ॥
 चले लिवाय मुदित निजसाथा ॥ सहितसभा जहतिरहुतिनाथा ॥
 रामहिं देखि अनुजयुते आवत ॥ उठे तुरत निमिबंशी जयावत ॥
 अनुज सखन युत अवध दुलारे ॥ जनकराय कहे जाये जुहारे ॥
 करि आदरवहुविधि अधिकरुई ॥ भूपति लिये निकट वैठई ॥
 नखशिखे रामरूप छवि देखी ॥ सभासहितनृप मुदित विशेषी ॥
 कहुंकरे देरवैठे अनूप प्रीसा ॥ पुनि लक्ष्मीनिधि आयप्रकासा ॥
 भीतर चलहु बुलावहिं रानी ॥ करन कलेऊ हित सुखदानी ॥
 मुनत वचन नृप आयसु पाई ॥ सखन समेत चलोचहु भाई ॥
 ॥ दोहा ॥ आत्रत राजकुमार लखि उठीरानि हरंप्राय ॥
 ॥ ॥ ॥ करि सन्मान अनेकविधि लाई भवन लिवाय ॥
 चारि सिंहासन मंजु सुहाये ॥ वरीण नार्जाहिं अमित छविदाये ॥
 तिनमहँ चारिहु कुंवर अनूपां ॥ वैठाये गहि करन सुखरूपां ॥
 आसन अपर अनूपम आती ॥ द्वीन्हे सखन सहित सुदरानी ॥
 राम श्याम तन लखि छविऐना प्रेम ॥ विवश भई सासुसुनैना ॥
 यकदक चितवत प्रभु मुख ओरी ॥ ज्योदिसि पूरणतन्द्र चकोरी ॥
 प्रेममगनतन दशा भुलानी ॥ गदगद कंठ नैनु दहपानी ॥
 पुनि अखिर सुनैना रानी ॥ कंचनकलश वारि शुचिआनी ॥
 सुख करि पाव प्रदालिन कीन्हीं ॥ लै पठअमलपोषि पुनिलीन्हीं ॥

दो० । तव सभेमं वानी मधुर कही सुनैनासासु ।
 उठहु कलेऊ कीजिये जो रुचिहोवै आसु ॥
 सुनि प्रिय विचन सुराम कृपाला उठे सखानुज सह ततकाला ॥
 मुदित रानि सँगचली लिवाई अति सुन्दर पीढ़न बैठाई ॥
 सहित प्रीतिलै कंचन थारी पटरस व्यंजन विविध सर्वारी ॥
 अति आदर परस्यो सबकाह प्रभुआगे धरि सहित उछाहि ॥
 बोली सासु मधुर मृदुवैना जेवहु मै खलि राजिवनैना ॥
 नेग विचारि हृष्ट हियभारी मणि मुक्ताधरि सबहिनथारी ॥
 नेगपाय निज कृपानिकेता सहितअनुज सबसखनसमेता ॥
 जेवनलगे कुवर वर चारी सखि सब देनलगी मृदुगारी ॥
 दो० जेवतजानि कुमारवर सखिन हर्ष हियधरि पत उठ
 लगीदेन श्रीरामको व्यंगवचनमै गारि ॥
 गीरी अन्दहरिपदा जेवत राजकुमार चारिहु निरखि अली
 अनुरागी हासविलासभरे मृदुवैनेन गारिदेन सबलारी ॥ सुनिये
 राजकुवर रघुनन्दन बहिनि तुम्हारी कैसी मृङ्गीकृपिहि व्याहि
 ज्यहि दीन्ह्यो कहौ वात फुरि जैसी ॥ करत व्याह निजजाति
 माहि सब यह अयोग्य रघुनाथा । कै सुनिराज भगे लै उनको धौ
 लारी वै साथी ॥ बोले लपणलाल तव हंसिकै सुनहु बैन मर्मप्यारी
 कर्मलिखा कइ मेदिसकैना देखहु आपु विचारी ॥ जनकविरक्त जक
 सबजाने हमहनि राजकुमार । तिनके भवन व्याहमे हमरे तवकह
 रह्यो विचारा ॥ सुनिलजीय मुसकाय नवेली बोली अपर सुवानी ।
 और सुनी यकवात लालजी कहौ सत्य सुखदानी ॥ तुम्हरे कुल
 कउ भूपर्यावर गर्भधर्यो उरमाहीं । जायो सुवन मानघाता जिन
 सांचुअहे की नाही ॥ औरौ सुनि यकवात लालजी हँसी हमारे

आवै । तुम्हरे, देश, खाय निय पायसः सुवने, अनूपम जावै ॥ प्रति
 संयोग तनको नहिं चाहित कहौ वति किंमिआहै । सुनत सखीके
 ब्रैन ब्रैन धरि कह्यो विहंसि, सियनाहै ॥ मातु पिता विनु कोउ
 जन्मै जंगप्रसिद्ध श्रुतिगावै ॥ तुम्हरे, तौ यहीति अनोखी महिते
 सब उपजावै ॥ सुनि उत्तर सुसक्रीय पाय संघु अंपरसखी पुनि
 बोली । रघुराजाकी सुता लालजी कउ थकरही अमोली ॥ चन्द्रा
 वति शुभनाम तसुको विदित अहै सर्वठायो । विनुव्याही तिन गर्भ
 धरी उर नाशिकेतु सुतजायो ॥ इमि तुम्हरे कुल रीति रावरे और
 सुनौ एकवाता । तात मात दउ गौर तुम्हरे तुमकस श्यामलगाता ॥
 अतिसुन्दर ग्रहरूप आपु किंमि कहौ लाल कहँ पायो ॥ कैतव
 मातु कामप्रति कैकै तुमहिं अनूपम जायो ॥ सुनत वचन बोले
 रघुनायक जो जैसो है ताको तैसहिं परे विलोकि सकलजग ज्यो
 सावन अन्धीको ॥ सुनिबोली कउ सखी लालजी रह्यो सुनिनके
 साथी ॥ इमि बातें फरफन्द मरी किंमि गई आइ तवहाथा ॥ कह्यो
 भरत तुम अत्रे कुमारी कहाँ सिख्यो इमिबोतै ॥ घरहीमाहिं अनुज
 संगपरिकै पढ़्यो चतुरताप्रातै ॥ एककह्यो इन रूप अनूपम निरखि
 परम मनुहारी ॥ ह्वै मोहित ब्रशकाम पास इन गई ताडुकानारी ॥
 संपस्यो नहीं कौज कहुँ इनते विव्रश लाज त्यहिमारी ॥ कह्यो श
 कुसदन हँ प्यारी सुनिये बात हमारी ॥ जो तुम्हरे मनहोइ सिद्ध
 जनि पछितारिन कीजे ॥ हम सब बैठे सुदन तुम्हारे लौ सुपरीक्षा
 लीजे ॥ सुनि रिपुहर्नकी ब्रैन तातुरी बोली सखि मुसकाई ॥ पिता
 तुम्हारे सुध लाडिले सुधि सुमित्रामाई ॥ तुम तातुर क्यहि भाति
 भयो है यह कछु फेर अहाँवै ॥ हमे जानि असपरत मातु तौ किये
 चतुर असनावै ॥ यहि विधि देहिं विचन मृदुगारी सुनहिं सकल

चुपाये ॥ किरकै अशन अँवै पुनि सानँद निज निज आसन
 पाये ॥ तव उठि सखिन प्रेम उरभरिकै सादर पानखत्राये । भाग्य
 न्त लखिरूप रामको जीवन फलसब पाये ॥ १ ॥
 दो० रामचन्द्र मुखचन्द्र वर सखिजन सरिस चकोरि ॥
 अकटक रहीं विलोकि छवि हृदय प्रीति नहि थोरि ॥
 पहि अवसर श्रीनिधि की नारी ॥ सिद्धि नाम प्रति प्राण पि्यारी ॥
 मोर सरहज रघुनाथिक कैरी । सब गुणधाम रूप मँहेरी ॥
 प्रलंबली निहि ज्ञायै वखानी । प्रीति रीति मुहँ प्रसै संग्यानी ॥
 सखिन समेत तहाँ सो आई ॥ भरी उमंग अंग समुदाई ॥
 नेरखि राममुख पंकज शोभा । प्रेम भरा मज्ज आलि रसलोभा ॥
 लकर पाणि धरि राजिव नैनी ॥ गई ल्यवाय मुँदित निज ऐना ॥
 अति सुन्दर आसन वैठाई । विविध भौति कीन्ही सेवकाई ॥
 सखिगण निरखि राम मुखभरहीं । निज निज रुचि सेवा सबकरहीं ॥
 ॥ दो० ॥ औरहु जे नृप कन्यका आई न्यत्रत विवाह ॥
 ॥ सिद्धि सदन गमनी सकल राम मिलनेकी चाह ॥
 रामहि निखशिख जाय निहारी । भई प्रेम ब्रश संग मुकुमारी ॥
 हरि सनेह अनुरागिनि ज्ञानी । सादर सिद्धि सबहि सनमानी ॥
 वैठी मुदित प्रेम रस पागी । निरखहि रामरूप अनुरागी ॥
 ज्यहिदिशि प्रभुचितवहि मुसकाई । भृकुटी कुटिल सुत्राप चढाई ॥
 बाण कटाक्ष ताकि हनिमारै । निकसै कादिहियो बहिपारै ॥
 घायल गाँत विकल है जाहीं रहत सँभार देह कछु नहीं ॥
 प्रेम सु विष व्याप्यो सब जामा । छूट्यो लाज काज धन धामा ॥
 यहै न कछु प्रभुता बडिगाई । मोहन विश्वरूपी रघुराई ॥
 ॥ दो० ॥ पुनि धीरज धरिकै सकल सादर भरी हुलास ॥

प्रेम उमगि श्री रामसों करन लगीं अलिहास ॥
 बोली कउ यक सखी सयानी । सुनहु राम दुखहु चखिखानी ।
 सुनियत तुम्हरे कुल कउ भूषा । भयो पुरुष ते नारि अनूपा ॥
 भोग कीन तिन संग निशिराई । तिनयक पुत्र अनूपम जाई ॥
 कहिये साँचु अहै ग्रह ताता । सुनितिय अपर कहै मूढवाता ।
 हमहूँ एकै वात । सुनि पाई ॥ व्याहन समय तुम्हारी माई ॥
 लै भाग्यो दशमुख निशिचारी । लोलुप नीच निरत परनारी ॥
 त्यहि पुनि पिता तुम्हारे व्याही । कहिये साँचु अहै की नाही ॥
 और वात यक जगत प्रकाशी । केकै सुता परम ब्रह्मिणारी ॥
 दो० नारद मुख सुनि तात तव विवश काम अकुलाय ।
 ॥ १ ॥ व्याहे त्यहिं करि बली अमित कालीदेव पठाय ॥
 यहिविधि अमित हास मै वाता । भई तुम्हारे घरमें ताता ॥
 सुनियत दशरथ रानि सुमित्रा । जन्मी यकसंग दिसुत विचित्रा ॥
 यकसुत जन्मत गति जो हेई । कहै कौन जानै तिय सोई ॥
 द्वै सुत एक संग तिन जायो । प्रसव वाद उन कितिक बढ़ायो ॥
 यहिविधि करहि हास सबवाला । विलग न मानहि रामकपाला ॥
 तिन्हकी रुचि राखनके हेता । देहि उतर नहि कृपानिकेता ॥
 निरखि निरखि रघुवीर सुभाऊ । सखिसव लहहि परम मनचाऊ ॥
 ज्यहिउर रही लालसा जैसी । प्रसुसन किये भावना तैसी ॥
 ॥ दो० रसिकराज रघुवंशमणि । प्रीतिपाल छवि ऐन ॥
 ॥ १ ॥ राखी रुचि सब तियनकी कृपासिन्धु सुख दैत ॥
 सब तिय राम प्रेमरस पांगी । परत्रश भई देहसुधि भागी ॥
 सिद्धि कुंवरि बोली मूढ वैना । सुनहु बचन मम राजिवनैना ॥
 हम निज ननेद मिलावातुमको । देहु नेग मनभावत हमको ॥

तरु जन्मभरि वनिये दासा । सुनि राघव मृदु वचन प्रकासा ॥
 म-क्षत्री-सेवा नहिं कीन्हा । औरनते निज कारज लीन्हा ॥
 निहै सोत्त करत सुकुमारी । देवनेग रुचि जवन तुम्हारी ॥
 जेज मन भावत लीजे मांगी । बोली सिद्धि कुँवर अनुरागी ॥
 राजकुँवर सुन्दर सुरचाता । देहुनेग यह म्यहिं सुखदाता ॥
 सबैया ॥ भव प्राणप्रिया सुखधामसदा जन रखन सन्तत भँक
 हेतै । विनु कारण दीनदयाल प्रभो इख दासन मेदत कोर चितै ॥
 पुण पुञ्ज सुपावत पार न वेद बखानत कोटिज कल्प त्रितै ॥ यह
 रूपसो भगवन्त हिये ससमाज कृपाकरि रामनितै ॥ ३७ ॥
 दो० एवमस्तु कहि वचन मृदु बोले राम सुजान ।
 देहु निदा प्यारी हमै ह्यैहहि अवध प्रयान ॥
 सुनि प्रभु वचन त्रिरह रस पागे । वाण समान तियन उर लागे ॥
 विवरण दशा कदत नहिं वानी । सहमि सुखिगई सकल सयानी ॥
 समय विचारि धीर धरि भारी । बोली वचन सिद्धिसुकुमारी ॥
 राजकुँवर सुवर चित चोरा । सुर मुनि वनज वनन रविभोरा ॥
 प्रथम प्रीतिकै वश करिलीन्हा । अवक्यहिकाज दयातजिदीन्हा ॥
 हम तजि आपु अवध जो जैहै । तौ क्यहि भांति प्राण मम रहै ॥
 लोकलाज कुलकानि बडाई । सबतजि तुमहि प्रीति हमलाई ॥
 सो न तजव तजवै वरु देहा । सुनहु राम मम प्राण दहयेहा ॥
 दो० कठिन प्रीतिकी रीतिहै ताहि न करिये काहु ॥
 जो करिये तौ जन्मभरि चहिये करन निवाहु ॥
 अहै कठिन अतिप्रीति कि रीती । स्वइ जानै ज्यहि उपर वीती ॥
 अपर कहा कउ जानै हाला ॥ जिमिदुख प्रसव वांभवरवाला ॥
 ज्यहिसन जाहि प्रीति लगि जावै ।

आठोपहर । भीतकी । मूरति । भूलति नहिं त्यहिरहतावसूरात ।
 विनु देखे मित्रहि निज नैना । एकोक्षण न लहत मनबेना ।
 तनते अधिक मित्रहै प्यारा । त्यहिकिमिकहौ करैकोउन्यारा ।
 वैसाहि कऊ अदरदा होवै । मित्र विरह जो सुख सों सोवै ।
 त्यहिते राजकुंवर सुनि लीजै । विरह वियोगहमहिंजनि दीजै ।
 दो प्रीति कठिन संसार में जो दीजै करतार ।
 तौ न्यारो जनि कीजिये आपन प्रीतम यार ॥
 सबैया ॥ जायवसै वरु काननमें तजि भोग विपै जगको सु
 सारो । ज्वाल चिताप जै वरु आप कलापसहै दुख दारिद भारो ॥
 जीवनते वरु मृत्यु मिलै तजि स्वर्ग परै चहु नर्क भभारो । पै भ
 गवन्त करे करता न कबौ प्रियप्रीतम आपनन्यारो ॥ लाजहु काज
 छुटै धनधाम अराम वहै कुलकानिहु टूटै । धर्महु कर्म तजै सगरे
 दुख भूरिसहै यमकिंकर कूटै ॥ योगहु ध्यान विराग छुटै ठग मोह
 मदादिकते धन लूटै । पै करतार कृपा करिदे भगवन्त कबौ निज
 मित्र न छूटै ॥ त्यागिसुखै सब प्रेम मदांध फिरै जगमाहि सहैवहु
 सोगू । आदर मान घटै सब ठावरु शत्रु वनै सगरे गुरुलोगू ॥ जा
 तिहु पाति सुजाति रहै घर नीचन मांगि करै वरुभोगू । पै भगवन्त
 न दे करतार कबौ निज प्रीतम यार वियोगू ॥ होत सुखो दुख मूल
 सबै क्षणएक लहै कहू चित्त न चैना । खानहु पान रुचै न कहु
 जितहेरि तितै निज हित्त लगैना ॥ हूलति अन्तर भीत कि मूरति
 सूरति नैननते सुकढ़ैना । ताहि कबौ सुख स्वप्न नहीं बिछुरै ज्यहि
 मित्र प्रिया सुख दैना ॥ ऊंचहु नीच विचार नहीं कहु प्रीति गई
 ज्यहिसौ जब लागी । तारगम रंगिजात स्वई रहिजात नहीं पुनि
 अन्त दुजागी ॥ भावतहै मन वाहिसदा भगवन्त रहै मतिस्वै रति

तासु प्रीति नहिं, चंद्र विचरै । अपनी विरह ताहि निते जरै ॥
 बिहुरत जलहिं मीन मरिजावै । तद्यपि जल उर दरद न आवै ॥
 जरत प्रतंग प्रेम वशदीपै । जारत सो न दया धर जीपै ॥
 दो० निज प्रीतमं घन मोद लखि नाचत कानन मोर ।

सो नहि हेरत तासु दिशि मारत पाहन घोर ॥

प्राण प्रीतिवत, ऐसे बहुत हिम देखे संसार ॥
 प्रीतिवत तौ तन मन दे रख्यो एक दया नहिं धार ॥ प्रीति
 हमरी प्रीति अहै असिनाहीं । जैसी कछु इन प्रेमिन माही ॥
 हमसन प्रीति रीति जे करहीं । एकौ क्षण न ताहि परिहरही ॥
 मम मित्रहि दुख देन जु चाहै । सो दुख वह खल आपहि साहै ॥
 तजि सब आश हमहिं रतिलावै । ब्रह्मादिक त्यहि शीश नवावै ॥
 निज तन तातन भेद न राख्यो । त्यहितजि एकग्रासनहिं चाख्यो ॥
 तन धन अरु त्रिभुवन सुखसारे । येनहिं लागहिं म्वहितसप्यारे ॥
 जसकछु म्वहिं निज प्रियासनेही । म्वहितजिनाहिं आनगतिजेही ॥
 अस प्राणी म्वहिं विसरत नाही । वसत सदा सो मम उरयाही ॥
 ॥ दो० ॥ जप तप योग भखादिते मोहिं सकै नहिं पाय ॥

पर एक प्रेमी जननते चलत न मोर उपाय ॥

तुम सब प्रिया प्रेमकी मूरति । धनि धनि धन्य तुम्हारी मूरति ॥
 प्राण समान हमहिं तुम प्यारी । कवहुं न द्वैहहुं भोसन न्यारी ॥
 सदा बसै हम तुम्हरे पासा ॥ मीनहुं प्रिया वचन विश्वासा ॥
 स्वर्ग पताल भूमि दिशि चारौ । करि मन थिर ज्यहि ओर निहारौ ॥
 अग जग मै त्रिभुवन सब ठाई । केवल हमरहि रूप दिखाई ॥
 सुनि प्रभु वचन ध्यान उर आनी । सिद्धि आदिसव हुं वरिसयीनी ॥
 बढ्यो प्रेम भन धीरज कीन्हा । रामश्याम छवि उर धरि लीन्हा ॥

बहु विधि करि रघुवीरि बड़ाई । पुनि नीलीं सबी अलिखि छुपाई ॥
 दो० धन्य धन्य रघुनाथ हमा आपु छपा विडि कीन । जगु ॥
 ॥ प. ॥ धूड़त सागर जगत से राखि गोह गहि लीन ॥
 हर्म अवला संतत अवलि करि न सकौ उपकार ॥
 रवि सम कबहुँ कि होवहीं जुरै सुदीप हजार ॥

सवैया ॥ जन्म जहां ज्यहि योनि विपे, वस कर्म विराधि कृपा
 करि देही ॥ आनि परै दुख ह सुख ज्यो हित मानि सबै रिर सोसहि
 लेही ॥ और कछु चित चाई नंही भगवन्त उरास अहौं येक येही ॥
 राजिव लोचन राम मिलौ तुमही तहें आपन प्राण सनेही ॥ लागी
 सदा तुम सों रति है गति है पर अंतर और न केही ॥ जनि तहौ स
 जानि शिरोमणि कान धरौ बिनती मम येही ॥ कर्म प्रभाव जह
 भगवन्त लेहौ जग जन्म तहें तन तेही ॥ राजकुमार मिलौ तुमह
 नित राजिव लोचन राम सनेही ॥ जै करता रदियो करि बोह महा
 यह मोदपिये भरि घूटै ॥ दुर्लभ देवन रूप जई त्यहि नैन निहा
 हिये सुख लूटै ॥ स्वै करता र कृपा ॥ करि दे जग जार तहें तित आतन
 छूटै ॥ पै प्रभु सों यह लागी लीगी भगवन्त सु कौन्यहु जन्म न दूटै ॥

दो० । सुनि सप्रेम शार्णा मधुर राम कृपा मुख येन ।

॥ सन्माने बहु विधि सनेहि कहि प्रिय सुन्दर वैन ॥
 ॥ प्राय विदा संव सो बहुरि आये सासु समीप ॥
 ॥ चन्द्र चरण लहि आशिया भगवने रघुकुल दीप ॥
 ॥ द्वार आय भिषिलाधिपहि चन्द्र राजाय सुपाय ॥
 ॥ जनवासे भगवने मुद्रित सहित सखन चहुँ भाय ॥
 ॥ हरिगीतिका छन्द ॥ चहुँ वैनु सानेद सखन युत असवारि
 वाजिन भये ॥ मग दैत लोचन लाहु सनको आइ जनवासाहि गये ॥

शिरस्ताय कीन्ह प्रणाम भूपहि निराखि नृप सुख प्रायज्ज भगवन्त
द्वि आशीश बहुविधि हरेपिदिगे प्रयथायजः ॥ ११ ॥

॥ दोशरामचरित अद्भुतअमित श्रुतितकहत श्रुतिसन्त ॥ १२ ॥

॥ प्रिया विराणिसकै सोऊन विधि आतिभति लुघु भगवन्त ॥ १३ ॥

॥ त्वत्प्रतिमद्वेष्यासिद्धमन्त्रजभगवतालहावैरचितभक्ति शिरामयिप्रथी ॥ १४ ॥

॥ प्रिया प्रणामचक्रलेप्राकर्षणपूर्णेनोत्सृज्योदशोच्चाय १३ ॥ १५ ॥

॥ सोठ सवन कद तनश्याम चन्द्रानन पीकज नयन ॥ १६ ॥

॥ एतद्दृश्यहिपद करी प्रणाम भवभय सजन नाम ज्यहि ॥ १७ ॥

॥ दलनमोह तमघोरदानि मुदासुरसुर सुजन ॥ १८ ॥

॥ दशरथराज किशोरि वन्दौ पुनि पुनि नायशिर ॥ १९ ॥

॥ दोष नित नव आदर सहसविधि करैधूप मिथिलेश ॥ २० ॥

॥ प्रेम प्रवेश अवधेश को जानदेत नहि देश ॥ २१ ॥

॥ सवैया भोगहि राऊ विदा उठिकै नित राखहि भूप समेत स
नेहूनीभूरि उवाह वदयो मिथिलापुर राजन गौत्र सुहाय न कहू ॥
जाय सतानंद कौशिकतौ समुभाय कहे बहुभाति विदेह ॥ २२ ॥
मये बहुवार इतै अब कीशलपालहि आयमुदेहू ॥ २३ ॥

॥ दोष भलोहिनाय कहि जनकनृप सचिवहिकह्यो जुलाय ॥ २४ ॥

॥ गीग कौशिलपति चाहतचलन भौतर देहु जनाय ॥ २५ ॥

॥ सत्यगमन सुनि अवधपति मिथिलापुर नरनारि ॥ २६ ॥

॥ भयेविकल पीकजिया विहिरत सांभ तमारि ॥ २७ ॥

॥ जेतीनिमास मिथिला नगर दशरथ कीन निवास ॥ २८ ॥

॥ जगताते छुड़ दिशि सकलजन फेसे प्रेमकी फोस ॥ २९ ॥

॥ अर्थावत पथ वरातवर जह जह कीन्ह निवास ॥ ३० ॥

॥ पठेदीन तह तह जनक बहुविधि भोग विलास ॥ ३१ ॥

बहु विधि करि रघुवीर । बड़ाई । पुनि ब्राली सब अलिसेष्टुपाई ॥

॥ दो० ॥ भन्म भन्म रघुनाथ । हम आणु । कृपा । विडिकीन । ॥

॥ ॥ वृद्धतः सागर जगत से राखि बाँह गार्हि लीन ॥

। हम अबला संतत अवलि करि न सकै उपकार ॥

। रवि सम कबहुँ कि होवहीं । जुरै जुदीप हंजार ॥

सवैसा ॥ जन्म जहां ज्यहि योनि विषे वस कर्म विराधि कृपा

करि देही ॥ आनि परै दुख हू सुख जो हित मानि सत्रै शिर सोसहि

लेही ॥ और कबू चित चाह तंही भंगवन्तै छरसि अहौ एक येही ।

राजिव लोचन राम मिलौ तुमही तहँ आपन प्राण सनेही ॥

सदा तुम सों रति है गति है पर अंतराचौरन केही ॥ जन्तवहौ स

जान शिरोमणि कान धरौ बिनती मिय येही ॥ कर्म प्रभाव जहै

भगवन्त लहौ जग जन्म तहँ तन तेही । राजकुमार मिलौ तुमही

नित राजिव लोचन राग सनेही ॥ ज्वै करतार दियो करि छोह महा

मह मोद प्रिये भरि घूटे ॥ दुर्लभ देवन रूप ज्वई त्यहि नैन निहारि

हिये मुख लूटे ॥ स्वै करतार कृपा करि दे जग जार ज्वै तित यातन

छूटे । पै प्रभु सों यह लागिलगी भगवन्त सु कौन्यहु जन्म न द्यै ॥

दो० । सुनि सप्रेम प्राणी मधुर राम कृपा सुख येन ।

॥ सन्माने बहु विधि सत्रहि कहि प्रिय सुन्दर बैन ॥

॥ पाय विदा सब सों बहु रा आये सासु समीप ॥

॥ बन्दि चरण लहि आशिता रामने रघुकुल दीप ॥

॥ द्वार आय मिथिलाधिपहि बन्दि राजाय सुपाय ॥

॥ जन रासे रामने मुदित सहित सखन चहुँ भाय ॥

॥ हरि गीतिका छन्द ॥ ॥ चहुँ वन्धु सानेद सखन युत असवा ॥

वाजिन भये भग देत लोचन लाहु सत्रको आइ जन वासहि गये ॥

पुनि आनन्द जनक, महाराजो । विविधभांति दायजु बहुसाजा ॥
 दिग्गज सहस पचास सजाये । जिनहिदेखिदिशि नागलजाये ॥
 श्यामल । अंग । पुष्ट । दंतारे । दीर्घ । मत्त । पुंज । बलभारे ॥
 कसी जरकसी मंजु । अंबारी । भूलि रहीं । भूलें । छविकारी ॥
 भाणि मुक्ता । मै भालरि राजें । वरण न जाहिं करिणकीसाजें ॥
 गाजहिं गज घंटा घहराही । रहीपूरि खं त्रिभुवन माहीं ॥
 तुरंग लाख दश नखशिखसाजे । स्थ बाजिन ते अधिक विसजे ॥
 चंचल नवल बपुख निरदूषण । भूषण द्युति किरणी जनु पूषण ॥
 मन मारुत ते वेग अपारा । वरण वरण वरण को पारा ॥
 अरुण पीत सित नील गुलाबी । लक्ष्मी हरित सुज्जदी आवी ॥
 दश हजार स्यंदन सजवाये । भानु यानु उपमा नहि पाये ॥
 वृषभ वृन्द दशलाख सवारे । अति सुन्दर सब गुणगण भारे ॥
 महिपी लाख सत्तानवे साजी । देखत जिनहिं होत मन राजी ॥
 मनहुं श्याम धनु सुवन सुहाये । नभते उतरि चरन महि आये ॥
 कंचन मद्धित शृंग छवि जारा । सोहत करठ मणिन के हारा ॥
 शिशु सुकुमार लिये संग प्यावै । दूध धार धरणी धसि जावै ॥
 यककरोरि चौरासी लक्षा । सर्जी धेनु सोहत संग वक्षा ॥
 कायधेनु सम सब फलदानी । सूधी परम दूध की खानी ॥
 सबहिन सुवरण शृंग मंदाई मुक्ता । प्रच्छेजत खुर लार्ई ॥
 अंग अलंकृत सकल विशेषी । को छवि कहै जान जिन देखी ॥
 लक्ष वहत्तरि शिविका सर्जी । तिनपर सियदासी सत्रि राजी ॥
 भइजनु काम वाम असवारा । सबतन करि प्रोडश शृंगारा ॥
 छपे ॥ उवटन मंजन धीर वरण जावक सजिवारै । लेपन म
 सिंदूर मेहदी वेसरि धारै ॥ अरगजारु शुभ गन्ध नयन अंज

प्रथम स्वपति भोजन करवावै । पाछे अशक्त आप सो पति
 पतिहि सुताय सु सोवन लागौ । पतिसों प्रथम आपुनितजामें
 संतत कर पति हित अनुरागी । छिल विहीन जे तियवड भागी
 बोलै पति गृहीत काज विहाई । सुस्तासमोद
 जोरि पाणि युग करि सुप्रणामा । वदै
 क्यहि कारण बोल्यो प्रभु मोहीं । आयसु होइ करौ
 जो आज्ञा देवै प्रति ताहीं । करै तुरत
 स्वम स्वपति नित मरति देखै । परपति द्वेषि कबहुँ
 सो तिय उत्तम वेद त्वखानै । पति तजि नै
 पितृ भ्रातृ सुतवत परनाहै । पश्य तियांसा मध्यम आहे
 जो निज धर्म समुक्ति मनमाहीं । रहै निकृष्टी कथितासाहीं
 पतिकुल आसन कर अघ जोई । पतिघ्नताक अर्धमा हौ सोई
 प्रत्युत्तर जो पति सों ठानै । रहै सदा मन क्रोध समानै
 शरमाग्राम कहै श्रुति ताही । कैपि शृगालिनि वनकै आही
 उचासन ॥ कबहुँ लहिण सेवै । दुष्टीनि कटाप्रिग भूलि न देवै
 लज्जाकारा वचन प्रपतिप्राहीं । रंजक कहै कबहुँ तियनाहीं
 नासि धरम यह जो समै गीत्रा । शिवपुराण मह सो सुव पावा
 दो नारि धर्म यहिविधि सवहिं सादरसखिन सिखाय ।
 वारहिं वार सनेह वश त्वहिं सकले उरलाया ।
 सवैया । त्यहि औसर सानुज राम तहां सुविदा हित भूपति
 ऐन गये ॥ लखि आवत राजकुमारन रानि समोद वरासन आनि
 दये ॥ शिरनाथ सुभाय प्रणाम सुकै लहिशसन आसन वैठिये ॥

स्वर्गद्वारं अनादित कंद मन्तोर्जा लीजाये ॥ हित विद्वान् नृपमंदिर भे
 पयान किये दाराख्यं द्रनजये ॥ प्रिय सुहाल विहाल कमील
 ताल सत्रै च्छवि देखन धाये ॥ कवित्त ॥ कहें एक एकनसों वार्तयो
 पिथे जात नैनन निहारि आजु रूपयो सुलीजिये ॥ कोशल कृ
 ललाल मुखमाग विशाल जाल पोवनो सप्रेमकार श्रम धाय पी
 जये ॥ जाहत चलन आजु प्राणन आधार ए सुमूरति पुनीतमणि
 णि सनाक्रीजिये ॥ भाग्यवंत धारि उर रूपये अनंद धाम पूरण
 नुकाम यामआठ सुखभीजिये ॥ जाने कौन कौनेधौं सुकृतभे सु
 तम आनि रूपके अंगार लैकुमार चारु चारिहू ॥ लोहोक्षर नैनन
 नेहारि लोहो जन्म जग चाहत चलनभूप कनिहै तयारिहू ॥ हतो
 पतनेई योग इनकी हमार इत भयो सो व्यतीत अब वीच विधि
 डारिहू ॥ कहत परसपर वातें इमि वारवारी भगन पर्योधि प्रेम सवै
 नरो नारिहू ॥ सवैया चालखि राघवरूप छटा अमली वश प्रेम भई
 गजगासिनिया ॥ सुधिभौरि चक्रोरि सो गोरि सवै अवलोकि मुखे
 विधु यामिनिया ॥ ठगेसी रहि चालत नाहि पगे लखि दीपयथा
 मृगे यामिनिया ॥ धन प्राणन वारि निहारि पगी मिथिलापुरकी सर्व
 क्रामिनिया ॥ मिथिलापुरकी मिलि नारि सवै करि आपुस माहि
 रही वतिया ॥ हमको इन दर्शन रोस भयो नरकी नर पाव यथा गति
 यो ॥ सुखजात कह्यो सुख एक नहीं अवलोकत शीतल भे छतिया ॥
 मन भावतहै कछु और नहीं इनके रस प्रेमपगी सतिया ॥ तनत्प्राग
 समै जिमि पावे कऊ रस अमृत तयो हमको अलिया ॥ इन दर्शन
 अनंद दानि भयो जगजीवन लोह लह्यो भलिया ॥ मनमोदी महा
 यश पाय भली जलजात कली भ्रमरावलिया ॥ भगवन्त निर्वाचरि
 प्राण को लखि रूप नखशिख भाथलिया ॥ अति सुन्दर श्याम

प्रथम स्वपति भोजन कखवै । पाछे अंशान् आप सो ।
 पतिहि सुताय सुसोवन लागै । पतिसौ प्रथम आपु नितजगै
 संतत कर पति हित अनुरागी ।
 बोलै पति जगही । कार्य विहाई ।
 जोरि पाणि युग करि सुप्रणाम । । वदै वचुन इमितिय
 क्यहि कारण बोल्यो प्रभु मोही । आप्रसु होइ करी
 जो आज्ञा देवै प्रति ताही । कहे तुरत
 स्वम स्वपति नित मरति देखै । परपति
 सो नितिय उत्तम । वेद बखानै । निजपति तजि
 पितृ भ्रातृ सुतवत । पंरनाहै । परया नितिया सा मध्यम आहे
 जो निज धर्म समुक्ति मनमाही । रहै
 पतिकुल आसन कर अर्घ जोई । पतिन वार अर्धमा हौ सोई
 प्रत्युत्तर जो पति सौ ठानै । रहै सदा मन क्रोध समानै
 शरमाग्राम कहै श्रुति ताही । कैपि शृगालिनि वनकै आही
 उचासन ॥ कत्रहं नहिं सेवै । दुष्ट नितिकटा प्रेग भूलि न देवै
 लज्जाकार वचन पतिपाही । रंजक कहै कुत्रहं नितियनीही
 नास्ति धर्म यह जो मै गावाग शिवपुराण मह सो सुव प्रावा
 दो न तारि धर्म यह विधि सवहिं सादुर सखिनं सिखाया
 नवारहिं वार सनेह वश लेहिं सकल उरलाया
 सवैया । । त्यहि औसर सानुज राम तहां सुविदा हित भूपति
 ऐन गये ॥ लख आवत राजकुमारन रानि समोद वरासन आनि
 दये ॥ शिरनाय सुभाय प्रणाम सुकै लहिशासन आसन वैठिगये
 भगवंत नृपाजिर मस्य मनो सुउदै विधु पूरण चारि भये ॥ चारि
 भाय सुभाय मनोह रचामलगोर महाछ विद्याये । आनन चंद प्रम

स्वच्छन्द अनन्दित कन्द मन्तोर्जाले जाये ॥ हित विद्वान् नृपसंदिशामें
 प्रमान क्रिये दशस्यं द्रव्यजाये ॥ पिपिपि सुहाल विहाल कमील
 ताल सत्रे चित्रि देखन धाये ॥ केवित्तु ॥ कहें एक एकनसों वार्त यी
 पियजात नैनन निहारि आजु रूप यी सुलीजिये ॥ कोशल कृ
 ललाल सुखमा विशाल जल पोवने सप्रेमकार क्षेम धाय पी
 जये ॥ चाहत चलन आजु प्राणन आधार ए सुसूरति पुनीतमणि
 णि मन कीजिये ॥ भाग्यवत धारि उर रूप ये अनन्द धाम पूरण
 मुकाम पामआठ सुखभीजिये ॥ जानै कौन कौनधौ मुकृतभे सु
 तम अग्नि रूपके अंगार येकुमार चौरु चारिहू लिहू क्षिर नैनन
 नेहारि लाहु जन्म जग चाहत चलनभूप कीनहे तयारिहू ॥ हतो
 प्रतनेई योग इनको हमार इत भयो सो व्यतीत अव वीच विधि
 डारिहू ॥ कहत परसपर बातें इमि चारवार मगन पर्योधि प्रेम सबै
 नरी नारिहू ॥ सवैयो चालखि राघवरूप छटा अमली वश प्रेमभई
 गजगामिनिया ॥ सुधिभौरि चक्रारि सो गोरि सबै अवलोकि मुखे
 विधु यामिनिया ॥ ठगिसी रहि चालत नहि पगै लखि दीपयथा
 मृग भामिनिया ॥ घन प्राणन वारि निहारि पगी मिथिलापुरकी सब
 कर्मिनिया ॥ मिथिलापुरकी मिलि नारि सबै करि आपुस माहि
 रहीं वतिया ॥ हमको इन दर्शन ऐस भयो नरकीनर पाव यथा गुति
 यो ॥ सुखजात कह्यो सुख एक नहीं अवलोकत शीतलभे अतिया ॥
 मन भवितहै कहु और नहीं इनके रस प्रेमपगी अतिया ॥ तन त्याग
 समै जिमि पावै कऊ रस अमृत त्यो हमको अलिया ॥ इन दर्शन
 अनन्द दानि भयो जगजीवन लहु लह्यो अलिया ॥ मनमोद महा
 यश पाय भली जलजात कली भमरावलिया ॥ भगवन्त निर्वाचरि
 प्राण करै लखि रूप नखाशिखा भाथलिया ॥ अति सुन्दर श्याम

निष्ठ । जोरिपाणि पुनि वचन । मृदु कहत सुनैला माये ॥ पाप
 तीतोदक छन्द ॥ सुनिये सुतं जीवनप्राण मिया । विनैती इतनी
 करि श्रिरिदर्या ॥ परिवारहि राजहि मो संप्रजा । सम प्राणप्रिया नि-
 तये तनुजा ॥ निहिं त्राति वयारि लगी कवहुं । पुतरी द्वासी रखती
 सबहुं ॥ कर आपु निवाह अहै तिनको ॥ नहिं रक्षक आन वियो
 किनको ॥ निज किंकरि मोनवृ तात इन्है । तजि आपुगती नहि
 आन जिन्है ॥ बहुभाति बुझाय न तात कहौ । बलिजाँज सवै तुम
 जानतहौ ॥ यहि भाति विनै बहु रानिकरी । गहि राघव पंकज
 पांयपरी ॥ मुख आवत बानि न प्रेम फूसी । लखि राम प्रभानन
 पूर्ण शसी ॥ शंखनारी छन्द ॥ इदं सासुवानी ॥ सुप्रेमाशु सानी ॥
 सुनी राम ज्योही । कृपासिधु ज्योही ॥ चतुरसा छन्द ॥ कहि मृदु-
 ानी । प्रभु सुखदानी ॥ बहुशिख दीन्ह । चित थिरकीन्ह ॥ तव रघु
 शीरा । अति मति धीरा ॥ जन भूख नीरा । परम गभीरा ॥ युग कर
 जोरी । सुख रस बेरी ॥ कहत सुवानी । अब म्पहि रानी ॥ शंख
 नारी छन्द ॥ विद्या वेगि दीजे । कृपादृष्टि कीजे ॥ इदं भाखिरामा ।
 उठके प्रणामा ॥

दोष प्रीयविदा आशिष अमित पुनि पुनि शीशानवीर्या ॥ ॥ ॥
 पितु समीप गमने मुदित सहित अनुज रघुरायि ॥ ॥ ॥
 कमल नैन श्रीराम अवि मंजु मधुर उर आनि । ॥ ॥
 प्रेमविवश मनतन शिथिल अतिसनेह सवरानि ॥ ॥

शुभगीत छन्द ॥ पुनि धीर धरि सब कुंवरि सादर मातु लई
 हँकारिकै । माण वसन भूपण श्रि नखशिख सखिन सजे सवोरि-
 कै ॥ गुनि चलनितर मन लेहत दुस सब विकल जननी ॥

उरलाय पुत्रिन वार-वारहि प्रेमवश मुख जोवहीं ॥ पहुंचाय पुनि
 फिरि मिलहि भरि भरि अङ्ग जल नैन न बहे । त्यहि समय प्रीति
 किं शीति अति भगवन्त बयो ब्रै नन कहै ॥ सर्वेया ॥ प्रेम-पयोनिधि
 स्रवन सर्वे नरुनारि समेत सखी रनिवास । रोवहि पुत्रिन त्वायहि ये
 पद भीजिये हृग धारि न ओसु ॥ देखि विलाप क्लाप समय अस
 कौन भयो उरजासु हरासु ॥ मानहु श्रीमिथिलेश पुरे करुणां विर
 हानि किये सुनिवास ॥

दो० जि शुक सारिक जानकी कनक पीजरन राखि जि
 पालि पहाये विकलते रहे सकल अस भाखि ॥
 ॥ निहाय प्राण प्रीतम सिया किते गई तजि माहि ॥
 सुनि वाणी सानी विरह तजे न धीरज कोहि ॥
 जहां दशा असि जड़नकी कहे सचेतन कान ॥
 समय समाज विषाद बड़ कहत बने नहि तौन ॥

कुण्डलिया ॥ ताही अवसर बंधुयुत आये तिरहुतिराय । प्रेम
 उमगि जल नैन भरि लीन सियहि उरलाय ॥ लीन सियहि उर
 लाय ज्ञान गुण ध्यान पराने । प्रबल रामसिय नेहजानि मन सकल
 डराने ॥ आनेजिव रिपु मोह भग्राप सहायक ताही । तिरखि सहा
 यक सबल तेपि गवने तुरताही ॥

दो० समुभाये सब सचिव मिलि कुसमय जानि नरेश ।
 धरि धीरज दीन्ह्यो बहुरि मंत्रिहि बोलि निदेश ॥

साजि मनोहर पालकी वेगि लयावहु जाय ॥
 सुनिशासन आनेतुरत शिविका दिव्यसजाय ॥
 कंवित ॥ प्रोप शुक्लवार सोम दशमी लगन मीन स्वर्ती नक्षत्र

ब्रह्मदाहिने सुमानिकै । प्रेमवश भूपसिव सहित समाज हर्षि ब्रंदि
 गणराज देव साधु संतमानिकै ॥ सादर कुमारिकान्तपालकी चु-
 दाय फेरि दीन सीख भांति भूरि नारि धर्म भांति कै ॥ कीर्तियों
 पयान सीय सगुन अनेक होत वर्षहीं प्रसून व्योम देवगणी आनि-
 कै ॥ सीयके चलत सब व्याकुल नगर लोग रोदन अपार कै सुशोच
 बरा हैरहे ॥ सजिव समाज साथ चले तीरहूतिनाथ पुत्रिन पठविनै
 सुनै जल छैरहे ॥ रोवत विचारि भूप सकल कुमारिकान धीरज
 कलाप मृदुवैनन सो दैरहे । रोवह न पुत्रिवेगि लेवहो मंगाय तुम
 थोरही दिवस माहिं तोपयोहि कैरहे ॥ रोलाछन्द ॥ वाजहिं विपुल
 निशान नगर नभ आनंदभारी । रथ वाजिन राज साजि वरातिन
 किये तयारी ॥ दशरथ मुदित बुलाय सकल द्विज वृन्दन लीन्हे ।
 दान मान करि विनयतिनहिं परि पूरण कीन्हे ॥ वारवार शिरनाय
 पूरण राजनैनन लाई ॥ पाय अशीश महीश मुदित मन सुखिन
 समाई ॥ तब दशरथ मन्नमाहि सुमिरि सादर गणराजै । कीन्हे
 अवध पयान सहित तिज सकल समाजै ॥ मंगलमूल अपार स-
 पुन सुंदर मगपाये ॥ बरपहिं विपुल प्रसून देव नभ संकुली छाये ॥
 पुनि याचकजन बोलि अवधपति सादर लीन्हे । धनमणि भूषण
 प्रसन्न वाजि गजरथ बहुदीन्हे ॥ भेपरिपूरण काम सकल विरदी-
 वलि भाखी ही चले मुदित फिरिभौन हृदय निज रासहिं राखी ॥
 पुनि पुनि कहत महीप्र पलटि मिथिलाधिप जाहू । तदपि प्रेमवश
 फिरव चहत नार्हिनै ररनाहू ॥ तब ठाढे भय उत्तरि भूपलोचन
 जल छाये ॥ कहत जाहु फिरि जनक दूरि वडिखौ चलि आये ॥
 तब सादर शिरनाय जोरि युग पंकजपानी । कहत जनक मृदुवा-
 ने मनहु स अमृतसानी ॥ महाराज क्यहिं भाति कहौ भेधि-

नय सुनाई जानि नाथ निजदास दीन अहि विपुल बड़ाई ।
 सुनते सरल मृदुवैन अवधपति अति सुखमाने । बहु त्रिधि सहि
 सनेह जनक समधिहि सनमाने ॥ तव नृपते है विदा जनक
 निगन शिरनाथे । आशिर्वाद सुपाय हरम नहि हृदयसमाये
 पुति सादर जामात सकल भेटे नृपजाई । छविसागर चहुँ बंधु नि
 रखिमन सुख जन समाई ॥ गौरय्याम अभिराम कोटि मनसिज म
 मोर्जना । अनिन चन्द्र प्रकाश अमल एकज नव लोचन ॥ सहि
 प्रीति करजोरि कहत मजुल मृदुवानी । समकरो क्यहि भांति विन
 त्रिभुवन सुखदानी ॥ छंद तोटक ॥ क्यहि भांति अशस करौ म
 में ॥ तवा व्यापक रूप चरोचर में ॥ सुखसिंधु गुणालय धामपरे
 ज्यहि ध्यावत शंकर ध्यानधरे ॥ परतत्र तही निज तंत्रसदा । ज्य
 हिनेति निरंतरा वेदवदा ॥ अस एक ज्वई तिहुँकाल रहे । क्यहिमा
 ज्यहि वेद न पार लहे ॥ जन योगि सदा ज्यहि लागिकरे । तपका
 नन आनन नाम रै ॥ गुणगोवत नारद व्यास सदा । नहि पावत
 पार अनंत जदा ॥ जनसंसृत मोचन दीनहित ॥ सतचेतन आ
 नंद रूपनित ॥ त्रयताप निवारण भौ शमन ॥ सुररजन दुष्ट दल
 दमन ॥ तैवरूप अनूपम वेदपरे । गुण शीलक्षमादि अनेक भरे ॥
 मुनि सिद्ध सदा यश गावतहे । चतुरानन ध्यानन यावतहे ॥ क
 णालय रामकृपाल स्वई । ज्यहि व्याह न पावत पार कई ॥ मम नै
 विषे स्वड आनिभयो । करि भूरि रूपो सुख पूरिदयो ॥ गुरुताति ह
 सब भांति दिये । जन जानि सदा अपनाय लिये ॥ मुख एककह
 यशभानि कहा । पुरयो अभिलाप यथाहि रहा ॥ शुक शारिदना
 शेपहु जो । शतकल्पकर मिलि लेखहु जो ॥ मम भागि गुणोत
 आपु जिते । न सिराहि कहे तिनसोपिते ॥ अवकै मुकृपा बाए

दियो ॥ भगवन्तं सुपायं प्रसन्नं हियो ॥ सवैया ॥ जे प्रदपंकज चारु
सदा मनमानस शंभुधरे अनुरागे ॥ जे पदसेवत देव सवै मुनि सिद्ध करै
लगि जा जपजागे ॥ जे पदपंकज सो प्रकटी सारि देव विलोकत ज्वै
अघभागे ॥ ते प्रदपंकज शोभमई भगवन्त केवौ मन मो नहि त्यागे ॥

दो० सुनत प्रेममे वचनवर रामरूप सुखरनि ॥
सन्मान बहुविधेश्वर करि विनती मृदुवेन ॥
पुनि नृप जाय भरत कहै भेटे ॥ लीन लगाय हरपि निज पेटे ॥
बहुप्रकार नृप आशिपदयुक्त भरत ग्राम करत तव भयुक्त ॥
पुनि नृप मुदित लपणरिपुहाई ॥ भेटे अधिक सनेह बढ़ाई ॥
दीन अशीश मुदित डहु भाइन ॥ समय सनेह वरणि मुख जाइन ॥
वारिहार नृपहि शिर नाई ॥ भाइन सहित चले रघुराई ॥
तव नृप कौशिक पदशिरजायो ॥ जोरि पाणि बहु विनय सुनायो ॥
नाथ रूपी तव हे मुनि राज ॥ भये सकल मम पूरण काज ॥
स कहि नृप जायो पद माथा ॥ दीन अशीश मुदित मुनिनाथा ॥
दो० पाय अशीश महीश तव हृदय राखि सिये रामो ॥
फिर सहित पुरजन सकल आये निज निज धाम ॥
कवित ॥ वाजत निशान भरि चली सुवरातपुरि अनिद अपारि
रिद्धायगे अकाशही ॥ गगन मगन देव सुमन करत वृष्टि गावत
मुयश चारु जैतिजे प्रकाशही ॥ देत नेनलाहु मग लोगन सकल
ज बीच बीच वासवर करत निवासही ॥ पौषशुक्ल पूनव पुनीत
इतवारको सु पहुची वरात आनि दिव्य अधपासही ॥
दो० जहैतह लोगन मुदित मन गहगह हने निशान ॥

सुरप्रसूनवरपहिं हरपि शोभित विपुल विमान ॥
 इति श्रीसुन्दर्यो गीतिकाव्यमालामजभगवत्सहस्रिचरितभक्तिशिरोमणिप्रथ
 मोऽध्यायः ॥ १४ ॥
 कवित्त ॥ पालन निगमरीति घालन सुजनभीति दालन
 कुरीति रीति वेदगानकी । आकर सुबुद्धिके प्रभाकर सुनुकृ म
 हाकर अदेव हार भीति देवतानकी ॥ पावन त्रिलोककार
 महीकभार जावन उदारकीर्ति हार पीरप्रानकी । भाग्यवन्त
 कृपालपाल भक्तवानि जानि दास दीनपै द्वौसु राम जानकी
 छप्ये ॥ आवत अकनि बरात सकलपुर नर अरु नारी ॥ पुलकग
 सरसात प्रेम उर आनंदभारी ॥ निजनिज सुन्दर सदन सबन विहु
 भाति सवारे । हाटवाट सरिघाट सुभग चौहट पुरदारे ॥ विहुभाँ
 सुमंगल साजसजि कलश द्वारथापे मुदित । जंगमगत ज्योति मा
 नहु नगर द्वारद्वारप्रति शविउदित ॥ भूपधाम अभिराम समै त्यहि
 वरणिन जाई । रचना अमित अनूप देखि मन मदनलुभाई ॥ मंगल
 मोद उछाह अधिक सुखसम्पति छायो ॥ जनु कोशलपति सदन
 सकल धरि धरि तनु आयो ॥ सिय रामरूप शोभा अवधि वरणिसेकै
 नहिं शेषज्यहि । भगवन्त सुछवि देखन हृदय कहहु लालसाहोन
 क्यहि ॥ कवित्त ॥ कौशिलादि मातु सब शिथिल सनेहगात परम
 प्रमोद प्रेम देहना सभारती । पछेनार्थ राम सिय सकल मुदित रानि
 मंगल अनेक भाति भातिने सवारती ॥ दूव दधि रोचना तंदुलदल
 फूल गन्ध कचन सुथारधारि वारि मजु आरती । चली गानकरत
 प्रमोद सालिवन्दरानि सुखमाअप्रार ज्यो सुवप भूरिभारती ॥ जा
 निकै समै सुदीन शासन मुनीश उत कान तो अवशपुर सानंद
 महीपमनि ॥ मागध सवन्दित सून गावते सुमरा त्रारु वर्षही प्रसून

इन्द्रभीमिव्योमहनि ॥ न्वाजत निशान जाल नात्रत अमर
 रि। पूरित प्रमोदि विप्रवृन्दरहे वेदमनि । भाग्यवन्त आनंद अपार
 वखान कौन मंगलकलाप ग्राम स्ते ठौर ठौर ठनि ॥ डगर डगर
 व नगरी जनन्द होत नृत्यगान वाद्यशब्द लोकत्रै मचैरहीं । दूलह
 पदेखि सुदित सकल मात पुलक प्रफुल्लगात आरती सुकैरहीं ॥
 खिन्द गाविहीं सुमंगल उमंगि मोद भूपण ध्वसनवारि श्रीचक्रनु
 ही ॥ बधुन समेत पछि पुत्रन खिवायसंग ब्रली देत पावड़े अरध
 खैरहीं ॥ मन्दिरत्यवाग्रीलाय चारिसू सिंहासनानिताप्र कुमा
 की किमरि ज्यो प्रधास्यऊ । सादरच्यवारि पाँय धूपदै सु हेमथार आ
 पोसवारि मार्य चाग्रसौ उतास्यऊ ॥ लाय नयवेद्य चारु विटिको
 पाय फेरि वस्तुलै अपार भोति भोतिनै सुवांखऊ । रूपशील सिधु
 धु चारिहू वैधून युक्त भेमसो निहारिमात्र मोद पुंज भास्यऊ ॥ स
 पा ॥ तिन लह्यो तर अन्धयथा अरु रक महाजिभि पारस पायो ।
 रलह्यो जयज्यो रणमे अरु मुकमुखे जनु शारद आयो ॥ पाय
 स्त्री रुजवन्त अमी जसु शीतल चोह नृआतेपतायो । प्रासुखते
 तिकोदि गुणै भगवन्ती हृदै सुदमातन छायो ॥ १५ ॥
 दोष प्रजि प्रितर सुर विविध विधि मांगहि वर शिरनाय । प्रा
 र्थि रहहि कुराल आनन्द नित सहित बधुन सवा भाय ॥ १६ ॥
 अन्तरहित सुरगण सकल अति हित आशिष देहि । प्रा
 सादरसो भिरि अन्नलन सुदित मातु सवा लेहि ॥ १७ ॥
 तव नृपासादर सुदित मन वोलि धरातिन गलीन । प्रा
 वाभट भूपणी स्थि वाजिगज तिनहि विविधविधि दीन । प्रा
 पाय रजाय सुचनाय शिर रीखि हृदय श्रीराम । प्रा
 षडुविधि नृपहिं प्रशाम करि चले सकल निजधाम ॥ १८ ॥

हरिपद छन्दः ॥ तव सादर सानन्दः अवधपतिं वोर्लि नगर न
 नारी । पंठ भूषण पहिराय भौति बहु कीन्हे तिनहिं सुखारी ॥
 चक्र जन्त यान्च्यो ज्यई जोई मुदित भूप स्वइ दीन्हे । परमानन्द पा
 मन भावत गवन्न भवन सब कीन्हे ॥ तव गुरु विप्रन सहित अव
 पतिं भीतर भवन सिधाये । मुनि वशिष्ठ अक्षुशासन सादर ज
 श्रुतिरीति कराये ॥ पुनि प्रक्षालि पाये नृप विप्रनु शुचिजल आ
 न्हाये । पौडश भौति पूजि आति आदरु परस अशन ज्यवाये
 दान मान बहु भौति विनये करि पुनि पुनि शीश नवाये ॥ देत उ
 शीश मुदित सुव भुसुर निज निज भवन सिधाये ॥ पुनि कौशि
 कहि पूजि बहु भौति त्वरण धरि शिरलाई ॥ दीन्हे वास भव
 भीतर लै करि बहु विनै बुडाई ॥ पुनि पूजे गुरु पाँय प्रेमसो भूप
 युत सब राती । सुत सम्पदा शिखि बहु अगि विनै कीन्हे सनसा
 नी ॥ जेग मांगि लीन्हो मुनिनायक सुखदायक मिन भायो ॥ दे
 अशीश धरि उर सियरामै हरपित भवन सिधायो ॥ पुनि महिपा
 मुदित प्रिय प्राहुन विदा किये सनमाने । सुरन हरपि यशगाय सु
 मन भरि चले सकल निजधाने ॥ श्रीरघुवीर विवाह मोद मै ख
 सकल जग धाई । शेषागणेश शशिभु शुक नारद शीरदी वरणि
 पाई ॥ तव भूपाल सहित उर आनंद गये जहां रतिवासै सहि
 वधुन सुत निरखि चारिहु भयमन परमाहुलासु ॥ ज्यहि विधि म
 व्याह चहुं मोइन भूपति सकल सुताई । मुनि रनिवास लहो सु
 संकुला उर आनंद न समाई ॥ जनकराजी गुण शील सम्पदा प्री
 सुरीति वडाई । भाद सरिस उपमा मित दै दै बहु विधि भूपति गाई
 सवैया ॥ भूमि क्षमाधि गंभीर प्रभिकर तेज निशाकरा सो य
 धायो । धर्म धुरीण धराधर सो सनकादिक के सम शुद्ध सुहायो

राज सुरेश सो मेरुगह्वे जिमि भक्त ध्रुवाचल ज्यो जगज्यायी । भापेत
रानिन सो अवधेश विदेह गुणामित जाहिन गायो ॥

दो० सुनि प्रमुदित रानी सकल जनकराज गुण जाल ।

। तव सादर सब सुतने युत मज्जन कीन सुवाला ॥

कवित्त ॥ बालि विप्र ज्ञाति गुरु भाइन समेत भूप भोजन सुकीन
भोति पटरसा चायकै ॥ अचै पान प्राय सब सादर विलोकि राम प्राय
कै रजाय राउ ज्वले सोद चायकै ॥ समय प्रसोद प्रेम वरुणि सिरात
सो नि अग्रम लेखात शेष शम्भु राणनायकै । भाग्यवन्त गमि न
विरञ्चि वेद शारदाहु कौन भोति अल्प बुद्धि कहौ मै सुगायकै ॥
सवैया ॥ तव रानिन बोलि महीप कछो लरिका श्रम सो वंश नीदि
भये । अब शौन करावहु जाय इन्है कहिकै नृप यों गृह शौन जाये ॥
नृप आय सुलै स्मणि हेमई प्रलंगा केल सेज इसाय दये । अगवन्त
कहौ किमिसो सुखमा लखि मैनहु मान ह्रदै रितये ॥

दो० तव सादर सब सुवन ले दीन सेज पौढाय ।

प्रेम विवश पुनि मातुसव वैठी प्रमु दिग आय ॥

लोमर छन्द ॥ लखि राम श्यामल गात । वश प्रेम है सब मात ॥
सुवमंजु पृच्छहि बैत । कहिये कृपा सुख देन ॥ मगजात पातक पीन ।
किमि ताडका वेध कीन ॥ खल चन्द्र क्यो युत सैन । वध कीन रा-
जिव नैन ॥ क्यहि भोति गौतम नारि । पद द्वाय दीन्ह्यउ तारि ॥
किमि घोर शकर दरिद । करकज कीन्ह्यउ खरिद ॥ भृगुनन्द गर्व
नवाय । जगजैति जनाके पाय ॥ भयसिद्ध जो सब काज । अति
शय कृपा मुनिराज ॥ गीतिका छन्द ॥ बलिजाय जननी सुजन पर

भक्तिशिरोमणि त्रयोध्याकारण

॥ सिद्धिसदन शोभाद्वय कदन दुखिदोष अपारं ।
॥ जाल्पजवेशिर्म सुगुणे विघ्नौघ निवारं ॥ शुद्ध सुधी
नागास्य विशालं ॥ नित्यानंद गणोधिप भजतारति जिनदालं
कृत सुमनसं नरनगादिसव शारंगांघ्रि वंदनसततं ।
कर नाथे शिर मनर्वचं कर्म गणपति नमृत
मल अम्बु धराभतनुं प्रपृपीत धृतामल जालद्युतौ ।
तमीश सुखं दृष्टपाणि शिर्लीमुख चापयुतौ ॥ जनककामजसा क
रुणाम्युनिधे मरुक्षनितावध नाथसुतौ । मममातसं मासु निवा
करौ भगवंतं सदा जलजांघ्रिनुतौ ॥

दो० श्री गुरु पद पाथोज रज शिर धरे नयन लगाय ।

सीयराम पावन सुयश कहीं सो मतिसम गाय ॥

जवते राम विवाहि घर आये कोशलराय ।

तव ते मुदमंगल अवध नितनूतन सरसाय ॥

कोशलपाल कृपाल को भाग वखानै कौन ।

वेद तत्त्व पुरुपोत्तमहि करि पाये सुत जौन ॥

कोशलपुर नर नारि सब निरखि राममुख चंद ।

सुकृत सुभाग सराहि निज लहहिं परम आनंद ॥

केकै नृप सुत वारयक नाम युधाजित जासु ।

अवध आय नृपसन विनय कीन्हे सहितहुलासु ॥

करि बहु विनय जोरि युगपानी । सहित प्रीति पुनि कहमृदुवानी ॥

नाथ हमारे पुर चहुं पासा । करत अहैं बहु दुष्ट निवासा ॥

मः सबल तै जीर्ति न जावै । तिन ते हमसब अति दुखपविं ॥
 हि हित आयन याचन तुमहीं । देहु भरत रिपुसूदन हमहीं ॥
 चलि सकल दुष्टसंहारै । हम सबकरे दुखदुसह निवारै ॥
 म नृप सकल लोकहितकोरी । धर्मधुरीण दीनदुखीहारी ॥
 निःसंभीत कृपा अब कीजै । दीजे सुवन सुयश जगलीजे ॥
 निहुबहुत विधि नृपहिबुझाये ॥ तिवनृप सादर सुवन बुलाये ॥
 दोषसादर सुवन बुलाय तव दीन्ह्यो भूपरजाय ॥ ५ ॥
 सुनत भरत रिपुहनु मुदितचले नृपहिशिरनाय ॥ ५ ॥
 पदवंदि बहुरिन्दोउ भाई । रामचरण प्रियंकज शिरनाई ॥
 भुमना त्रिदा पायै दोउभ्राता । वंदि मालु गुरुपदजलजाता ॥
 लै सुभटसेनासंग लीन्हे । प्रभुपदकमल मधुपमनकीन्हे ॥
 हि विधि भरत समेत सहार्ई । कैंकै नृपपुर प्रहुंचे जाई ॥
 ए आय आगे लै लीन्हा । भवनआनि अतिआदरकीन्हा ॥
 नि नृप द्विजनबोलिअचुरोगे । सादर यज्ञकरन तहें लागे ॥
 नि खरमुख लै सैनसमूहा । आयउ धाइ तेहां करि हूहा ॥
 रत समर सब असुर संहारै । विगत त्रास सब भये सुखारै ॥
 दो० तवतहें पुनि सानुज भरत लखि सनेह अधिकारव
 लगे रहना सातलै भवनवाढी प्रीतिअपर ॥
 ह कछु चरित कहा भै गाई । अपर कथा अब सुनहु सुहाई ॥
 गेशलपुर त्रयकवार भुझाये । विधि सदेश लै जनारद आये ॥
 तितहित रामचरित जिनकेरे । राम प्रेम भाजना सुनि हेरे ॥
 निहि विलोकि मुदित रघुनाथा उठि करजोरि चरण धरिमाथा ॥
 नि अशीश हरपि सुनि राई । प्रभुओसन वैठारिन्हिलीलाई ॥
 विधिभाति पुनि पूजन करिकै । बोले रामचरण शिर धरिकै ॥

क्यहि कारण आगमन कृपालो । कहहु मुनीशेवरणि सो हाल
सुनि प्रभुवचन सुदित । मुनिराई । विधिसदेश कहि सकल मुनि

दो० दशकन्धर अतिकृत अचृत त्यहि भय डुखित त्रिलोकी

॥ श्रीप्रसदल खलमारी प्रभु करिये सवहि विशोक ॥

सुनत वचन बोले रघुवीरो ॥ ऐसै करव कृत सुनिपीरो
सत्यसन्ध सुनि रामहि जानी ॥ दृढ़ विश्वास हृदै निजानी
पुनि नारद विधिलोक सिंधाये ॥ रामस्वमाया प्रकटि जानाये

अस अभिलाषा भयउ सवकाहू ॥ आपु अछत सानंद नरनाहू

देहि नरमकह करि युवराजू ॥ होहि सफल सवकर सुखसाजू

यहि विधि सकल अवध नर नारी ॥ सादर कहहि मनाये पुरारी

कृपासिन्धु शिव अवतर दानी ॥ पुखहु आस दास निजजानी

भूप हृदय मति प्रेरहु तैसी ॥ हम सवहि नर निवसी जैसी

दो० रामराजसम स्वातिजल ॥ चार्तक पुर नर नारी

॥ तृपित सपदि पावन चहत त्यहिविनु निपट दुवारि ॥

॥ इति श्रीमद् योग्यासिहवर्मात्मज भगवन्तसिंहधिरचित्तायाम् भक्तिशिरोमणिप्र
भरतशुद्धनन्योरोगमननारद आगमन विधिसदेश श्रीरामप्रतिकथन
॥ जगन्नाथ चिखेनो नाम प्रथमोऽध्याय ॥ १ ॥

दो० वन्दन करि सिय रामपद ॥ वारवार शिरंजाय ।

कहौ कथा पीवन करणि जो सुनि कल्प नशाय ॥

वकोरछन्द ॥ एकसमै रसमाज सवै सुखराजत राजसभा
वधेश । आरसिराय सुभाय लिये कर कानसमीप लख्यो सितकेर
मानहु सो पुन चौथअहै लागि कानरख्यो करियो उपदेश । जी

को फल लेहुन क्यो रघुनाथहि दै युवराज नरेश ॥ केवित्त ॥
मनआनि भूपही करि विचार चारु चैत्रकृष्ण वार गुरु तृतीय
पायके ॥ परम प्रमोद प्रेम पुलक प्रफुल्लगात सानंद महीप

नं गुरुजायकै ॥ जोरि पाणि सादर नवायः पदपद्ममाथ वारवार
 गोहि मुख ज्वन्द्वन्द्व जायकै । भाग्यवन्त भूप आपु अन्तर विचार
 गोपि भाखत वशिष्ठ सो वज्रन मनकायकै ॥ न्नाथ रामचन्द्र भये
 गायक सकल काज नीतिधर्म वीरतादि पूरण उदारहै न आपुसम
 गोह सर्व राखत संततनाथ रामपै सुविप्रवृन्द सांस्वपरिवारहैं ॥ से-
 क समाज सत्र सखिवा नगरलोग शत्रु मित्रा वर्गयत्र आवताह-
 रहैं ॥ मोहिंसमारसिसव काहुको लगत प्रीवो रावरे अशीश जनु
 ही तनुधारहैं ॥

॥ राजाज्जर्क जो पाठ पाठि

दो० नाथकृपाव्रतव दासके भुभये सिद्धा संवकाज ॥
 अवा अभिलाषा न एका उर है मेरे मुनिराज ॥

राजराजतिलक रघुनाथ कहै करिय जु आयसु होय ॥ तजिहु
 उरि हमहि अछत आनन्द यह ज्यहि देखै सर्वकोय ॥
 जियन भरणकर शोच पुनि रहै न भोगन भाहि ॥
 प्रभुप्रसाद अभिलाष सह जो पूरण द्वै जाहि ॥
 मुनि नृपवचन कह्यउ मुनिराजू ॥ करियन विलेव सजियसवसज्जि ॥
 गलमोद सुदिन सव तवही ॥ रामराज वैठहि नृप जबही ॥
 तानि न जाय ईशगति राई ॥ त्यहिहितकरि निश्चयनहिगाई ॥
 व महिपाल भवनी निजआये ॥ बोली सुमन्त सुवचन सुनाये ॥
 गिसजहु अभिषेक समाजु रामहि ॥ करनचहौ युवराजु ॥
 उपवचन सवके मनभाये ॥ मनहु रिक मणि पारस पाये ॥
 नयजय करि मुनि आयसुपाई ॥ सेवक सचिव चले सबधाई ॥
 मल दल चंद्रन अक्षत फूला पान पुंगफल औषधि मूला ॥
 औरहु जो मुनि नामा गताये ॥ खोजि सुवस्तु सचिवसबलाये ॥
 गल मे सब नगर सजाये ॥ विपुलवितान विविधेविधिद्वारे ॥

ध्वज पताक तोरण बहु सोहैं । गज भाणि चौकें मन मोहैं ।
 बाजहिं अमित सुमंगल राजा । वरणिं न जाइ नगरकर साजा ।
 रोला छंद ॥ कन्या तोरण चौक कलशं वर विप्र समाजै । बंद
 वार पताक केंतु ध्वज चमर विराजै ॥ नृत्यगीत न्रवाद्य दूव दक्ष
 क्षत हरदी । धूप दीप फल फूल सूत मागध अरु वंदी ॥ वेद ना
 ससान सुरभि रम्भारसि चित्रमा । अंकुर रोपण प्राजा व्यजन पर
 घृत छत्रम ॥ चतुरंगिणी सुसेन चार मुख्या रुविताना । भंगला
 चालीस नाम इति वेद बखाना ॥

दो० ये सब मंगल अवधं पुर साजे सवहि वजाय ।
 शोभा अमित त्रिलोकियहि अमरावती लजाय ॥

मुदित सकल पुर लोग लुगीई । जहं तहं नृपकै करहि बड़ाई ।
 धन्य भूप सुकृती जग चीन्हा । लोचन लाभ सवहि जिन दीन्हा ।
 यहि विधि अवध महां नंद होई ॥ वरणिं न जाइ एक मुख सोई
 होहिं सगुण शुभ सिंग रघुवीरै । कहहिं सप्रेम बचन धरिधीरै ।
 भरत सबन्धु अंनहुं पुर आवत । असम्बहिं शकुन भभावजनावत
 मोहिं भरत प्रिय प्राण समाना । मिलन बहत अस शकुन बखाना

दो० इहां मुनिहि नृप त्रोलिकै पठये रघुप्रतिप्रेन ।
 जेम क्रिया व्रत धर्म सब सादर प्रभु शिख दैन ॥

॥ सवैया ॥ मुनि राजहि आवत राम सुने उठिं द्वारहि आनि
 णाम किये न दय अर्घ सआदर आनि निलै करि पूजन आसन
 दिव्य दिये ॥ कर जोरि चहोरि ससीय तिनै करि पूछत पूरण प्रे
 हिये । क्यहि कारण स्वामि प्रयान किये गृह सेवक भूरि कृपा
 लिये ॥ मंदिर सेवक आगम स्वामि सुमंगल मूल अमंगल हारी
 सद्यपि नाथ उचितरहै अस प्रीति समेत स्वदास हंकारी ॥ सोधि

राज प्रीति कही प्रभुता तजि पै प्रभुनेह सँभारी । सो भगवन्त
 नीत भयो शृह सेवक आजु सुभाग्य हमारी ॥ १ ॥
 दो० ॥ होय जु आयसु नार्थ तव वेगि करौ स्वइ काज ।
 ॥ १ ॥ सुवि सनेहे साने बचन सुनि बोले सुनिराज ॥
 ॥ १ ॥ सवैया ॥ रोज सज्यो अभिपेक समाज सु चाहत देन तुम्है युव
 जू ताहित मोहि इतै पठये रघुनायक देन तुम्है शिखराजू ॥ सो
 रय संयुत धाम करौ व्रतनेम क्रियादिक संयम आजू ॥ जो भगवन्त
 भात करै कुशलात विरधि निवाहन काजू ॥
 ॥ १ ॥ दो० ॥ यहि प्रकार गुरु शीखदै गये राजके मोह ।
 ॥ १ ॥ ॥ शीलिसिंधु रघुवरहदै भयो अधिक संदेह ॥
 ॥ १ ॥ सवैया ॥ जन्मे लिये सब बंधु यकैसंग भोजन केलि सुवाल
 निकै कर्ण सुवेधाभयो उपवीत विवाहन संग उमंग अनेकू ॥ प्रा
 नि हंसय बंश विपे अनुचित सु होत अहै यह प्रेकू ॥ ते प्रिय कंधु
 राय कियो अव चाहत भूषा बडे अभिपेकू ॥
 दो० इति सप्रेम प्रकृतानि प्रभु हरणि भक्त मन वंक ॥
 लपणलाल आये तवहि सानंद सहज अंशंक ॥
 प्रेम संपुट करि पानि युग नाये पद रज भाल ॥
 अति आदर राखे निकट रघुपति राम कृपाल ॥

तोटकबंद ॥ १ ॥ पुरवाजि निशान रहे बहुते । अति आनंद जात
 मो कहते ॥ घर वाट सहाट अथाइनमें । नरचा इमिलोग लुगाइन
 ॥ १ ॥ यह लग्न सुमंगल मूलकबै । पुजिहै विधि मो अभिलाप जबै ॥
 ॥ १ ॥ सिद्धत मंजु सिंहासनपै । करुणाकरि भूरि स्वदासनपै ॥
 ॥ १ ॥ वेदे सेय संयुतराम जबै । सब प्रमनोरथ होइ तबै ॥
 ॥ १ ॥ भस्तांगम सर्वम
 नाय कहै । फल लोचनते इत आयलहै ॥ यहि भोति प्रमोद सुखायर-

ह्यो । भगवन्त मुखेक न जायकह्यो ॥ छिप्यौ ॥ रामराजि पुरसाज निरति
 देवन मनशोचे । को हरि है दुखजाल शमनकरि है खलप्रोचे ॥ ज्ञा
 हतहोन अकाज अवशि मनमंत्र दृढ़ाई । शारद सुभिरि सप्रेम बोलि
 बहु विनय सुनाई ॥ करि विनय कहत पुनि पुनि अमर मातु कह
 स्वइजतन अर्वा । वनजाहिराय तजिराजि ज्यहि होइ सिद्धि सुरकाज
 सर्व ॥ देव विनय सुनि देवि शोचमन कृत अधिकारी । कोशिलपुर स
 रपद्रविपिन मोदित नरनारी ॥ तिनहि देन दुख हेतु भइउं मेहि मी
 राती । इति अपराध विचारि देवि मनमो पछिताती ॥ लखि कह
 देव करजोरि पुनि मातु तुमहि कहु खोरि नहि । प्रभु रहित हर
 विसमै स्ववश जानहु तुमै सर्व विधि उरहि ॥ कविता ॥ धृग धृग
 देवन वखानि देविचली । आपु आंगिल विचारि काज मोद मन
 धारिकै । आई औध मध्य जहाँ रानिन निवास चारु दीख सब भाति
 बुद्धि पौरुष सभारिकै ॥ प्रायो न प्रवेशत तत्र वैठि फेरि कंठ आति
 मंथरा कि चेरि पीव के कई विचारिकै ॥ दीन फेरि तासुमनि शारदा
 प्रवीन बुद्धि दानि दुख पुंज ताहि अयश प्यटारिकै ॥ ॥ ॥

दो० यह वैरोचन कन्यका इरेही परम बलवान्त ।
 मारे त्यहि सुरपति स्वकर लहि आय सु भगवान् ॥
 इति विरोध राखे हृदय चाहित प्रगटन सोय ।

॥ यह सत्योपाख्यानमे विदित कथी नहि गुण्य ॥ ॥ ॥
 सवैया ॥ चेरिलख्यो पुरं मङ्गलसाज सुवाज । वधाव अनन
 उरुहै । पूछिसि लोगनि मोद कहा सुनिराम सुराज । भयो उरदाहै ॥
 नीच कुबुद्धि विचारकरे किमिरातिहि होइ अकाज महं है । ज्यो
 मंधुलागि विलोकत भिखनि ताकति गो त्यहि लेन सुचाहै ॥
 दो० यह विधि करत विचार । रतम पहं जाय ॥

॥ नैनसजलव्याकुलत्रिलखित्रीली व्रजतन्वनाय ॥
 ॥ स्वामिनिमानहु सुखानी ॥ तौ क्लृष्टकहौ तुमहि हितजानी ॥
 ॥ सोहि शोचतीउरभयो अपारो निरखि न अनभलजायतुम्हारे ॥
 ॥ यहितो विनुपूछे कहुंताता ॥ कहौ निरखि तवकाज नशाता ॥
 ॥ सो जिनिरहितहोयनिविशेखी ॥ सो तांकरु दुख सकत न देखी ॥
 ॥ मनहित तासु होत जो जीने ॥ पूछेहु विनु खैनिडरु सुखानै ॥
 ॥ ते ठौर ॥ स्वामि सो मीदासा ॥ विनु पूछे ॥ वेच करै प्रकासा ॥
 ॥ छपे ॥ सर्पत्राशा जित होय शत्रु शिरपर चढि आवै ॥ अस्त्रा-
 ॥ केलेखिनिकट देत विष प्रभुहि जनावै ॥ मारुतीग्नि अय होय
 ॥ सुखद मग कंठक जानी ॥ पथ्यापथ्य अहार दानि दुख लाभरुहानी ॥
 ॥ इति ठवर दोस पूछेहु विना कहै स्वामि सुखपायके ॥ नहि लगत
 ॥ ताहि पातक कर्तनक कहत इमपि श्रुति गायके ॥ गीतिकछिंदै ॥
 ॥ उत्तपात एक सुनि समुक्ति ॥ स्वामिनि सोहि मन अति दुखभयो ॥ अ-
 ॥ भिषक होइहि कालिह रामहि रानि नृप असमत ठयो ॥ परदेश प-
 ॥ ठये सुवन तुम्हरे सुन लखि इत यहकियो ॥ सो सुखद सब कहै तुमहि
 ॥ भरतहि शोकसुठि चाहतदियो ॥
 ॥ दोस ताते मी पूछे विना कहै ॥ तुमहि जनाव ॥
 ॥ कौशल्याहित रोवरे कनि सुकठिन उपाव ॥
 ॥ कौशल्याहित रोवरेहि आलिंगि ॥ विपति बीज बोयो अनुरागी ॥
 ॥ भूप हृदय अतुपावस पाई ॥ राजमनोर्थ सघन जलदाई ॥
 ॥ आयसुवारि अत्रध धल चारु ॥ पुत्रराज्य बलपाय अपारु ॥
 ॥ विपतिबीज तुम लगि उन वयक ॥ पायसहाय सुजामत भयऊ ॥
 ॥ चारिदिवस बिते सुनु रानी ॥ विपति हाल परिहै तुव जानी ॥
 ॥ सुनत चरि रानी ॥ कैकेई जानि मलिन मन उत्तर देई ॥

कहसिकहा धर फोरनि वानी । रामराज । ममहोइ न हानी ॥
 रामभरत म्वहिं प्रिय संस दोऊ । भलम्वहिं रामराज निजोहोऊ ॥
 रामहिं राज काल्हि जो होई । देहों त्वहिं मनभाइहि जोई ॥
 कौशल्यासम रघुपति मोहीं । जानत चेरि कहौ ध्रुव तोहीं ॥
 तदपि प्रीति राखत बहु मोते । तन ॥ १५ ॥
 ऐसे सुतहि तिलकतें होते । कुमति कुंजालि उपद्रव जोते ॥
 दो० जो दिवै विधिजक्रमें जन्मभूरि करिछोह । ॥ १६ ॥
 तौ देवै सियरामसिमु सुन्दरक पूता पतोहै ॥ ॥ १७ ॥
 ताते सत्यकहसि किन मोहीं । कवनहेतु उपजा दुख तोहीं ॥
 बोली चेरि वचन मनमारी । तुमहिं नहीं परतीत हमारी ॥
 निरखि तुम्हार अहित मै माई । सोचिवात कहि तुमहिं जनाई ॥
 सोरौरैहि नहिं तनक सुहान्यो । धर फोरनिकहि मोहिं ब्रह्मान्यो ॥
 त्यहिते बहुरि कही अवकहा । पापनफल कहिजसकहुचाहा ॥
 हमहिं नही कछु लाभ न हानी । तेव दुख निरखि कहां मै रानी ॥
 तुम जो कहहु राम प्रिय मोही । सो सब सत्यभूठ नहि ओही ॥
 पर यह बात जान सबकोई । असंभय परे सुहद रिपुहोई ॥
 सवैया ॥ पङ्कजको पितु वारिधै विप चन्द्रसुधा ज्यहि बन्धुसगोई ॥
 मित्रप्रियारविलज्जनु जासु विराधि तनै हरि है बह नोई ॥ १८ ॥ यों परि-
 वार भरो ज्यहिको न सहायक कै हिमिजारत सोई । त्यों भगवन्त
 विचारि कहै सुविपत्ति परे नहिं काहुक कोई ॥ १९ ॥ हैं जत्रलौ दित
 आपभले तबलौ हित है सकलौ अपनोई । देव अदेव प्रसन्नसवै नहि
 तौसन आपन तौ हितहोई ॥ २० ॥ ते दिन ज्यो विपरीत भये विपरीत
 भये तुरतै हितसोई । त्यों भगवन्त विचारि कहै सुविपत्ति परे नहिं
 काहुक कोई ॥ वास अकाश प्रकाश महा निशि नायक दायक

तिल जोई ॥ कल्पहुं मानुज काम दुहा भगनी भिय आपु सुधा-
 धर सोई ॥ त्यों विपु राहु प्रसे जव आनि सहायक तासु न के तव
 सोई ॥ त्यों भगवन्त विचारि कहै सु विपत्ति परे नहिं काहुक कोई ॥
 जानन अग्नि प्रचंड दहै तव मारुत त्रासु सहायक होई । दीप शिखै
 शोषेखि महालघु जाति बुझोवत है । त्यहि सोई ॥ है यह संतत
 तिहुवै रिपु निर्वल सें निज मित्रहु जोई । त्यों भगवन्त विचारि
 कहै सु विपत्ति परे नहिं काहुक कोई ॥ श्री मणि रम्भ हलाहल
 अमी गजेराज सुधाधर जोई । आप धन्तर काम दुहा कल-
 म नाजि सुराष्ट्र पटोई ॥ रत्न दिये सरिनायक जो । त्यहि गाढ़
 महास भयो नहिं कोई ॥ त्यों भगवन्त विचारि कहै सु विपत्ति
 काहुक कोउ न होई ॥
 दो० विपत्ति परे काहुक कऊ होत नही संसार ।
 सुदिन जानि ताते अत्रहिं कीजे काज सभार ॥
 सयैया ॥ नाह सनेह त्वयाजर चाहत पुत्रहिकै नृप सौति उखा-
 न । रूधहु वीरि वनाय घनी । त्यहि राजसुतै करि लावहु वारन ॥
 गोच सुहाग वलै न तुम्हें करती कलुहो निज काज सभारन । शुद्ध
 भाव लखौ तुम क्यो मुख मीठ हिये हित तौ भरतारन ॥ राम कि
 । तु प्रवीण चड़ी लहि वीचलिये निज काज बनाई । रामहिं मातुम-
 गो इति जानव जो भरतै उत भूप पठाई ॥ भूपहिं प्रीति विशेषितुम्है
 र सौति सुभाव सकै न लखाई ॥ साजि प्रपंच नृपै चशकै सुतराज
 हेतै उन लग्न धराई ॥ सेवहिं सौति भले सब मोकहै राखत कोउ
 अभावनजीके । गर्व लिये निज हीयरहै एक भर्त्त कि मातु सदै
 प्रलपीके ॥ है कौशल्यहि शाल तुम्हार कपट्ट प्रवीण सुलै नहिं नीके ।
 सोइ उपाय कियो हितराउर डारहि सो विधि शोश वहीके ॥

राज उचित्त अहै यहि वंश विपेर धुनं दन हीको । भावत है सबको
 मंतो अरु लागत मोहि रहै सुठि नीको ॥ ५ ॥ यहि आगिल व्रात नि
 चारि भयो दुखदाह महा ममहीको । सो दुख दिउ विरधि उहै अ
 नहित्त तँकयो जिना राउरजीको ॥ ६ ॥ यहि वंश नि
 यहि विधि कहि कहि वचन वनई । दिहि सि कुटिल पन हृदय दृढ़दई
 बहूँ सवतिनकी कथा । बखानी । ज्येहि सुनि वैं बहै उर रानी ।
 चित्रकेतु नृप ज्येहि जग जानी । मोडश संहस रही तियहि रानी ।
 मुनि अझिरा नृपहि एक वारा । मुक्ति हेतु शिख दीन्है अपारा ।
 पुत्रहीन नृप कीन न कान । तत्र मुनि हृदय अधिक दुख मान ।
 नारद मुनि सन जिय सुनाये । बहुरि देन बर द्रुव जन आये ॥
 भूपहि बर दीन्हे हरपाई । होइहि पुत्र तुम्हारे भाई ।
 दयवर द्रुव मुनि आश्रम गध्र ऊ । लघुरानी मुत जन्मत भयऊ ।
 पुनि नारद तहै जाय सुभाये । रानिन अपर बहुत समभाये ।
 तुमहि न दीन पुत्र करतारा । लघुरानिहि होइहि सुखसारा ।
 सुनि तिन घात पाइ इक वारा । विपदे डारनि मारि कुमारा ।
 नृप रानिहि दुख भयो कलापा । पुनि नारद आये तहै आपा ।
 पुत्रहि जाय दीन बोल करी । हरपे निरखि पिता महतारी ।
 कहेउ सुवन स्वई वचन अनूपा । हमी पंचाल देशके भूपा ।
 राज छोडि कानन तप्रकाजा । गयन रही तहै तापस साजा ।
 भिक्षा करि एक वार सुभाये । एक स्त्रीके द्वारे आये ।
 त्यहिसन कंडा मंगि वनावी । भोजन हीरहि अर्पि मै पावा ।
 उन कंडनमें चीटी रहेऊ । सोरह सहस सकलते दहेऊ ।
 भई ओइ ते सब नृपरानी । कडा दीन हमहि जो आनी ।
 सो भई अइ हमारी माता । पायन अशन अर्पि जगत्राता ।

स्यहिते ॥ एकहि ॥ जन्ममभार ॥ गयउ ॥ हमरि होइ ॥ उद्धारा ॥
 सोरहसहस्र ॥ जन्म ॥ नतु मोहीं ॥ धरनुपरत ॥ धरणी ॥ अघवोही ॥
 ताते ॥ को ॥ काको ॥ सुत ॥ आहै ॥ सुनि ॥ इति ॥ भयो ॥ ज्ञान ॥ नरनाहै ॥
 तजि ॥ सवगयो ॥ विप्रिनहरिशरना ॥ चित्रकेतु ॥ इतिहासयनी ॥ वरना ॥
 वृष ॥ उत्तानपादा ॥ जगजानी ॥ सुरचि ॥ सुनीति ॥ रहीं ॥ द्वै ॥ रानी ॥
 जन्म ॥ नाम ॥ सुरचि ॥ सुत ॥ जाई ॥ ध्रुव ॥ सुनीति ॥ जन्मी ॥ सुखदाई ॥
 सुरचि ॥ नृपहि ॥ प्रिय रहै ॥ विशेषी ॥ सवति ॥ सुखहि ॥ सो ॥ सकै ॥ न ॥ देखी ॥
 एकवार ॥ ध्रुव ॥ गौद ॥ भंफारा ॥ लिये ॥ नृपति ॥ सो ॥ सुरचि ॥ निहारि ॥
 ध्रुवहि ॥ दिहिसि ॥ उत्तराई ॥ डराई ॥ कहि ॥ कटु ॥ बचन ॥ बहुत ॥ खिसुवाई ॥
 तेहि ॥ गलानि ॥ ध्रुव ॥ नहि ॥ सिंधाये ॥ इति ॥ सुनीति ॥ दुख ॥ दारुणपाये ॥
 कइ ॥ विनतहि ॥ दुख ॥ दिय ॥ भारी ॥ ये ॥ दोऊ ॥ कश्यपकी ॥ नारी ॥
 कइ ॥ अहै ॥ अहिन ॥ कै ॥ नमाता ॥ विनता ॥ सुवने ॥ गरुड़ ॥ विख्याता ॥
 प्रक ॥ दिन ॥ दोऊ ॥ वाद ॥ बढाई ॥ कवन ॥ वरण ॥ कहिये ॥ निशिराई ॥
 कइ ॥ कह्यो ॥ श्याम ॥ विधु ॥ होई ॥ विनता ॥ कह्यो ॥ श्वेत ॥ है ॥ सोई ॥
 तव ॥ हुनहुन ॥ मिलि ॥ वाजी ॥ लाई ॥ हारै ॥ जो ॥ सो ॥ करै ॥ सेवकाई ॥
 कइ ॥ तव ॥ निज ॥ सुतज ॥ पठाई ॥ ते ॥ सब ॥ लिहिनि ॥ घेरि ॥ शशिजाई ॥
 त्यहि ॥ ते ॥ श्याम ॥ परेउ ॥ सो ॥ देखी ॥ विनता ॥ गइ ॥ तव ॥ हारि ॥ विशेषी ॥
 आपु ॥ भई ॥ रानी ॥ सो ॥ दासी ॥ बहुतकाल ॥ लागि ॥ कीन ॥ खवासी ॥
 पुनि ॥ एकवार ॥ गरुड़ ॥ निजमाता ॥ निरखि ॥ दुखित ॥ अतिशै ॥ कृशागाता ॥
 पूछेउ ॥ मातु ॥ बुझित ॥ अति ॥ तोहीं ॥ देखत ॥ हो ॥ कहुकारण ॥ मोही ॥
 तव ॥ विनता ॥ कहि ॥ कथा ॥ सुनाई ॥ सुनत ॥ बचन ॥ बोले ॥ खगराई ॥
 अब ॥ ते ॥ वाद ॥ करहु ॥ फिरि ॥ माई ॥ श्वेतशशी ॥ हम ॥ देव ॥ दिखाई ॥
 सुनि ॥ विनता ॥ फिरि ॥ वादहि ॥ कीन्हा ॥ खगपति ॥ सकल ॥ भक्षि ॥ अहिल ॥ न्हा ॥
 श्वेत ॥ बिलोकि ॥ परेउ ॥ तव ॥ चंदा ॥ गयउ ॥ छटि ॥ विनतहि ॥ दुखफदा ॥

होत सवति ग्रहि विधि दुखदाई ॥ कहँल गि कहँ सवतिकुटिलाई
 शरमिषै ॥ दुख ॥ शुक्र ॥ कुमारी ॥ दीन आपु भई पतिहि पियारी ॥
 यहिविधि बहु सवतिन कै करणी ॥ वारहि वार कुमति सो वरणी ॥
 ज्यहि सुनि रानिहि भा दुखगाढा ॥ सवति स्वभाउ वैखर वाढा ॥
 ॥ शशीबंदे ॥ सुनी तामुवानी ॥ सुकैकैइरानी ॥ फिरी बुद्धितैसी
 रही होनि जैसी ॥ कहँ सौह राखी ॥ कहँ सत्य भाखी ॥ हुवै वा
 जैसी ॥ मुनावो मुतैसी ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ दो ॥ कहँ चेरि पुनि पुनि कहा पूछति हौ म्वहि सोय ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ आपु हिताहित जानई पशु पक्षिहु सब कोय ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ पाख दिवस वेति सजत रामतिलक को साजु ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ कहँ न तुमसन सो कोऊ जान्यो मोसन आजु ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ सवैया ॥ सत्यकही सुनु रानित्वया ॥ बलखांडि सवै करिकै विधि
 शाखी ॥ ॥ रामहि काल्हि जु होइहि राज परी दुखजाल तुम्है लखि
 आखी ॥ ॥ हैहहिन्यो भगवन्त यहै दृढ़ रेख खचाय कहँ वलभाखी ॥
 पुत्र समेत किं सेवकरो ननु हैहहु भामिनि दूध कि माखी ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ दो ॥ कपट ॥ प्रवीनी ॥ क्वरी ॥ हरि ॥ इच्छा ॥ बलपाय ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ विचन धतूरा प्याय करि दीन्हिसि तयहि वौराय ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ इति धामनि अथो ध्यायि सिंह चमोत्तम जगवन्त सिंह विरचितायां भक्तिशिरोमणि मय
 श्रीरामचन्द्र राजतिलक हेतु पुरमंगल सजन कै के प्रतिमुधरा बलक यन
 वर्षेनो नाम द्वितीयोऽध्याय ॥ ॥
 ॥
 ॥ सवैया ॥ शुभ अद्भुत जासु चरित्र सवै गुण गूढ महा श्रुति
 गान करौ ॥ गति जानन योग न योगिन ह कूल कीरतिजा बुस
 दोष हरौ ॥ भवफन्द निकन्दन आनद कन्द सदा सुख वन्द स्वबंद
 चरौ ॥ करुणाकर स्व सिय राघव के भगवन्त पदाब्ज न साधरौ ॥

कवित्त ॥ मानि सत्य वानि तासु केकई सु बुद्धिहीन पूछती सप्रेम
 ताहि भापुमो उपावरी ॥ दाहिनी सु आँखि मोरि फरकती सुभाय
 नित्य कीन ना जनाव तोहि याहि सो प्रभावरी ॥ मित्रही समान
 में सुजानती सबै नकीन ईरपाहि सौति काहि कीन सो कुदावरी ।
 कौन लाग एकवार देवदीन शोक जाल लोक में हितु हमारि वृ-
 हितौ लखावरी ॥ नैहरे भँभार जन्म काटवै बरूकजाय जीवतै न
 सेव मोहिं सौतिकी सुहोइहै । शत्रु वश्य राखिदेव ज्यावई जहान
 जाहि देवई सुमौतनीक जीवनो न सोइहै ॥ मोर तौ सुभाव सूध
 जानहु न शत्रु मित्र कौशिलाय मोहि लागि कीन घात जोइहै ।
 डारु ईश शीश ताहि खीसकै सुराज साज राख जो प्रतीत वाहि
 त्ये योन कोइहै ॥

दो० यहिविधि भापत केकई वचन अनेकन दीन ।

सुनि करि माया कूवरी बोली कपट प्रवीन ॥

बिगवतीछंद ॥ यहि भाँति कहा तुम भाखौ । वानि हमारि हिये

रि राखौ ॥ सुखमोद सुहाग तुम्हारे । दून दिनै उर धीरज धारो ॥

यहि आपु अकाज तकाहै । स्वै फल पावहि गोय पकाहै ॥ जब

तेतु अकाज सुनामै । नीद न रैन न भूख दिनामै ॥ सबैया ॥ पू-

ब्रयउमें गुनि लोगन सों यह बात कही तिन रेखहिं खाँची । हे-

इहि भर्त भुवाल सही परिहै इति वाक्य कबों नहिं काची ॥ सोय

उपाउ करौ अव भामिनि मानि हिये मम वानि सुसाँची । हैतुम्हरी

शशभूप अवे त्यहिते करिलेहु न क्यो मनराँची ॥ छप्पै ॥ परोकूप

तव वचन सकौ पति पूतहि त्यागी । देखि मोर दुख कहसि कख

काहेन हिते लागी ॥ केकई बलि पशुहि चेरि करि दृढ़ लीन्हीं ।

कपटरूप बरछुरिटेइ उर शिल सर कीन्हीं ॥ दुख अमित आय शि-

स्पर गयो रानि अयाति न ईमि लखत त्रिणा हरित निरखि वलि
 पशु यथा धाम ललाकि ताको चखित ॥ कुंडलिया ॥ वानी तासु को
 गोरी अति अंत सुनत सुखदानि । ज्यो भिखन मधु एकमे कुमति
 खवावति सानि ॥ कुमति खवति सिनि माखि पुरंजन समुदाई
 रामराज मधुरूप देव बुल रोग नहाई ॥ साखन भरतहि राज मेखि
 कछु दीन्हैरि रानी । भई विधवा अधरारी भरे भूपति त्यहि वानी ॥
 दो० कछो चेरि रानी सुनहु थापौ सखल उपोड ॥
 देवांसु संग्रामे ॥ भैरवी सप्तरादि दैत्यन हसौ भारी ॥
 इन्द्र सहाय करन के राजा । कृति सप्त तिन सन बहुराजा ॥
 तव तह घायल भयो नरेश । देखि पतिहि तुम विवश कलेश ॥
 हौंकिरथहिं निशि पतिहिं वचायो । मुख्या विगत भूपी संचुपायो ॥
 साहस निरखि तुम्हार सुवाला । दुइ वरदेन कहे त्यहि काल ॥
 सो थाती राख्यो दिग राजा । लेव भोगि जव लागी काजा ॥
 स्वइवर आजु भूपसन लीजै । सुतहि राज रामहिं तनदीजै ॥
 दद अवलोकिक कहव अति आली ॥ त्यहि पुनि परै वचन नहिं खाली ॥
 गीतिकाचंद ॥ जव राम जैहहि विपिन पैहहिं भरता पुरराजुहि
 सही । तव तुमहिं होई सकल सुख अरु सवति उर यहिविधि द्वही ।
 सुनि वचन तासु प्रतीति आई सानि शिखली नही स्वई भोगवत
 निवस्यो आया उर श्रीराम मन आहो जवई ॥
 दो० दय आदर चेरिहि बहुत कोप भवन गंडरानि ॥
 तव तडारी करि तन दुई देशा । देखि जे ज्ञानी वखानि ॥
 भूपण प्रद सत्र धरिसि उतीरी । छोरि वर दीन्हिसि लटकारी ॥
 सर्व तन अहि रज जेपन लीन्हो । प्रादि पुरानि पहिरि पट लीन्हो ॥

भईं कुरुपे प्रणि नहिं जाईं मिनहुं मृत्यु यमपुरते आई ॥
 भूप भैरणकी दशां नैनाई । निश्चय नृप जिवे हरि लै जाई ॥
 जो सुभाय सौभागिनि विामा । प्रतिवत्त धर्म निस्त वस्तु यामा ॥
 सब तन कियो शृंगार न रहई । घटै नाह आप श्रुति कहई ॥
 ग्रह तौ प्रेम विधेवकरा धारी । सत्यहि पतिनिजडरि है मारी ॥
 त्यहिपर नीच शिखहि उरआनी । द्वैहहि अवशि काज यहिहानी ॥
 दो० वीजविपति कैकइ कुमति सहि न्तु पावसेचेरि ॥१॥
 ॥ छल जललीहि अकुरजम्यो वरदल फल दुखहेरि ॥
 ॥ छपैपी कान करे वलवाने कर्म क्यहि काल न खायो । काहि
 न व्यपो क्रोध काहि नहि मिरुता डगायो ॥ तृष्णा ताप न तप्यो
 कौन क्यहि मोह न वाँध्यो । कौन भयो दुखदीन काहि शर मैन न
 साँध्यो ॥ क्यहि बल्यउं नाहि युवतीतरल चिन्ताहिनि नहि क्यहि
 हस्यो ॥ भगवन्त विचारहुं मुजनजन काहि न मानस मेदवस्यो ॥
 ॥ कवित्त ॥ कौन जो कुचाल रानि प्रगटना हाल औंध आनंदअ-
 पार धूमधाम धाम छैरह्यो । वीजत निशान गानि मंगल प्रचार जाल
 कौशलेश द्वारपै सुभीर भूरि हैरह्यो ॥ दुन्दुभीविजाय व्योम गावत
 सुकीर्ति देव वपिकै प्रसून ओनि मोदको सचैरह्यो ॥ भाग्यवन्त
 हैहि भूपैरामवृन्द मोदरूप सर्वयाभिलापहीयग्रीमलोग कै रह्यो ॥
 ॥ दो० ॥ वीलसखा सुनि मुदितमन मिलि दशपांच सप्रेमी ॥
 ॥ तीर्थो जाहिं निरुट प्रभु आदरहि पूछि कुशल शुभवेमि ॥
 ॥ गिरा पाय सुआयसु फिरिहि घर बहुविधि केस्त बड़ाई ॥
 ॥ ॥ पमोगहि वर यह जोरि कर मन शशिमोर्लि मनाई ॥
 ॥ सवैया ॥ हे हरहारक दोरा दुखै सुखसारक कारका पूरणकीमै ।
 ॥ मारन मारक फारका धर्म उधारक दीन दयागुणधामै ॥ देहुयहै

भगवन्तः हमें वर जन्मलहौं, ज्यहियोनि जहौं मैनी, होहिं तुहां हम
 सेवक स्वामि मिलें, सुखधाम सुजान, शिरामै ॥ पीलक नीति सु-
 प्रीति सदैव ग्रणतारति, भंजन अन्तर्यामी, औदरदानि, सुभाय श्रवो
 भवनाशकभौ भव शंकरनामी ॥ देहु यहै, वर मोगतहै भगवन्त
 सदा प्रभुतौ अनुगामी । जन्म जहौं वश, कर्मलहौं तहै सेवकहै
 रघुनायक स्वामी ॥

दो० यहिविधि मन अभिलाष सब करहिं समेत उच्चाहें ॥

केकयसुताहि दाहुअति ज्यो निशिपति रहित राहु ॥

सवैया ॥ जाय सुराज्य न नीति जहौं यशजाय हिये, बहुलो-
 भहि आये, जाय सखासन शोचसवै कुलजाय, नशाय, सुविप्रस-
 ताये ॥ जाय विमोह सुज्ञानभये अधजाय हरीहरके गुणगाये, जाय
 यती वश कामअपी, सुमती, तिमिजाय, कुसंगति पाये ॥ सौं भूषमै
 सउच्चाह हिये नृपगौनक्रिये प्रिय, केकइऐना, कोपनिलै, सुनि भूप
 सक्यो मन, भै वश अग्र सुपाँउपरैना, ॥ जावल वाहु, अभैसुरराज
 नराधिप आयसु, मेठिसकैना, सो सुनि, कम्पितभो, तिय, क्रोध, म-
 नोजवली शरहै इमि, पैना ॥ अस बलवान काम, जगमाही, ज्यहिवश अनुचिता कियक्यहिनाहीं ॥
 भूप ययाति, दिलीपमहेशू, मुनि कौशिक, सुरराजनिशेशू, इनकै गति मनलंखहु विचारी, कामविवश, अनुचितक्रियभारी
 भूप ययाति, कामवश लागी, युवा अवस्था सुतसन, मोगी, नृप दिलीपकी एकदिन बेनी, कीन्ही ऋतुस्नान, सयानी, त्यहि रतिदान, देनके, काजा, जातरहै वश, कन्दपरजा, मिली, कामसुरभी, मगनाहीं, कीन, प्रणाम प्रदक्षिण, नाहीं, कामविवश नृपख्याल न कीन्हा, कामधेनु तव शापहि दीन्हा ।

दो० तार्ते नृपति दिल्लीपके भयों न सुत सुखदानि ।
 नृप बहुत कालसेये, सुरभि तत्र जन्मी सुतरानि ॥
 रूप सोहनी हरिको देवी । कामविवश शिवभयो विशेषी ॥
 धारनको धायो शशि भाला । बीज पतित हैगो त्यहि काला ॥
 विश्वामित्र रहै व्रत कीन्हे । करत तपस्या हरि मनु दीन्हे ॥
 तत्र तहँ एक अप्सरा आई । निरखि कामवश भे मुनिराई ॥
 सासु संग सुनि भोगै लीन्हा । काम विवश व्रत खंडन कीन्हा ॥
 इंद्र अहल्यासन रति ठानी । भई भगसहस्रकलजगजानी ॥
 इंद्र कलंक विश्व सर्व चीन्हा । सुरगुरुतियनिजतिय करिलीन्हा ॥
 गे समर्थ असि त्रिभुवन माही । कामवाण ज्यहि वेधयो नाही ॥
 रि नृप धीर गयो जहँ रानी । देखि दशभई विथकित धानी ॥
 दो० अरुण नृपनि मुखे अधर पट पुरान महि शैनी ॥
 कुमतिहि फवत कुवैपर्जनु भई विधवा पतिहैन ॥
 व दिग जाइ पाणि गहि राजा । पृथ्वरिस कीन्हे उक्यहिकाजा ॥
 रसत पाणि अधिक रिस ठानी । दीन्हे उ भटकि पकरिकरानी ॥
 नेहुँ सक्रोध अहिनि विपभारी । विपम भतिरहि नृपहि निहारी ॥
 मि स्थान भूप वपु डाटे । फन फनाय जनु त्राहृत काटे ॥
 उ वरदान वासना जोई । रसता उभय भुवंगिति सोई ॥
 सन द्विवेगत तालि जोई । जासु डसे नहि जीवने होई ॥
 जीवन राम अपर दिज ताके । भरतराज विपडसे न जाके ॥
 नि नृप कहत वचन मृदु बोही । गजगामिनि कहुकारण मोही ॥
 दो० कवन हेतु कीन्हे उ रिसहि कहहु प्रियासो मोहि ॥
 अर्थ धर्म कामादि फल सांगु देउ सो तोहि ॥
 नाराज छन्द ॥ प्रिया अकारज ताक तोर कोन आजु जाहिको ॥

राम तव भरत नहिं जासु तिलक सुनि उरदहा । संभारि बचन बो
ल्यो कसन प्रथम जु असमन छलरहा ॥

दो० सत्यसंध धनि प्रथम म्वहिं देन कह्यो ॥ वरराज ॥

॥ जान्यहु लेहै मांगि कहु चरवन मूठीनाज ॥

सुनत कटुक वानी नृपति चितयो आंखि उघारि ।

कुमति खडी आगे मनहुं लिये क्रोध तरवारि ॥

कवित्त ॥ केकई कुबुद्धि मूठि धार निदुराई तासु क्वरी कुचा
तापै धरी खरसानहै । पेखि भूप कंपित कराल अनुमान मन स
कैकै सत्यकैधौं लेहै हटि प्रानहै ॥ बोल्यो बैन सादर महीप मूढम
उर धीरधरि भूरिकरि वज्रके समानहै । कहत कुभाति कस बच
प्रतीत प्रीति त्यागि विनकाज मोहिं लावत तुफानहै ॥ भरत सर
नैन मेरे युग मानु सत्य कपट न राखि मन कहौं सतिभावहै । राम
न लोभ राज भरतहि बोलि प्रात करौ युवराज आजु धारुमन चा
है ॥ छोट वड़जानि भैं विचारि नृप नीतिकीन दीनमत कौशिल
न मोहिं कछु कावहै । एकही बचन मोहिं लाग दुखजाल सुनि रा
बनवास कीन कटिन कुधावहै ॥ हरिपदछंद ॥ तजि सब प्रिया र
निज मनको कहहुराम अपराधु । सबकुउ कहत सराहत तुमहुं रा
सहज सुठिसाधु ॥ जिनकर शील सुभाव निराखि सुनि रहत अछि
अनुकूला । ते रघुनाथ कवनविधि करते बचनमातु प्रतिकूला ॥ जो
प्रियहास कियो कछु होई तवतजि रोष कलापू । मांगु विचारि स
सुभि नहिं जाते परै दुसह संतापू ॥ अणि विनु फणिक भीन कि
जलके जिये बरुक जगमाहीं । सत्यकहौं क्षण एक प्रियामें जियो
रामविनु नाही ॥ अस विचारि मनसं सुभि लेखु बचनप्रिया पंखीन ।

कहौं सत्य बलछांड़ि मम जिवन राम आधीन ॥
 सुनत वचन मृदु कुमतिउर उठ्यो क्रोध अधिकाय ।
 वस्त अनल वादत अधिक जे मिघृत आहुति पाय ॥
 ब्रौली वचन कुमति दुखदाई । करहु कोटि किन भूप उपाई ॥
 येन वचन टरि है मम काऊ । मरौ आपु वरु उजरै गांऊ ॥
 भाजन अयश मोहिं विधि करई । नाशै सुयश पाप शिर परई ॥
 शीतल चन्द्र सवै वरु आगी । होइ वरुक भख वारि विरागी ॥
 तपत भानु वरु शीतल होई । जलनिधि होइ विनाजल सोई ॥
 अन होनी इति होवहि लाखा । टरहि न वचन जौन मै भाखा ॥
 त्यहिते भूप समुक्ति मनमाहीं । आयसु देहु राम बन जाही ॥
 नतरु मरण मम अपयश तुमहीं । देखहु नृपति समुक्ति निज मनही ॥
 दो० अस कहि उठि उठी भई कुमति कुटिल दुख ऐन ।
 पकरि पाणि राखे निकट कह भूपति मृदु वैन ॥
 सवैया ॥ प्राणप्रिया रविवंशवनै जनि होसि विखण्डन रूप कु-
 ठारी । मांगसि माथ दियो अर्हाँ करु राम वियोग न सीउ हमारी ॥
 राखहु राम रहें धर ज्यों परि है पुनि तोहि नतौ दुख भारी । राम
 नहीं सुत कान्तन योग विलोकु प्रिया मनमाहि विचारी ॥
 दो० । बहुत बुझाये भूप त्यहि सो न कान कछुकीन ।
 परेउ भूमि व्याकुल नृपति राम राम रटिलीन ॥
 छप्पै ॥ पुनि बोली कटु वचन कुमति कूपति दुखदाई । होहिं न
 दुइ यक संग बनव दानी कृपणाई ॥ देन कह्यो जनि देहु कितो धी-
 रज उर धरिये । अवला इव विनुं काज नृपति कारन कत करिये ॥
 तनुं तनय धाम धन वाम महि सत्यसंध कहैं तृणसरिस । दयदान
 बहुरि मांगहु सुतजि लाजलोक वेदन महिस ॥ सुनिबोलेयो नर-

नाह दोष कछु नाहिन तोही । लाग्यो मोह पिशाच काल मम
 लेइहि मोही ॥ भरत सुधर्म निधान राज चाहत नहिं भेरे । मोहिं
 लागि दुख देन कुमति निवसी उर तेरे ॥ त्यहिं विवश आजु हूँ
 धारितैं विपति बेलि वीथे कुमति । गति अगमनारि नहिं लखि पर
 कहत सत्य सज्जन सुमति ॥ सवैया ॥ हैहहिं राम गये कछु कार
 भुवाल वसी फिरि औध सुहाई । सादर बंधु सवै प्रभु के पदपंकज
 करि है सेवकाई ॥ पैहहि मोद सवै भगवंत तिहूपुर हैहहि राम
 डाई । तोर कलंक मया पछिताव मिठी न सुयेहु कवौ नहिं जाई ॥
 कवित्त ॥ ऐसही अने कर्माति भूपति बुझावताहि कुटिल कठोर
 कानि कीन सोन लेरा है । परयो धुनि माथ हाथ रत सुराम राम
 विकल भुवाल विनु पंख ज्यों खगेश है ॥ मनहिं मनाव विधि होय
 ना दिवस जाय कहै रघुनाथसन कोऊ य संदेश है । याही विधि शो
 चत भुवाल दुख दीन जाल विगत निशा यो बार उदित दिनेश है ।

दो० भूपद्वार आनंद परम वाजहिं विपुल निशाग ।
 करहिं भाट गुणगान सुनि नृपहिं लगे जनुवान ॥
 मंगल सकल नृपालही नहिं सुहात यहिभांति ।
 भूपण पटवनितहिं यथा भृतक स्वपति संगजाति ॥
 कहहि सुसेवक सचिव सब उदित विलोकि दिनेश ।
 भयो कवन कारण अवाहि जागे नहिं अवधेश ॥

शतश्रीमद्योष्यासिंहवर्मात्मजभगवतसिंहविरचितभक्तिशिरोमणिप्रथमोपभवन
 कैकेयिवर्दानदशरथकृष्णवर्णनोनामृततीयोऽध्याय ३ ॥

वंदिराम सिय चरण सुहाये । जे हर मानस कमल दुराये ॥
 कहौ कथा भवसागर तरणी । पावनकरणि कलुपकलिहरणी ॥
 तव वशिष्ठ अनुशासन पाई । चले सुमंत जगावन राई ॥

देखत भवेन, लाग्य अर्थकारो । अति डर सकत न करि, पैठारी ॥
 धरि, धीरज गृह कोप, सिध्याये । नृप गति, देखि परम, दुखपार्थे ॥
 पूंछि, न संकहिं रहे चुपसाधी । बोली तव केकड़, अपराधी ॥
 राजहिं नीद, प्रीति नहिं राती । विलपत विकल रहे यहिंभांती ॥
 सो न कारण, मैहूं नहिं जानी । रामरामे रटि कीन विहाना ॥
 दो० जीहु, वेगि, रघुनाथही लावहु इहां लिवाय ।
 समाचार सब भूपंकर, पूंछेउ फिरि तुम आय ॥
 सवैया ॥ राजनहूँ सुख जानिचले अनुमानि कुचाल करी कंछु
 रानी । ब्याकुल शोक संकै चलिना नृप रामहि बोलि कहै कसि
 वानी ॥ शोचत भांति सुमंत, यही पहुँचे जहँ राम तहांतर आनी ।
 भूप, रजाय, सुनाय लिवाय चले संग आतुर शारंगपानी ॥ राम वि-
 लोक्यउ जाइनुपै, दुख दीनदशा नहिं जाय वखानी । सूखहि ओठ
 जरै सब अंग, भुवंग दुखी मणि मै जलेहानी ॥ मीचुसंमान निदान
 करैचह वैठिसरोप लख्यो दिगरानी । धीरज धार हिये प्रभु मांतिहि पूं-
 छत सादर भे मृदुवानी ॥ मति कहौ दुखकारण तात करौ स्वइवांत,
 जु होइ निवारन । है सब कारण रामियही, तुम ऊपर राजहिं प्रीति
 अपारन ॥ देनकह्यो वरदान, हमै युग, योग्यउँ सो सुनि शोच भु-
 वारन । संकटधर्म, पर्योइतेही उत छांडि सकोच संकै सु तुम्हारन ॥
 दो० सत्यसंध रघुनाथ तुम पालक श्रुति मर्याद ।
 शिरधरि पितु आयसु करहु मेढहु विपम विपाद ॥
 निज करनी रघुनाथही, कहेसि कुटिल सवगाय ।
 धर्मवान सुत सो वचन जो पालै, पितुमाय ॥
 मातुवचन सुनि, मुदितमन राम सहज सुखधाम ।
 अतिसनेह साने वचन बोले गृह, अश्रिराम ॥

सवैया ॥ जननी सुनु सो सुत भागवती जगपावन कीरति तासु
 छई । वचपालहि जो पितु मातु नितै धरिआयसु शीश अनंदमई ॥
 जननी पितु पोषणहार तनै जग दुर्लभ काहु विरधिदई । भगवंत
 अनंद हमै नितही वन आयसु जो पितु मातुभई ॥ बड़काज अहै
 मंगकानन में मिलिवो मुनिवृन्द विशेषितहां । पितु आयसु पालन
 धर्ममई जननी पुनि सम्मत तोर रहा ॥ भगवंत सवैविधि सन्मुख
 आजु विरधि दियो जस लाभचहा । वन ऐस्यहु काज न जाउं गनी
 प्रथमै म्वहिं मूढ़ समाज महा ॥ शुद्धगच्छंद ॥ सुरौका रूखजे त्यागा
 कुशाखी रगड को सेवै । सुधाको छांड़ि कै मांगी विपैसानंदजे
 लेवै ॥ त्यऊना पायकै ऐसो समै सुन्मातु चूकाहीं । मिलोहै आनि
 मो तैसो विचारो माय मन्माहीं ॥ हमारे शोच भो याही दुखारी
 देखिकै तातें । सह्योहै क्लेश तन्माहीं जु थोरी लागिकै वातें ॥ भई
 है चूक मोसन्कै बड़ी सो जानिकै ताता । कहैना मोहिं सांची स
 कहै तू सौंह मो माता ॥

मुनि सनेह सानी प्रभुवानी । बोली कुटिल कपटपन ठानी ।
 कारण अपर न कछु मैं जानी । भरत शपथ फुर कहौं बखानी ।
 तुम सर्वज्ञ धर्मरत ताता । धर्म छांड़ि कछु करव न वाता ॥
 त्यहि ते पितुहित धीरज दीजै । उचित विचारि काज स्वइकीजै ॥
 गइ मुख्या नृप कखंट लीन्हा । रामागमन सचिव कहिदीन्हा ॥
 राम प्रणाम पितहि तव कीन्हा । अतिसनेह नृप भरि उरलीन्हा ॥
 कहि न जाय उर हरप अभंगू । मनहुं गई मणि लह्यो भुवंगू ॥
 यकटक चितय रहे प्रभु ओरा । लोचन सजलु प्रेम नहिं थोरा ॥
 तव रघुनाथ जोरि युगपाणी । पितु पद गहि बोले गृडवाणी ॥
 मंगल सगय शोचजनि कीजै । तात मुदित म्वहिं आयसुदीजै ॥

पाच्यो वर जननी जो ताता । सो सब भोति हमहिं सुखदाता ॥
 अन्य सुवन जननी पितुवैना । पालहि मुदित सकल सुखपेना ॥
 करि प्रमाण जननी पितुवानी । चरण कमल पुनि देखवानी ॥
 अवशि । जाव मै काननराई । माँगि मातुसन आयसु लाई ॥
 दौ० अस कहि रघुपति नाय शिर गवने मातु समीप ।
 प्रेम विवश नहिं दीन्ह कछु उतर भानुकुल दीप ॥
 सोलाछन्द ॥ नगर व्यापिगइ वात सुनत सब लोग लुगाई ।
 भये विकल हिमत्रास यथा सरसिज कुम्हिलाई ॥ कहहिं कीन
 करतार कहा कछु जानि न जाई ॥ दीन्हेसि निपट विगारि वातसब
 प्रथम वनाई ॥ कैकेइहि दैगारि विविधविधि दूषणदेही । सकल
 सुखहि दुखरूप कुंमति डारिसि करिजेहीं ॥ विप्रबधु कुलमान्य प्रिया
 ज केकइ केरी । लगी देन सिखभूरिजाय चारौदिशि घेरी ॥ सदा
 कहहु तुम मोहिं रामसम भरत नप्यारे । आजुभये क्यहिकाज राम
 रिपुसरिस तुम्हारे । जो प्रबहु वन राम देहु दुख सत्रहि कलोपू ।
 तुमहु सहव परिणाम समुक्ति मनमें संतापू ॥ जो जैहै वन राम
 लपण सिय तजव न संगू । भरत न करि है राज काज सब होइहि
 भंगू ॥ तुमहिं अयश अकलङ्क समुक्ति मन देखहु रानी ॥ देहु
 भरत कहै राज रामवन गय बड़ि हानी ॥ नतरु रहै गुरुगेह राम
 जनि वनहिं पठावो । करहु वेगि स्वई वात जाहि दुख दुसह न
 पावो ॥ तुमहिं कही मुनि काह समुक्ति मनमें सब लोगू । रामस-
 रिस अभिराम सुवन काननके योगू ॥ सत्रैया ॥ ज्यहि भांतिन
 शोक कलङ्क नशाय उपायनकै कुल पालहि स्वै । हठि फेरसि
 रामहि जाते वनै । जनि वातहि दूसरि चालसि कै ॥ जिमि-
 भानु विना दिन प्राण विना तनु चंद्र विना जिमि यामिनि ज्वै ।

तिमि औध विना रघुनायकहै मन देखु विचारि सुभामिनि त्वै ।
 । दो०, बहुविधि सिखवन दीन तिन त्यहिं न कीन कछु कान ।
 । नीच प्रबोधी नारि - पुनि, होनिहार, बलवान्, ॥
 ॥ छप्यै ॥ राम जायु दिग मातु चरणपंकज शिर नाये । निरखि
 वदन सुखधाम हरपि जननी उर लाये ॥ दीन्ही मुदित अशीश
 वसन भूपण धन वारी । वारवार सुख चूमि पुलकि लोचन भी
 वारी ॥ लिय राखि गोद सविनोद पुनि, सवत प्रेमरस प्रय थनहि
 भगवन्त प्रेम आनंद मनहु लहेउ रङ्ग पदवी धनहि ॥ बोली त
 मृदु बैन तात जननी बलिहारी । कहहु कबहि वह लग्न सकल
 मुद मंगलकारी ॥ चाहत ज्यहि नरनारि कबहि सुख संकुल खूटी
 सिंहासन सियसहित निरखि नखशिख छवि चूटी ॥ सुख सुकृत
 मूल अवशूल हर तात सुमुख स्वइ उच्चरहु । बलि जाउं न्हाय भग
 वन्त कछु धरे मधुर भोजन करहु ॥ तव जायहु पितु प्राहि बेर ला
 लन वडि भैली । बोले मुनि मृदुयानि राम जननी सुख दैली ॥
 मातु दीन म्वहिं तात राज कानन सुखदाई । जहाँ मोर वडकाज
 देहु आयसु म्वहिं माई ॥ ज्यहि कुशल जाय वन चारिदश वस
 पालि पितु शामनहि । पुनि आय पाँय देखव करहु मातु सुमनहि
 उदास नहि ॥ गीतिकाब्द ॥ मुनि राम बैन विनीत कोमल मातु
 उर शरसम लगे । गइ सहमि सुखि जवास जिमि परि वारि पा
 वस मुद भगे ॥ कहि जाय नहि कछु हृदय दुखमुनि नाद केहरि
 मृगि यथा । तन कंप लोचन सजल दारुण दाह उर अन्तर मथा ॥
 शशिबंदनाब्द ॥ तव महतारी । धरि धृति भारी ॥ गदगदवानी ।
 रतिरस सानी ॥ प्रभुतन देखी । कहत विशेषी ॥ पितहि पियारे ।
 तुम अंधि नरे ॥ निगनि तुम्हारे । चरित सुखारे ॥ रहहि हमेशा ॥

अवध नरेशा ॥ तिलकहि लागी ॥ अति अनुरागी ॥ लगन शो-
 धाई । सब सुखदाई ॥ क्यहि अपराधू । तुमसम साधू ॥ सुतहि
 पियारे । वनहि निकारे ॥ कहहु निदानू । क्यहि कुलभानू ॥ भ-
 यउ कुरानू । परम अयानू ॥ सुनि इति वानी । कह्यउ बखानी ॥
 सचिव कुमारा । परम उदारा ॥ सकल हवाला । सुनत विहाला ॥
 भइ महतारी । अधिक दुखारी ॥ कढत न वानी । विवरन रानी ॥
 दो० राखि सकै नहि कहि सकै राम वनहिं तुम जाहु ।
 ७ दुविधावेश दारुण हृदय भा कौशल्यहि दाहु ॥
 तो वन सुतहिं जान नहि देखै । वड़ अधर्म अरु फूटै गेहू ॥
 अबहु वनहिं राम क्यहिं भांती । जिनहि निरखि जीवनदिनराती ॥
 नि मनमाहि कीन अनुमाना । पातव्रत धर्म परम बलवाना ॥
 रत राम सम भेद न कोई । म्वहि भल भवन रहै सुत जोई ॥
 शरि धीरज प्रसु वदन विलोकी । वाली वचन नैन जल रोकी ॥
 तात किहेउ भले जस कछु चाही । यहि सम धर्म अपर जग नाही ॥
 पिता वचन जो पालन करई । सो जनु सकल धर्म धुर धरई ॥
 यहिते जाउ सुदित वन ताता । जो आयसु दीन्हउ पितु माता ॥
 मोहिं शोच्यक हृदय विशेषी । अति मुकुमार गात तव देखी ॥
 क्यहिविधि तात धीर म्वहि आवै । पलकओट करि तुमहिं न जीवै ॥
 जीवन प्राण लाल तुम मेरे । तुमविन कछु न भाव म्वहि भोरे ॥
 ते तुम जाहु वनहि । अब रामा क्यहिविधिकटिहि दिवसममधामा ॥
 तात मातु कर नात विचारी । कवहु न भूल्यहु सुरति हमारी ॥
 परम अभागिनि मै जग माहीं । देखउ बैठि सुवन वन जाहीं ॥
 वड़भागी कानन रघुगज । जह तुम जाहु त्यागि गृह गाँऊ
 अवधि गये जो अवध न ऐहो । तौ पुनि मोहिं जियत नहि ॥

त्यहिते करेहु सोई सुखऐना ॥ जियत सबहि देखहुँ ज्यहि नैना ॥
 अस कहि प्री चरण गहि माता । मोरि सुरति जनि भूल्यहु ताता ॥
 पद ॥ सुरतिजनि भूल्यो राजिव नैन । करुणासिंधु कृपापरिपूर्ण
 रूप शील गुण ऐन ॥ पालक प्रीति रीति परमारथ विरद दीनहि
 पैन । मातु पिता परिजन धन जीवन सुदृढ सुजन सुख दैन
 करि अनाथ रघुनाथ जाहु वन छोरि सकल सुख जैन ॥ म्वहिं
 मान अति नारि अभागिनि अपर जयो जंगमै न ॥ इमि भो
 वन्त कहत कौशल्या करत वनत कछु हैन । भरि अयि धुप
 जल लोचन सुनत मधुर मृदु वैन ॥
 दो० जननिहि राम उठाय तव लाये हृदय सप्रीति ।
 समुझाये बहु भौति सो कहि मृदु वचन विनीति ॥
 त्यहि अवसर रघुपति वनवासू । सुनि सियमन अति भयउहरासू ॥
 व्याकुले परम सासु पहुँ जाई । सोदर चरण कमल शिर नाई ॥
 वैठि नमित शिर आशिष पाई । शोचत हृदय प्रीति अधिकै ॥
 प्राणनाथ वन चहत सिधावा । होइ संग क्यहि सुकृत प्रभावा ॥
 जो न साथ लेहै भगवाना । तौ तजि देह जाइ है प्राणा ॥
 ग्रहिविधि शोचत अवनिकुमारी । नयन नलिन युग मोचतिवारी ॥
 बोली मातु मधुर मृदु वैन । सुनहु वचन मम राजिवनैना ॥
 अति सुकुमारी तात वैदेही । प्राणते अधिक प्रिया सबकेही ॥
 सवैया ॥ पुतरी दृगसो करि प्रीति बड़ी सिय राख्यउमै नि
 प्राणन लाई । कल्पलता सम पालनकै बहु सीचि सनेह सुधा सु
 दाई ॥ फल फूल समय विधि वामभयो परिणाम कहाँ कछु जा
 न जाई । वन जावन चाहत है सियसो अब आयसु होत कहा
 घुराई ॥ कवित्त ॥ मातु कलगोद मंजु ललित हिडोरनैसु अंगि

वेनोद कीन सीय बालपन में ॥ भई है सेयानि जव पलंग पुनीत
 राज कोमल विहाय पगंधरी निधरन में ॥ प्राणहू तें प्यारी मोहि
 तनकडुलारी भूलि आयसु न दीन दीपवातिहू टरन में ॥ भाग्य-
 अन्त चाहत सो सीयवन जानि साथ आयसु है काह मोहि शोच
 धीर मन मै ॥

कानन कठिन परम दुखदाई । निशिचर करि केहरि समुदाई ॥
 फेरहि विलोकि धीर डरिजाहीं ॥ सिय सुकुमारि योग वननाहीं ॥
 बंधुकर रसिक चकोरि कुमारी । रविकरदिशिकिमिसकैनिहारी ॥
 गिल किरात भीली तनुजई । विपिन हेतु विधि चतुर बनाई ॥
 सेय न सकी सहि वन डंखताता । वर्यकिशोर अति कोमलगाता ॥
 हहहु समुझि मन जस रघुराई । तस मै सियहि कहौ समुझाई ॥
 गातु वचन सुनि प्रभु सुखमूला । बोले वचन समय अनुकूला ॥
 ॥ सवैया ॥ राजकुमारि सिखावन मो सुनिये हित लागि कहौ
 जसचाही ॥ आपन मोर चहौ मलजो मम बैन सुमानि रहौ गृह
 माहीं ॥ सेयहु सादर सासु सवै नियधर्मपरे यहि सौं जगनाहीं ॥
 भामिनि भौन भलो सवही विधि शोक लहै पितु मातु न जाही ॥
 ॥ दोहा ॥ करि पितुवचन प्रमाण मै वेगि फिरव सुनुसीयत ॥
 वारन लागिहि जातिदिन धरहु सीख ममहीयत ॥

रोलाह्रद ॥ विपिन महा दुखदानि निरखि लागत अयभारी ।
 व्याघ्र सिंह बृक व्याल फिरत निश्रर गणकारी ॥ अनिल अनल
 हिमि धाम परतु कंटेक मग माहीं । गडि गडि जावै पांव विपति स-
 हिजात सुनाहीं ॥ पन्थ अगम दुखरूप मिलत सरिसर गिगिनारे ।
 कन्दर खोह अपार जाय नहि नयन निहारे ॥ अशुन कन्द फलमूल
 शैल महि बल्कल चीरा । कानन कठिन कराल सुनत डंगरहि मन्

धीरो ॥ सवैषा ॥ मृगलोचनिःकोमलगां त अत्रैतुस कान्तनेके नहि
 योगे अहो । सुनि हृदेहहि । लोगे । सुखोरि । हिमें । तुसहं । वनसंक्रष्ट भूति
 सहो ॥ असज्जानि प्रिया प्रियहि स्त्रौः भल आपत्त जो । हित प्रोर चहो ।
 नतु प्रावंहुगी । परिणां मृदुसै अशयेम प्रिया हृदजोहि गिहो ॥ १ ॥

दो० प्रिया न करियो हठभलो विदित अहै सवकार्ल । न
 । हठकरि हृदप्रिये अमिते गालक महुप भुवाली ॥ ३ ॥
 गालवे सुनि प्रौशिकके प्रासा ॥ विद्याप्रदि असि वदति प्रकीसी ।
 मांगहु सुनि गुरुदक्षिण प्रजोई ॥ आजु हृदेउमै गतु मकहै सोई ।
 यहि विधि हठकीन्है हृदयवारी ॥ है सुनि क्रोधित विचत उचारा ॥
 वसुशत श्राप कर्ण स्वहिं प्रजी ॥ देहु आनि न्तर्व होई राजी ॥
 सुनि गालव दुख दुसह उठाये ॥ चासै हृदिलोचन हृदसै उपाये ॥
 इति हठ करि गालव दुख सहजां नहु प्रअवधानुप सुकृती रह्य ॥
 सुकृत प्रभाव इन्द्र प्रदी लह्यजत इन्द्राणी सन भोगै ॥ त्वह्यज ॥
 कहेउ शची नहि रथ सहिदेऊ ॥ अत्रि विदित तत्र भोगै देऊ ॥
 सुनि नृप ससंक्रुपिन रयं लाई ॥ हैं आरुढ़ गजले हरपाई ॥
 सर्प सर्प चलिये नृप आखा ॥ सुनि अंगस्त्यवोले करि मोखा ॥
 होहु जाइ हंम सर्प सुवाला ॥ इति हठ करि पायो दुखिजाला ॥

दो० ताते हठ जनि कीजिये रहहु प्रिया निज जपेन ॥
 । प्रसासु शत्रु शर सेवन करहु मानि सुदित मीमा विनशा ॥
 कवितना सुनि प्रीय चैन प्रति कोमल अमल चारु लोचन
 सजली पुंज प्रेम अत्र ह्यायकै ॥ जोरि कंज पाणि युग बोली बेंत
 जसु अति वाक्कर पदापये शरीश आणु नायकै ॥ दीन प्रति प्राण
 मोहि सीखजे सुहित धरि दीखि सो विचारि सुनि हीय में वनायकै
 पति सुविद्योरा सम प्रियो नने त्रिलोक दुख भाग्यवन्त कइत पु

राण वेदंगायकेन । भ्रमरावलि चन्द्रा । कहि वैत इदं सिग राघव
 पाँय लगी । भ्रमरावलि सीवन जानिन प्रेम प्रगा । धरि धीर कह्यो
 करुणा करी मो कहि जो प्रभु चहहु व्योवन तौ जनि भौन तजो ॥
 सवैया गो मातु पिता भगिनी सुत सुन्दर धिया सुशील चचे सग
 भ्रते । मित्र पवित्र प्रिया परिवार जहाँ लगिहैं जग नेहरनाते ॥
 सेवक स्वामि सखा हित सज्जनि भूरि धिरि दिये सुख दाते । नाह
 विहीन तिये सगरे प्रभु लागत है रिविहसन ताते ॥ देह सुगेह धरा
 धन राज सुसाज सर्व सुख शोक समाज । भोग सबै सम रोग अहै
 कल भूषण भार धरे जनु गाज ॥ लोक सबै चम यतन सो सुख
 दानि लगे सगर दुखदाज । नाह विहीन तिये स्वपनी सुख है नाह
 संत्य कहौ इति राजी ॥ प्राण विना तनु सोह न ज्यो अरु सोह न ज्यो
 सरिता विनु धारी । चन्द्र विना रजनी न सजे न सजे सरपक जहीन
 तमारी ॥ सोह न शूर विना राण ज्यो रसहीन यथा रस लुब्ध
 दुखारी । त्यो भगवन्त सुसत्य कहौ नाह सोहत है विनु पूरुप नारी ॥
 त्यहिते नाथ साथ म्यहि लहू । तुम विनु म्यहि मुहाइनहि गेहू ॥
 प्रभुसग म्यहि वनखग मृग जाला । धरिजन सम करि है प्रतिपाला ॥
 बलकल बसन अशन फल मूला । पिण रालि म्यहि सुखद समूला ॥
 नाथ साथ हर भाहि नै कौऊ । रहय सुखो जह जह मधु जाऊ ॥
 हुधा तृपा विश दुखित न हहो । प्रभु पद कमल निरखि सुखै पहो ॥
 मोहि सकल सुख रीरोहि साथ । असजिय जानित जहु जनिनाथा ॥
 शिला चन्द्र । रहे भानु विनु दिवस रहे चादनि विनु चन्द्रा । रहि
 वारि विनु पात्र रहे मूस विनु जल वृन्दा । रहि कमल विनु पाय
 रहे सेवक स्वच्छन्दा । मैं न रहौ क्षण एक नाथ तुम विनु सुख चन्दा ॥
 दो० सुनि प्रमाण लखि प्रीति हृद कथो विहसि रघुनाथ ।

॥ १ ॥ त्यागि प्रिया मन शोच सब चलहु बेगि वन साथ ॥
 ॥ २ ॥ सीये सहित रघुवंश मणि मातु चरण शिरनाथ ।
 ॥ ३ ॥ वांस्वार कर जोरिकै चले सुआशिष पाय ॥
 ॥ ४ ॥ हुंखडलिगा ॥ पाये लक्ष्मण लाल जत्र राम गवत वन हाल
 अति आतुर आये तहाँ बिलखत परम विहाल ॥ बिलखत फ
 विहाल धरे रघुपति पद माथा । कहि न सकत कछु वैत ठाढ़ जे
 युगहाथा ॥ बन्धु विकल अवलोकि राम बहु विधि समुभाये ।
 वियोग सुनि सहमि अधिक लक्ष्मण दुख पाये ॥
 पुनि प्रभु कह्यो वचन सुखदाई । धरहु धीर लखि अवसर भाई
 जो मैं तुमहिं चलोँ लौ संगी । तौ पुर होइ काज सब भंगा
 भरत शत्रुसदन गृह नार्ही । दुखित मातु पितुमम दुखमार्ही
 सबप्रकार असमंजस वाता । असजिय जानि रहहु गृहभाता
 ज्यहि नृप राज प्रजा दुख पावै । अवशि भूप सो नरकहि जावै
 मातु पिता पद सेवन कीजै । लाभ लोक परलोकहु लीजै ।
 सुनि लक्ष्मण बोले मृदु वैना । सुनहु कृपा करि राजिव नैना ।
 नाथ दिख्यो सिखवन जो मोही । सो सब करन चाहिये बोही ।
 ॥ दो० ॥ जाहि सुगति कीरति विभव प्रिया पुत्र पितु मात ।
 ॥ १ ॥ मोरे तौ सबभाँति यक तुमहीसों प्रभु नात ॥
 ॥ २ ॥ कवित्त ॥ मनवचकर्म छोडि कपट सुसत्य भाय रावरोहि पाँयद
 एक अनुरागिये । आपुहीसों काम नसुयाम अभिराम राम धाम धन
 प्रीव हैन प्रेम आपु पागिये ॥ आपुही भरोस आस दूसरो न जान
 दास जीवकों सुपास पास आपुहीके लागिये । भाग्यवन्त जानि
 सबभाँति मोहि आपनो सुराखिये शरण स्वामि दासही न त्यागिये ॥
 ॥ दो० ॥ बन्धु वचन सुनि सरलशुचि कहेउ राम सचुपाय ।

तात विदा है, मातुसन त्रेगि, चलहु, वन आय ॥
 । बंदचौपैया ॥ सुनि रघुवरवानी अति सुखदानी लपण मोद मन
 दायो । अतिहरप समेता मातु, निकेता आय चरण शिर नायो ॥
 लखि मलिन सुगाता पूछेउ माता कारण लपण बखानी ॥ सुनि स
 हामि सुखानी धीरज आनी पुनि बोली मृदुवानी ॥ सुनिये सिख
 ताता तव पितु माता सीय राम सुख दैना । रघुपति जहँ जाही
 अवध सुताही तहै तुमहिं सुख चैना ॥ सिय राम जु जाही वन घर
 माही काज कवन तव ताता । त्यहिते संगे जाहू जीवनलाहू लेहू
 सफल करि गाता ॥ सुत मोहिं समेता भाग निकेता भयो लाल
 बलिजाऊ । जो बल तजि सारे बित्त तुम्हारे किह्यो रामपद ठाऊ ॥

सवैया ॥ पुत्रवती युवती जगस्वै रघुनायकभक्त तनै ज्यहि होई ।
 नातरु वॉफ भली जगमे सुत जन्मत नाहक भै तिय सोई ॥ राम
 सुवाम भये सुतते बडि हानि कहै कवि कोवि दुलोई । भाग्यवली
 भगवन्त स्वई सियरामके रङ्ग रंगो नर जोई ॥
 अस जिय जानि रामसंग जाहू । लेहू तात जग जीवनलाहू ॥
 राम सीय पद सेवन कीन्हो । स्वपनेहु चितकहुँ अततनदीन्हो ॥
 समुक्ति हृदय स्वइ करेहु उपाई । ज्यहि दुख लहै त सियरघुराई ॥
 असकहि सुतहि लाइ पर लीन्ही । जाहू मुदितमन आशिपदीन्ही ॥
 मातुचरण सादर शिरनाई । चलेलपण शुभ आशिष पाई ॥
 आय रामपद बंदन कीन्हे । मुदित लिवाय संग प्रभु लीन्हे ॥

दो० सीता लपण समेत प्रभु कृपासिधु गुणधाम ॥

चले मुदित आये तुरन नृपमंदिर अभिराम ॥

शतिश्रोमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवतसिंहविरचितेभाक्यशिरोमणिप्रथेश्रोवशरय
 ॥ महाराजविपादजानकीरघुमन्दनकौशल्याप्रतापेदामांगनसुमित्रालपणसवाव
 ॥ सीतलक्ष्मणसहितप्रभुनृपवासश्रागमनवर्णनोनामचतुर्थोऽध्याय ४ ॥

सीता लपण सहित छरचुनार्थी। जाय भूपर्षदा न्यायउ माथा।
 सहित सीय सुत सुभग निहारी। भय अति विकल धरि छरधारी।
 अति सनेही गहि हृदय लगववा प्रेमा विवश मुख वचन न अया।
 तव रघुनार्थ जोरि युग हाथा। कहेउ विदा अहहि दीनो नार्थी।
 सुनि प्रभुवचन भूषा दुख पीर्ये। गहि किरा नि कट रमा वैश्या।
 बहु प्रकारे सिख दीन महीपा रहत ली जनि रघुकुलदीपा।
 तव सीतहि उर लीन लीगाई। दीन विविध त्रिधि सीख सुहाई।
 तहि सुहानि मुनि सीतहि कैसे। चकइहि शरद जादनी जैसे।
 दो। किकय सुती सकोप तव मुनिपट आजन आनि।
 ॥ ३४ ॥ बोली धरि रघुवर पहिरी। जाहुबने रहित जनि ॥
 ॥ ३५ ॥ श्रीराम तुरत मुनि बेप अनि अनुज जानकी साथे।
 ॥ ३६ ॥ बले बदि गुरुविप्र पद नाय मातु पितु माथ ॥
 आये गुरु। विशेषक द्वार दिखिलोग सब मये दुखरे ॥
 राम सबहि बहु धीरज दीन्हे। यिचक वृन्द बोली मुनि लीन्हे ॥
 दाना मान करि विनया बिडाई। प्रसुदित कीन्हे सबहिं खुराई ॥
 गुरुसन कहेउ जोरि युग प्राणी। तुम रक्षक सबके मुनि जानी ॥
 अस कहि राम गुरुहि शिर नीये। सुमिर गजानन मुदित सिधाये ॥
 प्रभु वने चलते विकल सब लोगूय कहिन जाय पुर दारुण सिंगू ॥
 ॥ ३७ ॥ इहाँ सुमंत्रहि धौलिके कहेउ विकल नरनाथ ॥
 ॥ ३८ ॥ श्रीरामहिं ग्यान चढायिले। जाहु सखा तुम साथ ॥
 वन दिखाय अन्हवाय सरिता तगये दिन चारि ॥
 सिध समेती द्वउ वने पुनि स्थायहु पुर लौदारि ॥
 लोयहि नगर न जो द्वउ भ्राता। तो तुम कहव विनय करिता ॥
 देहु फेरि पानि न्याय वैदेही भा कहिनि सदेश मातु पितु येही ॥

यहि अवलम्ब अत्र धिला गिगानां । सहहिततहाममजत्रसिधनिदानानां
 सहिअंसा परेउ । त्रिकला मरेनाथा ॥ चले अमुमन्त भाईपदाभार्थाना
 धु अनिरुत्तिर । साजि तहें स्ताये । त्रिविधभौतिकरि विनयसुनार्येभा
 मुनि पितु शार्सन रास उदार । प्रिया अनुज युत भये सवारा ॥
 चलेनाय त्रुशु अवधिहि माथा । पुरजनि विकला लगी सर्वसाधा ॥
 प्रीतिको ज्येद्व ॥ पुरु लो गलागे । सार्थ व्याकुल राम विहु विधि
 रही । नहि फिरहि । ते प्रथम प्रभु मुखओर थकटक हेरही ॥ लो
 त भयानक नगर अति जनु काल निशि अधियारि ह्ये । नर नरि
 मनुकराल डरपते एक एक निहारि है ॥ निज धीम ज्योहि मशान
 रिजन भूतसम भयदानि है । यमदूतसम सुतमीत गिता जितु चहत
 मारन आनि है ॥ वनवाग वेलिमलीन सरिसरि हरि । नैन न जावही ।
 गजवाजि पशु मृगत्रिहंग व्याकुल देह सुधि तिसरावही ॥ त्यहि
 समग्र दारुण दुसहदुस क्यहि भौति कउ तरणन करै ॥ रघुवीर विपिन
 पयानसुनि अस कौन जो धीरज धीर ॥ त्रु श्रुति मृगत्रिहंग
 दोष ज्युहिविधि पुरजन सहित । सव कृपासिंधु रघुनाथना ॥
 नज प्रहें तमसा निरुट प्रथम दिवस विनुपथिना ॥
 अवध दक्षिणै कोस छा तमसा नदी विशाल । गिर उत
 चैत्रशुक्ल तिथिनौ मिको अर्या धरामरूपाली ॥
 सवैया ॥ श्रीरघुवीर कृपा अपि पूरण संतत दासनेकी दुखहारी ।
 आपु दुखी बहु भौति भये अवलोकि प्रजा निज प्रेम दुखारी ॥ भौति
 अनेक दिये उपदेश फिर नहि लोग सनेह सिसारी । शीलसनेह न
 जाई तजो रघुनाथहि भो अस मजस भारीनी छप्ये ॥ लोग गये सब
 सोइ शोक श्रमनश निशि पाई । विगत निशि युगयाम क्यो सह
 चिरहिरघुवाई ॥ चक्रिह दशाय भर्मित ह्यकहुरथ ताता ॥ ना

हिन अपर उपाय चहत विगहन सबवाता ॥ इमि सचिव रामशासन
 अकनि प्रभुसिय लपणचढाय स्थ ॥ दिशि विपिन तुरत हांकत
 भयो स्थकर खोज दुरायपथ ॥ तोटक छन्द ॥ भय और जगे पु
 लोग जवै ॥ गय राम उठे करि शोर सबै ॥ स्थ खोज कतौ नहि
 पावतहै ॥ कहि राम चहुँ दिशि धावतहै ॥ भय व्याकुल भूरि न
 धीर धैरै ॥ एक एकन यों उपदेश करै ॥ वनमे संग जानि कलेश
 महाँ ॥ तजि दीन हभै रघुनाथ यहाँ ॥ धृग जीवने राम विना जा
 मैं ॥ वपु छॉडि न हंस गये संगमें ॥ यहि भांति विलाप कलाप करै
 भख वंश प्रशंसि निजै निदरै ॥ त्यहि औसर कर विपादमहा ॥ नहि
 जात कह्यो सुनि धीर ब्रह्म ॥ कृपा ॥ रामे ददर्श हित नारि नर लगे करनी ब्रत नेम ॥
 दो० यहि प्रकार बिलपित सकल आयें अवध सत्रेम ॥
 रामे ददर्श हित नारि नर लगे करनी ब्रत नेम ॥
 कुण्डलिका ॥ सीता सचिव समेत इत राम लपण द्रव वीर
 शृंगवेरपुर जायकै पहुँचे सुरसरि तीर ॥ पहुँचे सुरसरि तीर उत्तरि
 कीन्हे अस्ताना ॥ पीवत अमल सुवारि भये मन मुदित सुजानी ॥
 जाना मरम निपाद साजि शुभ भेंट पुनीता ॥ चल्याँ मिलन सा
 नंद गयो जहँ राधेव सीता ॥ राम ॥ रामे ददर्श हित नारि नर लगे करनी ब्रत नेम ॥
 दो० करि प्रणाम आगे धख्यो भेंट मिले फल कुन्द ॥
 प्रिय अति सत्रेम एकटक चितै रह्यो राम मुख चन्द ॥
 तव रघुनाथ जसनेह तव शंसादर दिगवैठाय ॥
 कुशल प्रथम पूछी मुदित प्रेमीन हृदय समायनी ॥
 नरोला छन्द ॥ सुनि निपाद कर जोरि नाय शिरा बचन उचारे ॥
 कुशलनाथ सब भोति देखि पदपद्म तुम्हारे ॥ मैं सेवक प्रभु आपु कृपा
 कीन्ह्यो जनजानी ॥ दीन्ह्यो दरश कृपाल कहीं किमि भागवक्षानी ॥

अब बलि नगर कृपाल करिय पावन भयधामा । सुनि सप्रेम त्वहि
बैन कह्यो सादर श्रीरामा ॥ कह्यो सखा तुम नीकि भौहि पितु जा-
यसु आना । चौदह वर्ष निवास विपिनभल नगर न जाना ॥

दो० सुनि प्रभुवचन निपाद मन अयो विपाद अपार ।

कहहि नारि नर देखि द्रुव बंधु परम सुकुमार ॥

सवैया ॥ सुन्दर श्यामल गौर किशोर अनूपम आनन चंद्र उ-
दैसे । अद्भुत अद्भुत अपार प्रभा युग वेप धरयो रतिनायक जैसे ॥
कोमल शील सुभाव भलो भगवन्त बखान करौ छवि कैसे । ते पितु
मातु कहौ सजनी किमि जे पठ्ये वन बालक ऐसे ॥ सुनि वानि
सुतासु संयानि सखी कउ एक कहै भल भूप किये । छविसागर
नागर बालक ये बहु कामप्रभा जिन जीति लिये ॥ सहि संकट
आपु इन्है पठ्ये वन देखि जिन्है मगलोग जिये । भगवन्त मही-
पति धन्य मही जिन लोचनलाभ हम सुदिये ॥

तवहि निपाद हृदय अनुमानी ॥ हुम शिशुपा सुहावन जानी ॥

शीतल मुखद छाहै सकाला । गयो तहाँ ले राम कृपाला ॥

निजकर कुशसाथरी बनाई । मृदुमंजुलमय दीन डसाई ॥

कंद मूल फल विविध सुहाय । दिये आनि लाखि प्रभुमन भाये ॥

सीता सचिव सहित द्रुव भाई । भोजन कीन प्रीति अधिकई ॥

करि भोजन सोवन प्रभु लागे । गहि शर चाप लपण अनुरागे ।

बैठे कछुक दुरिपर जाई । कसि निपंग शरचाप चढाई ॥

दो० गुहबुलाय बहुपाहरु जह तह राखे आय ।

॥ निग बँध्यो धनुशर साजिक आपु लपण पह जाय ॥

॥ भूमि कुशासनपे निराखि सोवत राजिव नयत ।

पुलकगात लोचन सजल कहत लपण सन बैन ॥

सवैया ॥ जे रघुनंदन सीय सदा सुख सिंधु जिन्हैं शिव मानत
 गोए । ध्यावतहैं भगवन्त जिन्हैं मुनि सिद्ध सदा तन लाजत खोए ॥
 शैनकरै नित भूपनिलै मन लाजत मन सुजो सुख जोए । ते सिख
 राम रूपा परिपूरण कानन भूमि कुशासन सोए ॥

दो० फणि मणिसम भूपति जिन्हिं जो भवत आठौयाम ।

सोवत महिस्वइ रामसिय विधिगति काहिन वाम ॥

कह्यो लपण यामे कछु दोष न कहुक होय ।

करै कर्म जैसे ज्वई तस फल पावै सोय ॥

मोह मूल दुख रूप सब जानिय जग व्यवहार ।

सत संगति रघुपति भगति सार अंश संसार ॥

व्यापक ब्रह्म अनदिअज अविगत अलख अभेद ।

नेति नेति कहि जाहि नित वरणत वाणी वेद ॥

राम स्वई निज भक्तहित धरि जग मनुज शरीर ।

करत चरित पावन विविध सुनत मिटाहि भवभीर ॥

सखा समुक्ति मन माहि अस परिहरि मोह विकार ।

भजहु राम रघुनाथ कहि हरण घोर भवभार ॥

अहिनिधि कहत राम गुणगाहा । भयो भोर जाम सुरनाह ॥

करि मञ्जन चटकीर ममाये । बन्धु सहित शिर जटा बनाये ॥

लखि सुमत मन भयो दुखारी । कहत वज्रत भरि लोचन वारी ॥

नाथ कहैउ म्रहि कोशलसई । विपिन दिखाय गग अन्हवाई ॥

सीता अनुज सहित रघुनाथे । लायहु फेरि बेगि विज साथे ॥

मुनि रघुवीर सचिव बरवानी । बोलै गिरा धर्म नयसानी ॥

तात तुम्हार मम सब जानत । सत्य समाप्त धर्म नहिं आना ॥

दो० शिदि दधीचि हरिबद नृप रतिदेव बलिभूप ।

धर्म धरयो सहि संकटहि कीरति विदित अनूप ॥
 किरिच्छंद ॥ एक समय शिवि यज्ञकरै महिदेव रहै तह वैठ अ-
 पारन । इन्द्रस अग्नि सुन्यो यशकान त्रिल्यो तह लैन परीक्षहि का-
 रन रा अग्नि कपोत स्वरूप शयो अरु वासव वाज कियो वपुधारन ।
 खद्युत वाज कपोत सन्यो हरिजाय हुर्यो नृप गोद मभारन ॥
 सबैया ॥ पाछयहि धावत वाजगयो तह देखि मृपै असवैन सुनायो ।
 भूप अहौ धरमज्ञ वडै यशपुंज तुम्हार महु सुनि पायो ॥ आवहि
 याचक दार जुकै तुमसों वहे वैमुख जानि न पायो । सो अवधर्म
 सभार करौ यशते यश लोकन भूप करायो ॥
 दो० भोजन मोर कपोत यह त्वहि क्यों गोद डुराय ।
 बहुत दिवस को क्षुधितहो दीजे म्वहि पकराय ॥
 सुनि राजा बोलत भयो श्येन बात सुनिलेउ ।
 पक्षी आयो शरण मम त्यहि कैसे तजिदेउ ॥
 शरण गित आवै जु निज ताहि तजै जो कोय ।
 कोटि ब्रह्महत्या सरिस त्यहि शिरपातक होय ॥
 ताते यह मोते जनि मांगौ । तजि यहि आश पंथ निजलांगौ ॥
 मुनत वाज कह बचन बनाई । धर्म धुरीण अहौ तुमराई ॥
 जो मम अशन देउ नहि याही । तौ निश्चय मम जीवन नाही ॥
 म्वहि विनु मरी सकल परिवार । कवन धर्म तव तुम्हें भुवारा ॥
 एक पुण्य अरु पातक भूरी । इन धर्मन कहु परी न पूरी ॥
 कह नृप वृथावाद जनि करहु । तजवन याहि सकल जो मरहु ॥
 अपर मांगि जो चाहै लेहु । विनु सन्देह वेगि सो देहु ॥
 यहि विधि हठ कीन्है उजवराजा । तव करिकोध कहै उ स्वई वाजा ॥
 धर्मवान जो नृप कहवावो । तौ यहिसम निज मांस खवावो ॥

सवैया ॥ मुनि भूप भंगाय तुला तुरतै यक ओर सो आभि
काटि धस्यो । वैठाय कपोत दुजे पलरा गहि पाणि उठाय न पूस
स्यो ॥ बहु वार धस्यो न पुस्यो जवहीं तवही नृप आपुहिं कूदि पस्यो
लखि लज्जित अग्नि विडौज भये नभ हर्षित जयंजय देव कस्यो
दो० हैं प्रसन्न भगवन्त तव नृप कहैं दरश दिखाय ।

धन्य धन्य कहि धन्य नृप गय हरि अनललेजाय ॥
धर्म हेतु शिवि भूप इति संकट सहै अपार ॥

सो भगवन्त विचित्र यश विदित सकल संसार ॥
भूप दधीचि धर्म के हेता । दुख जो सहै कहै को तेता ।

तनु तजि अस्थि सरन कहै दयऊ । तिनको सुयश लोक तिहुं छयऊ ॥
नृप हरि चंद सुयश जग जाना । मुनिकौ शिकति न सो छलठाना ॥

सर्वसु दीन वेचि निज अंग । कहउ कहाँ लगि बिपति प्रसंगा ॥
धर्म न तज्यो सहै उ दुख जाला । विदित सुयश तिहुं लोक विशाला ॥

रन्ति देव यश त्रिभुवन छावा । बहु उपास करि भोजन पावा ॥
सो यक अभ्यागत को दयऊ । आपु उपास्यहि पुनिरहि गयऊ ॥

दो० धर्म हेतु बलि जावनहिं दीन्ही पीठि नपाय ॥
विदित सुयश तिहुं लोक सो कहउ कहाँ लगि गाय ॥

धर्मवान ऐसे अमित सहि बहु संकट लीन ॥
तनु धन सर्वसु दैदिये धर्म न त्यागल कीन ॥

त्यहिते सत्य तजव हम नाही । नाशै धर्म अयश जग भाहीं ॥
अस विचारि पुर गवनहु ताता । पितुसन जाय कहव असिवाता ॥

नाथ कृपा बल पुण्य तुम्हारे । सब प्रकार वन कुशली हमारे ॥
ममहित शोच करिय जनिनाथा । पितुसन कहव जोरियुग द्वाप्रा ॥
तुमहुं उपाय करव सोइ तोता । ज्यहिन शोचइ सबलहु पितुमाता ॥

सुनि सचिवहिं दुखदारुणभयज । नृप संदेश कहनपुनि लयज ॥
 सवैया ॥ नाथ कह्यो अस कोशलनाथ अवे लघु वै मिथिलेश
 कुमारी ॥ फेरिय ताहि उपायनकै न सकी सहि सो वन संकटमोरी ॥
 आवहि ज्यो सिया लौटि घरै भगवन्त करौ सोइ युक्ति विचारी ॥ पाय
 विना अवलम्ब कह्यु नहिं जीवन मो सुख ज्यो विनुवारी ॥
 शोच्यो प्रियु संदेश सुनि जानकिहिं बहुविधि ॥ सिखत्रनद्रीने ॥
 सासु श्वशुर सुख कहि बहुरि वन दुख प्ररणन कीनु ॥
 सुनि सादर पति बैन बोली ॥ सिया कर जोरि कै ॥
 सुनिये राजिवनै न कृपांसिधु शोभा सदन ॥
 सवैया ॥ जान शिरोमणि ज्ञानमई कुल हंस प्रभाकर हे सुख
 ई ॥ आपु विचारि कहौ जिय सों कह्यु बाहसकै रहि देह विहाई ॥
 गाय प्रभा तजि भानु कहां कह्यु चंद्रिक चंद्र कहौ तजि जाई ॥ यों
 गवन्त सुप्रेम विनै रघुनाथहि सांदर सीय सुनाई ॥
 हुरि सचिवसन कह कर जोरी ॥ क्षमिये तोत ॥ दीठवा मोरी ॥
 श्राजसुत प्रद कमल विहीना ॥ वादिनातेजहल गि विधिकीन्हा ॥
 गणनाथ विनु जग सुख भोग ॥ कह्यु सत्ये सब जोरि योग ॥
 यहिं ते सासु श्वशुर सन मोरी ॥ विनय कर सोदर कर जोरी ॥
 शोच कीजे कह्यु नाहीं ॥ मैं प्रभु संग सुखी ॥ वन माहीं ॥
 मसुनि विकल सचिव सियवानी ॥ कह्यु काहँ सो ॥ दर्शी वल्लानी ॥
 समुभाये बहु विधि ॥ रघुवीर ॥ तदपि न होत सचिव मन धीरा ॥
 शेर धरि सादर रामा रजाई ॥ फिरे सासुमंत सबहि शिरनाई ॥
 दो राम सुमंतहि फेरि कै बहु प्रकार ॥ दै धीर ॥
 आपु लपण सीता सहिता ॥ आये सुरसरि धीर ॥
 शनिश्री मद्यो पांसि हवमात्मज भगवत सिद्धि रचिते भां शिरोमणि प्रथे श्रीराम ॥
 चन्द्रनया प्राग्भवे पुर प्रागमन सचिव सचाव वृत्तानाम पचमो ॥ पाय ५ ॥

॥ सवैया ॥ दीनदयाल सभितन पाल कृपाल सदा सुख दासन
 दायक । वेद-पुराण पुकारत है गुण दिव्य कलाप भरे सर्व स्थायक ॥
 धर्म धुरीण उदार सुखालय वीर प्रसिद्ध धरे धनु शायक । बन्त
 है भगवन्त सदा कर सपुटकै पद श्रीरघुनायक ॥ कुण्डलिया ॥
 राम कह्यो तव केवटहि लै आवहु निज नाव । सुनि बोल्यो केवट
 वचन सुनिये श्रीरघुराव ॥ सुनिये श्रीरघुराव भरम रैरे में जानी ॥
 कीन्ह्यो शुभ सुनि नारि रही जो कठिन पपाना ॥ ताते कठिन न
 काठ डरौ गति सुनि सुनिवासा । मानुष करण सुमूरि अहै पद
 रज श्रीरामा ॥ कविता । पाहन ते काठ की कठोर है न मेरी ना
 नाथ सो उड़ातवार नैक हून लाइहौ । पालौ परिवार सब योही
 वलम्वलाय दूसरो कवार है न ब्रालक्यों जियाइहौ ॥ होय कुल अ
 पने कि हानि जो बड़ाउ नाव द्रव्यहू विहीन क्यो सुदूसरी सज
 हौ । रावरे शपथ वात सँची कहौ भाग्यवन्त धोये विनु धूरि प
 नाव ना छुवाइहौ ॥ धूरि है प्रभाव । पग धूरि को प्रसिद्ध लोक रा
 न लाग अनुराग रूपधारिहौ । मानुष उड़ात है परसि जाहि गा
 में सुखोटी गति काठकी सँभार कौन कारिहौ ॥ गौतम कि ना
 गति होय जो तरणि आजु मरे परिवार सब बाट मोरि पारिहौ
 भाग्यवन्त कीजिये उपाय किन कोटि आपु धोये विनु पावे ना
 पार ना उतरिहौ ॥ सवैया ॥ कोटि करौ किन वान छरौ नहि जी
 वत आपनि हानि करैहौ । मोहि मरे परिवार वचै बनवाहन ही
 सवै भरिजैहौ ॥ लेत ध्ववाय नही प्रद क्यो मम नाव उड़ाइ कह
 तुम पैहो । सत्य कहौ प्रग धोये विना भगवन्त तुम्है नहि ना
 चढ़ैहौ ॥ प्रभु जाहिहु पारहि जान जुतौ सुपखारन पाय कहौ क
 ना । पद धोइ उतरिहौ पार चहौ उतराइ कहू तुम सो में ना ॥ ३

मारहिं लक्ष्मण तीर चहै, जविलौ पद पद्म पखाखँ ना । तव लौ भ-
 गवन्त सुसत्य कहौ प्रभु रौखहि पार उतारखँना ॥ कवित्त ॥ केवट
 के बैन मुनि प्रेम लपटाने चारु बिहसे कृपाल मन मोद भो अपा-
 रही । देखिकै सनेह तासु शीलसिंधु वारवार जानकी लपणँ ओर
 राघव निहारही ॥ कह्यो करु वात सो न जाय ज्यहि नाव तव
 आनि कै सुजल पाँय वेगि तू पखारही । होतहै अवार अब लावै न
 विलंब भूरि धोयकै चरण भोहिं पारको उतारही ॥ व्यापक अ-
 खिल विश्व पूरण विरज ब्रह्म ध्यानन अगम्य जापि योगीजन
 जागते ॥ लावत समाधि शम्भु गावत सुप्रश वेद पावत न पार
 मुनि पाप पुंज भागते ॥ शीलसिंधु नामर उदार वित्त कारु-
 णीक दीनबन्धु दानिदास प्रेमपाग पागते । भाग्यवन्त स्वामि
 रोई पावन सुप्रेम जश ठाढे सरितिस नत केवटसों मांगते ॥ सवै-
 रा ॥ ज्यहि थाह लहै श्रुति शास्त्र नही मुनि ध्यावतिकायन ध्यान
 भड़े । जपि नामतरे बहु पाप भरे नर गोपद सो भवसिंधु बड़े ॥ प्रम-
 गादि अजामिल आदिकवी भय शुद्धकटे दुख जाल कड़े । भग-
 न्त स्वई प्रभु केवटसों अनुरागसो मांगत नाव खड़े ॥ हरिपदछंद ॥
 केवट राम रजाय पायकै परिजन सकल बुलायो । अति आनन्द
 कठौता भरिकै सुरसरि जल लौ आयो ॥ चरण कमल प्रभु धोवन
 लाम्यो कहिन जाय सुखभारि ॥ बरपहिं सुमन देव नभ संकुल जय
 जय शब्द पुकारी ॥ जेपद कमल जहत विधिशांकर मुनिजन ध्यान
 न पाये ॥ ते पद पद्म आजु यह धोवत कुंडव सहित उरलाये ॥ धन्य
 धन्य कहि देवताहि बहु मुदित इन्द्रभी कीन्हे । केवट पाँय पखारि
 वारि स्वह पान कुंडव सह कीन्हे ॥
 दो० कीन पान जल कुंडव सह केवट परम प्रवीन ।

आपत्तियों परिजन सहित पितरपार सब कीन ॥
 तब केवट अति आनंद पायो । सादर आनि सुनाव चढ़ायो
 गयो । पारलै । संवहिं । तुरता ॥ कहिन जाय उर हरप अनंता
 तब केवटहिं । बोलि । रघुराई । कह्यो । लेहु न थोरी । उतराई
 सिय । मुद्रिका देन प्रभुलागे ॥ केवट कहेउ विचन । अनुरागे
 नाराच छन्द ॥ लह्यो न आजु कहि मै कृपा कटाक्ष नाथे
 भिटे दरिद्र दोष दुख जन्म जन्म साथके ॥ किये कलाप काल
 कृपाल मै मजूरिका । दिये विरधि आजु सो वनाय भारि पूरिका
 सवेया ॥ जे पद ध्यावत शम्भु सदा श्रुति गावत कीरति दि
 जगी है । जे पदपंकजसो प्रगटी सरिदेव विलोकत पाप भगी है
 जे पदपंकज पेपन को सुरसिद्धन की नित आसि लग्यो है । धोयउ
 भगवन्त स्वई पदनाथ कृपा अब काह खगी है ॥ जे पदपंकज धू
 ह्ये अघमै गति गौतम तारि लही है । जे पदधोय विदेहलहे सु
 कीरति दिव्य प्रकाश मही है ॥ जे पदपंकज को वरणे श्रुति शार
 पुंज प्रभाव सही है । ते पदकंज प्रक्षाल्यउ मै भगवन्त कमी अब
 काह रही है ॥ इति नाराच छन्द ॥
 दोष फिरेत वार जन्त जानि म्वहिं जो कृपाल कह्यु देव ॥
 सो प्रसाद भगवन्त मै सादर शिर धरिलेव ॥
 नाराच छन्द ॥ किये उपाययो । कदम्बपे कछन सो लिये । स्व
 भक्ति चारुदे विदा सुरामे केवटे किये ॥ पुनः नहयि गंगराम पूजि
 शम्भु भायकै ॥ किये विनै बहोरि । सीय गंग माथनायकै ॥ प्रभाव
 ब्रह्मवारि वारवार ही ब्रह्मन की । दई अशीश गंग तो प्रसन्नपा
 जानकी ॥ कह्यो कृपालु तौ सखाहि भौन आपुजाइयो । तबै नि
 पाद नाथ जोरिहाथ यो सुनाइयो ॥ जहाँ लगापुजाइहो तहाँलु हो

सुधिः पोयं तिते ॥ अति आनंद प्रेम उमंग युतै । अवलोकन को
 शलराज सुतै ॥ सवसो रघुवीर प्रणाम किये । लेहि लोचनला
 मुद्रित हिये ॥ बहु भोतिन आशिरवाद दिये । धरि राघव रूप उ
 नूप हिये ॥ गवने गृह आनंद जाल लही । सुखमा रघुवीर सराहतही
 तव निशि जाति तहाँ रघुवीरा । किय विश्राम हरण भवभीरा
 प्रातकाल उठि प्राग नहाई । सखा अनुजसंह सिय रघुराई
 आय सुलहि करि मुनिहिं प्रणामा । चले वनहिं सानंद श्रीरामा
 ज्यहि मंगे निसरहिं ग्राम किनारे । होहिं मुद्रित सव देखनहारे
 सिय रघुवीर निरखि छवि ऐना । कहहिं एक एकनसो । वैना
 एक कहहिं सियवदन सोहावत । चन्द्रसमान अली म्यहिं भावत
 पोड़श कलनयुक्त निशिराई । सीय वदन सुखमा बहु छई
 शशिमहँ श्याम रेख यक राजै ॥ सियमुखपर लट श्याम विराजै
 शशिहि मृगाङ्क कहत कविभूपा । यह मृगनैन सुखद मुदरूपा
 तापहरत वह यह त्रयतापा । सियमुखशशिसमसखिये कथापा
 एक सखी मुनि कह मृदुवानी । सियमुख कमलसरिस मै जानी
 अरुण मृदुल अरु गंध विशेषी । सिय मुख भारिसकल सो देखी ।
 कमलसुप्रशकविजन मुख गायो । सियमुखसुप्रशलोकतिहुँ छाँयो ।
 सीत सुवेन पंकज ज्जग जानै । यह प्रसिद्ध सीता श्रुतिभानै ।
 उपमा औरुन सम सरि आवै । सियमुखकमलसरिसम्रहिभावै ।
 मुनि पुनि सखी एक कह वाँता । सियमुखसमंन चंदजलजाता ।
 कमल मुदनिशि दिन निशिराई । दुहुन राहु हिमि शत्रु सदाई ।
 सिय मुख दुवने कतहुँ कउ नाही । करि विचारि देखहु मन माहीं ।
 त्यहिते चन्द्र कमल सम जाही । सियमुख सरिस सियमुखआही ।

प्रभु सिय लपण देखि छवि खानी । बड़भागी सब आँपुहि जानी ॥
 पुरजन रहे देखि ठगि ठाऊँ । सर्कहि न बूझि त्रिव्रं अरुगाऊँ ॥
 जे कउ वृद्ध रहे बुधवाना । रहा मरम कछु प्रथमहि जानी ॥
 मन अनुमानि गये ते जानी । यह सिय राम लपण छविखानी ॥
 आदिहिते सब कथा सुनाये । पितु आर्यसु ये वनहिसिधाये ॥
 सुनि दुख भयो हृदय सब केही । राजहि रानिहि दूषण देही ॥
 सवैया ॥ त्यहि औसर आवत एक भयो तहाँ तापस त्रैप त्रिरक्त
 किये । लखि रामहि देख्यो प्रणाम कियो सुउठाय हृदय प्रभु लायलिये ॥
 पुनि लक्ष्मण पायन लागि पस्यो सिय पायन पूरण प्रेम हिये ।
 मिलि फेरि निषेदहि सादर सो अवलोकि रह्यो प्रभु चित्त दिये ॥
 दोष तापस केर प्रसंग यह पस्यो अचानक आर्य ॥
 तोहि वरणि पुनि कहतहौ सोई कथा सुहाय ॥
 सवैया ॥ ग्राम बंधु एक एकन सो कहती नृप बालक देखि
 सुहाये । भाग बड़ो भगवन्त तिन्है जिनके गृहये सुत सुंदर जाये ॥
 कौमल गात किशोर महा प्रति अंग अनंगे प्रभावहु छाये । ते
 पितु मातु कहौ सखिहैं किमि जे वन बालक ऐस पठाये ॥
 दोष मग लोगन इमि देत सुख कृपासिंधु मति धीरा ॥
 सखा लपण सिय सहित प्रभु आये यमुना तीर ॥
 यमुना उतरि सखहि रघुवीरा । विदा कीन भवनेउ धरि धीरा ॥
 प्रभु सिया लपण समेत बहोरी । यमुनहिकिय प्रणाम कर जोरी ॥
 चले विपिन सानेद पुरघुराई । कृपासिंधु भक्तन सुखदाई ॥
 मारग जात पथिक बहु मिलहीं । कहहि देखि मृदु मूरति तिनहीं ॥
 सवैया ॥ सुंदररूप अनूपवने सब राज सुलक्षण अह तुम्हारे ।
 काननपथ कडोर महा करि केहरि शृन्द न जाहि निहारे ॥ संग

धानरूपशीलके अगारहैं। किये मुनिने प्रपाणि गलिये हैं धनुषवान
 कोसे है निपंगकाम कोटि जैतवारहैं ॥ सोहै संग नारि एक अति
 सुकुमारि चारु शोभित शृंगार विभु हेर भूमिभारहैं ॥ भाग्यवन्त
 कार सुख दुखके हरनहार अतिशया उदार काहु नृपके कुमारहैं ॥
 सुन्दर सलोने धन सोनेके बरण चारु मंजुला मधुर मृदु मूरति उदार
 हैं। बीच दीप्ति दामिनीरी भाषिनी प्रकाशमान सुकृत सनेह शील
 सुखमाके सारहैं ॥ भाग्यवन्त रूप भै सुवार कोटिकामरति आनंद
 अगार नेन चैन दैनहार है ॥ रहै न संभार तन देखत अपार छवि
 आली ये अनूप काहु भूपके कुमारहैं ॥ सवैया ॥ नवपंकज लोचन
 चारु बने भृकुटी जनु कामकमान लसै ॥ कंकज शरासन बान
 गहे छवि अंग अनंगन भूरि सै ॥ लिय संग सुभामिनि दामिनि
 सी अबलोकत जो रति मनानसै ॥ भागवन्त प्रभा किमि प्रायु कहौ
 युग मूरति वैतचित सोल खसै ॥ तनु श्यामल गौर केशोर अत्रै
 सुनि तेष किये शुभ शीश जद्य ॥ कंकज शिलीमुख चाप गहे
 सु निपीकसे बर लंक तटा ॥ सुख पूरण लन्द्रे प्रकाश मनो जतिक
 हास्त कोटिक भैत भटा ॥ भागवन्त सुखाना करौ छवि क्यो लखि
 रूपमये नरनारि कटा ॥ सजनी धनि है चहौ ग्राम जहौ सुखधाम
 सुवास कियो नितयेन धनि है त्यहि जानि आली भलि वै विहरे वसु
 याम सखी जितये ॥ धनि वै नरनारि सुभूतल भे सव भौति सदैव
 जिन्है हितये ॥ हमहूँ अवा धन्य अई सवहै भागवन्त त्रिप्रप्राइन्है चिह
 तये ॥ कवित्तना आली एक बोलीवैना सुनी भै ये वात कनि कहौ
 सोवाखानि ताहि सुनि चित्त आइले ॥ ये है राजपुत्र जाते कानन
 सुतपकाजे वनिता समेत पिषि त्रेपहते ताइले ॥ अपालि पितु वैक
 चले क्षितिको हरनभार परै जो न सांच अनि औनि मोहि गाइले ॥

भाग्यवन्त नाम है लक्षण रामचन्द्र चारु कौशलेश, चक्रवर्ति भूपके
 हैं लाड़िले ॥ चतुरंसा छन्द ॥ सुनि त्यहि वैना । भरिजल जेना ॥
 वदयक आली । परम विहाली ॥ कवित्त ॥ श्याम गौरगात अति
 कोमल किशोर वसु माधुरी उमंग अंग अंग में सुखाये हैं । जनु
 रतिनाथ युत रति ऋतुनाथ साथ सुन्दर अनूप वेप मुनिको बनाये
 है ॥ प्राणनकेप्राण जगजीवन के जीवनरय सुखमा समृद्धि कोटि
 कामभा लजाये हे । भाग्यवन्त कैसे पितु मातुते कठिन जिन ऐसे
 सुखधाम पुत्र कानन पठाये हैं ॥ रानिहू अयानि भूरि कीन जो
 न बूझि वात पाहनैते पुंजसो कठोरहीय तासुहै । राजहू न जान्य
 हू अकाज काज आपनो सुधारिवे विचारजे कुवैन केन जांसुहै ॥
 रूपे शीलधाम कोटिकामभासु जैतवार इनके विछोह पाय लोग
 कयो सुपासुहै । भाग्यवन्त आंखिनै में राखिने के योग है य दीन्ह कौन
 भौतितेसु इन्है वनवासुहै ॥ सवैया ॥ अति सुन्दररूप नखाशिख लो
 समहेरिन है उपमा जगकै । सुखसागर नागर आगरहै छविदायक
 मोद सुभायनसवै ॥ पितु मातु कठोर अहे किमि ते पठये असि मूर
 ति काननज्वै । भगवन्त हृदै सुहमेश बसौ । अवधेशके बेश य बाल
 कदै ॥ मृदु पंकज पाँय नहीं पनहीं । बन प्रन्थ महा दुखदायकज्वै
 सुकुमार कुमार अपार । अबै कवहुं न पख्यो जिनको श्रमकै ॥ चलि
 हैं किमितेसु कठोरमंही । अवलोकिय शोचरहयो सखिहै । भगवन्त
 हृदय नितमोसु वसै अवधेशके बेश य बालकदै ॥ सुखधाम अनू
 पम मूरति ये इन को सखि का वनवास चहा ॥ बनजान इन्है बरमा
 गतमें वहि रानि कठोर हृदय न दहा ॥ अत्रिलोकिय काननजा
 सबै कहि है हमलोग विचारि कहा । वहि राज सम्राज विपे भग
 वन्त कहा नर चतुरकै न ॥

यहिप्रकार सब नर अरुनारी । समुभि समुभि मन होहि दुखारी ॥
 कहहि एक एकन समुभाई । लेहु निरखि छवि नयन अर्घाई ॥
 प्रेम विवश देखहि सब शोभा । रूप अपार नयन मन लोभा ॥
 यकटक चितवत संग सब लागे । चले जाहि तनमन अनुरागे ॥
 कउ यक देखि छौह सुखदाई । देहि मृदुल तरुपात विछाई ॥
 कहहि सप्रेम जोरि युग हाथा । क्षणयक विलेविजाहु इतनाथा ॥
 मारगश्रम निवारि प्रभु लीजै । पुनि कृपाल जस भावै कीजै ॥
 तबलगिकउयकजल भरिलायो । अँचइयप्रभु मृदुवचन सुनायो ॥
 ॥ दो० ॥ जानि प्रीति सुनि वचन मृदु बटछाया भलि देखि ।
 ॥ ॥ सीतहि श्रमित विलोकि अतिरामकृपाल विशोखि ॥
 क्षण यक विलेविगये त्यहि ठामा । सीता लपण सहित सुखधामा ॥
 भये मुदित सब नर अरुनारी । दुखितमीन जिमिलहि बहुवारी ॥
 चितवहि सब सादर चितलाये । प्रेम विवश तन सुधि विसराये ॥
 छवि अपार नहि वरणि सिराई । रतिशतकोटि मदन बलि जाई ॥
 सवैया ॥ सुंदर श्यामल गौर कलेवर मोहनरूप मनोहर जोरी ।
 पंकजनैन भुकी भुकी कलकाम कर्मानहुकी गति तोरी ॥ शीश
 जटा मुनिवेष किये धनु पाणिलिये कर त्यों वय थोरी । क्यों भगवन्त
 वखान करौ रतिनाथहुके मति भे लखि भोरी ॥
 राम लपण सिय छवि अवलोकी । यकटक रहै नयनपट शोकी ॥
 पुरतिय धरि धीरज मनमार्ही । सिय समीप सादर चलिजाही ॥
 करि प्रणाम पायन शिर नाई । कहहि सप्रेम वचन रुख पाई ॥
 सवैया ॥ श्यामलमालसो गाल मनोहर कोटिक मैन लजाव-
 नहारे । पंकज लोचन बाहु विशाल सुपाणि शरसन शायकधारे ॥
 त्यों भगवन्त विलोकनि वंक चितै लिय चित्त सुचोरि हमारे ।

पूछति राजकुमारि तुम्हें कहियो। सेखि को वय आहि तुम्हारे ॥
 ॥ दो ॥ धामवधुनेके वचन सुनि मृदुमंजुल सुखऐना ॥
 ॥ ॥ सकृदिसप्रेम सुभायापुनि बोली सिय मृदुवैत ॥ ॥
 गौर शरीर लसुभग ही सुकुमहि । ते मलघु देवर जअहैं हमारे ॥
 पुनि प्रिये ओरुचितै सुखपई ॥ कह्यो स्वपति सिय सियनबुझाई ॥
 सुनि हरप्री अतिसिकली सयात्री ॥ पुनि सप्रेम बोली मृदुवाजी ॥
 धामिकह्यो कोशलपुरु हेरे ॥ काकै सुत देशरथ नृपकेरे ॥
 जाति कहां इत वृत्तहि सिधाये ॥ कारण क्यहि पितुशासनप्रोये ॥
 भई विकल सुनि सिकल सयानी ॥ धन्य धन्य पुनि आपुहिजानी ॥
 वार वार सिय पायन लागी ॥ कहहि सप्रेम वचन अलुरागी ॥
 ॥ सप्रेम ॥ राजकुमारि कनौ महि भारगे आउतीजी ॥ फिर आ-
 नंद खानीती भगवन्त कृपाकरिकै पुनि दर्शन देव सुसेवकियानी ॥
 है हम त्वयके कोइ नही दिशि आपनि हेरि सुप्रेम पिछाती ॥ श्री-
 नंदयालदिया ज वज्यो सब श्रितिल सोहि सुआपन ज्ञानी ॥
 ॥ दो ॥ सुनि सप्रेम वचनके वचन वृद्धय प्रीति पहिंछानि ॥
 ॥ ॥ ॥ बहुप्रकरि धीरेजु द्विये कहि कहि सिय प्रियवानि ॥
 ॥ गीतिकमंड ॥ तव जनि अमुंखु लक्षण लोगन विपितु भग
 पूछत भयो । सुनि तारिनरुमि संकल ज्यकुल मलिम अनआ-
 नंदशयो ॥ मन समुक्ति कर्म प्रभाव अपने हृदय पुनि धीरजक्रियो ॥
 भगवन्त सादरशोभि भारगे सुगमतिन तव कहि द्विये ॥
 तव सिय लक्षण सहित रघुश्रीश । जेले विपिन सानंद सतिधीर ॥
 फेरै सवहि वचन मृदुभाषीन चले भवन रामहि । प्रराखी ॥
 मिरह विपाद अधिक मन साही कहेत परसपरइमि सवजाही ॥
 ॥ कुरडलिया ॥ जनि नोजनि विरचि गति निपद निहुर चित

तौ न भल अनभल भावै ज्वई विन विचार कर तौ न ॥ विन वि-
 शर कर तौ न रूख सुस्तरु ज्यहि कीन्हा । सागर कीन्ह्यो खार शशि
 हे अकलंक जू दीन्हा ॥ दीन्हा करि ज्यहि कज्ज सहित कण्टक
 दूखानी । नीच धनिक बड रंक जाय विधि गति नहि जानी ॥
 दीन्हे विधि जो पै इन्हें दुख दायक वनवास । तौ कत कीन्हे श्रम
 वेपुल रचिरचि भोग विलास ॥ रचिरचि भोग विलास फिरहिं ये
 त्रेपुपद त्राना । नाहै क कृत गज बीजि यान विधि वाहन नाना ॥
 पै पौढ़हिं कुश डासि वादि मृदु सेंजहि कीन्हे । वृथा रच्यो गृहवास
 तहिं तरुतर जो दीन्हे ॥ जो पै ये वन विचरि नित कन्द मूल फल
 वाहिं । तौ विधि अशन सुधादि बहु वादि रचे जगमाहि ॥ वादि
 रचे जगमाहिं फिरत वनपट ये धारे । भूषण वसन अनूप वृथा
 विरचे विधि सारे ॥ सारे सुख जगमाहिं वादि विधि कीन्हे ता पै
 मन मोहन सुखधाम इन्हिं दीन्हे वन जो पै ॥ ५४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 दो० एक कहहिं ये सुठि सुभग आपु मलीने अवतार ॥ ॥ ॥ ॥
 अद्भुत रूप अनूपये विरचे नहि करता ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ देखहु खोजि त्रिलोक सब सुरे नर नाग समेत ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ सचराचर नरनोरि महे को अस प्रभा निकेत ॥ ॥ ॥ ॥
 यहिं विधिसव मन करहिं विचारा । कहि न जाय उर भ्रम अपारा ॥
 राम लपण सिय कृपा निकेता । मगवासिन यहिं विधिसुख देता ॥
 जाहिं चले वन सहज सुभाये । निज शोभा रति मदन लजाये ॥
 ज्यहिं मग जाहिं निकरि दउ भाई । त्यहिं मग रहत मोद बहु भाई ॥
 खगमृग वृन्द निरखि चकि जहि । भ्रकटक रहत देह सुधि नाही ॥
 नगर नगर अस आनंद प्राता । सीता सहित निरखि दउ प्राता ॥
 विनुपदत्राण निरखि मग लोगू कहत नये सैं कानने योग ॥

पाइ अजोपि इन्हें असभाखे । तौ धरि हृदय कमल महँ राखे ॥
 जे कउ तिनहि न देखन पावहि । मुनि स्वरूपते पाछे भावहि ॥
 दौरि निरखि छवि आनंद भरि कै । फिरहि भवन शोभा उर धरि कै ॥
 अत्रल रहहि कर मलि पंछिताई । मुनि छवि हृदय न प्रेम समाई ॥
 सीता लपण सहित । सुरनाहू । देत सबहि मग लोचन लाहू ॥
 अति सुकुमार चले संग जाहीं । श्रम कण छाव रहे मुख माहीं ॥
 सहज सनेह प्रतिहि ऋजु जानी । ब्रह्मत प्रभुहि सीय मृदुवानी ॥
 सवैया ॥ सिय पूछति प्राणमियापति । सो ब्रह्म कानन कितिक
 दूरि अत्रे । प्रभु आपु प्रियाना किये जहँको तजि सुन्दर भोग विलास
 सवै ॥ क्षण एक विलम्ब करौ कतहू तकि पंथ परै तरु छौह जवै ।
 रज भारि वयारि सु कै मुख पे चलिहौ प्रभु आयसु पायो तवै ॥ रं-
 जित लोचन राम प्रभु पियके मुनि कोमल वै न सुहाये ॥ आते
 बन्धु कृपालय नेह सँभारत वारि विलोचन छाये ॥ प्रेम सो पोपि
 कयो अवही वन दूरि धरौ घृति भीरु सुभाये ॥ श्री भगवन्त बुझाय
 चितै पिय ओर चले मृग नैन लजाये ॥ १० ॥ ॥ ॥
 कछुक दूरि लखि छौह गेभीरा । क्षण एक विलै विगये मति धीरा ॥
 समाचार पुर लोगन पायें । तजि तजिकामधाम सबधाये ॥
 राम लपण सिय रूप निहारी । प्राय नयन फल होहि सुखारी ॥
 कहहि धन्य तो पितु अरु माता । जिन जन्मे सुत ये सुखदाता ॥
 आजु धन्य बड़भाग हमारा । जो भरि नयन न इनहि निहारा ॥
 भगवासी यहि विधि नरनारी । निरखि निरखि सब होहि सुखारी ॥
 तव तहँ राम भीर बड़ि जाना । पुनि उठि कीन्हे विपिन पयाना ॥
 फिर मुदिता गृह लोग लुगाई । करत परस्पर राम बड़ि ॥
 कुण्डलिया ॥ आगे प्रभु पाछे लपण मय सीय सुख धाम ॥

ब्रह्म जीवके बीच में जनु माया अभिराम ॥ जनु माया अभिराम
 शिवाशिव गणपति कैधौ । कैसह शची जयंत चले सँग सुरपति
 लैधौ ॥ लैधौ सँग रति मै ननाथ ऋतु जात सुभागे । सीता लपण
 समेत जात कैधौ प्रभु आगे ॥ गीतिका छन्द ॥ सिय राम पंथ च-
 रित्र पावन मोद प्रद मंगलमहा । नहि जात मुखयक वरण सुख
 मै छाया बन मारग रहा ॥ सिय सहित सुन्दर पथिके द्वे सत भाय
 जिन देखे भले ति धन्य विनु श्रम अगम भवभय पार दुख दारुण
 दले ॥ भगवन्तु वह छवि अजहुँ जाके हृदय स्वप्रेहु आवई । श्री
 राम धाम सुजाय जो पथ कबहुँ कउ मुनि पावई ॥ ११७ ॥

दो० यहि प्रकार विहरत विपिन मग वासिन सुख देते ।
 वाल्मीकि मुनि आश्रमहि आये कृपा निकेत ॥

इति श्रीमदयोध्यानिहवर्मात्मजभगवन्तसिंहाविरचितेभक्तिशिरोमणिप्रन्थे
 श्रीरामचन्द्रप्रतिनिपादघाताप्यचरित्रप्रभुसुतालपणसहित
 ॥ वाल्मीकिमुनिआश्रमप्राप्तिघर्षानोनापद्योऽध्यायः ६ ॥ ॥

दो० भवनिधिअगमअपार कहँ सुगमनाव ज्यहि नामत
 जनक सुता रघुनन्दनहि पुनि पुनि करौ प्रणाम ॥
 राम दीख मुनि आश्रमहि शोभां अमित अनूप
 सीता लपण समेत अति पाये सुख सुरभूप ॥
 मुनि रघुवर आगमन तव आये मिलन मुनीश ॥
 प्रभु प्रणाम कीन्होनिरखि मुनिवर दीन अशीश ॥
 अति सप्रेम मुनि रघुवरहि लीन्हे हृदय लगाय ॥
 निरखि राम सुख चन्द्र छवि हर्ष न हृदय समाय ॥
 पुनि निज आश्रम लायके बहु प्रकार सनमानि ॥
 कन्द मूल फल अशनहित दीन्हे मुनिवर आनि ॥
 प्रभुसिय लपण समेत तव कन्द मूल फल खाय ॥

भये मुदित मुनिराज तव दीन्हे आसने लीय ।
 तव करि संपुट करकमल बोले श्रीरघुराज ।
 आजु मुकृत मम सफल तव दर्शन ते मुनिराज ।
 वर्ष चतुर्दश मोहिं प्रभु दीन पिता वनवास ।
 सो अब सुथल वताइये जहं मे करौ निवास ॥
 मुनि मुनि रघुपति वचन मृदु बिले वचन सहेतु ।
 कसन कहौ तुम राम अस कृतपालन श्रुतिसेतु ॥
 तव चरित्र अद्भुत अमित अद्भुत रूप तुम्हार ।
 अनुपम अलख अनादि ज्यहि वेदन पावतपार ॥
 विधि हरिशंकर कौतुकी कौतुक जिक्र अपार ।
 त्रिभुवनपति रघुवंश मणि त्यहि तुम देखनहार ॥
 तेऊ निज बल बुद्धि तव मर्म सके नहि पाय ।
 जानै सो भगवन्त वह ज्यहि तुम देहु जनाय ॥
 तुम कहै जानै जान सो तुमहीं सम है जाय ।
 ज्यों मलय सँग कृष्ण लहि होत मलय सुखदाय ॥
 ते तुम सुरमुनि संतहित लागि धरेउ नररूप ।
 जइ मोहन सज्जन सुखद करहु सुचरित अनूप ॥
 पृच्छेउ म्बुहिं निज रहत हित कहउं सुनहुं सो ठाम ।
 जहाँ लपण सीता सहित बसेहुं सदा श्रीराम ॥

छंदः त्रोटक ॥ जिनके श्रुति-सिंधु-समान परे । यशपावन तो
 सरिजालभरे ॥ कवहुं परसो नहि पूरभरौ । तिनके हृदि मंदिर रूप
 करौ ॥ युगो लोचन चातुकु जे सुकिये । धृत दर्शन बारिद चाह
 हिये ॥ सरिसागर वारि सुनिदत जे । लहि बिंदु स्वरूप अनंदित जे ।
 तिनके हृदियेस्मि प्रकाशभरौ । सिय मानुज राम निवास करौ ॥

सुरवृन्द हरपि जै जै बहुभाखी । गमने निज निज धाम हृदय सिय
 रामहिं राखी ॥ सप्राचार मुनि सकल अत्रि आदिक मुनिवृन्दा । आये
 तहैं सानंद सुखति देखन सुखकन्दा ॥ प्रभु प्रणाम उठिकीन दीन
 आशिष सर्व काहू । राम लपण सियरूप निरखि लहि लोचनलाहू ॥
 भये मुदित मुनिवृन्द राम बहु विधि सनमानी । किये विदा सानंद
 सब कहि कहि मृदुवानी ॥ मुनि रघुवर आगमन मुदित सब कोल
 किराता । कन्द मूल फल भूरि चले लै भरिभरि पाता ॥ आये तहैं
 सानंद भेटदैं प्रभुहिं जुहारी ॥ निरखि निरखि सियराम रूप ब्रह्म
 होहिं सुखारी ॥ जानि प्रीति बहु भांति तिनहिं रघुपति सनमानी ॥
 प्रभु प्रसन्न अवलोकि कहैं सादर मृदुवानी ॥ सवैया ॥ नाथ सनाथ
 भये सवहैं हम आपु सुपङ्कज पांय निहारे । कोशलनाथ कृपालत
 वागमना जु भये बड़ भाग हमारे ॥ वास किह्यो भल जानि यहाँ
 रहवै सब काल सुआपु सुखारे । नाथ न आयसु देत सक्यो हमसे
 कहे सकुटुम्ब तुम्हारे ॥

दो० मुनि सप्रेम तिनके वचन रघुपति राजिवनैनी ॥

परितोषे बहुविधि सवहिं कहि सप्रेम मृदु वैनै ॥

विदा किये मुनि सबहिं प्रभु चलेनाथ पद माथै ॥

आये निज निज भवन सब कहत रामगुण गीर्थ ॥

यहि प्रकार कानन सुभंग सिय समेत द्रु भायै ॥

पति पति सहि परम आनंदयुत सुरनर मुनि सुखदायै ॥

सवैया ॥ जादिन ते करुणा करिकैं सिय संयुत राम वसे वन

आईन तादिन ते सब जीव सुखी अति होत भयो वन मंगलदाई ॥

आनंद पूरि रह्यो सब ठाम सुजाहिं जहाँ जहैं दूनहुँ आई क्यो भो

गवन्त विमान क्रमै कानन चाल रह्यो छविदाई ॥

सोहहिं । अतिवृक्षकी-पांती । फले प्रसून पल्लव बहु भांती ॥
 ललितलतान वितान सुहाये । विहंगवृन्द तिन महँ छविछाये ॥
 शीतल मंद सुगन्ध ध्वयरी । चलत सुभाय ताप त्रयहारी ॥
 फुले सरन सरोज अपारा । अलिगण करहि मुदित गुंजारा ॥
 खग अनेक बहु बानी । बोलै । सुनत । सुख मन धीर न डोल ॥
 करि हेरि कपि वृक कोल कुंगी । वैर विहाइ फिरहिं एकसंगी ॥
 राम कृपा भय कोहुहिं नहीं । सुखी सकल बनचर बनमाही ॥
 कहीं प्रभाव बहुत किमि गाई । जहाँ वास कीन्ह्यो प्रभु आई ॥
 दो० । गिरिकानन सरसरित वर जावत त्रिभुवन माहि ।
 चित्रकूटके भागको सब मन रहे । सराहि ॥
 यहि विधि सीयसहित द्रुमभाई । तसहिं त्रिपिन त्रिभुवनसुखदाई ॥
 मन वच कर्म जानि निजदेवहिं । लपण रामपद पंकज सेवाहें ॥
 सुखी परमा प्रभु संग वैदेही । करत न सुरति मातु पितुकेही ॥
 कहहिं राम बहु कथा पुनीता । साँदर सुनिहिं लपण अरुसीता ॥
 दो० । चित्रकूट यहि विधि सुभग । सीय समेत द्रुमभाय ।
 पराणशाल राजहिं मुदित शोभा कहि नहि जाय ॥
 रनिश्रीमद्रयोध्यासिंहनस्यरुद्राश्रिमोक्षमजभगवन्तासिहाधिरचितेभक्तिशिर
 माणिक्ये श्रीरामचन्द्रचित्रकूटविलासवर्णनोनांसप्तमोध्याय ७ ॥
 दो० । वरदायक वरदायकन वरदायक सुखधाम ।
 जनकसुता रघुवीरपद शिरधरि करी । प्रणाम ॥
 चित्रकूट ज्यहिविधि रहे सीयसमेत द्रुमभाय ।
 सो चरित्र पावनपरम कहीं कछुक भे गाय ॥
 अब सुमन्त ज्यहिविधिगयो फेरि । अवध दुत्तमानि ।
 मो चरित्र संक्षेप में साँदर कहौ बवानि ॥

॥ शिलाचन्द्र ॥ लवट्यो प्रभुहि पठाय भवन निज जत्रिहि निपादा ।
 देख्यो सचिवहि आय परे महिं विकल विपादा ॥ रत राम सिय
 राम देखि दुखभयो निपादै । समुभाये बहु भोति सचिव अव तजहु
 विपादै ॥ बहु प्रकारै धीर यान वरवस वैठाई ॥ राम विरह दुखदीन
 सचिव स्थहाँकि न जाई ॥ चलत नहि ह्यहिहिनात विकल दिसि
 दक्षिणदेखा । वाजिदशा अवलोकि भयो दुख गुहहिं विशेषी ॥
 ॥ दो० ॥ तव दीन्हे करि साथ निज सेवको चारि बुलाय ॥
 ॥ हाँकि स्थहि ते अवधपुर चले सुमन्ते ल्यवाय ॥

बहुविधि शोचि सुमन्तर करमीजै पछिताय ॥

रामहि विपिन पठाय पुर जाव कवन मुहलाय ॥

॥ पंचराचिता यह अधमतनु आखिर रहि न निर्दान ॥

॥ हाँकि कसन लहेउ जग सुप्रशवर विछुरत श्रीभगवान ॥

॥ कहे पुरजन मोहिं विलोकि जब धाय पूछिहो आय ॥

॥ काह कहव मे तिनहिं तव आयो विपिन पठाय ॥

सवैया ॥ मातुसवै दुखदीन महा अवलोकि हेम पुछिहो जब आय ॥

कौन सुआननते कहवै तव कौन संदेश तिनहे सुखदाई ॥ आय

मे कुशलात धरै वन सानुज राम ससीय पठाई ॥ पूछिहि जो त्यहि

उत्तरदेव सुलेव यही यश औधिहि जाई ॥

दो० पूछिहि मोहि विलोकि जब राज महादुख दीन ॥

कहिहो का तव जासुकर जिवन रामआधीन ॥

सो० यहिविधि करत विपाद तमसातठ आयो तुस्त ॥

कौनहे विदा निपाद फिर पायपरि मन दुखित ॥

सवैया ॥ वसहानि गलानि सुमन्त महा सकुचे पुर पैठत माहि

हिये । कहिजाय न तामु दशातनकी जनु बाधिण गोबध जाल

कये ॥ तरुकेतर बैठि त्रितायदिनै भई सौंभं सुऔसर जानिलिये ।
 भगवन्त घरीयुगं रातिगये चूपके स्थलै पुरपवदिये ॥
 दो० माधव कृष्ण सुबाण तिथि शोये तिशारधयोम ।
 आय राखि रथा द्वोरुचूप रद्योजाडि छिपि धाम ॥
 समाचार सुनत ध्याये भूपति द्वार ॥
 रामरहित अवलौकि रथ भय सब विकल अपारा ॥
 पुनि सुमन्त आगमन अवसू भई सब विकल परम रनिवास ॥
 जाग्यो भवन भयानक कैसे । प्रेत निवास करत जहँ तैसे ॥
 विकल सकल त्यहि पूछै लीनहा । सज्जिव शोकवश उतरन दीनहा ॥
 पुनि सुमंत भूपति पहँ गयेऊ । नृपगति देखि अधिक दुख भयऊ ॥
 दो० रामा विरह व्याकुल नृपति पत्नो धराणि यहि भांति ।
 सुरपुर तेजनु भूमि पै खसि नृप पत्नो ययाति ॥
 नृप ययाति कै गति भै जैसी । करि संक्षेप कहौ कहुँ तैसी ॥
 यकसै एक यज्ञ उन कीनहा । यही देह सुरपुर लै लीनहा ॥
 तब हरि निज दुख गुरुहि सुनाये । सुनत बृहस्पति युक्ति बताये ॥
 धरि द्विज रूप शक तहँ गयेऊ । नृप ययाति ते वृकत भयऊ ॥
 आपु कीन का पुण्य अपारा । यहिस देह यहि लोक सिधारा ॥
 सुनि ययाति मुख वरण्य लीना । वरतहि पुण्य भई सब क्षीना ॥
 पुण्यहीन महि गिखो ययाती । नृपदशरथ गति भै त्यहि भांती ॥
 दो० भूप मनोरथ अमरपद भूमि मनोरथ वाम ।
 वरण करि मुख धर्म निज पत्नो भूमि परिणाम ॥
 जाय सुमंत वरण शिर तावा । देखि भूप उठि हृदय लगावा ॥
 अतिसनेह पूछत नृपतेही । कहुँ सुमंत कहँ रामसनेही ॥
 कहौ लषण कहँ सिय सुकुमारी । पूछत राउ नयन भरिवारी ॥

सखा कुशल कहु रघुपति केरी । गये बनहिं की आन्यहु फेरी ॥
 कहिनि सदेश राम कह्यु तोही । सपदिमुनाउ सचिव सो मोही ॥
 राजदेन कहि बनहिं पठाये । हरप विप्राद्र न कह्यु मन लाये ॥
 अस सुत गये रहे जो प्राणा । तौ म्वहिसम को पापनिधाना ॥
 वेगि सखा स्वइ करहु उपाई । राम लपण सिय देहि देखाई ॥

सवैया ॥ धारि सुधीर सुमंत हृदै नृप सों करजोरि कहयो मूढ
 वानी । राजशिरोमणि चक्रवती तुम धीर धुन्धर परिडतज्ञानी ॥
 सेवहु साधु समाज सदा नृप कीरति पावन तौ जगभानी ॥ त्यों
 भगवन्त विचारि हिये नृप धीर धरौ समया अनुमानी ॥

दो० जन्ममरण विछिरन मिलन हानि लाभ सुखशोग ।

नाथ होत सब साथही कहत वेद बुध लोग ॥
 असनृप समुक्ति शोक परिहरहु । समय विचारि सुधीरज धरहु ।
 प्रथम कीन तमसातट वासा । दुसरे दिन गये सुरसरिपासा ।
 तिसरे दिन उठि होत सकारे । लय बट पय शिर जटा सवारे ।
 सीता लपण सहित रघुवीरा । चढेनात्र लखि मोहि अधीरा ।
 चौपैया छंद ॥ लखि मोहि अधीरा धरि उरधीरा कहयो वचन
 रघुराई । पितुसन हुतिमोरी तुम करजोरी करव विनय शिरनाई ॥
 चिता भमलाई करिय नराई म्वहिमुद कृपा तुम्हारी । आयसु प्रति
 पाली फिरिहौं हाली तजि अशोच सुखकारी ॥ जननिन समुक्ता
 धीर धराई विनय भौति बहुकीन्हयो । गुरुसन पुनिजाई पद शि
 नाई कहि सदेश यह दीन्हयो ॥ स्वइ करव उपाई ज्यहि दुख

यहिविधि रघुनायक जनमुखदायक कह्यो मोहिं समुभाई । केवट
 तवपाई रुख रघुराई पारहि नावचलाई ॥
 यहिविधि राम लपण सियसंगा । चले नावचटि पारहि गंगा ॥
 मैं लखि नैन जियत फिरि आयो । म्वहिंसम पापवन्तको जायो ॥
 सुनतपरयो महिविकलभुवात् । मणिविहीनजिमिव्याकुलव्यात् ॥
 समयशोक किमिकहौ वखानी । सुमिरि सुमिरि सवरोवहि रानी ॥
 दो० राममातु धरिधीर उर बोली वचन गंभीर ।
 नाथधरिय मनधीर तौ फिरि मिलिहैं रघुवीर ॥
 सुनि नृप चितयो अखि उधारी । तलफत भीनलह्यो जनुवारी ॥
 उठे वोलि कहँ राम हसारे । कहँ सीता कहँ लक्षिमण प्यारे ॥
 वाखार ॥ इयि कहि नरनाहू । भयो अधिक उर दारुणदाहू ॥
 यहि अवसरकर शोकअपारा । को असधीर जो वरणैपारा ॥
 दो० अन्धीअन्धा शापकी तव सुधि हृदयसुर्कान ।
 कौशल्यासन हाल सो । संव नृप वरणयु लीन ॥
 तापसान्ध अन्धी विख्यता । सरवन के ते हे पितुमीता ॥
 सरवन तिनहिं तृपितजियजानी । सरयूतट गृय आनन पानी ॥
 बोस्यो जवाहि कमण्डल जाई । सो ख कल्लुक भूप सुनिपाई ॥
 चीन्ह्योनेहिं निशि नृपकरिजाना । त्यहि भ्रमते नृपमाख्यो वाना ॥
 लागत शर सरवन मरिगियऊ । तवतिन नृपहि शापअसदयऊ ॥
 हमहि शोक दीन्ह्यो सो पैहौ । पुत्रविह तुमहं मरिजैहौ ॥
 इति इतिहास भूप सुधिआनी । कौशल्यासन कह्यो वखानी ॥
 बहुत बढ़ाय कह्यो मैं नाही । बिदित कथा अघ्यातम माही ॥
 यह अपराध बहुत मैं कीन्हा । उदय प्राप सोई अव चीन्हा ॥
 कहि अस विकल्पस्यो नरनाथा । धृक धृक जीवन विनु रघुनाथा ॥

हाय हाय कहि कहि सियरामा ॥ तनु तजि गयो भूप सुरधामा ॥

दो० लखि लागीं रोवन सकल रानी हति शिरपानि ।

॥ १०० ॥ भूपरूप गुण तेज बल शील सुभाव बखानि ॥

॥ १०१ ॥ विलपहि दासी दास सब पुरजन परिजन लोग ।

॥ १०२ ॥ परयो रुदन घरघर अवध भूपभरणके शोभ ॥

॥ १०३ ॥ होत प्रातः मुनि आयकै । सबकर शोक मिटाय ॥

। नृपतनु राखि सुयोनि करि लीन्है । दूत बुलाय ॥

। कह्यो बेगि तुम । जायकै लीवहु भरतहि बोलि ।

॥ १०४ ॥ भूपभरण करि हालि यह कह्यो कतहुँ जनि खोलि ॥

॥ १०५ ॥ यहै कह्यो पठ्ये तुमाहि । गुरुबुलाय द्वेषभायि ॥

॥ १०६ ॥ मुनि मुनिवरके बचनवर चले दूत तुर धाय ॥

। पहुँचे दूत भरत । यह जाई । गुरुनिदेश मुनि दूनौ भाई ।

। गमने तुरत शोच । अधिकाई । पुरसमीप पहुँचे जव आई ।

। लगेहोन । अशकुन । बहु भौंती । खर भृगाल स्वकरहि कुभौंती ॥

। मिलहि लोके कछु कुशल न कहही । करि प्रणाम निजभारगगही ॥

। केकय सुता सुन्यो । सुत आवत । उठी तुरत । उर । चाचि । बढावत ॥

॥ १०७ ॥ सत्रैया ॥ केकय जदिनि । मंद महासुत आवत जानि । उठी हरपाई ।

। कंचन थार । सत्रारि । सुआरति । मंगल वस्तु भरे । समुदाई ॥ १०८ ॥ द्वारहि आय

। मिली । भरत । करि आरति । पुजि । प्रमोद । बढाई । त्यों । भगवन्त । सुभेदि

। भली । विधि । वारहिंवार । सुमदिरलाई ॥ १०९ ॥ जाइ ।

॥ ११० ॥ दो० भरत दुखित परिवार । लखि लहतनि मनमें चैन ।

॥ १११ ॥ सुतहि सशोच विलोकि । तब बोली केकई वैन ॥

॥ ११२ ॥ वन्धुधन्द ॥ पूछति केकई पुत्रहि बाता । खरि अहै मम नैह

। ताता ॥ भरत सबै कहि खरि सुनाई । बूझेउ फेरि इहाँ कुशलाई ॥

मुककदामिच्छन्द ॥ कहीं कहु वेगि अहै मम तात ॥ कहीं कहु मातु
 सबै कुशलात ॥ कहीं कहु राम सिया सुखदाय ॥ कहीं कहु ल-
 क्ष्मण-प्रीतम भाय ॥ कमलछन्द ॥ सुनत सुवन धयने । ठन्यसि
 कुमति फयन ॥ सखिछन्द ॥ नैन नीरु दारि । बोलि चैन मारि ॥
 कवित्त ॥ राज काज साज सब सहित कुशल क्षेम सकल प्रकार
 तात वात में सेवाखण्ड ॥ भई है सहाय मम मंथरों परसपीव देखि
 जो नशात काज आपने सभाखण्ड ॥ भांगि राजा हेत तव कटक
 उखारि सब थोरिक सिवांत विधि बीचही विगाखण्ड । पाये न वि-
 लोकन महीप पुत्र राज तव त्यागि तनु आप सुखलोकही सिधा-
 खण्ड ॥ सुनत भरत भये सानुज विकल भूरि परमहि मुद्धित स-
 भारना सुगातही । तलफत मीन जनु पीन विनु दीना अति हाय
 हाय हाय कहि रहे छेरि तातही ॥ गयो सोपि रामही न तात गहि
 पाणि मोहि पायो में न देखने जयन तोहि जातही ॥ भाग्यवन्त
 धारि उर धोरज सभारि उठि पूछत सप्रेम वारवार पुनि मातही ॥
 तोमरछन्द ॥ क्यहि हेतु गे मरि तात ॥ भवहि वेगि सो कहु मात ॥
 सुनि भरतके डमि दैन ॥ कह मन्दधी दुख दैन ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 दो ॥ देवसुर संगामे ते प्रमहि दिन तले जुकीन ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ सो करनी सब आपनी कुटिल कुमति कहि दीन ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 गीतिकाछन्द ॥ सुनि राम सिय वन गमन भरतहि विसरि पितु
 मरिवो गयो ॥ गिरि परेउ मुद्धित भूमि तलफत हृदय दुख दारुण
 भयो ॥ भवहि लागि सब सुखा त्यागि निज सिय राम वन मारग
 गहे ॥ अनुमानि मन सब हेतु आपन थकित धरि मौनहि रहे ॥
 मोदकछन्द ॥ व्याकुल देखि सुते समुझावत ॥ मानहु लोन जरम
 लगावत ॥ तात महीप न शोचन योगहि । पुण्य विद्वै फल कीन्हउ ।

भोगहि ॥ सवैया ॥ जग रीति है जीवन मृत्यु सदा त्यहिते नृप
 लागि न शोच धरौ । नहिं होत है आपन कीन कछ सुत होत स्व
 जुविरधि करौ ॥ भगवन्त हिये अनुमानि यही धरि धीरज शोच
 तजौ सगरौ । ससमाज नृपायसु राज करौ सुप्रजा परिवारक शोक
 हरौ ॥ रथोद्धताञ्जन्द ॥ राज कीजिय सु यों जबै कह्यो । सो सुने
 भरतको हृदै दह्यो ॥ भेति व्याकुल संभार ना रही । फेरि धरि धृति
 त्रैन यों कही ॥ कवित्त ॥ जो पै तव चित्त वीचरही यों कुमति नीच
 दीन्हे क्यों न मीचु मोहिं जन्मतहि वावरी । दीये कुल नारा की
 एकही सुभार तय पखो सूक्ति काह तोहिं कीन्हे जो कुदावरी ॥
 कीन्हेसि तु ऐस जैस करी है न कोई जग पापिनि प्रतीति तोरि
 कीन्हीं किमि रावरी । ऐसो बर मांगते खसी न महि जीह तव परे
 वृभि मुख मै न भयो उर धावरी ॥ सवैया ॥ हरि बुद्धि लई विधि
 अंत समय नृप वात न लीन विचारि हिये । रघुनंदनसे सुत जाहि
 वने इति वैन लया ज्यहि कान क्रिये ॥ अब तोहिं कहा बहु भांति
 कहा तै तौ सब काज बनाय लिये । वन लक्ष्मण राम ससीय पदे
 पति मारि हमै ब्रह्म राज दिये ॥ भारत नोह न नेकु डरी वर मांगि
 वने सियराम पठाई । कौन सो प्रेत पिशाचिनि है कहँकी नृप वामभई
 अब आई ॥ जो त्रहिं राम अहित लगे कहु सत्य कठोर हिये दुख
 दाई । जोहसि सोहसि मूदि मुखै उठि अखिन ओट तु वैठहि जाई ॥

दो० त्यहि अवसर कुवरी तहाँ आई सजि सब गात ॥

॥ लखि सकोध उठि शत्रुहन हनि मारी यकलांत ॥

॥ कवित्त ॥ लागत चरण चोट गिरी सो धरनि जाय कूबर गो
 दृष्टि फटि फाटि गो कपार है । गये मुख दृष्टि दंत दलित अधर बीच
 संडित सुजीह जोर चली रक्त धार है ॥ हाय हाय हाय कहि रोवन

पुकारि दैव करत सुनीकं फल पायों में व्यकारहै । सुनि रात्रु आरि
धारिकेशन घसीटि पीटि डारी तन तासु करि दुर्गति अपारहै ॥

दो० भरत दयानिधि देखितव दीन्हें ताहि छोड़ाय ॥

कौशल्या के भवन पुनि आये चलि द्रुत भाय ॥

पंकज वाटिका छन्द ॥ राम जननि गति जाय लेख्यो जव ।

शोक विकल द्रुत भाय भये तव ॥ सवैया ॥ पहिने पट अंग मलीन

मेहा वपु गौर अतीव सुश्याम भयो न कृशगात गयो रहि अस्ति

मई हत श्रीमुख जाल उदासि छयो ॥ दुखभार सँभार न कारिसकै

रघुवीर वियोग त्रिताप तयो ॥ जनु कल्पलता वर कानन में छवि

धाय रही सुतुपारहयो ॥

राम मातु जव भरतहि देखी ॥ उर उपजा अनुराग विशेषी ॥

लगी उठन महि गिरी भँवाई ॥ भरतहि देखि बहुरि उठिधाई ॥

पुनि गिरि परी अजिर महमाता ॥ निरखि रोय दीन्हें द्रुत भ्राता ॥

भरत उठाये चरण शिर नाये ॥ तवहि मातु गहि हृदय लगाये ॥

नयनन नीर भरे द्रुत भाई ॥ समय विपाद बरणि नहि जाई ॥

कौशल्या तव धीरज लाई ॥ बहु प्रकार भरतहि समुभाई ॥

अचल आंसु पाँखि पुनि रानी ॥ कहत भरत सों इमि मृदुवानी ॥

तुम विन तात मौर यह हाल ॥ उठि न सकौ तनु परमविहाला ॥

राम लपण सिय वनहि सिधाये ॥ करि मुनि वेप पयादेहि पाये ॥

राम विरह भूपति तनु त्यागी ॥ सुरपुर गयो आपु वड़ भागी ॥

मे न गइउँ संग तज्यउँ न प्राणा ॥ को पापिनि जग मोहि समाना ॥

मातु वचन सुनि भरत समुभाई ॥ भये विकल तन दशा भुलाई ॥

रोवहि विकल सकल रनिवासू ॥ कहि न जाय जसभयो हरासू ॥

बेलि भरत धीर धरि बाता ॥ वृथाजगत जनम्यो म्वहि माता ॥

भेद हरिजनमें लावत ॥ पिरधन परतिय काज लाज तजि निशि
दिन धावत ॥ देहिं विप्र गुरु शोक मातु पितु चरण न सेवैं ।
करै न तीरथ वर्त विनाहरि अर्पण जेवै ॥ लोभी लम्पट चोर मांस
मदिरा जे खाही । नितउठि ठानै रारि साधुसंगति नहि जाहीं ॥
होय तिन्हि जो पीप देउ मोकहैं विधि सोई । जो जननी यहि
माहिं मोर तनको मते होई ॥

दो० कर्म वचन मन छाडि छल जिनहि न हरिपद नेहु ॥

३३ जिनके गति स्वहि देहु विधि जो जानौ मत येहु ॥

गीतिका छन्द ॥ मुनि भरतके इमि वैन मृदु शुचि सरल सुदि

साचि सदै ॥ भरि नीर नैनन जननि पुनि पुनि कहत धरि धीरज

दृढ ॥ तुम तात करिय न शपथ तुम कहैं प्राणसम प्रिय रामहै ।

घुबरहिं तुम प्रिय प्राणसम सुत कोउकाहु न खांमहैं ॥

दो० मातुमते मत ताततव कहे जो लघु मति कोइ ॥

शुभगति सुयश सुधर्म सुख स्वमेहु लहै न सोई ॥

छन्द ॥ कहि वचन अस पुनि मातु भरतहिं पाणि गहिउर ला-

पऊ । अनुरोगवश सुत स्वतयनपय नीर नैनन छायेऊ ॥ यहि

भोति बिलपत रेनि विती प्रात मुनिवर आयेंऊ । उपदेश बहु विधि

देइ भरतहि सवन धीर धरयेऊ ॥

दो० गुरु वशिष्ठ आयसु भरत उठै करन पितु काज ॥

बोलि सचिव सेवक अनुज कह्यो सजहु सबसजि ॥

छन्द ॥ तव वेद सीति न्हेवाय नृप तनु विविध गंध लगायकै ।

सुन्दर विमान वनीय सजि त्यहि माहिं नृप पाँदायकै ॥ करि वि-

नय राखी मातु सेव पुनि सरयुतीरहि ल्यायकै । चंदन अगर वहु

मार आये अभित गंध भंगायकै ॥ विरचे चिता भलि भोति लुनु

सोपान स्वर्ग सुहावनी । ज्यहि भौति कीन्हि दाह क्रिय तहें भक्त
 रवि सनभावनी । ज्यहि भौति कीन्हि दाह क्रिय तहें भक्त
 दोष अवध पूर्व त्रौकोश पै घाट विद्ध हरि जानि ।
 तहें अदर्श महि शोधिके दाह क्रिया क्रिय आनि ॥
 छपै ॥ दाह क्रिया करि सकल न्हाय तिल अंजलि दीन्हें ।
 शोधि सुमृति श्रुति शास्त्र सविधि दशगात्रहि कीन्हें ॥ भय विगुण
 बहु भौति बोलि विप्रन दिय दाना । धेनु वाजि गज अन्न वसन
 भूषण धननाचा ॥ बहु भौति दिजन सनमान करि दिये दान अ
 भिलाखसों । पितु हेत भरत करनी लुक्रिय कहि न जाय मुखला
 सों ॥ वरवैद्य ॥ माधव शुक्ल पंचमी चंद्रसुवार । जानि सुदि
 मुनि गये भूप द्वार । पुरजन प्ररिजत सत्रिवन सकल बुलाय
 राजसभा महें वैदे सत्र मिलि जाय ॥ तत्र तहें पये बोलि भर
 दउभाय । आवत भये तुरत गुरु आयसु पाय ॥ निज समीप वैदे
 मुनि गहिपानि । पुनि बुलाय मुनि पठई तहें सत्र रानि ॥
 दोष तत्र शिष्ट मुनि भरतसन भावकाश सब जानि ।
 ॥ धर्मनीति मै वचन मृदु कहत प्रेम रससानि ॥
 कही प्रथम मुनि के कर्करी कीन जो कठिन कुदाव ॥
 राम लपण सिय पठय वन दीन्हें सि सत्रहि कुघाव ॥
 पुनि नृप संत्य सुधर्म व्रत कीन मुनीश बखान ॥
 ज्यहि निवाहि निज प्रेम प्रण तृण सप्त त्यागे प्राणि ॥
 सवैया ॥ शोचन कीजिय भूप हितै ज्यहि आपन पुरण प्रेम
 कियो है ॥ राम त्रियोग कृशानु महा तृण सों धरि जो निज प्राण
 दियो है ॥ भोग विलास कलाप क्रिये लखि जाहि सिहात सुरेश
 हियां है ॥ त्यो भगवन्त रखो यशचाय मनो शशि शर्द प्रकाश

वियो है ॥ कवित्त ॥ शोचिय महीप सो न नीति में प्रवीजि जौन
 शोचिये सो विप्र जाहिं, वेदको न ज्ञान है ॥ शोचिय सो वैश्य धन-
 वान है कृपण जौन, शोचिये सो शूद्रकार विप्र अपमान है ॥ शो-
 चिय सो नारि पतिवचक कुटिल जौन, शोचिये सो बटु तजि ब्रत-
 रत्न आन है ॥ भाग्यवन्त सोई सब भुँति है सुशोचनीय जाके नहि
 प्रान प्रीव, भक्ति भगवान है ॥ सबैया ॥ शोचइ योगीन्द्र कोरालराज
 भुजासु प्रभाव तिहूँ पुर जायो । जा गुनगाथ बखान करै हरि शंकर ब्रह्म
 पुरानन गायो ॥ तात पिता जस आपु भये तस है तहि होन न है कहूँ
 आयो । त्यो भगवन्त सुभागवली, अवधेशसमान नहीं को उजायो ॥
 दो० ताते तात न क्रीजिये शोच कछु मन सोहि । ली ल
 ॥ होनहार जो होत है होत अरे सो नाहि ॥ तात
 ॥ सबैया ॥ केकड़ कूर कठोर महा त्यहि काह कहौ नहि जात कही है ।
 ताय कुबद्धि मई पुर आगि प्रचंड सबै नर नारि दही है ॥ सातु ज
 यिय पठैवन राम कलंक विधौपन आपु लही है । त्यो भगवन्त न जाय
 ही विधिकी विधिताति कठोर सही है ॥ राम स्वभाव ज जाय कहयो
 पेतु आयसु जेतजि भूपणसारे । बलकल चीरे सँवारि तुरंत उठे कहुँ
 गानस खेद न धरै ॥ द्वारहिं द्वार बुझाय सबै पितु प्रकज पाय पुनीत
 जुहारे । धर्म धरन्धर धीरनि, लै पितु आयसु कानुन राम सिधारे ॥
 दो० सुनहु भरत भूपहि वचन प्रियान प्रिय निज प्रान ।
 ताते तात सुक्रीजिये ताके । वचन प्रमान ॥
 ॥ रोला छंद ॥ ज्यहि रघुवर हित लागि तजे तृणसम निज प्राना ।
 करहुं तासु फुरवैन धर्म इति वेद बखाना ॥ तुमहि राज नृप दीन
 ताहि कीजे सुखमानी । यहिसम धर्म न आज्ञ पुत्र पालै पितु वानी ॥
 दो० परशुराम पितु शामनहि कीन्हे बध निज माता ।

सवैया ॥ छीकं सुमंगल धाम अहै सुविचार कियो कहु विप्र
 नाहीं । संगलिये पुर लीगो सवै रघुनाथहि भरत मनावन जाहीं ॥
 सो मय बैन प्रतीता करौ तुम जाय मिलौ चलि कै उन पाहीं ॥ सा
 हंस कर्म करी तहि कोइ करी सो विचार करी मनमाहीं ॥
 दो० सुनि निपदिपति हरपि कह कहत बूढा मलि चारै ॥
 साँव विनु बूके सहसा करै सो पाखे पछितात ॥
 अस मैन सुभिक्षु मुदित गुहराजा ॥ तुरत साजि सब भेंट समाजा ॥
 खगमृग विविध वसत धन मीना ॥ कंद मूल फल सुस्सरि पीना ॥
 मिलन साज सब सजि गुहनाथा ॥ चले उ मिलन लै पुरजन साथ ॥
 जाय प्रथम भुनि पद शिरनाथा ॥ प्राइ अंशीश भरत पहुँ धावा ॥
 आवत देखि भरत रथ त्यागी ॥ चले उ जानि रघुनर अनुरागी ॥
 केवट जाति गाँव निज नामा ॥ कहि पुनि भरतहि कीन प्रणामा ॥
 करत प्रणाम भरत उर लाये ॥ अति प्रिय मनहुँ लपण कहँ पाये ॥
 निरखि देव नस बरपहि फूला ॥ जिय जय करहि मरम जनु कूला ॥
 सवैया ॥ लो कहू वेद सवै विधि नीचे निपादाहुये तिन जा पर
 छाई । होय नै सो विनु मोजन शुद्ध कहुो इमि वेद पुराणत गाई ।
 भेंट ताहि प्रकृत प्रेम सुअंक अरे रघुनन्दन भोई श्रीराम को किं
 कर है भगवन्त लखो नहि को जग जाल बड़ाई ॥
 दो० मिलि सप्रेम केवट भरत पूछी कुशल सुभाषी ॥
 कह्यो नाथ सुम कुशल सब देखि तुम्हरे पाय ॥
 सब भौतिन अति नीचे मै अधमा सुकर्मज वाम ॥
 जवते प्रभु आपन कियो भयो सुमंगल धाम ॥
 देखि प्रीति रिपुहन बहुरि मिले ताहि उस्ताय ॥
 पुनि केवट रानिन सकल मुदित जुहारे जाय ॥

पाई अशीश मुदित गुह नाह । पुनि सिप्रेम भेटेउ सवाकाह ॥
 देखि सुभात्र सहित अनुरागा । पुरजन तीसु सराहत भागा ॥
 धन्य धन्य यह सब सुखधामा । भेटेउ जाहि लाई उर रामा ॥
 तव निपाद बहु विनय सुनाई । सादर सत्रकही चल्पि छव्यवई ॥
 आये सब सुरसरि के तीरा । भये मुदित लखि धवल सुनीरा ॥
 करि मज्जत माँगहि वरयेहे । नित नव अधिक रामपदनेहे ॥
 तव गुहे समर्य सरिसुखदायक । दीनवासजो जन ज्यहि लायक ॥
 सब सुपास करि सिवै वहोरी ॥ बहुविधि विनयकीन करजोरी ॥
 ॥ दो० राम सखहि तव बोलिके भरत साथ निज लीन ॥
 गये तुरत जलि यौनि जह सैन रामसिग कीन ॥
 कुरु साथरी बिलोकिके भये विकल मतिधीर ॥
 ॥ हुकरि प्रणाम लोचन सजल बोले वचन गिभीर ॥
 अधिक अधिक अंधमे अभाग मै प्रीपारण्व दुखमूल ॥
 ॥ गारमलपणसिय मोहि लगि सहत विपिन बहुशूल ॥
 सर्वैया ॥ जे सिय राम सर्वै सुखधाम सकै कहिको तुन सुंदर
 ताई । मातुं पितै प्रिय प्राण समान सुशीली कृपाला सबै सुखदाई ॥
 गावत वेद पुराण जिन्हें भगवन्त रह्यो यश लोकने छाई । नाहि
 न कान सुने दुख जे अवते महि सोवत दर्भु डसाई ॥
 दो० लपणलाल सम भाय सुठि भयो न त्रिभुवनकाहु ॥
 ॥ अमकारिण तेवन बसत सहत दुसहो दुखदाहु ॥
 ॥ अधिक अधिक मोहि कुमार्तु युत अंशमूला अघघाम ॥
 ॥ फटिन अवनि अविश्यो कसे न होत राम ते वाम ॥
 ॥ छपे ॥ सुनि सप्रेम मृदुवैन कहत करजोरि निपादी जीनि वाम
 विधिनाथ तजौ मन सकल विपाद ॥ तुम रामहि प्रिय प्राण प्राण

प्रियः रामः तुम्हारे। धरहु धीर अस जानि हृदय तज्जि शोचन सारे ॥
 मुनि सखा वचन धरि धीर उर आये थल सुमिरत प्रभुइ । रघुवीर गुणत
 वरणत भयो भोर लागि उतरण समुइ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥
 उतरि देव सरि करि अस्नाना ॥ कीन सवहिं मने मुदित पयनि ॥
 भरत सुवन्धु प्रयादेहिं जहिं । देखि सुसेवक मन सकुचाहिं ॥
 सुमिरत राम सीय लव लाये । तिसरे पहर प्रयागहिं आये ॥
 सादर सवहिन मज्जन कीन्हा । अमित दान मेहि देवन दीन्हा ॥
 करि प्रणाम मोगहिं वरे यिहू ॥ वदै रामा सिय वचरण सुनेहू ॥
 तव कर कमल जोरि मृदुवानी । बोले भरत प्रेमा रसासानी ॥

दो० सकल काम दायक अक्षत तीरथराज सुजनि

दानि शिरोमणि आजु म्वहिं दीजे यह वरदान ॥

सवैया ॥ अर्थ न धर्म न काम चहौं निरवाण हुकी कछु चाह
 नहीं है । ऋद्धिहु सिद्धि की वृद्धि नही नहिं भोग विलासन चाह
 त ही है ॥ आठहु यामी यहै वचामी नसी कर्म हृदय अभिलाप सही
 है । श्रीरघुवीर पदाब्जन में सरसै नित प्रीति सुदेहु यही है ॥

दो० भरत वचन सति सरल मुनि भई त्रिवेणी वानि ॥
 रामहि प्रिय तुम प्राण सम त्यागहु तात गलानि ॥

सो० वेणि वचन सुखदाय सुनत भरता हस्ये हृदय । नत
 पुनि सादर उभाय भई राजा आश्रम गये ॥

कीन्ह प्रणाम मुनिहिं शिरनाई । मुनि वरनाथय लिये उरलाई ॥
 दै अशीश आसन चवैठये । बोले मुनि तव वचन सुहाये ॥
 तात भरत जनि करहु गलानी । हम सब चुको प्रथम सुधिजानी ॥
 तुम रामहि प्रिय । अज्ञाना ॥
 पितु आयसु किरत्यहु चितुर समाह्व ॥

यह भलकीर्ति हमारे भाये सहित समाज इहां जो आये ॥
 राम प्रेम प्रसूति तुम ताता भक्तजन कहें आनंद दाता ॥
 आज उदित भइ सुकृत हमारी भरिलोचन जो तुमहि निहारी ॥
 दो० मुनि मुनिवर कें वननवर भरत हृदय धरिधीर ।
 पुलंकगात बोले वचन सुभिरि रामी रघुवीर ॥
 सबैया ॥ नाथ नमोहि पिताकें शोचन शोचहमें जगपोत्र
 कहावै । नाहिन शोक नशै परलोक अधर्म मरै शिरधर्म नशतवै ॥
 दारुणदाह यहै हिये एक न जाइ सखी । जित सोतत तवै कारण
 मोहि सिंगरि रघुवीर गये वनवास प्रयादेहि पावै ॥
 दो० यह कुरोग दारुण दुखद भयो आय । तनमीहि ।
 त्रिहिकर औपधी शोधि मै देखेउ है कहूँ नाहि ॥
 कुटिल के कई मोहिलगि ठाटेसि यह सब ठाट ॥
 ज्यहिं सक्कर सुखचीनिकै घालेसि वारहवांटा ॥
 मोहिं देख्य भयहास सुधःतृप हानि गलानि ।
 मृत्युं सो भव्यथां कीर्ति दिदेशि धाट दुखजानि ॥
 यह कुरोग नाशै जनिहि फिरि अवै रघुराय ।
 प्रसै अवंध सानन्द तव नाहिन आनि उपाय ॥
 मरत वचन मुनि सहज सोहाये सहित समा मुनि मन सुखपाये ॥
 कह मुनि तात शोचन कीर्ति जिहि । प्रभुहि विलोकत सब दुखची जिहि ॥
 पुनि मुनि सकल भांति सुखदीनहा । भरत निवास नैनि तहं कीन्हा ॥
 पात न्हाय मुनिपद शिरनाई । कीन गमन हित आशिष मोई ॥
 सुभिरत राम लक्षण सिद्ध शोभा । बले सकल दर्शन मनलोभा ॥
 भरत नेम त्रत प्रेम सुहावन । तरणि ज जाइ राम पदपावन ॥
 त्रोटक छंद ॥ रसना रादि रामहिं राम रहे । मन रूप प्रभा दृढः

ध्यान गहे ॥ श्रुति राम कथै अभिराम दिये ॥ चरितद्वित चारु द्वै
 सुलिये ॥ बशप्रेम संभार सुगात नही ॥ डग डोलि परै प्रग जात
 मही ॥ केहि राम सिपाजव श्वाशभै ॥ दुम प्राहनहं सुनिद्वैसुपरे ॥
 भरि पंथ प्रसूनन देवसभा ॥ जय जैति कहै लखि भूरिप्रभा ॥ भ
 रतै बहुभाँति सराहिरहे ॥ धनि धन्य महीभल जन्मलहे ॥ हरिपद
 छंद ॥ भरतप्रभाव देखि सुरराजै भयो शोच मनमाही ॥ जात म
 नवन भरत रामकी भली बात अह नही ॥ जाय कही तुरतै ही
 गुरु सों करहु यतन प्रभुसोई ॥ भरत जाहि पुर लौटि आपने रामहि
 भेट न होई ॥ राम सुभक्त प्रेम बश संतत भरत प्रेम निधिआही ॥
 फिरि है अवंशि काज सर्वनिशिहं वनिहै फिरि कछु नही ॥

दो० सुनि बोल्याँ सुगुरु विहसि हरिहरिगो तव ज्ञाने ॥
 माया पति जनसों करनी चाहत छल अज्ञानी ॥
 हरिद्रोही उवरे बरुकु हरिजन द्रोही नाहि ॥
 भक्ति वैर भगवान के क्रोधानल जरिजाहि ॥
 ताते सुरपति कीजिये भरत चरण अनुरागे ॥
 भरत भक्तमणि जानि कै करिय कुटिल पन त्याग ॥

यहिवेधि सुगुरु कहि समुभाँवा ॥ सुनि सुरेश मन धीरज आवा ॥
 बरपि सुसन करि भरत वडई ॥ जय जय कहहि देव समुदाई ॥
 करि भगवास भरतयुत भीरा ॥ आवत भये व्यमुन के तीरा ॥
 रामचरण लखि श्यामल वारी ॥ प्रेममगन सब भये सुखारी ॥
 त्यहिनिशिवसितहसहितसहाये ॥ होतप्रात सब उतरि नहाये ॥
 करिप्रणाम यमुनहि शिरनाई ॥ चले भरत सब सहित सहाई ॥
 सानुज राम सखहि संग लीन्है ॥ राजसमाज अग्र सब कीन्है ॥
 रामचरण पंकज चितुलागा ॥ चलेजाहि उमगत अनुरागा ॥

दो० सहज वेप पदत्राण नहि मानसमलिन विरोधि ।
 मगवसी नर नारि इमि कहहि परस्पर देखि ॥
 सवैया ॥ का द्विज लक्ष्मण राम अहे सजनी यहि वाट गयेरहे
 जोई । वैवंपुरुष सुरंगवही समशील सनेह सुचालहु सोई ॥ त्यों
 भगवन्त विलोकनि धोलनि घैसहि भेदपरै नहि कोई । और मिलान
 मिल्यो सवहै पै संदेह अहे मनमें एकहोई ॥ विपनहीं इनको तसहै
 जसदीख । उन्हें सखिजात गली है । वै सुखपुंज प्रमोद भरे लिय संग
 हते निज नारिभली है ॥ ये न प्रसन्न सुखेदलिये इन सङ्ग अनी च-
 तुरङ्ग चली है । त्यों भगवन्त ये भेदन सां मनहोत कच्छक संदेह
 अली है । त्रोटक छंद ॥ इति चातुरता सुनि तासु भली । हरपी मन
 मोहि सवै सुअली ॥ विहु भोतिन ताहि सराहि रही । सखि दूसरि
 नौ सब हाल कही ॥ ज्येहि भोतिन काज अकाज भयो । स्थुनन्द
 नै तजि राज गयो ॥ अब जात मनावन रामहि ये । पुरलोग सवै
 संग मातुलिये ॥
 दो० सुनि प्रसंगे सौत्रो सकल भस्तहि बहुत । सराहि ॥
 कहहि दैव असि आपदा क्यहु शिर डारै नाहि ॥
 त्रोटक छन्द ॥ यकातौ छुटि सुन्दर राज गयो । दुसरे पितु मर्ण
 अकाज भयो ॥ तिसरे बन राम सिया गवने । उत्पात कहै सखि
 को कवने ॥
 दो० एक कहहि ये मृदुल । सुटि सुदर परम उदार ।
 केकड़ा जन्म न योग विधि कीन्हे सवै अविचार ॥
 सवैया ॥ एक कहै यह कीन सवै विधि जो हमरे सखि दाहिन
 आजै । लोकहु वेद विहीन कहा हम नीच त्रियाकृत खोटनकाजै ॥
 वास कुदेश कुठाव हमे यह दुर्लभ दर्शभयो सुख साजै । ज्यों भग-

वन्त मित्यो विधि योग सुसिंधलत्रोसिन्ह तीरथ राजे ॥ तन्वीछंद ॥
 याविधि सों ऐकन प्रति यक वातों कंरती विविधि विधि अली है
 जावत जौने पुरनगर किनारे विच जौनिन जवनि गली है ॥ दे
 खतही भर्ते छवि अंगन होवै सव जानि जेनम सुफली है ॥ मांगहि
 याही वर विधिहि करे मे नितही प्रेम हृदये थली है ॥
 सो ० यहि विधि सहित समाज धर्म धुरन्धर वन्धु दोउ ॥
 मगन प्रेम खुराज जाहि चले सुमिरत हरिहि ॥
 प्रथिमिलहि बहुजात तिनहि वृकि रघुवरखरि ॥
 शिथिल होहि दोउभ्रात राम स्वभाव विचारिकै ॥
 सगुण होहि सुखधाम जानि सुहावन मन हरष ॥
 अवशिमिलहि सियराम असिप्रतीति सवके हृदय ॥
 दोउभ्रात निपादा प्रति भरतसन कह्यो देखिये जाथ ॥
 शैल शिरोमणि है वही जहाँ वसे रघुनाथ ॥

हरिगीतिका छन्द ॥ सुनि सत्य केवट वैन सवहिने प्रेम आ

नन्द पायऊ ॥ अति प्रेम द्वारहि वार कामदंगिरिहि लखि शिर ना
 यऊ ॥ त्यहि समय भरतहि प्रेम जस कहि शेष पार न पायऊ ॥
 भगवन्त ते धनि धन्य जे सियराम पद रति लायऊ ॥

श्री श्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिप्रथमस्कन्धे
 समाजसहितचित्रकूटनिकटआगमनवर्णनोनामनवमोऽध्याय ॥

दो० भवनिधि तारकपोत दृढ विदित भूरि गुणगाथ ॥
 चरण कमल सियरामके वन्दौ माहि धरि माथ ॥
 सम प्रेम वासि मगन भरत समेत समाज ॥
 उभयकोसचलिवासकिय जानि अस्तदिनराज ॥
 भोर भये उठि लोग सज जेले सुमिरि खुराया ॥

१ श्री राम देखी की लालसा रही संवन उर आय ॥ १ ॥
 २ कुंडलिया ॥ जागे उत रजनी विगत रघुपति जक्र निवाश ॥
 ३ प्र विलोक्यउ सीयनिशि लागी करन प्रकाश ॥ लागी करन
 रकाश भरतजनु सहित सहाये ॥ प्रभु वियोग त्रयताप तप्त व्याकुल
 बलि आये ॥ आये सकल मलीन दुसह दुख दाहन दागे ॥ दीख
 तासु विधि आन कहत सिय स्वप्नहि जागे ॥ ४ ॥
 ५ सो सीय स्वप्न सुनिराम भये शोचवश शोचहर ॥ ५ ॥
 ६ संजलनेन मुखधाम बोले शुचिमन अनुजसन ॥ ६ ॥
 ७ तात स्वप्न इति जोइ मम विचार फले नैकनहि ॥ ७ ॥
 ८ चहत सुनावन कोइ दुखदायक मानहु वचन ॥ ८ ॥
 ९ दो पुनि प्रभु मज्जन करि शिवहि पूजिसुबन्धु समेत ॥
 १० सहित सकल मुनि मण्डली बैठे कृपा निकेत ॥ १० ॥
 ११ कवित्त ॥ बंदि सुर साधु मुनि मण्डली सबेठि राम देख्यो ॥
 दिशि उत्तरे जुशीशही उठायके ॥ आयोन भू धूरि भूरि व्याकुल वि-
 हंग मृग छपे जाल आनि प्रभु आश्रम परायके ॥ भाग्यवन्त उठे
 अवलोकि श्रीकृपाल आपु कारण हे कह चित्त चकित वनायके ॥
 तौ लागि किरात कील बैसिन ते दौरि दौरि कहे सब समाचार प्रभु
 सन आयके ॥ १२ ॥
 १३ भरत आगमन सुनि भव मोचन ॥ प्रेम विवश आये भरि लोचन ॥
 समुक्ति वचन पितु बन्धु सनेह ॥ भये शोचवश कृपा सुगेह ॥
 बहुरि विचारि ठीक मन धरे ॥ भरत साधु पुनि कहे हमारे ॥
 धर्म नीति तजिकहब न आना ॥ भरत भक्तमणि परम सुजाना ॥
 लपण राम मन दुख अनुमानी ॥ बोले वचन जोरि युगपानी ॥
 नाथ बिना जगताछे वाता ॥ कहउ क्षमा करवै जन त्राता ॥
 १४ हरि हर पद जीव ॥

जेवश विषयदिवसनिशिः धावहिं । ते विधि योग जुत्रे भवपावहिं ।
 ते ज्ञश मोह छोडि राठनीती । जहत जनाव निजहि यहरीती ।
 यद्यपि भरत रहे बडसाधु । प्रभु प्रदुपकज प्रेम अगोधु ।
 दो० त्यक आजुलहि राजपद त्यागि धर्म निज जौन ।
 जानितुम्है अकसर विपिन किये विजयहित गौन ॥

सवैया ॥ ठानि कुमंत्र सु साजिदलौ वन जानि अकेल तुम्हें दोउ
 भाई । आवत भे चलि काजयही हति रामहिं राज अकंटक राई ॥
 जो यह वात न होत हिये चलते कतलै संगतौ कटकाई । त्यो भ
 गवन्त न दोष उन्है लहि राजहि को न उठै वजराई ॥

दो० वेनु नहुप शशि अमर प्रति सहसबाहु तिरशंकु ।

काको नाहिन राज मद्र दीन्हयो कलुष कलंकुनी ॥

वेनु भूय उर नृप मद्र पैठो सो आपहि ईश्वर वनि वैयो ॥
 विप्रशाप सो भयो विनासा । विदित भागवत मे इतिहोसा ॥
 नहुप नह्यो रथ मे द्विजवंदा । चलोशनिहि भोगन चडिअंदा ॥
 भयो सर्प सो विप्रन शापा । मद्रवश सह्यो दुसह दुखआपा ॥
 शशिशुक्रवृषपति तिय संगभोगा । कनिवित्रस मद्रकाम अयोगा ॥
 इन्द्र अहल्यासन रति दाना । भई सहसभग जग सबजाना ॥
 सहस बाहु जमदग्नि कि गाई । मद्रवश वरवस लीन छडाई ॥
 डारोसि मारि ऋषिहि करि कोहा । वंश सनाश भयो इति द्रोहा ॥
 भूय त्रिशंकु द्रोह गुरु दाना । भयचंडाल तिनहि जगजाना ॥
 बहुत कहां लगि कहां गनाई । क्यहि न राजमद्र मरदेउ भाई ॥
 यह तो कीन भरत भरि नीती । ऋष्युक्थण राखन चहिय न रीती ॥

दो० एक कीन नहि भरत भूल राम शकल वन मानि ।

आपे चडि लैदल विपल स्वउ प्ररिहे ॥
 (मारि खुरायो)

अस कहि लपण सक्रोध है नाथ राम पद भाला ॥ ०८
 सत्य सहज बोले बचन करि मुख अम्बक लाल ॥
 नाथ हमारे हित भरत कीन्हें बहुत उपाय ।
 अब लागि गमखाये रहे अब न सहा सहिजाय ॥

ताते नाथ कहौ तुम पाहीं । भरतहि आजु समरके माहीं ॥
 सहित बन्धु अरु सकलौ सेना । डरिहौ मारि मु एक बचैना ॥
 राम विरोध हाल जस होई । देउ बताइ ॥ उन्हें सब सोई ॥
 कीन्हैनि जस अब पैहहि तैसा । जसकहु बड़ अलाहि अकलवैसा ॥
 सवैया ॥ ज्यों मृगसज दलै गजराज खगोश यथा अहिवृन्द स-
 हारो । लेइ लपेटि लवा जिमिवाज तथा गहिदेखत भूमि पधारो ॥
 त्यो भगवन्त गुमान सवै उनको चकचूरके धुरमे डारो । जोयै सहाय
 करै शत शंकर तौ एण आजु प्रचारिके मारो ॥

दो० देखिय रज लघुहै परम स्वउ परि चरण प्रहार ।
 चढत शीश गमखायु किमि है हम राजकुमार ॥
 जबहि लपण डमि बचन बखाने । सकल लोकें लोकप डरपाने ॥
 भई गगन तव गिरा उदारा । ऐसहि है बल तात तुम्हारा ॥
 सवैया ॥ तात प्रताप अभाव त्वयावल ऐसहि है काउ जानि स-
 कैना । पै बुधिवंतन शीतियही सुविचार विना कहु काज करेना ॥
 जे सहसा करिके पछिताहि कहे बुधवेद सुत बुधहेना । यो भग-
 वन्त सुदेव गिरा सुनि लक्ष्मणही सकुचे त्यहि ठेना ॥
 तव सिय राम लपण सनमानी । प्रीति सहित प्रभु बोले ब्रानी ॥
 कहौ तात तुम जो नय सोई । पै न राजमद भरतहि होई ॥
 भरत सरिस जगतीतल माही । शुचि सबक मम दूसर नाही ॥
 विधि हरि हर पद जोवे पावे । तबहु न नृप मद मनमें लावे ॥

कुं० होवै वरु घृत वारि ते तरणिहि तम मकुखाय ।
 गोपद जल बूडहिं घटज सुरतिहि सिधु समाय ॥
 सुरतिहि सिधु समाय श्रवै हिमिकर वरु आगी ।
 भरत हृदय नहिं भूलि कवहुं नृपकर मदजागी ॥
 जागी कवहुं न कुमति सुयश अध संचित खेवै ।
 लपण शपथ तव सत्य भरत मन द्वैत न होवै ॥
 गगनांगनाछंद ॥ भरत सरिस शुचि भाय काहुको विधि नहिं
 दीनहै । गुण औगुण मिश्रित जक्र सकल ज्यहिं कीनहै ॥ भरत
 हंस गहि क्षीर गुणन औगुण जल तजि दिये । भगवन्त सुयश
 उज्जल जगत अपन्न जिन करिलिये ॥
 यहिविधि कहत भरत गुणगाथा । प्रेम पयोधि मगन रघुनाथा ॥
 गगन मगन सुर वरपहिं फूला । जय जय करहिं परम अनुकला ॥
 नाराचछंद ॥ इतै नहाय भक्त पै सरित्तसा समाजही । सवै थै
 भाय तत्र साथलै निपादसजही ॥ चले सबधु आपु तत्र यत्र राम
 जानकी । सुकर्तही कुतर्कनै अनेकनै विधानकी ॥ शिराम सीयनम
 मो सुश्रीण माहि सुन्तही । विचारि मोहिं मामते न जाहि चालि
 अन्तही ॥ मते कुमातु जानि जो कहै सुमोहिं थोरही । निवाजि
 चक्र आदरै जु मानि आपु ओरही ॥ तजै मलीन जानि मानिदास
 जो सुआदरै । सवै प्रकार हौं उन्हेक भाव जोहि सो करै ॥ सरभ
 छंद ॥ यहिविधि भरत गुनल मनमनही । चलत सुमग सुधि तनक
 न तनही ॥ निरखि भरत कै तव असि गतिही । गयउ विसरि
 तन सुधि गुहपतिही ॥ पंकजवाटिका छंद ॥ लागि सगन शुभ
 होन अपारन । केवट पति गुनि सो बदकारन ॥ मल्लिकाछंद ॥
 शाच जाइ मोद मोहि । फेरि अंत खेदहोहि ॥

दो० सुनि केवट वाणी भरत कीन हृदय विश्वास ।

नियराने तब आइके प्रभु आश्रम के पास ॥

सवैया ॥ केवट तौ चदि ऊंच शिलै एक हाथ उग्रय कहै समु-
 भाई । देखहु नाथ सुवृक्षन वै जु विशाल मनोहर देत तकाई ॥ पा-
 करि जम्बु रसाल तमाल सुतामधि मै बट दिव्यसुहाई । ताहि तरे
 भगवन्त अनूप सुखावनि पावनि राघव छाई ॥ छौह यदा वि-
 शदा उमदा सुखदा सुसदा रस एकरहाई । ताहि बटैतर सीय
 निजै कर वेदि रची वर मञ्जु सुहाई ॥ वैठहिं आइ जहाँ मुनि वृ-
 न्द कहै इतिहास पुरानन गाई । सादर सौं भगवन्त सुनि तहँ
 थडि ससीय सुझनहुं भाई ॥ भूरि लसै तुलसी तरुतत्र कहं सिय
 ज कहं लक्ष्मण लाये । फूलि प्रमन रहे रंग रंग अभंग प्रभा सु
 अनंग लजाये ॥ क्यों भगवन्त कहौं छवि सो अवलोकत लेत जु
 चित्त चुराये । कोशलपाल कृपाल तहां सरि पैस्वनि तीर कुटी सु
 बनाये ॥ दोषक छन्द ॥ केवटके सुनि बैन सु ऐसे । देख्यउ भरत सु
 वृक्षन जैसे ॥ प्रेम उमंग युगाक्षन वारी । विह्वल गात ज जात सँ-
 भारी ॥ वारहिं वार प्रणाम सु करतै । बेगिचले हृदयानंद भरतै ॥
 भाग्यसुवन्त प्रणै किमि लेपै । गम्य सुयत्र न शास्त्र शेषै ॥ गीति-
 का छन्द ॥ सिय रामपद अंकृत मनोहर निरखि अतिमुत्त पावहीं ।
 मानहु लह्यो निधिंरक वारहिं वार रज शिर लावहीं ॥ कहिजात
 नहिं गति अकथ स्थपति मिलन सम भव चावहीं । अवलोकि खग
 म्ग जीवजड वश प्रेम तन तिसरावहीं ॥ वरपै सुमन सुखन्द हर-
 पित निरखि नभ जै जै कही । भगवन्त राघव प्रेम जलनिधि भगत
 पूरण है सही ॥

दो० भरत बिलोक्योउ इस्ति सिय समेत द्रउ वीर ।

वंदितं । जे संत्य, व्रतमदैत निर्गुण, त्रिगुण, कृतनिज छंदितं ॥ १ ॥
 दो० जयजय, जय रघुवंश, मणिर्जय प्रभु पूरण काम ॥ २ ॥
 करहु कृपा, जन जानि निज कृपासिंधु श्रीराम ॥ ३ ॥
 भरत विनै सुनि, इमि रघु श्रीराम ॥ भये प्रेमवश परम अधीरानी ॥
 पुनि प्रभु भरत, लाय उर, लीन्हें ॥ कहि मृदुवचन सुधीरजदीन्हें ॥
 भरत रामकै, मिलनि, सुहाई ॥ कहत शेष शारद संकुचाई ॥
 सो भे कहो, कवन विधि गाई, जलनिधिउलचिकिसृतिनिपाई ॥
 जे जे करहि, गगन सुर वृन्दा ॥ जे कृपाल जे राम मुकुन्दीनी ॥
 पुनि सिंधुहनहि मिले रघुराई ॥ प्रेमअमोद वरणि नहि जाई ॥
 बहुरि राम क्लिबट उर लाये भेटत, अति सनेह सचुपाये ॥
 भरतहि मिले लपण सह मोदा ॥ लीन उठाय भरत निज गोदा ॥
 पुनि लज्जमाण भेटे फलघुभातै ॥ अधिक सनेह प्रेम भर गातै ॥
 बहुरि लपण उमगत अहलाद्रि ॥ धाय लाय उरलिये निपादा ॥
 गीतिका छन्द ॥ पुनि सुदित दूनौभाय वन्दे सकल मुनिगण ॥
 जायकै ॥ भय सुदित सानुज भरत अभिमत शुभ सुआशिष पाय ॥
 कै ॥ पुनि हरपि दूनौभाय सिय प्रद पञ्जरज माथे धरि ॥ अगवंत ॥
 नीन्ही सीय आशिष मनहिमन, आनंद भरी ॥ ४ ॥
 सो जानिसीय अनुकूल आदिशक्ति त्रिभुवनजननि ॥ ५ ॥
 मिठी सकल उर, शूल भये सुदित सानुज भरत ॥ ६ ॥
 दो० एतवः क्लेश करजोरिकै कह्यो सुनियी रघुनाथ ॥ ७ ॥
 मातुः सकल पुरजन विकल आये सुनिवरसाथ ॥ ८ ॥
 गुरु आगमेन श्रवण सुनि पाये ॥ तुरतहि राम तहाँ चलिआये ॥ ९ ॥
 कीन्ह प्रणाम गुरुहि द्वउभोई ॥ धाइ लीन सुनि हृदय लगाई ॥
 पुनि कृपाल दुख दोष निकंदन ॥ अनुज सहित भेटे दिजवृन्दन ॥

जानि लोंग आस्त सुरनाहू । क्षणमहं मिलत भये सबकोहू ।
 रही हृदय जाके प्ररुचि । जैसी कीन्ही प्रभु पूरण त्यहि तैसी ।
 यह न बड़ी । रघुवीर बड़ाई । सचराचर व्यापक श्रुति गाई ।
 धन्य धन्य ते तरु बड़ भगी । जे सियराम चरण अनुरागी ।
 ॥ दो० ॥ पुनि प्रभु देखी मातुं सब आस्त परम विहाल ।
 ॥ ॥ कैकेइहि भेटे प्रथम सादर राम कृपाल ॥
 ॥ गीतिका छंद ॥ परिपीयं करि बहु विनय जननिहिं विवि
 विधि धीरजदिये ॥ पुनि मिले मातनसकल रघुपति तपति उरशी
 तल किये ॥ भेटे सुमित्रहि जाय पुनि प्रभु लाय उर जननी लिये ।
 भगवन्त मानहुं लहेउ संपति रंक अति आनंद हिये ॥
 ॥ दो० ॥ कौशल्याके चरण पुनि परे जाय दुउभायनी ।
 ॥ ॥ तन पुलकित लोचन सजला लीन मार्य उर लाय ॥
 ॥ तोटक छंद ॥ त्यहि औसर केर विपाद महा ॥ कवि क्यो कय
 धीरन धीरवहा ॥ मिलि मातन राम समुद्र वैल ॥ गुरुसो कह धीरिय
 पावै थलै ॥ मुनिराज सुआयसु प्राय तवै ॥ उतरे मुजहौ तहें लोग
 सबै ॥ गुरु मंत्रि द्विजाम्बन संग लिये ॥ शुभ आश्रम राम पर्यन
 किये ॥ मुनिराज पगै सिय आनिपरी ॥ शुभ आशिष पाय प्रमोद
 भरी ॥ पुनि विप्रतिया गुरु नारि सहा ॥ सिय बन्दि सु आशिर्वा
 लहा ॥ पुनि सासुन सीय मिली सबही ॥ अवलोकि दशा दुख दून
 लही ॥ तिनहुं लखि सीतहिं शोक किये ॥ व्रश प्रेम लगाय हू
 सु लिये ॥ सिय वारहिं वार सु पाय परी ॥ सब सासुन भेटत प्रेम भरी ॥
 तिन सीतहिं दीन अशीश सही ॥ रहिहौ सु सुहाग भरी नितही ॥
 दो० ॥ तत्र चशिष्ठ मुनि धीर धरि रानिन कह्यो बुभाय ॥
 ॥ ॥ वैठि जाहु गइ वैठि सब मुनिवर आयसु पाय ॥

तोमरछंद ॥ तत्र बोलियो मुनिराय ॥ सुतिने सबै चितलाये ॥
व्यवहार लौकिक झूठो भलगीताहि जो रहूउ ॥ पुनिभाइयो सुख
दात ॥ परमार्थकी कछु वात ॥ कहि फेरि मर्ण भुवाल ॥ मुनिराम
भो दुखजाल ॥ दोधकछंद ॥ कारण मर्ण प्रितां निज नेह ॥ जानि
दुखाति लहे सुखगेह ॥ भूरि विलाप करै सवरानी ॥ शोक समाज
न जाय बखानी ॥ राशिवदतीछंद ॥ तत्रमुनिनाथा ॥ कहिवहु
गाथा ॥ रघुकुलनाथा ॥ श्रुतिवसोथा ॥ बहुसमुंभाये ॥ सहितसहा
ये ॥ सुरसरिन्हाये ॥ पुनियलआये ॥ त्यहिदिनफारी ॥ नरअरुनारी ॥
रहि विनुवारी ॥ व्रतवधारी ॥ भयभिनुंसारा ॥ मुनिजुज्वारा ॥ स्वइ
रावकारा ॥ प्रभुसुखसारा ॥ तारकछंद ॥ करितात क्रिया जस वेद
बखानी ॥ भय शुद्धिजु शुद्ध सदा श्रुतिवानी ॥ सुखसिधु परात्पर
ब्रह्म सुशीला ॥ निज भक्तहितार्थ कृताहुतलीला ॥

दो लीला अहुत रामकी जानै विरला कोइम
ज्यहि जाने लीला अपर जात आपही छोइ ॥
कवित्त ॥ पायकै शरीर दिव्य मानवाने त्रिभुवित्त विचिही के
नित्त धाम धाम धाम है ॥ वेद शास्त्र वाक्यको नमानिते प्रतीत
नीच विषय निचि नीच वीचामुर्न आठ ग्राम है ॥ श्यांग्रवंत कौल
कै वेकौल हान हान उच्च शुद्धिकै कृवांत लोक शोक में जुआम
है ॥ ऊमर तैमाम कै त्रैकोमर निरामा अवेसीयारामनाम क्यो न
थावसि हराम है ॥

हरिपद छंद ॥ सुमिरत जाको नाम कामतरु काम सकल मन
पाते है ॥ गावत गाण गाण विमल जामके सब दख दोष नमारे दे ॥

आदि अंत कोउ जानि न पावत श्रुति ज्यहि नेति बतवै है । भा-
 ग्यवंत स्वइ राम सियाके सादर हम शिर नाते है ॥ अकहेत मानुष
 तनु धरि किये कल्प कुलिहाते हैं । सुन्दर श्याम गौर छवि आगर
 सबहीके मन भाते हैं ॥ कहै लगि कहीं भरे गुण पूरण नारदादि
 यश गाते हैं ॥ भाग्यवन्त स्वइ राम सियाके सादर हम शिर नाते है ॥
 कौशलपुर वासी सुन्दर नारी विचित्र कूटो सब रहै हैं सुखारी ॥
 करहि नेम व्रत संयम नाना ॥ दिन प्रति देहि विधि विधिदाना ॥
 ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीया शुभ जीनी ॥ बोले प्रभु गुरुसन मृदुवानी ॥
 संघैया ॥ नार्थ दुखी पुरखोग सबै अति मूल फलादिक अमु
 अहारी ॥ सानुजे अर्त समंतिन मातन जातन सन्मुख मोहि निहा-
 री ॥ धीतुत मोहि मनोपल कल्प सु आपु इहां पितु स्वर्ग सिधारी ॥
 सो अव आपु समेता सत्रे पुत्र धारिक पीवै सबै हितेकारी ॥
 कह मुनि सुतहु भानुकुल नगिक ॥ किसन कहहु असतुम सब लायिक ॥
 ये सब लोग दुसहे दुखताये ॥ भये सुखी तुम दरशन पाये ॥
 ताते ॥ कछु दिन तादीजे रहना ॥ फिरि सत्र करि हेतु महरै कहना ॥
 सुनि गुरु वचन भले प्रभु भाषा ॥ लगे रहन सब शुत अभिल ॥
 चिंद त्रिसंगी ॥ पवन पय पानी गुण गुण खाने छत मलहानी
 सुखकारी ॥ ज्यहि देखत भागै कल्प जग सुकृत विरागै भव
 वारी ॥ त्रिहु काल नहाहीं सब कहि माही हंस समाहीं सुखसाये
 भरि नैन निहारी होहि सुखारी छवि अति भारी ॥ सुताये ॥ रघुपति
 गिरि कानन सब दुख भानन सुयश पुरातन ज्यहि गायो ॥ देख
 त्यहि जायै लखि सुख पावै शीश नवावै मन भायो ॥ भिरना व
 भरही खग ख करहीं मृग गण चरहीं स्वच्छन्दे ॥ तरु विविधि समु
 यत फल फूले लखि अनुकूल सुख बुन्दे ॥ सरसिज बहु धरनै वि

सितसरुनैः कविः किमि वरनैः, छविः ताक्रीः । गुंजहि बहु मृगा, अगि-
 पित रंगा सहित उमंगा रस, छाक्रीः । बहुः कोल किराता भरि भरि
 प्रांता शुचिः सुखदाताः मधुमेवा । गुण स्वादः स्वानी, सैत्रहिन आनी
 देहिं सुजांती सहसेवा ॥ बहुः मोल सोदेही, तेनहिं लेही, फेरत देही
 इहाई । कहहि सुवानी, तुष्टतजानी, प्रीतिः प्रिच्छानी सूहाई ॥ तुम सु-
 कृत रासी अवधः निवासी सुखसुखिलासी, स्वामिमया । हम पापप-
 रायन तव सुखदायन, दर्शन पायन रामदया ॥ तुम प्राहुन प्यारे
 बनपगंधारे हमहि सुधारे सुखदानी । अव कृपाकरीजै, दलफल ली-
 जै, सकुचिन कीजै, जनजानी ॥ हम आप कंगाला औरन घाला
 तुमहि कृपाली, देव कहा । सियराम कृपाते, भय दुखहाते, मनन स-
 माते मोदेमहा ॥ सुनि, वचनेसुहाये सैवः सुखपाये लै, सु सिधाये
 फल मूला ॥ भय परम सुखारे वनेचर सारे तिनहिं विचारे अनुकू-
 ला ॥ यहि विधि प्रभुपासा सहित हुलसा करहिं निवासा सब
 लौगां । इच्छा मनमाही, भवुन न जाही इहै रहाही सुखयोगा ॥ रा-
 नंद कृपालै सर्व सुखआलै जन, अतिपालै छवि ऐनां । वसुयाम वि-
 लोकी हीहिं त्रिशोकी स्वामि त्रिलोकी, भरि नैना ॥ ते धन्यसुभा-
 गा जिन अनुरागा प्रभुसन्न ज्ञागा जगरामोही व, भगवन्त सुताके
 हित पटुताके लोक त्रितोके समताही ॥

दो० । सिये सादर सबसीसे निज करिसेवा वश कीनि ।

। देखिमेम सुखपायंतिन सिखेभल आशिप दीनि ॥

। सबके मन संशय यहै प्रभु फिरिहै, कै न्नाहिं ।

। भरतकोटि विधि तर्कना करत रहे मनमाहिं ॥

। होत प्रात मज्जने सुकरि वंदे प्रभुपद जाय ।

। तेहि अवसर श्रीभरतको पठये ऋषयवोलाय ॥

प्रायं शंकर भवन्ती साखि रह्यौ याही घाई है ॥ बहुरि त्रिलोकि कै
 निपादको सनेह चारु कुलिश कठोर उर सो न दरकाई है ॥ सोई
 निज नैनन बिलोक्यो सब आनि अंब जीवतहि जीव जड़ सबहि
 सहाई है ॥ सवैया ॥ देखि जिन्है संग साँपिनि वाछि तजै विप
 तोमस तीक्ष्ण ताई ॥ त्यों भगवन्त सुशील सुभाव करौ जिनकी
 सब लोक बडाई ॥ तें रघुनन्दन लक्ष्मण सीय लगे अनहित सु-
 जाहि वनडाई ॥ तासु तनय तजिकै दुखदारुण दैव कहौ अब काहि
 धार जै ॥ मालीखन्द ॥ सुनि ऐसे वचन भुस्त सुभाय किन चली
 कर्मलके वन ज्यो पुत्र ॥ दविगे सभाके जन दुखभार है ॥ पखो
 भगवन्त कीन्हे सुवहिन शाति ॥ गनि वशिष्ठ उपदेश बहु भौति सो ॥
 लानि हृदय जनि मानहु ॥ जीव गती वश ॥ मोदकछन्द ॥ तात ग-
 हु कुल त्रिभूवनमें सत ॥ पुण्ययशी तुमसों नहिं मायत ॥ तिलि-
 लता तुम पै उर आनत ॥ लोकहु सापरलोकहु भानत ॥ दोष ध-
 जननी जड़ तेइनि ॥ नाहिन साधु सभा जिन सेइनि ॥ २२६
 दो० साधु संगी जिन कीन भल तिनको तौ भूताएहु ॥
 कैकेई परहित अयशा लिये त्यहि दोषन दिहु ॥
 तात नाम तुम्हरो जियो लोको ॥ हैहौं पतर भिवन्ध त्रिशोका ॥
 सुमिरत तुमहि तात जंग माहीं ॥ सत्य कहौ कछु दुर्लभ नही ॥
 तुम गलानि मनिहु जनि कोई ॥ रहत न त्रैः प्रीति कहौ गोई ॥
 निजहित अहित जानि पशुलेही ॥ गुण ज्ञानादि भरी नरु देही ॥
 ॥ सवैया ॥ काह करौ असमेल सहीय सुजात है तात भलीविधि
 तोही ॥ प्राण दियो प्रण लागि मेहीप सुराख्य उ सत्य तज्यो ज्यहि
 मोही ॥ शोच बडो तिन मेरुत बैन ॥ सकोत्र त्वया त्यहि सो अधि

कोही तियों भगवन्तदियो गुरु आयसु तात कहो करिहो सतिबोही ॥
 सो ७ राम वचने सुख मूल सुनत सभा हेरपी सकल दि ॥
 मिदी मलिन मन शूल भरत हृदय आनंद परम ॥
 भरत ॥ रामा सखाद सुहावा । सुनि अमरु मनसंशयआवा ॥
 राम सुभक्त विवश श्रुति वानी । फिरहि न होइ काज सुरहानी ॥
 बहुरि विचारि धीर मत्त आना । परहित निरत सुभक्त सुजाना ॥
 भरत धर्मधुर फुर प्रभु दासा । करिहै कसेन धर्म परकासा ॥
 अस विचारि सत्र सुर अन्तरागे । भरत वरणे मन सुभिरण लागे ॥
 कह सुरगुरु सुनु सुप्रति जैता । कीन्है जमन्तु सकल सुख ऐना ॥
 मन वचो कर्म देखि जन सेवा । तुष्टत त्यहि परतर प्रभु देवा ॥
 भरत राम कृपक न भेदा । अस मन समुक्ति जहु सत्र खेदा ॥
 दो० अन्तरायामी राम प्रभु जानि । सुन न मंतयेह ॥
 भये शोचवशा वजन पितु उत इत बंधु सनेहु ॥
 पुनि सब अमर भरतकी शरण ॥ तिन्ह कर शोक अवशिम्बहि हरणा ॥
 तवहि भरत निज मन अनुसारा । प्रेक अइ सत्र मम शिरभारा ॥
 कहउ फिरन तौ अनय अधर्मा । विनु प्रभु काहे करव भे धरमा ॥
 करि कुतर्क बहु मन हह आना । प्रभु आजा आपन कल्याना ॥
 उदि सप्रेम भरि प्रभुपद माथा । बोले भरत जोसि युग हाथा ॥
 दो० कृपा वारिध दीन हित विरद विदित तनजोहि ।

कहहु कृपा करि नाथ अव काह केहावहु मोहि ॥

मे निज सुख का कहो बखानी । सत्र विधिते मम बुद्धि हेरानी ॥
 उदय अभाग करम फल प्राका । आवु सुख युत दुखरस ताका ॥
 प्रभु सख ब कृपाल सुजाना । ज्यहि विधि होइ सकल कल्याना ॥
 स्वइ कृपाल अव करहु उपाऊ । जनहित सकुच न राखवकाऊ ॥

७७. सवैया ॥ जान शिरोमणि जानसवै मन । स्वास्थ्य स्वामि फिरे
 सबहीको । ईश अनीशन के जगदीश सुधीसविसे किय आयसु
 नीको ॥ है यह स्वास्थ्यहू परमाथ सारु श्रृंगारु भलो सुगतीको ।
 सोइकरो करि नाथकृपा हित दास सकोच परे नहिं जीको ॥
 ॥ दो० ॥ नाथ सुनिय एक विनया अर्थ करव उचित मतजौन ।
 ॥ तिलकसांज अन्योसकल करियसफल प्रभुतौन ॥
 ॥ सवैया ॥ पठई म्वहिं सांनुज देववने रहि कीजिय आपुं सनाथ
 सबै । नतु फेरिय बन्धु द्विधामचलो संग मैं वन आयसु होइ अवै ॥
 नहिं जाहिं वने तिहुं भाय फिरे सहसीय कृपालय खूबफवै । भगवन्त
 प्रसन्नहुवै मनज्यो स्वई कीजिय नाथ निवाहतवै ॥ देवदियो सब
 भार हमै शिर धर्मविचार कछु म्वहिं नाहिने । स्वास्थ्यहीलिय बात
 कहीं सब चेतरे चित आरतमाहिने ॥ मै अघ अवगुण धाम सरा
 हत स्वामिसुसाधु गन्यो कछु ताहिने । नाथ स्वईमत भाव हमै मन
 स्वामिसकोच लहे ज्यहि नाहिने ॥
 ॥ दो० ॥ भरतवचन शुचि सरल मृदु पूरण प्रेम गंभीर ।
 ॥ सुनि रहिगे चुपसाधि सर्व सहितसभा रघुवीर ॥
 त्यहि अवसर मिथिलाधिप दूता । आये तहाँ सुनत विधिपूर्ता ॥
 लीनबोली शिर आइ अनवाये ॥ रामहिल खिति न अति दुखपाये ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविशेषदोहा ॥
 हि चरचातुरा रुचिर चिर कहियो वचन सुवेश ।
 सहित समार्ज सुराज सब कुशल भूपमिथिलेश ॥
 ॥ चतुरसा छन्द ॥ सुनि मुनिवैना भरि जलनेना ॥ करि युट
 हाथा धरि पग माथा ॥ सकुच समाई कहत दुखाई ॥ दूत सवैया ॥
 ॥ मुनि वृक्क राउर सादर स्वै कुशलात प्रदात कि बात भई । नतु कौ

शलनाथहि सायचली कुशलात सवै सुनिनाथ गई ॥ मिथिलायुत
औध विशेषि भयो सुअनाथ सवै जगतापतई ॥ भगवन्त न जानि
परै सुगती जलजासन की सवरीति नई ॥

॥ इति श्रीमद्रघुप्यासिंहवर्मात्मजभगवतसिंहविरचितेभक्तिसिरोमणिप्रथेचिह्नकूट
अनकूटतआगमनरूपेनोनामैकादशोऽध्याय ११ ॥

कुण्डलिया ॥ जाके गुणगण अगम अति प्रावत निगम न
पारी परब्रह्म परमातमा निर्गुण गुण आगार ॥ निर्गुण गुण आगार
सुलभ सेवत अवभजन । रघुकुल माणि अवतार सुखद सज्जन जन
रजन ॥ रजन सुर मुनि मनुज शरण कछु अगम न ताके ॥ वंदत
पद भगवन्त नमते त्रिधि हरि हर जाके ॥
दो० पुनि धरि धीरज जनक नर नाथ सुमुनि पद भाल ॥
कह्यो कृपाकरि नाथ अब सुनिये सम नृप हाल ॥

दूत भुजंग प्रयात छंद ॥ गये राम अरिण्य तोही विशोकै । तजे
प्राण भूपाल गो देवलोकै ॥ सुमुन्तै समाचार तिहूति राजा । भये
शोक आकुलते सासमाजा ॥ करी जो सुता भूप केकै करणी । सु
मुन्तै प्रखो राउ व्याकुल धरणी ॥ दियो राज भरतै बनै राम खेद्यो ।
यवानी मनो भूपही वाण छेद्यो ॥ पुनः धारि धीर्यापु हीमै विचारी ।
पंठाये चतुरचारे औधै सुंचारी ॥ गये दूत लाये समाचार सुन्तै ।
पमाना इतै भूप कीन्है तुरन्तै ॥ न कीन्है मगै वास आये प्रयागै ।
पंठाये हमै आजु प्रातै सुआगै ॥

दो० खवरि लेन पठये हिमै सो पाये मुनि नाथ ।
देहु विदा अब जाहि हम नाये कहि असामाथ ॥
बोली छ सात किरात तव दीन्है करि तिन साथ ।
चले दूत निरहूति पहि नाथ सुमुनि पद माथ ॥

आवतं सुन्यो ज्ञानकवृत्तं जिवहीं । आगे चलते लेन प्रभु तवहीं ॥
 पुरजन परिजन अनुजा समेता । युत गुरु गुरुजन कृपानिकेता ॥
 कामदगिरि जव दीख । विरागी । चल्थो प्रणाम करत रथत्यागी ॥
 पंथ जनित श्रम काहु न रेजा । मन प्रथमै रघुपति पहिं भेजा ॥
 आये निकट देखि अनुरागे । जह तह मिलन परस्पर लागे ॥
 हरिगीतिका छंद ॥ लागे परस्पर मिलन सादर प्रेम परिपूरण
 हिये । मिथिलेश बंदे जाय सुनिजन ऋपिन प्रभु वंदन किये ॥
 पुनि राम सानुज जनक नृप प्रद पद्म शीश नवायका । भगवन्त
 मिलि अति प्रेम सवहिन शुभ सुआश्रम लायका ॥ सवैया ॥ वि-
 लपै द्रु राज समाज मिले नहिं कहिहिं ज्ञान विराग रहा । गुण
 रूप सुशील सराहि महीप्रति शोच सवै वश शोक महा ॥ दय दौप
 सरोप कहै सब कै अह नाम विरधि सुकीन कहा ॥ भगवन्त सु देखि
 विदेह दशा मुनि सिद्ध विरक्त धीरु वहा ॥
 दो० ॥ तव सर्व लोगना मुनिवसन दीन्है विहु उपदेश ॥
 कह वशिष्ठ मिथिलाधिपहिं धीरज धरिय नरेशया ॥
 सवैया ॥ जाकरा ज्ञान प्रभाकर ज्यो सु उदै भव घोर निशाहि
 नशाई । ब्रैत समूह लसै किरण शुक्से मुनि पद्म विकासहि प्राई ॥
 ताहिकि कौन्यहु कालकवौ ममता मंद मोह सकै नियराई । त्यो
 भगवन्त अचर्य नहीं सिय राम सनेह कि है य बड़ाई ॥ सिय राम
 सनेह मई ज्यहि देह सराहत ताहि सदा सबकै । भगवन्त सु साधु
 समाजनमै बड़ प्रीवत भावत आदरस्यै ॥ जप योग विराग सुज्ञान
 जितो किनु राम सनेह ब्रथा कृतज्यै । प्रणरोपि कही नहिं कामकई
 हरि प्रेम विना हरिसौ बड़है ॥
 दो० कोटि इन्द्र सम सुखसदन कोटि काम छवि देह ।

कह भगवन्त सोतुच्छ सेव विनु सिय रामसनेह ॥ न
 बहुतभाँति मिथिलाधिपहि कहे मुनि धीरजदीन ॥ राम
 रामघाटातव जायकै सबहिन मज्जन कीन ॥
 मुनि आयसु जहँतहँ सकल उतरे सुथल विचारि ॥
 त्यहि वासर विनु चोरिही रहे सुयो जननीतारि ॥
 होत प्रात सब लोग नहाने । कोलकिरात खरि असजाने ॥
 कंदमूल फल विविध प्रकारा ॥ लावत भये अपारन भारा ॥
 सवैया ॥ श्रीरघुवीर प्रताप कलाप सु पायो भयो वन मंगल दा-
 यक । दानि सवै मन काम भये गिरि देखत जो दुख जालो नशा-
 यक ॥ वृक्ष सवै फल फूल सरजित डोलत वाय सुभाय मुहायक ।
 त्यो भगवन्त प्रभाव महावन क्यों सु कहौ जहँ श्री रघुनायक ॥
 कंदमूल फल सकल स्वइ सबहि पठै मुनि दीन ।
 अपिअपि हरि हरि सुमिरि सर्वहिन भोजनकीन ॥
 छप्पैछंद ॥ यहि विधिगत दिन चारि निरखि रामहि नरनारी ।
 रहहि सुखी सब काल सदन सुख सुरति विसारी ॥ दुहुँ समाज रुचि
 यहै फिरि प्रभु विनु भल नाही । सुरपुर कोटि सुपास राम सिय संग
 वन माहीं ॥ तजि लपण राम सिय धामसुख भाव सदनसुख मन
 जिनहि । त्यहि सम न हानि जगजानि कह्यु वाम सकलविधि विधि
 तिनहि ॥ सवैया ॥ पूर्य कर्म किये कहुँ नेक प्रभावहि सों तनु
 मानुष पायो । सो लहि जो नकरी हरिभक्ति वृथा वश मोह सु वैस
 वितायो ॥ छाँड़ि सवै छलकाय गिरा मन जो नहि राम सों नेह
 बढ़ायो । सो भगवन्त सु देखु विचारि जिये जगनाहक नाहक जायो ॥
 इन्द्रवज्राछंद ॥ ताही समयमैं सियजू कि माई । भेजी सुदासी
 यक तत्र आई ॥ सो देखि गौली सर्वकाश जानी । ओई सवै तत्रवी-

॥ दो० ॥ कर्म ब्रचन संनद्धादिः छलः सेवकः आपु निरेशः ।

दिविसहायकनरावरे गिरिजा शम्भु हमेशः ॥

नारायणन्द ॥ श्रीराम जाय काननै सर्वोरि देवकार्जही । वहेरि

आय कारिहैं अडोल अवध राजही ॥ नृदेव नाग पायकै सुराम
वाहनै बलौ । सुखी स्वर्द्धन्द वासिहैं समस्त आपनै थलौ ॥

दो० यह सब तिरहुतिराय सों याज्ञवल्क्य मुनि गीयु ।

हों राख्यो मुनि मुनि बचन देवि वृथा नहिं जाय ॥

अस कहि पुनिपुनि पायन लीगी ॥ सियहित वितयकीन अनुरागी ॥

आयसु पायः सहितो संग सीता । बली सराहत प्रेय पुनीता ॥

दो० ॥ आर्यमुथल परिजन प्रियहि मिली सीय जुसयोग ।

तापस वेप त्रिलोकि सिया भये विकलः सत्र लोग ॥

इत बरिष्णु मुनि प्राय निदेश ॥ आवत भये थलहि मिथिलेश ॥

सियहि त्रिलोकि लीन उरलाई । अति अनुराग न हृदय समई ॥

भये विकलः लोमश इवेरिया उपज्यउ ज्ञान मिटी भ्रममाया ॥

एक समय लोमश अभिलापा नर नारायण ते अस भाषा ॥

देखन हम चाहत तत्र माया सो दिखाय दीजे करि दया ॥

मुनि प्रगुथो निज माया गाढी । उमग्यो सिधुचल्यो जल जगदी ॥

शई बूडिां महि पारन प्राथा । छुडत तरत वेहे मुनि नाथा ॥

यहि विधि बहत प्रयागहि आयी ॥ जहाँ अक्षयवदे रहेउ सुहायी ॥

जस जुस वारिध जिल उपरीता । तसे तिस वृक्षसो जगद ज्ञाता ॥

विकल बंदे मुनि तिरि धाई । तहाँ देखि अस कौतुक पाई ॥

प्रतापर सिक बालक सीवत सो भगवान चकित मुनि जोवत ॥

ताकी मुनि अवलम्बन पावौ । है कउ अंपर धीर मन आवा ॥

मिटी प्रलय पुनि बच्यो मुनीशा । हरि मायाहि ननायो शीशा ॥

॥ दो० हरिमाया अतिशय प्रबला प्राय सकैको पार ।

॥ १०॥ जाके त्रश नट प्रवंग इव न्नाचल सब संसार ॥

फँस्यो न मोह म जनक मति क्येयापि न विषै वयारि ।

ग्रह सिय राम सनेहको प्रबल प्रताप विचारि ॥

जनक सवैया ॥ पुत्रि पवित्र किये कुले द्रोउ इतै निमिराज उतै

रघुकोरी ॥ त्यो भगवन्त सुधायरह्यो यश जाहिर उज्वलं तव चहुँ-

ओरी ॥ जीति लिये सरि देवनकी ग्रह कीरति रूप सुता सरि तेरी ।

प्रापति है सब लोकन भै करि भेदन सो विधि अण्ड करोरी ॥

दो० गंगाजीके अवनि मै तीनि वड़े थल आहि ।

हरद्वार अरु प्रागपुनि गंगासागर आहि ॥

सुसरिख्या कीर्ति तव विपुल वड़े थल आज ।

भाष्यवंत सब लोक मै जहँ जहँ सन्त समाज ॥

सुनिप्रितुवचन सुसत्यशुचि सियसकुचीमनमाहि ।

कहिन सकतमनगुनतनिशि वसव इहां भलनाहि ॥

॥ ११॥ लखि सुख नृप रानी सियहि वार वार उरलाय ॥

॥ १२॥ विदाकीन संनमानि अति जलीथलहि शिरनाय ॥

सीस सातु तत्र अवसर ने पाई ॥ नृपसत्त कह्यो भरत गतिगार्ड ॥

कौशल्या जासि भरत वड़ाई ॥ कीन प्रेतिहि सोसकल सुनाई ॥

सुनि मिथिलाधिप्री भरत प्रभावा ॥ पुलक शरीर नैन जल द्यावा ॥

सुनहु प्रिया तव सत्य सुवानी ॥ भरत प्रभाव न परत बखानी ॥

मे अनुमान कीन बहु भौंती ॥ भरत सुभाव शील गुणप्रौंती ॥

जानि न जाहि अमित अवगाहा ॥ विथरित बुद्धि लोहे नहियाहा ॥

शाख शोष अगम शिव वेदै ॥ जानि को सकै अपर उन भेदै ॥

भरत चरित वरणत मन रानी ॥ विनश्रमलहहि परसपदप्रानी ॥

धन्य धन्य प्रतिनकर बड़ भागा । जिन्हके भरतचरण अनुरागा ॥

भरत भक्त मन बच अरु करणी । भक्त प्रभाव अमित बर बरणी ॥

दो० । भरत जाहि बन फिरहि गृह लपण भली यहवांत ।

पि रघुवर अरु भरतकी प्रीति जानि नहिं जीत ॥

जा जो आयसु रघुपति कस्यो मेटिहहि भरत न ताहि ॥

साते शोच सनेह ब्रश करिय न प्रिय मन माहि ॥

हो श्रीमदयो ध्यानि हयमात्मि जभगवन्त मिह निर चिते भक्तिशिरोमणि प्रथ

। जे जन्म सुनेना सु गोवे भरत गुण वर्णनो नाम द्वादशोऽध्यायः १३ ॥

दो० रू० । रू० रामे रामे । मार मोर मे माशि

रमु रामु रामें रामं मे रोमै रोम मुरारि ॥

यहि विधि जनक सुनै निका भरत रामगुण वात ॥

सहिन प्रीति वर्णन करत विगत निशा भइ प्रात ॥

नवो संबहिन मज्जने किये पूजे जो ज्यहि ईष्ट ॥

गे नहाय रघुवीर तहें मज्जत जहाँ वशिष्ठ ॥

रामछपै ॥ नाथ सकल पुर लोग, भरत सानुज महतारी । व्या-

कुल शोक सनेह विपुल बन माहिं दुखारी ॥ लीन्हें सकल समाज

साज संगी जनक नरेशू ॥ भये बहुत दिन रहत सहत बन माहिं

कलेशू ॥ मुनि नाथ परमहित सबहिं कर साथ हाथ रौखहि अहै ।

भगवन्त उचितार्जस हीय कछु करिय स्वई सब शिरसहै ॥ वशिष्ठ

चकोर छंद ॥ नरक समान सबै सुखसाज द्विराज समाज तुम्हें विनु

रामी ॥ सो सुखकर्म सुधर्म सबै जरि जाउ सुभाउ जहाँ नहिराम ॥

योग कुयोग सु ज्ञान अज्ञान वृथा जहि धेम प्रधान नराम ॥ त्यो भि-

गवन्त सदा भृग ताहि न प्राण प्रिया ज्यहि हैं सियराम ॥

दो० । विनु सैतत सहत दुख लहत सुखहि तुमपाय ॥

॥ १॥ जानतहो गति सबहिकी ज्यहि जसभाय कुभाय ॥
 ॥ तोटकछंद ॥ तेव आयसु रोसु सबै शिरहै । तुमपै सबकी गति जा-
 हिरहै ॥ अब आश्रम जाइ अरामे खुदै ॥ करिहौ रुचि राउरि मै समुदै ॥
 ॥ दोहा करि प्रणाम निज आश्रमहिं गये जवहिं रघुनाथी ॥
 ॥ तव धरि धीरे विदेह पै आवत भे मुनि नीथ ॥
 ॥ वशिष्ठ तोमरछंद ॥ मिथिलेशनी महाराज ॥ करिये स्वई अब
 काजें ॥ ज्यहि धर्मसा सबकेर । सर्व भौति हो हित देर ॥
 ॥ दोहा मुनि वशिष्ठके वचन इमि मुनि विदेह महाराज ॥
 ॥ करि विचार मन भरत पहें आये सहित समाज ॥

जनक दोहा ॥

तार्त भरत तुम रामकरे जानिहु शील सुभाय ।

तातेजो आयसु करहु कीजिय स्वई उपाय ॥

॥ भरत स्वैया ॥ सर्व भौति महीप बड़े सु हित गुरु भातु पिता
 सम आपु अहौ ॥ गुणज्ञान निधान सुजान महा पुनि कौशिक
 आदि मुनीशजहौ ॥ भगवन्त सुयोधल वृक्षव सोहिनि शोभित
 आपु विचारि कहौ ॥ शिशु सेवक जानिजु आयसु मोहिं करौ स्वइ
 सांदर शीशलहौ ॥ तोटकछंद ॥ श्रुति शास्त्र पुराण पुकारिकहै ।
 अति सेवक धर्म कठोर अहै ॥ प्रभु धर्महिं स्वार्थ विरोध महा । रत
 बैरहि प्रेम प्रबोध कहा ॥

सो ० पराधीनि म्महिं जानि पालिराम सुख धर्मावत ॥

॥ १॥ करहु प्रेम प्रहिंचानि सबकरु हित समत सबहि ॥

॥ २॥ सुनत भरत के वैर सहित समा मिथिलाधिपति ॥

॥ ३॥ पुलकित जल नैन लगे सराहेत भरत कहै ॥

पुनि मुनि भूपति भरत समेता ॥ सचिवसाधु द्विजसकलसचेता ॥

गये जहां राजसुख रघुवीरान विट तेरुतरीवर छौह गंगेभीरा ॥
 सुरन हृदये भय भाँअधिकार्ई । सुभिरिशारदहिं । तुरंत बुलाई ॥
 कहेनि भरते । मतिफेरहुं । माता । करिछलहोहु । विबुध कुलत्राता ॥
 मुनि कहदेवि शक्तिं । स्वहिंनार्हीं । सकउं प्रवेशि । भरत मतिमार्हीं ॥
 भरत हृदय निवसत । रघुराया । तहें नहिं चलिहि सुरहु बलमाया ॥
 यहि विधि सुस्त सीख बहुदेंली । विधिलोकहिं शारद तव गेली ॥
 सुर उपाय ज्ञहिं । चले खिरोसे ॥ रहे शोचि । मन भरत । भरोसे ॥
 राम सबहिं । बहुविधि । संनमीनी ॥ आसन दीन । समै । समजानी ॥
 निरखि राम सिद्ध अद्भुत शोभा । भये प्रेमवश । सब । मन । लोभा ॥
 वशिष्ठ दोहा ॥

हे रघुवर कुलद्युमणि । माणि । सत्प्रसंध । सुखगेहुं ।

मत हमार । याही । सकल करै जो । आयसु । देहु ॥

राम । सवैया ॥ विद्व सुमानसभा ज्येहि मै । मुनिराजसु आपु अहौ
 मिथिलेशु । इतामधि । मै । शिशु । सेवक । नाथकहौ सु । कहां । सब । भाति
 भदेशु ॥ ज्ञाने । निधान । सुजाने । मुनीश । महीपति । आपु । जु । देहु । नि-
 देशु । सोइकरौ । भगवन्त । अवै । ज । डरौं । पुनि । आयसु । भंग । नेशु ॥
 मुनि प्रभु वचना । सरल । सुखसोने । मुनि । मिथिलेश । मनुहिं । सिकुचाने ।
 उतरन । आव । विंकल । भयभारी । रहै । भरत । सुख । सकल । निहारी ॥

दो० जानि कु अवसर भरत तव हृदय । सनेह । सँभारिषी ।

विद्याचंचल गिरिवदत । जिमिली । न्ह्यज । घटजनिवारि ॥

विन्ध्या मुनि । कर । शिष्य । सुभगा । एक । समय । सो । ब्राह्मण । लागा ॥
 मुनि अवलोकि । कीज । अनुमाना । लेइ । हिदाकिं । अवशि । यहमाना ॥
 अस विचारितहेंगे । मुनिनाथा । कीज । प्रणाम । सो । धरिसहिमाथा ॥
 दै अशीश । अस । कह । मुनिसऊ । जज्ञ । तक । मै । अत्र । पुनि । आऊ ॥

तब तक परे रहौ । तुम ऐसे । आजु लगे सो पौढा वैसे ॥
 तैसेहि राम भ्रंशताप । तमारी । अवरोधक निज नेह विचारी ॥
 बढ़त खैचि उर अन्तर । माही ॥ राखेउ गुप्त प्रगट सो नहीं ॥

दो० जैसे पृथिवी कनकहृग । हरिलौ गर्भो सुराय ॥

॥ प्रह्वै वराह अज नासिका बधि तेहि श्रयो धराय ॥

शोक रूप । हिरण्याक्ष त्यों गोये सुमति धराही ॥

उत्पति है विधि भरत ते । तुरत विवेक वराह ॥

मारी कनकहृग शोक मै मति महि तुरत उधारि ॥

करि प्रणाम सिय राम पद बोले भरत विचारि ॥

भरत रोला छंद ॥ नाथ मातु पितु स्वामि सुहृद गुरु पूज्य ह-

मारे । सत्र प्रकार तुम राम पूणतपालक हितकारे ॥ मै बंश मोह अ-

बुझ मेदि प्रभुके ब्रह्मानी । आयउ सहित समाज इहां अति दीउहि

ठानी ॥ सो कृपाल नहि कोह तनक मनमे निज क्रीन्हा । साधुसभा

महँ नाथ मोहि आदर अति दीन्हा ॥ राजरि रीति सु ऐसि विदित

जग वेद बखानै । को कृपालु विनु आपु दास जियकी रुचि जानै ॥

क्षमि सब गुनह हमार नाथ अब आयसु करहू । बहुत कहौ प्रभुका-

हस्वई शिर सादर धरहू ॥ सवैया ॥ प्रभु पंकज पायन सौह किये

रुचि जागत सोवत की सुकहौ । फूल चारि विहाय सु छांडि छलै

मनमें कलु काम न आन बहौ ॥ प्रसुयाम सुस्वामि पदाब्जन की

करि सेव सनेह म मग्न रहौ । भगवन्त जु आयसु नाथ करौ स्वड

सादर मै निज शीशलहौ ॥

दो० असकहि भरत सप्रेम उठि परे धाय प्रभुपाय ।

समय सनेह अपारसो कहिन जाय मुख गाय ॥

गीतिका छंद ॥ श्रीराम सुनि गुचि भरत की वर तिनय मुख

पूरणहिये । सनमानि प्रभु गृहिपाणि ठिग वैठाय अति आदरलिये ॥
 रघुराज साधु समाज नृप मुनिराज लखि आनंदभिये ॥ लागे सरा-
 हन भरत रघुवर भक्ति भुल भांग्य प्रिये ॥ जन्म कर्तव्य निर-
 राम भरत कौ प्रीति निहारी । सुस्पति बडरि उचाट शिरडारी ॥
 भरत जनक मंत्री मुनिराजा ॥ औरहु साधु सचेत समाजा ॥
 इनहि विहाइ लोगि संवेकरो विकल लोग सुरमाया प्रे ॥
 मन न शांति क्षण वनक्षण घुमान रुचिन कहति कउ कहुहि मरमा ॥
 यकटक चित्तवहिन सुत्र सुरत्रिता विचारि विलोचन पुलकित गाता ॥
 भरत प्रभाउ सके को गाई कहत अपि शारद प्रीसकुचाई ॥
 कवित्त प्रीतिनय विनय प्रीतीति प्यारु भांग्यपन पावत न पार-
 शेप औरन कि गायना ॥ जाकी नरभक्ति लवलेशह विलोकि आणु
 मगन विदेह भयो प्रेमही समायना ॥ भांग्यवंत गावंत सुनत संसत्य-
 भाव जासु राम सीयपाय रति कके सरसायना ॥ कीन्हो अनुमान
 तिहु लौकनम अनिमन भयो है न होन कहु भारत सो भायना ॥ तो-
 टक छन्दा गति देखि सुऐसि सबै जनकी ॥ प्रभु जान सुजानि गये मन-
 की ॥ शुभ धर्मधुरीन सुधीर हृदो सतिसन्ध कृपाल सुशील सदै ॥
 दीन समय समान सुवानि श्रुत सुनत श्रवण सुखदाय ॥ प्र-
 भु भरतहि न निरखि सप्रेम । तब बोले श्रीरघुराम ॥ ॥ ॥
 जानत तुम सबविधि अहौ तात तरणि कुलरीति ॥ भंग-
 तात भरत भूपति विना वात हमारी श्रुष्टि ॥ प्रभु
 रही ॥ यथा ग्रथमे रही केवल कृपा वशिष्ठा ॥ ॥
 मतरु प्रजा परिवार प्रिय मोहि सहित पुरलोग ।
 सहित्यो विपम विपदि सब लखि नृपमरण अयोग ॥ ॥

॥ १ ॥ अहम् । तुमरक्षक दिशिदुर्ज है । प्रसादात् भगुरुदेव ।
 जगत्ताते निधरक हूजिये । मानि तात मन येव ॥ ५ ॥
 ॥ सर्वैया ॥ म्बहि आयसु तात किये धनको दिय राजसमाज तुम्है
 सुसवै । स्वइ कीजिय आजु हमौ तुमहूँ हित मानिरहै कुलधर्म तवै ॥
 जग जीवन्लाहु लह्यो भलसो करते पितु आयसु जो न दवै । ज्यहि
 खण्डितहोइ न तातगिरा । स्वइ तात किये तव मोहि फवै ॥
 सुनि प्रभुवचन नाइ पदमाथा । बोले भरत जोरि । युगहाथा ॥
 उतरदेउ । प्रभु करौ । दिठईत क्षमवै जाति सेवक लघुमाई ॥
 पितु आयसु पालिय सुखमानी । परम धर्म यह वेद वखानी ॥
 पै पितुहोइ नारि वंश जोई । सन्निपात अरु वातुल होई ॥
 सेवत मदहि कुपथ अनित चालै । ऐसे पितुकर धचन न पालै ॥
 समुक्ति उचित कीजै भगवोनाग तुम सर्वज्ञ कृपाल सुजाना ॥
 भरतसुजान रामरुख जाना । मरदाकिनी तीर प्रणठाना ॥
 दो० लैकर जलसंकल्पपटि जो नहि । फिरिहै राम ।
 तौ नृणसमस्तनु आपनो देहौ । तजि यहिठाम ॥
 तनमन अरपित भरत निहारी । तव सुरसरि तिय वैप सुधारी ॥
 चन्द्रवदनि शुभ पंकज नेनी । सकल सुभग तनु कोकिलवैनी ॥
 सन्मुख वैठि भरत सुखरूपी । लगी दिन उपदेश अनूपा ॥
 दो० हे रामानुज रामप्रिय है सुबुद्धि बलवीर ।
 प्रणकीन्ह्यो अवतासुकर सुनु । विवेक मतिधीर ॥
 राम । सञ्चिदानन्द स्वरूपा । आदि ननीदि । अखिलसुरभूपा ॥
 ब्रह्मादिकी ज्यहि पार न पावै । नति जेति निगमगिम गावै ॥
 ताहि न सुत भ्राताकरि मानौ । सवापरि त्रिसुवनपाति जानौ ॥
 विधि हरिहर कारणकर जोई । परब्रह्म परमात्मा सोई ॥

निज इच्छा भूतला-तनुधारी । जनपालन खलगाण अधहारी ॥
 चले विपिन-सुरकाज । सुधारिन् । गोविज सन्त-धरणि-उद्धान ॥
 दशमुख सुर नर मुक्ति-द्वेखदार्ता । जात-बुधनहित त्यहि सुरत्राता ॥
 ताहि गारि-प्रभु करि-सब-काजू । आय-अवधपुरी करिहहि राजू ॥
 राज-वैठि-देहहि सुख-भूरी-त्रिभुवन-रही सुयश-भरि-पूरी ॥
 ताते तात हिठहि-जनि-करहू । उठहु राम आयसु-शिर-धरहू ॥
 ॥ दो० ॥ यहि विधि-अमित-प्रबोध करि भई अदश तव गंग ॥
 ॥ १ ॥ भस्त-हृदय-सुनि शिख सुखद-परमानन्द उमंग ॥
 ॥ २ ॥ वरण-कमल-रघुवीरके-परे-भस्त-तव-धाय ॥
 ॥ ३ ॥ कस्जोरे-विनती-करत-प्रेम-हृदय-समाय ॥
 ॥ ४ ॥ भरता-सवैया-जय-प्रभु-पालन-द्वैवधरा-मुनि-संतनके-दुखवृन्द-
 निवारन । शील-समूह-उजागर-नागर-आगर-बुद्धि-गुणाकर-पारन ॥
 छोह-सकोह-न-द्रोह-जरा-जग-मंगल-काज-सुसाज-सवांसु । रा-
 जिव-लोचन-राम-कृपा-भगवन्त-करौ-जनदीन-उधारन ॥ मै-संह-
 दोष-अदोष-सदा-प्रभु-आपु-उदार-सुस्वामि-अतुल्यो ॥ देखि-सु-
 भाउ-सुराउरको-लखि-आपनि-ओर-हिये-शर-हृल्यो ॥ ता-प्र-कृपा-
 किय-आपु-यथा-अव-त्योहि-हमेश-रह्यो-अनुकूल्यो । त्यो-भगवन्त-
 सुजानि-हमै-पद-पङ्कज-दास-न-सूरति-भूल्यो ॥

दो० अव-कृपाल-महि-करि-कृपा-सो-अवलम्बन-देव ॥

अवधि-अविधि-ज्यहि-पार-प्रभु-पावों-करि-त्यहि-सेव ॥

॥ मालिनी-वृन्द ॥ दिनकर-कुलकेतु-सत्य-संकल्प-यस्या । सुजन-
 मुद-भदाता-विश्व-आश्रै-सुतस्या ॥ अगम-निगम-वानी-नेतिय-
 नित्य-गायो । भरतहि-स्वइ-स्वामी-भेमसा-अकलायो ॥ बहु-विधि-
 करि-बोधे-पावरी-पाय-दीन्हे ॥ सुखयुत-हरि-भ्राते-धारि-साथै

सुखीहे ॥ सुखनिधि भगवन्तैः देखि देवालि हर्षे । जयजय करि
 भूपै भूरि पुंप्पोतिवर्षे ॥ उपेन्द्रवज्राब्जन्द ॥ शिरामुचन्दैः प्रदपीठ
 पाई । मुदातिभर्ते नहिही समीह ॥ प्रजा निप्रानै जनु घ्रात हेतुः ।
 किये दिजामीक भवाब्धि सेतु ॥ सनैह बन्धू शुभ रत्न सोई । सुता
 सुसंपुट्ट खराउ देई ॥ सुभाय जीवै हित रक्ष कर्ने । सुनाम रामादिय
 द्वैक वर्ने ॥ दिनेश कुल्धाम सुमध्य जाके । सुकर्म मै सोधन पूर्ण
 ताके ॥ कपाट द्रोऊ पदपीठ वेशू । दिर्य सुरक्षा हित राघवेशू ॥
 श्रिराम सेवा मय धर्म जोई । यगाक्षताके प्रदपीठ देई ॥

दो० चरणपीठ रघुवीरके जामा ॥ भरत सुखधाम ।

अस सुखसन मानहु यनन रहे लपण सिय राम ॥

सवैया ॥ सन्तोष अपार भयो भरते दुख दोष सर्वे तनडूरिगयो ।
 तखि सन्मुख स्वामि प्रसन्न हिये जनु गूगहि वानि प्रसाद भयो ॥
 हरजोरि विनय बहु भातिन के पुनि पदज पायत शीश नयो ।
 नगजीवन लाहु लह्यो भगवन्त भयो सुखज्या प्रसुसाय लयो ॥

इति श्रीमद्भगवद्गीतासहितं महाभारतस्य अष्टादशोऽध्यायः ॥ १३ ॥
 अप्राध्याकराण्डे भरतपुरगमनहेतुप्रभुप्राप्तवर्णनो नाम त्रिदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

दो० सीताराम रूपायतन सकल सुमंगल धाम ॥
 चरण कमल कर जोरि कै पुनि पुनि करौ भणाम ॥

तव कर जोरि भरत मृदुवानी वाले प्रभु गुरु आयसु मानी ॥
 तव अभिषेक हेतु स्थिताया आन्यज सकल सुतीर्य पाया ॥
 स्पहि कही जवन रजायसु हीई । किसे निया मि सादर सोई ॥
 अवर एक अभिलाप विशेषी । चित्रकूट वन आविठ दिखी ॥
 पुनि प्रभु कहा जाहु किनतीता । अविहु देखि विरपिन सुखदाता ॥

रामचन्द्र गुरु अत्रि को जसा दर आयसु पाय ॥ १ ॥
 चले अद्वय रघुवर विपिन युत समाज द्विद्व धार्त ॥ २ ॥
 निरखि विपिन शोभा अमित हृदय न हर्षसमात ॥ ३ ॥
 चंचरीक ॥ राजत जन अति विशाल सोहहि दुस सुखदशाल
 वेष्टित नवलता जाल मंजुल छवि छाई शिलत खग सहित चीय
 डोलत शुभ अत्रि धाया प्रसन्न सुखप्रद सदाय संचित सुखवाई ॥
 फले शुभ कमलताल गुजत बहु अमरमाल पीवत रस बस निहाल
 संकुल सुख बाके विहुरत मृगगण स्वच्छन्द नाचत कल केकि वृंद
 उमगत अतिशय अनंद निरखत सुखमाके ॥ मंदाकिनि सरित
 पास कीन्हें मुनिजन निवास संतत जहें सब सुप्रास सुमिरत रघु-
 वीरै । कामदगिरि वर विशाल देखत दुख दहत जाल राजत जहें
 नित कृपाल भजन भव भारे ॥ शारद शिव निगम शेष संतत
 मिलि करहि लेख पावहि नहि लिखि अशेष कानन प्रभुताई ।
 सानुज जहें सीयराम राजत सुखा सुखनि धाम सुमिरत भगवन्त
 नाम कीरति कल गीई ॥ कुरंडलिया ॥ अरत पांच दिन माहि
 सब देखे विपिन मंभाय ॥ ज्येठ कृष्ण त्रैदंशि दिवस बोले प्रभु-
 सन जाय ॥ बोले प्रभुसन जाय देहु अव मोहिं रजाई । सेवहुं
 अवधि जाई अवधि भरि श्रीरघुराई ॥ श्रीरघुवीरकृपाल हृदै जन
 दोष न धारत । भरतहि लीन लगीय धायर प्रेम संभारत ॥ राम
 वचन त्रोटक छंद ॥ सुनि तात हृदै मम वात धरौ । कछु राजस धर्म
 बखान करौ ॥ कवहुं नहि भूठ बखान करै । बरु संकट कोटिक आनि
 परै ॥ निज मंत्रिहि राखय मूढ़नहीं । दैकै पुनि फेरि नले कवहीं ॥
 अनजान कि वस्तु न भोग करै ॥ सब सो हितमान न वैर धरै ॥ दुख
 देइ न मित्रहि आपु निजै । कवहुं नहि भूलि सताव दिजै ॥ रिपु

कीनगवन अवधहि भवन रामचरण त्रितलाय ॥

सवहि पठे रघुवीर पुनि कोन्हे विदा निपाद ॥

अनुज जानकी सहितयल फिर सहप विपाद ॥

कवित्त ॥ सानुज ससीयराम सुखमै सपूर्णकाम वैठिकै सुपूर्ण
धाम भंजन सकोचने । प्रिया परिवारके वियोगहि सँभारि उर रहे
विलखाय सो सुभायवश शोचने ॥ कायमन वचन प्रतीति प्रीति
प्रेमचारु श्रीमुख सुगाय वारवार कज लोचने । भाग्यवत भारत सु-
भायको सुभाव शील गुनतसुप्रेम भवफदन विमोचने ॥

दो० सुरन देखि रघुवीर को शील सनेह सुभाव ।

जगजयकरि वरपहिसुमन विगल शोचमनचाव ॥

इतै भरत सब संग सहाये । चौथे दिन कौशलपुर आये ॥
जनक चारि दिनकरि तहँबासा । सबविधि सवहि वसाइसुपासा ॥
कीनगवन निज पुर महिपाला । उर धरि सिय रघुवीर कृपाला ॥
रामचंद्र सिय दर्शन लागी । अवधलोग सबअतिअनुरागी ॥
लगे करन जप तप व्रत दाना । ज्यहिविधिमिलहिंरामभगवाना ॥
भरत कह्यो रिपुहनहिं बुलाई । करेहुसकल जननिन सेवकाई ॥
आपु मातु गुरु आयसु पाई । नन्दिग्राम रहे तव आई ॥
करि मुनिवेष विषय सुख त्यागी । लगेकरन तप कठिन सुभागी ॥
सिहासन पदपीठ पधारी । मन वच क्रम सेवा अनुसारी ॥

सवैया ॥ सुरराज सिहातहै औध कि राज धनै सुनिकै धनराज
लजे । अस वैभव पुंज सुप्राप्ति जहाँ विधि आपु सवै सुख आनि
सजे ॥ पुर तामु वसै इमिभरत यथा तजि भृंग सु चम्पक वागमजे ।

॥ श्रीगणेशोपनिषत् । श्रीगणेशोपनिषत् । श्रीगणेशोपनिषत् ।
 ॥ श्रीगणेशोपनिषत् । श्रीगणेशोपनिषत् । श्रीगणेशोपनिषत् ।
 ॥ श्रीगणेशोपनिषत् । श्रीगणेशोपनिषत् । श्रीगणेशोपनिषत् ।
 ॥ श्रीगणेशोपनिषत् । श्रीगणेशोपनिषत् । श्रीगणेशोपनिषत् ।
 ॥ श्रीगणेशोपनिषत् । श्रीगणेशोपनिषत् । श्रीगणेशोपनिषत् ।
 ॥ श्रीगणेशोपनिषत् । श्रीगणेशोपनिषत् । श्रीगणेशोपनिषत् ।



भक्तिशिरोमणि आरण्यकण्डे ।

। श्रीगणेशोपनिषत् । श्रीगणेशोपनिषत् । श्रीगणेशोपनिषत् ।
 ॥ श्रीगणेशोपनिषत् । श्रीगणेशोपनिषत् । श्रीगणेशोपनिषत् ।
 ॥ श्रीगणेशोपनिषत् । श्रीगणेशोपनिषत् । श्रीगणेशोपनिषत् ।

धर्म। दुममूल भव-शूल के हरणहार लीन्हे हैं। त्रिशूल पाणि
 रात्रु दल द्रालिया । लोचन त्रिलाल, भाल-धारे शशि कण्ठ काल-
 हूट शीव। मुण्डमाल शीश गुंरा कालियानी रीकृत सुभायफल फू-
 लही को प्रायःदानदीदेता। ना=अघाय भव-भूतराय। जीलिया ।
 भाग्यवन्त दासनके त्रासन। हरणहार-द्रवो सो खदार त्रौमि शंकर
 कपालिया ॥ सवैया ॥ श्योमेल गौर मनोहर। मंजुल ओन्नद कंद
 सुप्रणव कामे ॥ प्रकृज नैन सुकी भुकुटी शिर ज्जद जदस्य प्रभा
 सुख भामे ॥ प्राणि शरासन चाण कैसे कटितृण लसै वन-भारग
 तामे ॥ कै पुटपाणि प्रणमि करौ भगवन्त सदा सियलि चमण रामे ॥
 ॥ दो० श्रीगुरुवरण प्रणाम करि सिय रिखवीर मननाय । ज्ञान
 लको जस मरण भव-भय-हरणि कहौ कथी शुभगाय ॥ ॥ ॥
 मत्ताने सुनहु शिवा सुन्दर कहुक विरणयो भरती बरिचि ॥ ॥ ॥
 ॥ शिव-अव-पुनि श्रीरघुवीरको विरणौ विरिते त्रिचित्र ॥ ॥ ॥
 ॥ श्रीगणेशोपनिषत् । श्रीगणेशोपनिषत् । श्रीगणेशोपनिषत् ।

नित नौमि करुणा कीजिये । निज भक्ति भेद न सुखद । रघुपति । जनि
 जनी । स्वहि दीजिये ॥ निज नाम ॥ ३४ ॥ ३४ ॥ ३४ ॥
 दो० सुनि मुनि विनय सप्रेम तव हस्यो मन अति । राम ॥ ३४ ॥

अनसूयाके चरण पुनि कीन्ही सीय प्रणाम ॥
 मिलिसप्रेम सीतहि मुनिनारी । आशिरवाद दीन सुखकारी ॥
 अति आदर समीप वैठारी । भूषण वसन अनुपम निकारी ॥
 जे नित नवल रहत छविधामान पहरिये सीतहि मुनिवामा ॥
 पुनि सप्रेम ऋषिनारि पुनीता । चोली सुनु स्वामिनि जगसीता ॥
 कहीं कछुकी । तिय धर्म सुहावा । निगमगम पुराण जसगावा ॥
 नारि देव केवल पतिमाने । पतिताज स्वपनहु अपरनजाने ॥
 जननी जनक बन्धुहित जेते । अल्प सुखाहि दायक सब तेते ॥
 पंच वर्षलौ । जननी सेवे । लालन धालन करि सुखदेवे ॥
 प्रीति बरषा दशलौ । जसचाही । भोजन वसन दैतहे । वाही ॥
 पुनि विवाहि दायजु कछुदई । करि त्यहि विदासु फुरसतिलई ॥
 पर्व त्योहार भ्रात तहे जावे । किचित धनद फिर पुनि आवे ॥
 जन्मप्रयन्त सकल सुखताही । दैत नाह मोसर जसजाही ॥
 ताते अधम नारि हे सोई । मनबचक्रम पति सब न जाई ॥
 कुंडलिया । पावे पतिकरि नारिजा अध बधिर अति दीन ।
 बृद्ध रोगवश जड़ अधेन क्रोधी निपट मलीन । क्रोधी निपट म-
 लीन सहैदुख ताके साथी । तदपि न हर मूलि नारि दिशि औरन
 नाथा । नाथहि जो असपाइ तासु अपमान करवि । नानाविधि
 सो जाय सदन यमके दुखपावे ।
 दो० चारिभौति जग पतिव्रता प्रणत नारी वेद ।
 उत्तम मध्यम नीच लघु कहा सबन के भेद ॥

सर्वेयाः ॥ नैः हहिरंद् रंगी ॥ चुरहे वचः मानस कर्म भजे ॥ पति
जोई । और न ओर न मिलित कै विभुः प्रापति राकसमानु होई ॥
स्वमेहु जानत सो मनमें जगती तल प्ररूप आतहु कोई । प्रीं भिगा
वन्त गहै दृढ धर्म पति त्रत जारि है उतम सोई ॥ आपन स्त्री भिगा नै
करि स्वामि विचारत सो परकन्त निहारी ॥ वृद्ध हित त गिवा सम
भ्रात सुवैलघु पेखत पुत्र विचारी ॥ और कुमाव हिये नीधरै पति
सेवकै निज धर्म सँभारी ॥ यों भगवन्त सुरीति जिन्हें नित भाषत
सो श्रुति मध्यम नारी ॥ परपूरुप सुदर देखत ही हय जात सकाम
है वामज्वई ॥ निज धर्म नै कि ही निविचारि हिये कुलक्री मर्याद
सुजानि खईत ॥ रहती वचि है परे परिते करती अपराधे न और
कई ॥ भगवन्त वद्वानत वेदर है न्यहिरीति जु नौरि निकृष्ट स्वई ॥
देखि जिन्हें परनोहन को चित प्रोगुन चाह भई रति नै ॥ मै न भिल्यो
त्यहि औ भिरा शून्यी सुत्रासा कछु गुरु लोगन मानै ॥ कारण योहि
करै व्यभिचार न राखत मै मने क्रम कलुनै ॥ सीइ है नीच मह धर्म
नारि सुलक्षण ये श्रुति शास्त्र ब्रखानै ॥ एतु ज्ञान एतु धीनी ज्ञान
दोषानि जपति सी छल दानि कै ॥ परपति मे त्रत जौन ॥ नीली ॥
॥ त्रि रौखी लुक् सुकल्प शत परै नारि धुव तौन ॥ श्री ॥
पति त्रत धर्म जु छांड़ि छल गहै नारि दृढ जोई ॥ ०६
विनु श्रम प्रावे परमंपदी कहत वेदी बुधलोई ॥
तुमहिं प्रार्ण सम प्रिय सतत सुनु श्री त ॥ भगवाच ॥ ॥
की प्री जग उपदेशन हेतु नै युहा कीन्हो ॥ किया ब्रखान ॥ ॥
॥ ज्ञान अनिसूर्य के विचन सुनि जनक सुता ॥ सुख पाया ॥ ॥
॥ ॥ धरि हिं वार प्रणाम ॥ किय चरण कमल निशि रनाय ॥ ॥
॥ छपै ॥ तव मुनि ते प्रभु कयो भाथु अब आथ सुदेह ॥ जाई अ-

परबन दिव तजत्र जन जानि न नेहू ॥ मुनि बोले ऋषिराज राम अस
 काह्यन कहहू ॥ तुम सर्वज्ञ सुजान सर्वगति जानत अहहू ॥ प्रभु
 कृपासिंधु सज्जन सुखद सेवत सब सुख पाइये ॥ सुखधाम राम क्य-
 हि भांति मैं कहउ स्वामि वन जाइये ॥ सोरठा ॥ वास्वार शिरनाय करि
 प्रणाम मुनि । प्रद किमल ॥ सीय सहित दंडभाय चले विपिन भं-
 जन विपति ॥ ३ ॥

इति श्रीमद्भक्तिसिद्धिर्वर्मात्मजसंगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिप्रथ-
 मः शरण्यकारणजयतनत्रयभंगप्रभुभक्तिमुनिसमागमअनसुयापतिव्रतधर्म-
 गीतिकाव्ये ॥ ३ ॥

दो० श्रीरघुपति प्रद प्रदको पुनि पुनि करौ प्रणाम ॥ नाना
 धर्म जिनकी कृपा कटाक्षते सिद्धि होत सब काम ॥ सीता
 सीता लपण सहित रघुराई चले विपिन मुनि आयसु पाई ॥
 सुन्दर श्याम गौर सुखधामा निरखि होहि परिपूरण कामा ॥
 रामहि चलत कठिन मग देखी ॥ भइ कोमलमहि आपु विशेषी ॥
 गिरि कानन मग देहि सुहाये ॥ रहहि मेघ छाया नभ छाये ॥
 यहि विधि राम जाहि सुख पागे ॥ मिलाविराध असुर यक आगे ॥
 अतिविशालतनु वरणि न जाई ॥ प्रभुहि विलोकि जला सोधाई ॥
 अतिरस लाग कहन कहु बैना ॥ तत्र मास्यो प्रभु मुनि शरपैना ॥
 दो० लागत शस्तनु तजि भयो दिव्यरूप ततकाल ॥

देखि दुखी निज धाम त्यहि दीन्ह्यो राम कृपाल ॥

छंदतोटक ॥ पुनि सीनुज रामसियोहि लये ॥ शरभंग ऋष्या-
 श्रम जात भये ॥ लखि रामप्रभा मुनि मोद अरे ॥ कर जोरि विनै
 बहु भांति करे ॥ तुम नाथ अनाथने नाथहितै ॥ किये भूरि कृपादृग
 कोर चितै ॥ अब जाहु न आन कहू तबलो ॥ तनु त्यागि तुम्है न
 मिलौ ॥ जबलो ॥ जप योग मखादिक जौन किये ॥ प्रभुको दयभक्ति

बरे सुलिये ॥ इमि जोरि चित्त चित प्रेम भिये । सिय लक्ष्मण राम
 सुधारि हिये ॥ तनु जारत योग सु अग्नि भियो । सिय राम कृपा
 करि धामदयो ॥ सवैया ॥ शरभंगहिं रामदियो निज धाम बिलोकि
 सबै मुनि मोद भरे ॥ बहु भोति प्रशंसि सुनाय विनै त्रयरूप अन्नूप
 हृदय सुधरे ॥ सुर सानंद व्योम विमान चढे जय जयति पुकारत
 लभे ॥ भगवन्त कृपा सियराम सबै संगवासिनके सबै काज सर ॥
 पुनि आगे गवने सुखकन्दा । मिलहिं अनेक मुनिनके वृन्दा ॥
 भेटि भेटि सबही सुख देता । जाहिं चले प्रभु कृपानिकेता ॥
 अस्थि अमित लखि विपिन कृपाला । इमे मुनिन कहेति नहाला ॥
 नीय निशाचर अति दुखदाई । लीन्हे विपुल मुनिन कहखाई ॥
 मुनि है इखित राम प्रणकीनाती करिहो धरणि निशाचर हीना ॥
 मुनि प्रण भये सुदित वनवासी । चले राम सुखधाम तिवासी ॥
 रहे जहां जहै मुनि सु प्रवीना । तहै तहै जाइ सबन सुख दीना ॥
 दोऊ मुनि अगस्त्यकर शिष्यवर नाम । सुतीक्षण जाम ॥
 कर्म वचन मन रामरति प्रभु आवन मुनि कीन ॥
 छंद हरिगीतिके ॥ धायो मनोरथ करत बहु विधि सपदि सुख
 पूरण हियो ॥ अवलोकिहो इन जाय नैनन रूप ज्यहि सम नहि
 बियो ॥ अति पुलक निर्भर प्रेम तन मन सुरति सब विसराइके ॥
 फिरि जात पाबे किबहु आगे करत नृति गुण गाइके ॥ अवलोकि
 प्रभु अति प्रीति मुनि उर प्रगट निजरूपहि क्रिये ॥ ज्यहि पाय
 मुनि है सुथिर भग महै बैठ मन मूरति दिये ॥ छंद नाराच ॥ तवै
 शिराम धायके मुनीरा पासको गिये ॥ थके जगाय जाग सो न
 चित्त ध्यानमो दये ॥ लिये दुराय राम सो स्वरूप भूपकी तवै ॥
 दिये दिखाय चौभजी स्वमूर्ति हीय में जवै ॥ लख्यो मुनीश हीय में

पुनि पूषि कुशल सादर-प्रभुहि आसन बर-वैठायकै ॥ करि वि-
 विधु भाति पूजन ऋषय मुदित-जन्म फल-पायकै ॥ कनि कनि
 तव प्रभु कह्यो सुनहु मुनिराया । देहु सोमन्त्र हमहिं करि दया ॥
 हतौ जाहि सुरु मुनि दुखदाता । मुनि मुसकाय कह्यो मुनिवाता ॥
 तुम हसमर्थ सर्वज्ञ । कृपाला । जानतहौ । सबही करे हाला ॥
 मैं तव चरण कमल अनुगामी । देऊँ कवन मत तुम कहँ स्वामी ॥
 जानि दास निज मान बढ़ावा । प्रणतपाल यश-वेदन गावा ॥
 भक्ति आपनी सब सुखदायक । देहु कृपा करि भुवहिरघुनायक ॥
 सो स्थान कहौ अब गाई । सीता सहित बसौ जहँ जाई ॥
 गोदावरी निकट अति पावन । पंचवटी आश्रम मज भावन ॥
 तहँ बसि राम सबहिं सुख भेटौ । करिवन स्रग्ध्र शाप पुनि भेटौ ॥

कुण्डलिया ॥ दण्डक नृप यकवार तहँ शुक्रसुता सन आय ।
 बरवस कीन्ह्यो भोग मुनि दीन्ह्यो शाप रिसाय ॥ दीन्ह्यो शाप
 रिसाय नृपहि तव राज्य समेता । सात दिवस के माहि दहै यह
 कानन-जेता ॥ जेता वन भयो भस्म-हरहु स्वइ शाप-अखण्डक ।
 राम बसहु तहँ जाय करहु पावन वन-दण्डक ॥ निष्ट नष्ट निष्ट
 मुनि अगस्त्य आयसु शिरनाई । जले-ससीय मुदित-दुःख भाई ॥
 आगे-मित्यज गीधिपति जाई । बहुविधि तिनसत्त-प्रीति बढ़ाई ॥
 गोदावरी दीख प्रभु जाई पंचवटी सुन्दर । सुखदाई ॥
 तहँ रचि-पूर्णकुटी अभिरामान-कीन निवास लक्षण-सिगरामा ॥
 राम लक्षण-सिय-पद परिपावन । मिटी शाप वन-भयो सुहावन ॥
 मुनि-तापस सुर-सिद्ध उदासी । भये सुखी सब कै भय-नासी ॥
 खग-मृग रहहिं सकल सुख-पूर । निगत-वैर-वितरहिं वनरूरे ॥
 वनसुखमा अति बराणि-न जाई । जहँ सिय राम लक्षण रहे आई ॥

सवैया ॥ आय रहे जवते बज्र भाया भयो जवते वन अंगल दा
 यक । पुंज प्रमोद चयो सव दौर करे धुनि कोकिल कीर सहायक ॥
 के नहीं मन त्रासक यह सब नाश भये खल वृन्द सतायक कियो
 भगवन्ता कहौ छवि गायन लोक तिहें उपमा त्यहि लायक ॥
 दो० जग पालन धालन असुर रघुलालन छवि गेने प्रमोद
 लीला आय रहे भगवन्त जहँ को छवि वरणे वैनगी कान्त
 विभो मद्यो ध्यायि हवर्मात्मज भगवन्त सह प्रियचिते भक्ति शिरो मणि प्रथे आ
 एय काण्डे विराध घशर भगकथा अगस्त्य समा मप्रभुपचवटी वास
 दो० रंजन सुसज्जन सुखदा भव भंजन महिभार निज प्र
 भाग्यवन्त सिय रामपद चन्दो । सर्वा सुखसार ।
 सवैया ॥ पंचवटी गुणग्राम लूटी सुखपुंज पटी परिधि खलुटी है ।
 एभ्रुटी वरमुक्तिटी नित च्छुट्टी नवशोभनुटी है ॥ पापघटी
 रितापहटी भवदापकटी लखि लाहुलुटी है । भांगपुटी भगवन्त
 ट्टी लखि पत्रघटी प्रभु-पूर्णकुटी है ॥ कवित्त । कैथौ ज्ञानभक्ति ओ
 वेराग वपु धारे आपु कैथौ विधिभारती ससुत आपु राजते । कैथौ
 त्रिपुरारि संग गिरिजा गणेशधारि कैथौ ऋतुनाथ सुत रतिमैन
 राजते ॥ कैथौ परमार्थ अरु योगयुत प्रीति आपु कैथौ वीर शान्ते
 औ श्रृंगार सुखसाजते । भाग्यवन्त कैथौ कर्म शेष सुरधेनु । अपि
 कैथौ सहस्रीय राम लक्ष्मण विराजते ॥
 दो० एकवार श्रीरामपद लपणलाल शिरनाथ ।
 अतिसप्रेम करजोरिकै बोले । जवन सुभाय ॥
 हो समर्थ सरवज प्रभु रूपसिन्धु गुणखनि ।
 मै पूंछौ कहु आपुसो कहिये निजजन जानि ॥
 गीतिका छन्द ॥ क्याह कहत ज्ञान विराग काको कौत मायागा-

इये । का भेद ईश्वर जीवसो सदग्रन्थ वेद बताइये ॥ है भक्ति कौन
 अनूप जाकहँ करत तवपद पाइये । ज्यहिजाय संशय सुनत मो-
 कहँ नाथकहि समुभाइये ॥ त्रोटकछन्द ॥ कहिये सुनु तातहै ज्ञान
 वही । जहँ एकहु वातको मानिनही ॥ समदृष्टि चराचर माहि करे ।
 एक ब्रह्ममयी सब देखिपरै ॥ त्रिभंगी छन्द ॥ सुनु तातसुभागी अति
 अनुरागी परमविरागी ताहि कही । जो तृणसम तीनों गुणतजि
 दीनो सिद्धिन कीनो चाहनही ॥ पुनि मैं अरु मारा तें अरु तोरा
 जहँलगि जोरा नातजितो । गो गोचर द्वारै मनसि विचारै जहँलगि
 पारै देखि तितो ॥ माया सबजानौ मन अनुमानौ अपर वखानौ
 भेदतदा । प्रथमै एक विद्या द्वितिय अविद्या परम निपिद्या वेदवदा ॥
 जाके बश परिकै हरिहि विसरिकै कुकरम करिकै होत दुखी । विद्या
 भलिभावे जो जगजावै हरिहि मिलावै जीवसुखी ॥ पुनि ईश्वर
 सोई समर्थ जोई सबपर होई स्वामिज्वई । माया अरु ईशो आपु
 अनीशो रूप न दीसै जीवस्वई ॥ पुनि भक्तिहमारी परमापियारी जन
 हितकारी तात सुनो । निज तंत्र सदासो सब सुखदासो करत प्र-
 कासो ज्ञानगुनो ॥ सो मिलत न तौलौ द्रवत न जोलौ सन्त अ-
 तौलौ ज्ञानमई । त्यहिकरन उपाई कहउ सुभाई सुनु चितलाई कान
 दई ॥ प्रथमै दिजपायन प्रीति सुहायन करै सदायन भायसती ।
 त्यहिकर फललागे विषय विरागे भव निशिजागे शुद्धमती ॥ तव
 त्यहि ममचरणन सब दुखहरणन उपज अवरनन प्रीतिनई । श्रव-
 णादिक नवधा भक्तिके पवधा तव सुख सबधा करनठई ॥ सुन्दर
 ममलीला सुनि सुखशीला है गिलगीला प्रेमपगै । गुणग्राम हमारे
 गुणहि सँभारै ते अतिप्यारै मोहिलगै ॥

दोः कर्मवचन मन छोड़िछल सबै सन्तसुजान ।

सत्यकेहों त्वहि तातते प्रिय, स्वहिं प्राणसमान ॥
 संतं धर्महातमं अमित अनुपा । कंहिन, सकै शारद, अहिभूपा ॥
 जिनके दुरश, क्रिये, अधमूला । होयें, शमन, जिमि पावक, वृला ॥
 पूरुष, पुण्यभाग, जत्र, जागै ॥ तं, मन, संत चरण, महलागै ॥
 करै, सदा, जो, संतन, सेवा । ताके वश संतत सव, देवा ॥
 धन्य, संत जे तजि सकामा ॥ रटहि, नाम, सहरति, वसुयामा ॥
 ईश्वररूप, तिनहिं, करिजानौ । तिनके चरण सदा उर आनौ ॥
 हरि गीतिका छंद ॥ तजि, कामजे वसुयाम, ध्यावहि, नाम पावन
 मनु, क्रिये । ते धन्य संतत संत, ईश्वर, देहधरि, आपुहि, लिये ॥ सत्र
 जक्र, पावन, करण कारण, नित्यते भूम, अदौ । भगवन्त, जनके, मेदि
 संकट, ठट ते, सुखकी, ठटै ॥

दो० सन्त वचन रविकर सरिस जाके हृदय प्रकाश ।
 मोह अविद्या घोरतम कस्त सो वेगि विनाश ॥
 सवेया ॥ सन्तन के गुणग्राम अनन्त न पावत अन्त अनन्त
 वलानत । आगुण औरनके न गनै गुण तासु सप्रेम सदै उर आ-
 नत ॥ जोपिकर अपकार कऊ उपकारहि तासु हिये करि मानत ॥
 याविधि सन्तनको भगवन्त सदा श्रुति ब्रह्म समानहि भानत ॥

दो० धन्य सन्त निर हेतु जे करे अपरको काज ।
 ज्या कपास दुख भरि सहि राखत औरन लाज ॥
 संत चरण रज जो शिरलावे । उपजे ज्ञान भक्ति ममपावे ॥
 जप तप तीर्थ धर्म अचरु । योग थज घेत जेम विचारु ॥
 वेद पुराण जीपेटे बहुभांती । क्रयै ज्ञान चाहे दिन राती ॥
 संत चरण विनु किये सतेह । नादितात सर्वस सुनु यह ॥

कीन्हें विनु संतन पद नाता । पावन भक्ति मोरि सुनु ताता ॥
 संतन विवश सदा मे कैसे । हाथ ख्यलार चंगार है जैसे ॥
 संत वचन जो मानै साचा । ताको सुयश लोक तिहुं माँचा ॥
 पाप रूप प्राणी किन होई ॥ संत संग पावै गति सोई ॥
 अस प्रभाव संतन कर भौई ॥ शेष गणेश सकें नहिं गाई ॥
 सकृत प्रणाम किये जिन करे ॥ पाप ताप नहिं आवत नेरे ॥
 जिनहिं संत पद प्रेम अभंगी ॥ होहिं सकल तिन्ह के दुख भंगी ॥
 प्राण समान संत स्वहिं प्यारे ॥ होत नहीं क्षण एकहु प्यारे ॥
 यथा कलेवर संग सदा ही रहत वास कीन्हें परिछाही ॥
 जिमि सनेह पय माँझ निवासा ॥ भानु किरण महँ यथा प्रकासा ॥
 वेतस मध्य यथा द्विजराजा ॥ आखरें में जिमि अर्थ विराजा ॥
 तिमि मम वास संत दिग अहई ॥ रिखा करत चक्र नित रहई ॥
 संतनते । मोते नहिं भेदा ॥ दधै न तात, उनहिं जो खेदा ॥
 निंदा करै किधौ उपहासा ॥ सहित कुटम्ब करौ त्यहि नासा ॥
 रौरव नरक वासते पावै ॥ जे संतन कह भुलि सतावै ॥
 संत विरोध किये तिहुं लोका ॥ पावन तात कतहु सो आका ॥
 ज्यों आख वैरा अम्बु सो ठानै ॥ करै तासु को रक्षा प्रानै ॥
 मम अपराध करै जो कोई ॥ करौ क्षमा में चाहै सोई ॥
 भक्त दोह जो मनहिं विचारै ॥ ताकह चक्र मोर संहारै ॥
 अस प्रण मोर भक्त हित लागी ॥ सोन वचै पुन त्रिभुवन भागी ॥
 ॥ सो संत कृपा विनु तात मोहिं न पावै कोटि विधि ॥
 ॥ संतन सो भल नात ताते संतत कीजिये ॥
 ॥ राम वचन सुखदाय परम मनोहि नीतिमय ॥

॥ सुनि लक्ष्मण सुख प्राय वार वार वन्दे चरण ॥

इति श्रीमद्भगवत्पद्मसुनि लक्ष्मणसुखप्रायवारवन्दे चरणे ॥
 काण्डे लक्ष्मणप्रतिप्रभुमानवैराग्यभक्तिवर्णनो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥

॥ दो० राम लक्षण श्रीजानकी चरण कमल सुखधाम ॥

॥ भाग्यवन्त कर जोरि कै पुनि पुनि करौ प्रणाम ॥

॥ मोदक छंद ॥ यो कुछ काल व्यतीत भये जब शूषणसा दश

कंध प्वसा तव ॥ दुष्ट महा विकराल भयावनि निश्चर वंश कुठारि

निशावनि ॥ जाइ तहां लखि कै भगवानहि ॥ विधि गई उर काम के

बनिहि ॥ धारि सुरूप चलायकै नैनन ॥ बोलत भै भरि चातुरि बै-

नन ॥ सवैया ॥ सुन्दर श्यामल गौर मनोहर आनन पूरण चंद्र

कलाहौ ॥ देखतही चित मोहि लियो भगवन्त सवे सुखमाके थला

हौ ॥ शीश जटा शर चाप गहे कर भवत वीर वडे प्रवलाहौ ॥ बैठि

निशंक महावन में तुम को कहौ संग लिये अवलाहौ ॥ चक्रवती

दशरथ महीपति कौशलनाथ के है हम जाये ॥ राम सुलक्ष्मण

नामन संयुत आयसु दे यह तात पठाये ॥ जाय वने सब मारिके

राकस पीलहु जे मुनिवृन्द मुहाये ॥ त्वं कहु की हसि आपन हलि

मुहाल निजै हम देत वताये ॥ चंचरीक छंद ॥ लंकनाथ दशरथ

की म्वहि जानिये भगिनी सही ॥ जासुहै ठकुराई तीनिहु लोक मा-

निहु जो कही ॥ है न पूरुप आन ज्यो तुम नारिहू सम ना हमौ ॥

ताहि ते सुकुमारिहो अस जानि मो संगमें रमौ ॥

दो० कह्यो नीक सो भामिनी पै कहि सुनो हमारि ॥
 लक्षण कुमार जाउ तहै हे मरे यह नारि ॥
 तोमर छंद ॥ सुनि वैन सो सति मानि ॥ तिनसो कही अस-
 आनि ॥ सवैया ॥ राम सहोदर आनंद कोदर हेरहु मो दिशि नैन

उठाई ॥ मैं अनुजा दशकंधरकी तिहुँलोक में जाकरि है उठुराई ॥
 राजकुमार रमौ संग मोहि करौ प्रतिनी पति है मनभाई ॥ जासों
 लहौ भगवन्त सवै सुख सम्पति सिद्धि समृद्धि वैडाई ॥

कहलक्ष्मण सुनु भामिनि वाता ॥ वैहैं भूपः सवनि के वाता ॥
 म्वहिं सेवकहिं वरे का पैहौ ॥ चेरी छै उपहास करैहौ ॥

ताते उजहिन पास सिधावो ॥ जाते सुयश लोक तिहुँ पावो ॥

सुनि सो गई जहां रघुवीरा ॥ पुनि पठ्ये प्रभु लक्ष्मण तीरा ॥

तोटक छंद ॥ लखि लक्ष्मण ताहि सक्रोध कही ॥ त्वहिं आवति

लाज निलज्जि नही ॥ त्वहिको जग पूरुष जौनु वरै ॥ तृणसो निज

लाजहिं तोरि धरे ॥ वरवै छंद ॥ समुक्ति हास अति व्यंकट रूप न

नाय ॥ दौरी मुख पसारि गई सिया डेराय ॥ तव सयनहिं प्रभु ल

क्षणहिं दीन बुझाय ॥ ज्यहि विधि सो वरवैमें तुलसी गाय ॥ तव

लक्ष्मण तुरतै त्यहि जासा कान ॥ लीन काटि भइ व्याकुल मानि

गलान ॥ त्वलि खरदूपण पै गई ठान्यसि फेन ॥ सुनि उठिधाये तुरतै

ते सजि सैन ॥ गीतिका छंद ॥ सजि सैन निश्चर निकर धाये सपर

गिरि कज्जल मनौ ॥ धृत अस्त्र शस्त्र अनेक आयुध विविध वाहन

को राजौ ॥ अति होत असगुन अमित ते नाहि गनत मृतुवश रा

कसा ॥ वाजत अनेक जुभाउ वाजन गरजिं तर्जहिं वाकसा ॥

कोउ कहत मारहु पकरि दोउन ललित लै ललना लियो ॥ इमि

कहत धाये सुभट सबदल अग्रसुपनेखहि कियो ॥

दो ॥ धूरि धूरि अम्बर निराखि कह अनुजै रघुवीर ॥

लै सीतहि गिरि कंदरहि जाहु सजग रघो जीर ॥

प्रभु आयसु लक्ष्मण गये लै सीतहि गिरि खोह ॥

तव लगि रीपुदल सन्मुखे आइगयो अति कोह ॥

छप्ये ॥ तव रघुपति मन विहसि कठिन कोदण्ड चढ़ायो । बाधि
 जय शिर जुट कमरकसि तूण लगायो ॥ करश चाप सुधारि दुव-
 नदल सन्मुख देख्यो । ज्यों केहरि करि भुंड निरखि मन हरप विशे-
 ल्यो ॥ गयमोहि निरखि सब राम छवि सकत न निशिचर डारिशर
 तव निकट बोलि मत्रिहि विकल कहत भयो असावजन खर ॥ ज्ये
 कोऊ नृप सुवन सुवन भूषण छविपेना । असि शोभाभरि जन्म
 कतहु हम दीखन नैना ॥ यद्यपि किहिनि करूरभूरि पर वद्ध न
 लायक । ताते कहियो जाय देहि निजनारि सुहायक ॥ दैनारि जि-
 यत दूउभाय ज्यहि जाहि भवन निज मानिसुख । नेतु मारि गरद-
 म्यलिहो दुहुन परे आइ ममकालमुख ॥ सचिवन्ह प्रभुसो जाय बात
 सब वरणन कीन्ह्यो ॥ सुनि मुसकाने राम तिनहि अस उत्तर दी-
 न्ह्यो ॥ हमक्षत्री मृगयार्थ फिरत वनमें नहि डरते । तुमसे खल मल-
 राशि खोजि मृगगण संहरते ॥ रिपु प्रबल देखि नहि डरत हम लखत
 जुरण कालो मिलहि । नहि होइ जुबल घरजाहु फिरि भागेन पर
 कर नहि दिलहि ॥ दूतन प्रभुके बैन जायानि जनाथ सुनायो । खर
 दूषण त्रिशिरादि सुनत अति क्रोध बढ़ायो ॥ बोले तव ललकारि
 सुभट सब सन्मुखे धावहु । नृप बलकन दूउ बाधि मारिमहि गर्द मि-
 लावहु ॥ सुनिबले धाय निशिचर सकल प्रभुपर हाहाकारक्य । शर
 शक्ति शूल तोमर परिघ जानाविधि हथियारलय ॥ कुंडलिया ॥ तव
 रघुपति टंकोरिधनु कीन्ह्यो शब्द अपार । सुनि सब निशिचर भे वधिर
 गिरि गिरिगे हथियार ॥ गिरिगिरिगे हथियार सक्यो काहुन संभा-
 री । साबंधानहै सकल बहुरि धाये तमज्वारी ॥ तमज्वारिन दलकोपि
 चल्यो आयुर्ध बहु वरपति । तिलसमान सो काटि वाण निज छाडे
 रघुपति ॥ भुजंगप्रयात छन्द ॥ चलो राम नाराच संग्रामबाये । मनो

सभय देवे । करुणा अनिधि चीन्हे । रामरूप सत्र केटकहि । कीन्हे ॥
 एकहि हृत्पकल धायुग धरि मोरा । क्षिण मह । सिकला भये संहारी ॥
 राम । रामो कहि । तजेनि शरीरा । भये मुक्त ते । स्व गीरणधीरा ॥
 देखि त्ररित । हस्ते । सुर । भारी । वरपिसुमन जे जयति । पुकारी ॥
 सीता सहित लषण त्रव आये । प्रभुपदप्रद्व हरिपि शिरनाये ॥
 निरखि राम । छवि । भये सुखारे । त्रव रघुपति । निजुददिगा वैठारे ॥
 नदो ॥ पंचवटी श्री राम वसि । निर्तागनव । त्ररितु अपार ॥
 प्रभाकरत । जाहि आवत । सुनत । पावत । नर । भव । पार ॥
 प्रीतिमि । प्रोधा सिद्धि । तसज भगवन्त । सिद्धि । विर । चि । वे । म । क्षि । शि । से । म । सि । प्र । न्व । की । र ।
 य । म । क । सु । ख । र । दृ । प । य । नि । शि । र । दि । व । र्ध । व । र्च । नो । न । म । न । न । यो । ५ । ध । य । ५ । ५ । न । न ।
 छि । प्रो ॥ छवि । प्रसुद्ध । परधाम । विरज । निर्गुण । गुणरासी । पस्मतिम
 परवहा । अखिल । इस । अंतरवासी ॥ त्रिधि हरि । हर पदबंध प्रीणते । प्रति
 पाल । कृपालु । प्रजन । सुर । मुक्ति । मनु । र्ज । द । लु । जी । कुल । काल । कराल ॥
 जय । सिकल । भुवन । मालन । करुण । शरणागत । सिकट । कदिनी । भाग्यवन्त
 वन्दन । करौ । रघुवंश । त्रिभूषण । सुखिसदन ॥ नीक ॥ डी । छि । श्री । ग । न । ३
 नदो ॥ खरदूषणी । त्रिशिरादि । लो । नदी । जी । जवै । विनास । किं । ध । म । ह ।
 पा । ध । क । श । र्म । ण । स्त्र । ५ । त्रव । न । भा । गि । के । म । र्द । नी । राव । ण । ५ । प । स । वा । न । गि । ५
 । श्रौ । प । ५ । म । न । ह । श्रौ । त । म । धि । कर । ल । नि । श्वर । कुल । किं । री । कुमति । ग । न । गी ।
 ग । न । ५ । न । र्द । भुवन । दश । भलि । खरदूषण । त्रिशिरादि । भखि ॥ न । न । ५
 सभा मध्य परि जाय करि विलाप बोली । तंमके । न । न । न ।
 तोहि न । सु । मृत । भाय । सुवलाशत्रु । शिरपर चढयो ॥
 कुडलिया । शील । सुधि । पुर । देश । क्री । करै । पान । म । द । अन्ध । मेरी
 गति । सह । है । ग । त्रौ । हिं । जियत । दशकन्ध ॥ तोहि जियते । दशकन्ध
 राज । सब । है । ग । भङ्गा । नि । म । म । नै । न । प । म । रि । भरे । शोणित । म । म । अ । न्नी ॥

अद्वैतभंगनिहारि पीर त्वहि तनकन हूली।।रिदत चढी शिर मोत
 खरि तोको।सक भूली।। वेल्यो मुनि दशमुख।सरुप कहु क्यहि
 त्रासले मोरि।।ज्यहि श्रुति नासा।काटि यह कीन्ही दुर्गति।तोसि।
 कीन्ही।दुर्गतितोरि।कहै।क्यों।सपदि न हाल।।को अस प्रबल।।त्रि-
 लोके।आसपहुँच्यो क्यहि काला।।कालहुको डरडारि श्रवण नामा
 तव ज्योली।।कहु कहु ककेकर्म मुनत।शुरपणखा वेली।।कवित्त।।
 आये वतदेखन कुमार कौशलेश द्वैक सुंदर उदार कोटिमारभा।।ल-
 जावना।।भगवन्त प्रवारु।सुकुमार वीरवाणयते।पौरुख प्रतापपुंज
 पारहै प्रभावना।।मारे खलवृन्दन अनन्द मुनि।द्वन्द वास।डारे डर
 देवन पुकारे यश पावना।।कोटे श्रुति निकते सुडाटे खरदूपादि
 मारिकै सदले।औनिपाटे तिन रावना।।सवैया।।ते एक संगलिये
 नवतारि।निहास्त जो।सत्ररात्रे मोहै।रंभ रमा सति भरति।गौरि
 मलीन प्रभाद्युति।दामिनि।कोहै।।कोटिन चंदप्रभा मुखपुंज।अ-
 तूपम रूप विरञ्चि इत्रोहै।क्यों भगवन्त प्रशंसकरौ।गुणसागरि रूप
 उजागरि सोहै।।कवित्त।।आईती।साथमें सुभाईती।न साथमें
 सुभाईती न साथमें सुंगति।दीन भाई है।राखी।श्रुतिनाकको न राखी
 श्रुतिनाकको न राखी।श्रुतिनाक।दिगनाकतौ सुहाईहै।।राखेआपु
 बैरिन नराखी।आपु बैरिनको चानीवान खंडन सुधानु हेरिआई है।
 एरे मन्दा रौना तोहि सुभितौ।परौना।तिन्है जान्यमु नरौना काल
 तेरेहाल।पड़िहै।।

दो० सरदूपण त्रिशिरादिको न सुन्यो।जबहिं सो घात।
 अतिरिस न्यापी दशमुखहिं उठेसकल जरिगात।।
 शूरपणखहिं तब त्रिविध प्रबोधी।गयो भवन रावण मनशोधी।।
 तीनिलोक सुरे।नर मुनिमाहीं।मम सेवक सरि हूसर नाहीं।।

मो सम प्रवली सुभद्रा सुख दूषण ॥ तिनहिं वधैको विनु जगभूषण ॥
जोमि अत्रतरेउ जगतपति आई ॥ तौ करि त्वैरु तरो भव जाई ॥
तामिसा देह भोजन किमि करिहौं ॥ हरिपद विमुखे नरकमहँ परिहौं ॥
निज अपरलो कहि जो तौ त्वनयो ॥ धृग धृग ताहि वृथजिगजायो ॥
जो नृप तिनय कंकु वल भारी ॥ तौ हरिहौं तिय दउ रणमारी ॥
दो० अस त्रिपारि मिनारावैणी चलयो जेहो मारीचु ॥ जग
ज्यो पतंग दिशि दीपकहि जल्यो धाय वशमीचु ॥ कि
स्वर्गतो बन्दे ॥ राम सीय इतबो लयालीना ॥ रीज पुत्रि मुनिये
सुमवीना ॥ मै सुकीन चहतो नरलीला ॥ भूमिभार हर आनंद
शीला ॥ सो शुभाग्नि करिये तुम वासा ॥ जावतारि गण होहि न
नासा ॥ प्राणनाथ मुखकै सुनिवानी ॥ हर्षि सीय तव अग्निसमानी ॥
राखि तत्र बैसै निज छाया ॥ जानि जाय नहि रामकि माया ॥

दो० रावण उत मारीचको जाय नवायो भाल ॥

मन उदास त्यहि देखिकै पूछेउ कहु निजहाल ॥

द्वै तपसी ॥ दण्डकवन आयै शूर्पणखाहि ॥ कुरूप वनाये ॥
खरदूषण ॥ त्रिशिरादिक ॥ मोरो चौदेह सहस न एक उवारे ॥
सो तुम करहु सहाय हमारी ॥ कपट कुरंग होहु बलकारी ॥
ज्यहिते मै उन तिय हरिआनो ॥ तौ तुम्हार बहुविधि गुणमानो ॥
दो० सुनत वचन मारीच तव कहा सुनहु दशशीश ॥
तिनहि न जान्यहु नर निपट भवभोजनजगदीश ॥
सवैया ॥ राखन गे मुनिये जवै म्वहिं शायक ते फरको विन
मारयो ॥ आयउ सो शतयोजन अत्र सुताडक मारि सुवाहुहि जा
रयो ॥ भूप सुभांधनु शंभु दल्यो भृगुनायकको जिन गर्व उतास्यो ॥
नाश किये खरदूषण जो भगवन्त न मानुप ताहि विचारयो ॥ पूरण

ब्रह्माचराचरजो धृतामानुषदेहे महारण्यशूरोऽजाहिन प्रावत्पर
पुराणवखानतवेदहुको मिनमूरो ॥१॥ त्यों भगवन्ता सुमानिमयाशिप
अंतरति छलता गहित्तूरो ॥ जाहु घरेकुल खेरि विचारि सुतामुवि-
रोध प्रीनहिंपूरो ॥ तोमखंड ॥ सुनिःक्रोपि रावणनीच ॥ कहवै
डाटिमरीच ॥ म्नाहिं दैतज्यो गुरुज्ञान कभटकौन मोहि समान ॥
नाराचखंड ॥ तवै मरीचाहीन मै विचारव्यो हेदासज ॥ उभै प्रकार
मौतको सुबुयोत ज्जालि आयज ॥ इतै जिज्जति देउतौ दशास्य मूढ
मारि है ॥ उतै शिराम-वाण छटि प्राण नि उवारि है ॥ निरै सुहाय
अस्य औसि विसि ज्जाव धार्मिको ॥ मरौ सुहायरीमके करौ दशास्य
कामिको ॥ १ ॥

॥ परम प्रेमहरपितः सृष्टवैचल्यो दशाननसौथ ॥ १ ॥
ज्यहिः कारण मुनि योगिजन कर्ता अनेक उपाय ॥
स्रष्ट प्रभु आजु विलोकिहो इन्द्र नैतनते प्रजाय ॥

१) पण्डितसु क्रोध निर्वाणप्रदः कारणः अवश-वशभक्तिः ॥
२) प्राण नैत सफल करिहो निरखि सोई प्रभुसहस्रशक्ति ॥ १ ॥
पंचवटी ॥ १ ॥ वैदे ॥ अंगुरधवीरा । सीता अनुज सहित मतिधीरा ॥
कहहिं राम कहेतु कथा ॥ सुनीता । सांदर सुनहिलिपण अरुसीता ॥
रावण संगी लियेहु मारीजा । ताही बिन आवात्मनिनीचा ॥
कनक कुरंग जितित मणिनाना । भाव मारीच न ज्ञाय विखाना ॥
त्यहितल कपट कुरंग स्वइ आवात देखि सुभग सीता मन भवा ॥
कह प्रभु सो हेरपितः सृष्टवैना । यह मुंग नार्थ परम छवि ऐना ॥
मिलत गहे जो पालन लायक ॥ माखहु होइ चर्म सुखदायक ॥
प्रिया बर्तन सुनि आगमज्जानी । उठे राम गहि शरधनु पानी ॥

। दी० लपणहिं सौपि विदेहजहिं आपुं शरासन साजिं ।
 ॥ मृगपाछे धाये तुरत बल्यजो दिखि सो भोजि ॥
 सवैया ॥ सुन्दर प्रियाम सरोरुह लोचन मोचन पीप सुकीरति
 छायो । आगिर्म वेद पुराण बखानत नेति नशंकर ध्यानहि पायो ॥
 पूरण ब्रह्म जेदादिन अंत अनंत सुसैत मिहातम गीयो ॥ सो भग-
 वन्त शरासन साजि कपट्टा कुरंग के संग सिधायो ॥
 पुनिपुनि चितवत प्रभुचित दीन्हे । मुनि मोखके उखवारे दीन्हे ॥
 कबहुं जाय हरि पुनि प्रगटावै कबहुं धरि परिकट निकटावै ॥
 यहिविधि सो जवै द्विरि सिधारा । तव स्थुवीर तोकि शरमारा ॥
 परेउ धरणि महि धरहि पुकारी । हरये सुमिरि राम दुखहरी ॥
 तौ त्यहि दीन राम निजधामा । लै मृगचर्म फिरे अभिसमा ॥
 तामु शब्द इत सिये मुनिपाई बोली । लक्ष्मण ते दुखराई ॥
 हे देवर तुम बेगि सिधारो ॥ प्रभुहि परेउ कह्ये संकट भारो ॥
 मृग न होइ यह निशचर कोई । दीन्हेउ प्रभुहि विपिन दुखसोई ॥
 सो० लपण कह्यो मुनु माउ दुखदायक प्रभुको कवन ।
 सौपिगये किमि जाउ स्वामि रजयसु भंग करि ॥
 सवैया ॥ रामहि जीतनहारन द्वै कउ कालहु आनि जुरै रण
 जोई । देव अदेव सबे लरिहारहि प्रावहिगे पर यार न सोई ॥ राम
 न आरत बैन कुहे कहु डारिय मातु सु शोचन खोई । तियो भगवन्त
 सुमानु प्रतीति ज रामहि संकट दायक कोई ॥
 तव सिये कहीं पुरुष कहु वाणी । उठे लपण गहि शरधनुषीणी ॥
 चाप कोरन्ते बहू दिशि रेखा । खिचि सौपि भवनदेवन शोपा ॥
 जो जेविना सो देहै । तुरता चले नायशिर सियहि अनन्ता ॥
 रावण सुन वीच तव पावा । प्रतीरुप धरि सियदिग आवा ॥

याच्यो : भीख सुनता वैदेही लगीं द्विनी, फल मूल सु तेही ॥
 बोला पुनीसो कपट प्रवीणा बंधी भीखमें कर्तहुं न तुलीना ॥

दोहा भावी वश सियारेखें तजि ब्राह्मणिकसी ज्योहि ॥
 १. गिरि करि प्रणाम । वैठारिथ । जल्यज्जगान्पथ त्योहि ॥ १ ॥
 २. इतउंतवितवतत्रकितत्रितज्जान्योसियदशीशीशा ॥ २ ॥

करि । पुकारः विलाखाइ कहें हाइ हाइ जगदीश ॥
 ॥ स्वैया ॥ हा सुख भूरि रायो वत दूरि करुंग के संग अनंग ॥

आवनत लेहुन कियो सुधि दीन दर्याल दिवाकर वंश दिवाकर पा-
 वन ॥ आरत भोजन नमि प्रसिद्धा सु आरति मोरि हरौ मन भविन ॥

त्यो भगवन्त छडावहु जेगि हेस्वहि जालु लिये खल रावनि ॥ हाय
 सुलक्ष्मण दोष जि तव फल पायउ सो भल रोप जु कीन्ह्यो ॥ सोक्षमि

शेष सुधावहु रेख जु तोषत डारि लया डरु दीन्ह्यो ॥ ज्यो सुरभी सुर
 गोमरु पानि परी परपानि सु त्यो ॥ मही श्रीन्ह्यो ॥ चोरहु के खल सुद

हमें हरि रावनि देव सेतावन लीन्ह्यो ॥ १ ॥
 दो० सीता केरु विलाप सुनि सत्राचर संव जीव ॥
 भयो विकल भूली सत्री हितनमन सुधि बुझि हीन ॥

७ छंदु हरिपद ॥ गृद्धराज रघुराज प्रियाकौ अरित रव सुनिपायो ।
 राम राम कहि ताहि प्रन्नरित गगन पथ धुकि धायो ॥ ज्यो छूटे प-

विशक्त गिरिन प्रै भारुत जेगु लजायोनी त्यो करि कुद्ध गृद्धा अति
 आतुर जहै रावण तहै आयो ॥ कवित्त ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

राजप्रति चोरु लंपट लवार सुदराव मद्यखोरमै ॥ बाहुवीश शीशदश
 ईशके अशीश खीस जेहे तिसीवीश जगदीश कोप घोरमै ॥ जाहि

ढीला जपनकी सुजानकी कुशल चाहि मान किन मानत जि जा-
 नकीश मो रै नति करिहातो विश्वनातो सब ठाढ़ होहि भागुरे

न भागुहता आयो काल तौरसै ॥ चौवन विदारि अंग मोचहि प-
 चारि औनि ॥ औनिजे सुराखि थल तिहि फेरि डाव्यऊ ॥ पौरुख प्र-
 वल पूरि दोहुत्त विराचे युद्ध रामके प्रभाव पोवै गृद्धकोल हाव्यऊ ॥
 मारिकै विकल चोट तंगुलता तूरकरि सुकुट कोदण्ड पाणि आयु-
 धन छोट्यऊ ॥ भाग्यवन्तौ फेरि उठि रावण सकुद्धवीरौ काठिकै
 कृपानपैन पंखेतीसु कट्यऊ ॥ तोटक छन्द ॥ कटि पंखगिख्यो खग
 रुण्डमही ॥ मुखसौ करुणानिधि रामकही ॥ वनि गृद्धजु रामहि
 कजलख्यो नहि जीवित जानकि त्यागकख्यो ॥ मुनि सिद्ध सराहत
 ध्यान अडे ॥ भगवन्त जटायुके भोगवडे ॥ दोषक छन्द ॥ रावणले
 सिये भाग सीता पो भूरि विलापकौ वनभसीता ॥ पर्वतपै सिय
 कीशानहेरी व दीन सुहायि पटै हरिदेरी ॥ नोयु ई ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ दो ॥ यहिविधि रावण ज्ञानकी ॥ हरि लैगयो पराय ॥ ॥ ॥
 ॥ विपिन अशोक अशोक तरु तैरखै राख्यसि जाय ॥ ॥ ॥
 बोला तत्र ॥ सियसौ ॥ अंतरागी ॥ किरहुं न शोच नरनके लागी ॥
 उनमे कहु प्रभाव नहि भरी ॥ मै समुक्त वनको करि धरी ॥
 दिहिनि खेदि घरेते प्रितु माता ॥ भसंत फिरत विपिन द्रुभ्राता ॥
 नहि जानी क्यहि करम प्रभावो ॥ तुम करि ताह नैरनको पावो ॥
 अब जाग्यव तव भाग सुसीता ॥ जो आइउ हमरे संग श्रीता ॥
 देखहु मेरी प्रभावी अपारा ॥ मोसम प्रवलान कउ संसारा ॥
 मोरकहा जो करु हितमानी ॥ तौ तुव चेरिकरो लिसव रानी ॥
 यहिविधि खलवहु सिखवजदीहा ॥ पै सिय कान नसी कहु कीन्हा ॥
 ॥ दो ॥ ज्यो प्रत्यरमे ॥ कैवको ॥ खण्डन महाके किय ॥ ॥ ॥
 ॥ तौहि न व्यापै ॥ चोट पुनि ॥ हरे ॥ आपुही ॥ होय ॥ ॥ ॥
 इति श्रीमद्योष्यानिष्ठ नामात्मज भगवत्सिद्धविचित्रेभक्तिशिरोमणिप्रथमोऽध्यायः ॥

- दोष जाको नासि सु व्यावतै अशुभौ शुभ संवा होत ॥
 - ए भाग्यवन्त स्वइ रामा सिय बन्दौ भवतिधि पोती ॥
 गये चलापण जे जहै रोजिवनै ना अनुजे लखि बोले प्रभुवैना ॥
 तत्त ध्याती कीन्है उ भलिनाही ॥ आमहु छोडि सिय जन्त माही ॥
 परते जानि स्वहिं अशकुन देखी ॥ कौहुहि स्वल सिय होउ विशेषी ॥
 कही लिपि कछु मोर जन्दाप्रा ॥ पदयो हठि स्वापिनि करि रोप्रा ॥
 तव सवधु चुली आश्रमी आये ॥ शून्यकुटी नहिं सीतहिं प्राये ॥
 अये प्रविकल जसि पूरुष कामी ॥ निरइव चरित करि जग स्वामी ॥
 लले मिमहि खोजत दंडवीराना गिरिसर खग मृगजन हुमतीरा ॥
 ॥ इन्द्रवज्रा छन्द ॥ हि हे खगाली मृगभृङ्गश्रेणी ॥ देख्यो सु सीता
 मृगमंजुनेनी ॥ हे हे सुसीता मम आर्णव्यारी प्रह्वौली कहींको द्वैय
 मोहिं न्यारी ॥ जौने सनेहै तजि आर्यगेहूमा आई हमारे संय तीन
 नेहू ॥ कीन्हो कहीं सो जियहि अजुमोहीं ना दीशोर्न सीता कृत
 खोजतोही ॥ कैसे र्वथान्यो सहिजत तोपै ॥ हे हे सुमीता अगदौन
 जोपै ॥ मसौ सुकीन्हो कहने तुम्हारी ॥ गौन्यो बुरन्तै मृगहेस मारे ॥
 काहे सुध्यारी अवि कोहकीन्हो ॥ जो बीच बुनमं तजि मीहिदीन्हो ॥
 ऐसेहि श्रराम विलाप करतै ॥ आयो जहं गृध्रपरी कहरतै ॥ सीते
 सकोतै मन दुःखदायो ॥ मेरेन एकौ कछु हाथलायो ॥ हरिगि-
 तिका छन्द ॥ लाग्यो न भरेहाथ एकहु धीति जपु वादिहिं मगोनी
 जिमि कल्पवेलि सुजन्मि कानन ॥ उपेजा दव दाहत भयो ॥ बरस
 निशांवर जाय लैगो ॥ हठि नसीति हिराख्यज ॥ देख्यउ न भरतहु राम
 छवि सियसुधि न प्रभुसन भाख्यज ॥ योहीं जटायू करमीजि शोचै ॥
 मोसो अमागी भव कौन पोचै ॥ ताही समै सो दखवंधु आये ॥ देखे सु
 गीधे जल नैन द्याये ॥ द्याये विलोचन वारि गीधेहिं गोदकरि

राघव लिये। अति प्रेम सींचे सलिल अश्रुन मनहुं जल अंधो दिये।
हेलपण गीधर्हि मिलत वनमें भरण पितु नहिं जान्यऊ। सहिं सं-
क्यऊ सो विधि कठिन नहिं बडपक्ष आजु सु भान्यऊ॥ बोल्यो
जटायु तव धीर धारी। कीन्ही दशास्या गति या हमारी। सी ते
सु लैगो दिशि दक्षिणे को। राख्यो सु प्राणै तव दर्शनै को। छंद॥
तव दशा लागि सु प्राण राख्यो चलन। अब चाहित सही। कह राम
गखहु तात तनु अति धीर मन डोळ्यो। नही। अवलोकि प्रभु मुख
चंद्रवनि बरबचन गीध सुनाइहो। यहि भूंड जीवन लागि रघुपति
समय घोख न लाइहो। दुर्वदुर्जाको है नास अंतै। पैहो कहा फेरि
सुभागवतै। जानौ सुभावे प्रभु आपुनीके। पालौ नतै मेदि विको-
ही के। हियके विकारन मेदि रघुपति। प्रणति प्रतिपालय लियो।
शुभकर्म होन मलीन म्यहि पितु आपने पट्टर दियो। जो त्रिजग
योनि कृजाति गृद्ध सुखाय परआमिक जियो। भगवन्त आज सं-
माजा सुकृतिन मोहिं सब ऊपर क्रिप्री। वाणी सुकनि मुख नाम
रूरो। रूपै सुचाखौ चख सोदा पुरो। मोसो सुभागी जग कोन
जायो। जाको सुअंके निज राम लायो। लागे सुअंकहि कहत रघु-
पति तात कछु दिन जीजिये। अवलोकि सेवा सुवन भोकिहें तात
को सुख दीजिये। रहि दिव्य देह सुदृच्छया जग भरण जीवने ली-
जिये। दै दरश हरि हर सुयश गाय कृतार्थ भवको कीजिये। श्री
गमवाणी सुनि आस्येरी। बोल्यो जटायु भूद्वेन फेरी गामरे सुमंवे
मम फलचारी। हांवे जे राघो कहियो विचारी। ॥ ३३ ॥
॥ दोष सुनि प्रभु वचन जटायुके मोन न उत्तर दीनी। ॥
॥ मोसो भाग्यवंत रघुवीरा समा को कृपालु परवीन ॥ ३३ ॥
पुत्रिनी कृपालु मोले निमृद्वानी। तार्त सकल तुम सुकृत किर्यानी॥

परहित चवेड तातु तुम तासु । प्रायज फल मुनि हर्षमाश्राम ॥
 जाह्नु धाम समा त्यागिः शरीरादेजे कृहा न्तुहरेः सन् प्रीरा ॥
 सीता हारण पितासनु जाई । कहेउं त तात सुनत हेरु पाई ॥
 राजर पुपय प्रतापनी सुआगी । दहिहो शत्रु तिलम न लागी ॥
 कुल समेत सुरि सभा इवाला कही । आइक आषादिशी भाला ॥
 सुनि प्रभु बचन गीध हरपाना । हैकैगतुरता रूपी मगवाना ॥
 करि करपदी अस्तुति अनुसारी । जे जे प्रजि रे रघुवंश जा खगरी ॥
 नी चोटकेंद्र ॥ जस राम कृपा सुखे धामहरे । प्रसातम पूरण ब्रह्म
 परे ॥ तवनीरुद गात प्रकाशमई । पूर्ति अंरा प्रभा बहु कामबई ॥
 अरुणास्तुज लोचन चारुमुख ॥ अवलोकनि हारण दासईसं ॥ सु-
 जदंड-पुलम्ब प्रत्रयद नितं । कर शायक चापधर अजिता । ज्यहि प्री-
 वतः पार न वेद तके । गुण गावत शारद शीप थकै ॥ ज्यहि आदिह
 अंत सुमन्य नही ॥ समि दशि बराचर । न्यास मुही ॥ भव भिन्न
 रज्जत दिव्य नितै ॥ प्रणतारति मोचन अक्राहितै ॥ करुणा करिसो
 चिततोत्त ससौ ॥ भगवन्त हृदय प्रभु नित्त वसो ॥ गीतिका छंद ॥
 यहि आंति अस्तुति गीध करि हरिभक्ति अविरेलः प्रायके । हरिधाम
 गो अभिराम हर्षिता राम तर्द शिर नायके । रघुवीरुता सुक्रिया पु
 करः प्रितु सरिस कीन वनायके ॥ भगवन्त ऐसे प्रभुहिं काहेन म-
 जसि मंतचित लायके ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ११० ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ११३ ॥ ११४ ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ११८ ॥ ११९ ॥ १२० ॥ १२१ ॥ १२२ ॥ १२३ ॥ १२४ ॥ १२५ ॥ १२६ ॥ १२७ ॥ १२८ ॥ १२९ ॥ १३० ॥ १३१ ॥ १३२ ॥ १३३ ॥ १३४ ॥ १३५ ॥ १३६ ॥ १३७ ॥ १३८ ॥ १३९ ॥ १४० ॥ १४१ ॥ १४२ ॥ १४३ ॥ १४४ ॥ १४५ ॥ १४६ ॥ १४७ ॥ १४८ ॥ १४९ ॥ १५० ॥ १५१ ॥ १५२ ॥ १५३ ॥ १५४ ॥ १५५ ॥ १५६ ॥ १५७ ॥ १५८ ॥ १५९ ॥ १६० ॥ १६१ ॥ १६२ ॥ १६३ ॥ १६४ ॥ १६५ ॥ १६६ ॥ १६७ ॥ १६८ ॥ १६९ ॥ १७० ॥ १७१ ॥ १७२ ॥ १७३ ॥ १७४ ॥ १७५ ॥ १७६ ॥ १७७ ॥ १७८ ॥ १७९ ॥ १८० ॥ १८१ ॥ १८२ ॥ १८३ ॥ १८४ ॥ १८५ ॥ १८६ ॥ १८७ ॥ १८८ ॥ १८९ ॥ १९० ॥ १९१ ॥ १९२ ॥ १९३ ॥ १९४ ॥ १९५ ॥ १९६ ॥ १९७ ॥ १९८ ॥ १९९ ॥ २०० ॥
 गृद्ध क्रिया करि सुनि दउ आई । चले । सिग्रहि खोजते सब ठाई ॥
 मिलेउ कबंध असुर तहे रहेऊ । दण्डजन खैचि खान जब चहेऊ ॥
 तव रघुवीर कीन हत्यहि घांता । कहेसिसकलति जशायिकिवाता ॥
 में प्रभु ॥ पूरुव को गृहान्धवी । विद्या रहेपु रहौ अति गर्वा ॥
 इनासा जो की हंसी ककीन्हा । तिततुबको पिशाप हंदिन्हा ॥

होसि जाय राक्षस कुट्टपा तिल उच्छार हाथ मुरभूपा ॥
 भयउ अमुर अति करी उपदे मारेउ इन्द्र कोपि तय विजै ॥
 गयउ शीश तव अपेट सिमाई च्याकुला गिरेउ धरणि प्रर आई ॥
 पुनि वश दयाकीन मुरनाहे ज्योजिन मरि मर्म लम्बी बौहे ॥
 बाहेन बीच परे गजो आई श्री खउ ताहि नहिं आन उपाई ॥
 पहिविधि कहि निज कथी सुनीई राम कृपा आपनि गति पाई ॥
 पुनि प्रभु चले अनुजयुत आगे शवरी के सुधि करि अनुरागे ॥
 ज्यहि त्यहि पूछत राजिवनेनी क्यहि वन बसत शवरी सुखेना ॥
 जासु भक्ति सुनि श्रवणी विशेषी कलज परले म्वहिकबंधो देखी ॥
 ॥ दौठ्यहा प्रात शवरी उठी फिरके शुभ सब अर्ग ॥ ॥
 ॥ आचिसगुन सुहावना देखि मन परमानंद उमंग गी ॥ ॥
 ॥ करत मनोरथ विविध विध युलक प्रकलित गात कि ॥ ॥
 ॥ आहु हमारो आइहे राम लपण दिउ श्राती ॥ ॥ ॥
 ॥ कविता ॥ ऐह घर भरे आहु पाहुने लपण राम प्राणन अधार
 सो निहारि सुख पाइहो ॥ पूजित अजीदि मुर शङ्कर सरोज पाय
 प्रेमसो पंवारि पूजि हीयसो लगीइहो ॥ जासु छवि देखिवे भिला-
 पन मरत देव सोई छवि आहु इन नैनन बसाइहो ॥ भाग्यवन्त पाय
 के गरीबको निवर्जवान रामसो सुभाय सब लाहुने अघाइहो ॥
 मारि तृण भोपडो सुवारि भरि कुम्भधारि दोतन सवारि भरि धरे
 फल आनिके खिन भोजि खिन छरिको सिधावे खन खन भोकि
 आवे पंथ भूपर सुपानिके ॥ खन अनुरागे तनमन प्रेम पागे खन
 चनेन मुलागे फल फूलन सुजानिके ॥ भाग्यवन्त राधव सबधु आप
 गये आय शवरी के भोन प्रेम पूण पहिचानिके ॥ शवरी विलोकि
 छवि शवरी मगन प्रेम धायक सरोज पाय जाय भई लागती

प्रेमपट्ट पृथ्वी अरघ देत आंसुनै सु आश्रमै ल्यवायलाय मोदपुंज
 प्रागती ॥ भोयकै चरण चारु आसनै पधारि दिव्य दोनु सुआनि
 फल दीन्है अनुरागती । भाग्यवन्त सानुजै शिराम सो सराहि खात
 ॥ दो० जो प्रभु पूरण ब्रह्मपुरु शिवको जगम लखात ॥
 ॥ ॥ स्वप्रभु शवरीसों सुदित मोगि मोगि फल खात ॥
 ॥ धन्य धन्य भगवन्त जग शवरी को बड़ भाग ॥
 ॥ अपि आश्रमन त्रिहाय ज्यहि खाये प्रभु फल शार्ग ॥
 करि फल अशान अचै रघुवीरा । उठे होरि भंजनि भवभीरा ॥
 तव करजोरि शवरि मृदुवानी । बोली सुनहुँ राम सुखदानी ॥
 मैं योपित शुभ कर्मन हीना । पापपरासन कुटिल मलीना ॥
 प्रभु करि रुपा लीन अपनार्ई । करौ कवनविधि विनय बड़ाई ॥
 कह रघुपति भामिनि जगामहीं । तो कहँ कछु दुर्लभ है नाही ॥
 भक्तिमोरि तौ हृदय ददाई । ताते मुनि दुर्लभ गति नपाई ॥
 ॥ ॥ अवकहु सीतासुधि सुखदानी । पाये कहँ होय ॥
 ॥ ॥ पंपासर प्रभुजाउ तहँ कहिहि सुगार सुधिजोय ॥
 ॥ ॥ असकहि प्रभुपद पद्मकरि चारहिवार ॥
 ॥ ॥ योगअरिन तनु त्यागिकै गई रामके नधाम ॥
 ॥ ॥ निजकर प्रभु ताकी क्रिया कीन्हीं मातु समान ॥
 ॥ ॥ भाग्यवन्त असि स्वामितजि कहहु भजे क्यहि आन ॥
 ॥ ॥ इति श्रीमदयोध्यासिंहवर्मोत्तमभगवन्तसिंहविचिंतेभक्तिशिरोमणिप्रये
 आरण्यकारण्डे जटासुन्दरपराशरकी थावरणोत्तमप्रथमो अध्यायः ६ ॥
 ॥ ॥ कुरङलिया ॥ पूरण ब्रह्मप्रकाशमय निराकार निरखेद । अज अ-
 लेख अविचार ज्यहि पार न पावत वेद ॥ पारनपावत वेद श्रमित

सहसानन-गाई । करुणासिन्धु-कृपाल, स्वई भक्तहित, आई ॥ आइ
 धरयो नरदेह दलन भवभय दलकरन । भाग्यवन्त प्रणमामि राम
 रघुपति प्रणपूरन ॥

॥ दो० शवरिहि सुखल-पडाइके । राम-लपण-दखवन्धुनीह निह
 ॥ निचले बहुरि खोजत सिंघहि, तरकेहरि बलसिन्धु ॥ निह
 -णत इडख सुखरहित सु-एकरस गुणसागर-सुखधाम । निह

॥ नाना-विरहीइव निविलप्रत-विकल-शये । पंपसर-राम ॥ नाना-
 -धीर । सन्तहृदय-निर्मल-यथा-पूरण-जल-त्यहि-माहि ॥ सुख-निह
 ॥ नाना-वांधेघाट, सुचारि-तर, कहत-विनै-बवि-ताहि ॥ नानि

॥ नाना-हरिपद-छन्द ॥ फुलेताल-कमल बहुभौतिन-भ्रमरमाल-गुंजारे ।
 बोलत-चक्रवाक-खग-संकुल-सुनत, ध्यान-मुनिदारे ॥ नारिहुदिशि
 बनबागे सुहावन-मनभावत, तरुफले । डोलत, त्रिविध-वायु-सुख-

दायक बोलत-खग-अनुकले ॥ ॥ मुनिगाण विपुल-कुटी, तहाँ बाये
 बसहि सदा अनुरागे ॥ देखि-राम-सुखधाम सरोवर सहित अनुज
 सुखपागे ॥

दो० करि-मज्जन-सज्जन-सुखद-तरुझाया-भलिदेखि । निह
 ॥ अनुजसहित-बैठे-तहाँ राम-कृपाल-विशेखि ॥ निह
 ॥ सुरमुनि सकल-सुपाय-सुधि-आये-जहँ रघुराय ।

॥ नाना-विधि-करि-करि-विनय-गये-भवन-शिरनाय ॥ निह
 ॥ नारदमुनि-ताही-समय-करत-रामगुण-गान ।
 ॥ निह-प्रेममगन-आये-तहाँ-राजत-जहँ-भगवान ॥ निह
 करत-प्रणाम-राम-उर-लाये-पंखि-कुशल-आसन-वैठये ॥

बहुविधिसुनिहि विनयप्रभुकीन्हा । तव नारद अस बोलय लीन्हा ॥
 सवैया ॥ कोशलराज कुमार उदार अपार सदा सशवेद पुकारे ।

दीनदयाल शिरोमणि स्वामि प्रसिद्ध सदा जनके हितकरे ॥ देहु
 ग्रहैवर भागतहो रघुवीर सवैगति ज्ञाननहारे । रामबडो सर्व नामने
 भगवंत वसौउर नित्तहमारे ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

मुनि मुनि बचन राम सुखपाये । एवमस्तु कहि हृदय लगार्ये ॥
 पुनि कर जोरि मधुर मृदुवानी जीवोले मुनि प्रसन्न प्रभु जानी ॥

सवैया ॥ प्रखर उरामा जवै निज मायहि मोहि उमोहि तवै जग-
 तारन । चाहै उँ मै सुविवाह करे प्रभु दीन करे नहि सो कियहि कारन ॥
 सो प्रभु भेद बुझाय कहौ ज्यहि होय दृढ मर्म खेद निवारन । राजि-
 वलोचन राम तुम्है बिन देखिय और न दीस संभासन ॥ शिलाखंद ॥
 मुनिबोले अच्युनाथ नाथ जे भक्त हमारे । भजहि मोहि वसुधाम् काम
 तजि प्राण पियारे ॥ कुरो सदा तेहि त्रातु यथा बालक महतारी ॥
 लेत अनल अहि गहत शिशु हि लखि वाय निवारी ॥ प्रौढ़ मयसोहि
 बाल प्रिया मातहि बरु आछे ॥ ये नहि तैसी बात रही जैसे कहु पा-
 छे ॥ अतिमि प्रियजानी भक्त मोहि शिशु प्रौढ़ समाता । दास अमानी
 प्रीव यथा बालक अनजाना ॥ ज्ञानिहि निजवल रहत अमानिहि
 केवल मैरा ॥ काम क्रोध रिपु प्रवल दुहुन पे करत दरार ॥ ॥ ॥

दो० अस विचारिज विदुषवर भजहि मोहि निजशक्ति ।

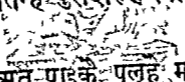
पायहु ज्ञान सुजानपर तजत न भरी भक्ति ॥

सो० काम क्रोध मद लोभ प्रवल मोहि सनी सकल ।

मया मे तिय शोभति नमहु अतिदारुण दुखद ॥

सवैया ॥ श्री मुनिराज पुराण कहै श्रुति सतनको सतमर्त यही है ।
 मोहिमई धन काननको सुवदार्थ कनारि वसत सही है ॥ त्यां भग-
 वंत जयादिक नम जलोप्रथ पुराण पुजे मही है । ताहि विशीषत
 नारि मे है अत गोपम गोवत नाम नही है ॥ कामरु क्रोध मद

दिक मत्सर भेकनको मुद संकुलदाई । है वरपाभृतु नारिसही दु-
 वासनकूमुद को समुदाई ॥ दायकहै मुदशर्द यथा सरसीरुह वृन्द
 सुधर्म सुहाई । देति तिन्हें दुखदारुण त्यो प्रमदाहिमि है मति-
 मन्द सदाई ॥



दो० नारि शिशिरभृतु पाइके पलुह ममतु जवास ।
 कलुप उलूकन को सदा निशिसम देत सुपास ॥
 वृषधि विवेक बलशलि मुख लहि सनेह जलसीहि ।
 वनशीसम वेधत तुरत नारि कहत बुध आहि ॥

सवेया ॥ औगुणमूल सदै प्रतिशूल करै प्रतिकूल सुधर्म न
 चीन्ह्यो । नारिसनेह महा वर्नमें परि भूलि सुपंथनके दुख लीन्ह्यो ॥
 त्यो भगवंत कहै सद्ग्रन्थी कलंकन नारि मतो क्यहि दीन्ह्यो । सोइ
 मुनिराज त्रिजगि तुहैं विष पीवत देखि निवारण कीन्ह्यो ॥

दो० रामचन्द्रके प्रवचन सुनि सुनि नरद्वि सुख पाय ॥
 ॥ कालाब्रह्मभुवन विवने सुदित च्चार ध्वर शिशिरनाय ॥
 ॥ रामसरिस इति हुं लोकमें मको प्रुपालु अभिरहेतु ॥
 तातो सत्र लखलख डिक्कै भूलहु रामकरु प्रेतु ना ॥
 कुंडलिया ॥ तुही हीं द्वै करार कहु श्री तनिको क्षणएक ॥ ताते
 भल सियरामको भजिले सहित विवेक ॥ भाजिले सहित विवेक
 गये समय नहि पैहै । चौरासी दुख देखि हाथ मलिमलि पछिते है ॥
 पछिते है बहु भांति समुक्त अवहीं मजेमारी ॥ भागवंत विठ्ठलम हित
 आपन को उनाही ॥

शक्ति श्रीमद्वेदांगो...
 काण्ड...
 ॥ ... ॥
 ॥ ... ॥

... विष्णोः कृपापत्रम् ॥ ...
 ... श्रीगणेशाय नमः ॥ ...
 ... ॥ ... ॥



... श्रीगणेशाय नमः ॥ ...

... ॥ ... ॥

भक्तिशिरोमणि किष्किन्धकारण्ड ।

॥ ... ॥

... ॥ ... ॥

... ॥ ... ॥

... ॥ ... ॥

... ॥ ... ॥

... ॥ ... ॥

... ॥ ... ॥

... ॥ ... ॥

... ॥ ... ॥

... ॥ ... ॥

... ॥ ... ॥

... ॥ ... ॥

... ॥ ... ॥

... ॥ ... ॥

... ॥ ... ॥

... ॥ ... ॥

... ॥ ... ॥

॥ सर्वथा ॥ श्यामल गौर मनोहर मंजुल क्रोमिलगात सुभाय सु-
हाये । वीर सुधीर खिजावन मैत्री सुखैत सुधीत्रिय रूप वनाये ॥ का-
रण कौन फिरौ वनमें हिमिमास्त धाम रहेत न तये । सो भगवत
कहौ प्रभु आपु कहां त्यनि आवत कौनको जाये ॥ श्रीदशरथ के
पुत्र उमै हम राम सुलक्ष्मण नाम हैमारो ॥ आयसु तत चले वन
को संग सुन्दरि नारि रहीं मनहीरो ॥ सो हरि निशिचर खीन यहाँ
हम खोजत ताहिने शोध नांपरो । विप्र कहौ अब रात्रे कौन हौ
काज कहा वन मांभ तुम्हरो ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ दो० सुनि प्रभु वचन विचारि निजे बोलपनीके नाथ । ॥ ॥ ॥
॥ प्रभु प्रेरण अति प्रेमवश प्रबनत नय धरि माथी ॥ ॥ ॥
॥ तत्रै रघुवीर उठाय कैं लाये हृदय सप्रीत । ॥ ॥ ॥
॥ विप्र परम प्रेम पोषे कपिहि कहि मूढ वचन विनीत ॥ ॥ ॥
॥ कवित ॥ नाथ कीश नाथ यहि शैल पै क्रस्त वास रात्रे सो
दास ताहि गति है न आनकी ॥ वन्धु त्रास ज्याकुली कृपाली कै सु-
प्रीति ताहि कीजिये निवार्ज लाज राखिये सुवानकी ॥ भयि ब्रत
पायकै सुसिद्धि काज वानरेश आपहु सुसाधि काज मानिये प्र-
मानकी ॥ बोलि कीश संकुल पठाय देश देशनै सुदेगो मिलीय
खोज राखेहि जोनकी ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ दो० यो कहि सादर बन्धु दउ लीन्हें पीठि बढाय ॥ ॥ ॥
लाये जहँ सुग्रीवालखि परे चरण तल भ्रियन ॥ ॥ ॥
सूरी सुवन देशरथ सुवन जात वेद दै वीच ॥ ॥ ॥
पावन परम सुहावनी कीन्ही प्रीति अवीच ॥ ॥ ॥
तव सौमित्र कहि सब वाता ॥ ज्यहिविधिवनाहि चले जनत्राता ॥
सिये गति सुनि भूषण पटआनी । दीन प्रभुहि सुग्रीव मुजानी ॥ ॥ ॥

हृदयलाय अतिशोचिहकीन्हा । कहिसुकुंउ बहुधीरज दीन्हा ॥
 नाथ करहु जनि शोचिहि भारी । मिलिहैं तुमहिं विदेह कुमारी ॥
 दो० सखा भतिहोरवर्चना सुनि भयो शोचैं सम निसि ।
 कहु कारण अर्वा आपनो कयो कृतवन्तमे व्वास ॥
 मै अरु बालि जनाथ दंड भाई । भै उरपति जिमि कहौ सुनाई ॥
 ब्रह्मा आमु बुद्धि तैं जायो । रिच्छर्जा कपि एक कहायो ॥
 मज्जत सी । सर एक भंभारी । द्वैगो । तुरत दिव्य तनु नारी ॥
 देखि इन्द्र मोहित मन हेरु । स्वस्यो बीज कच उपर परेऊ ॥
 त्यहि ते भयो बालि कपि वीरा । भिम उरपति सुनियो सुधु वीरा ॥
 रविकर बीज स्वस्यो त्यहि ग्रीवा । ताते मैं प्रगट्यो सुग्रीवा ॥
 रिच्छर्जा पुनि वैसहि भयऊ । वानररूप प्रथम प्रजिमि रहेऊ ॥
 तव ताको विरश्चि सुत जानी । किंकिन्धा दीन्ही रजधानी ॥
 इन्दुभि और सयावी न्नामा । मया सुत असुर रहे । वलधामा ॥
 प्रथमहिं बालि इन्दुभी मारा ॥ मायावी स्वदं त्रै सिंभारा ॥
 अर्धरात्रि । पुरा आइ प्रहमारेत बालिहि युद्ध हित ललकारे ॥
 धार्यो बालि महुँ सग धारा । भागि पैठ गिरि गुहा भंभारा ॥
 म्वहिं वदि बालि अर्वाधि परवारा । मास दिवस लागि किहे उनिहारा ॥
 निकस्यो रुधिर मृतक त्यहि जानी । आयो भवन्त भीति भेन मानी ॥
 मंत्रिन्ह । पुर भूपति । विनु ब्रीन्हा । वरवस राजतिलक म्वहिं दीन्हा ॥

दो० । ताहिनि धन करि बालि पुनि आयो भोहिं विलोकिं ।

। धर्म वाम धन छीनि म्वहिं खेदेऊ बहुविधि ठोकि ॥

। ताके डर खुवंश मीणि । फिरेउ विकल भसव थायग ॥

॥ ताज नपि मंतंग की शाप वश इहाँ न सोसक आया ॥

॥ भुजंग प्रयात छन्द ॥ जनै इन्दुभी सञ्जको बालि माखो । दियो

फेंकि लैवाहिं सो अत्र पायो ॥ चपै देविके कोपि यों श्याप दी-
 न्यो ॥ हुवै भस्म आवै इहाँ जौनी तयन्यो ॥ सबैया ॥ सुनि सेवक
 को दुख दीनदयाल सभितन आल कृपिला सही । फरके भुजदण्ड
 भ्रचण्ड उभै अवलोकि सुकरदहि कोपि किही ॥ सरिहौ शर एकहि
 वालि बली विन औ गुण जो उर तीर देही ॥ वचि है नहि प्राण सु-
 सत्य कहौ शरणगत जो विधि शम्भु गही ॥ कवित्त ॥ होय दुख
 दुखित सुमित्र दुख दोसि जौन प्रातर्क विलोकि ताहि हंग न नि-
 हारिये । आप दुख मेरु को समान रज लोखियत मित्र दुख रजको
 सुमेरु ज्यो सिहारिये ॥ काध मन ब्रवन प्रतीति प्रीति मित्र मैन
 जानिये कुमित्र ताहि दुखद विचारिये ॥ भाग्यवन्त जाके मनसोचो
 न सनेह तौन मित्रन किमित्रता में ॥ मित्र खाक डारिये ॥ भापै स-
 त्यसार को न रीखै छल चित्तलेश औ गुण डुराय गुण मित्रहि भ्रचा-
 रिये ॥ देवत निशेक ह्य लेवत सुबस्तु ताहि जेवत जेवाय गुह्य
 वक्ति प्रक्ष कारिये ॥ आपदके काल करै सौगुन सनेह जाल बलमें
 सदैव तासु रहित ही विचारिये ॥ भाग्यवन्त भापत पुराण वेद ग्रन्थ-
 माल पेसे शत्रु मित्रन पै प्राण लीरि डारिये ॥ ३० ॥ १०
 ॥ दो ॥ सेवक शत्रु भूपति कृपणी कपटी मित्र कुनारि ।
 मित्र दुख दायक नित जानिये शूल सरिस ये चारि ॥
 ॥ शत्रु सुखा ॥ हमारो प्राण बल त्यागौ शोच समाजत
 ॥ स्व प्रकार सौ काहिं ही करिहौ तरो काज ॥
 ॥ सबैया ॥ वालि महाबल शालि अहै त्यहि मारतहार न दूसर
 कोई ॥ दुन्दुभि अस्थि समूह दहै शर एकहि जेधय तालय जोई ॥
 त्यो भगवन्त सुवात यह बल अर्द्ध लहै रिपु सन्मुख होई ॥ रावतजी
 इति काजसरे वर वालिहि मरिसकै भद्र सोई ॥ गीतिका छन्द ॥

जब बालि माँखी दुन्दुभी सुनि शकमन मुद मानिके ॥ फल ताल
 पठये सात नारद हाथ दीन्हे आनिके ॥ इन खात है है अजर अमरहु
 बालि मन सुख दायक ॥ धरि लहान लाग्यो उरग एक तहँ आइ सा
 तहु खायऊ ॥ लिखि बालि किह तिरुताल जीमहि सात तव तत
 फारि है ॥ सुनि भुजग बोल्यो तोहि मारिहि मोहि जौन उवारि है ॥
 दोष सर्पाकृत रघुवंशमणि सप्तताल स्वइ जानी ॥
 को अस सुभट त्रिलोक महँ वेधिसके एक वान ॥
 कह प्रभु मोहि देखाइयो ॥ कहा हवै सो तार ॥
 विधी ॥ एकहि वाणही नेकु न लवि ॥ वारो ॥
 जो एक छेद ॥ रघुवीर जब यह बात कही ॥ शुभ ग्रह भयो लय
 जात तही ॥ दशधूहा जु दुन्दुभि अस्थि रहै ॥ पद अंगुठ वाम श्रि
 रामहहे ॥ दशयोजन पौ स्वइ जायगिरे ॥ शर एकहि तालन वेधि
 फिरे ॥ गत शाप भुजग प्रमोद भरे ॥ भगवन्यो कहि जै रघुवीर हरे ॥
 दोष जो निज माया प्रबल करि वेधे सब जग गात ॥
 साता ताल वेधन कहा ॥ ताको है बडि बात ॥

सवैया ॥ राम प्रभावि विलोकि महो मनमोद भयो शुभ कंठहि
 भारी ॥ भै परतीत सुबालि बधे हित दुरिगई दुचिता चित्तसारी ॥
 वारहि वार गहे पदपंकज पूरण प्रेम विलोचन वारी ॥ नाथ अडोल
 भयो अंभै भगवन्त कृपा रघुनन्द तुम्हारी ॥ संपति पुज प्रिया
 परिवार पसार जितो जग कारण मोहै ॥ शत्रु न मित्र दुखौ सुखहू
 सब स्वारथना परमारथ कोहै ॥ ये सब रामहि भक्तिके वाधक हित
 न आपनके जग जोहै ॥ त्यों भगवन्त विहाय सभै एक राखिहो नेह
 सुरावर सोहै ॥
 सो बालि परम हित मोर ज्यहि प्रसाद भजन विपति ॥

कोशाल राजकिशोर-मिल्योमोहिं करुणा भवन ॥
 दोषासखा कह्यो सो सत्य सव-पैत्रव-मृपा न-माम-
 गिरिजा-नटसरकट सरिस सवहि तत्रावत राम ॥
 भुजङ्गप्रयात छन्द ॥ तवै बोलि श्रीराम सुग्रीवसाथै ॥ जल्लेसाजि
 शारंग-नाराच हाथै ॥ प्रठायो सुकंठै पुकारयो सो वाली ॥ सुसुन्तै
 चलयो कोपिकै वीरहाली ॥ परीपायँ तौ बालिके नारि तारा ॥ मि-
 ल्यो जाय सुग्रीव रामें उदारा ॥ तिनहै बैरकै नाथ नां प्रार-पैहौ ॥ रहौ
 माति क्यों जाय प्राणै गवैहौ ॥ कह्यो बालि है लाभ-दूनो प्रकारै ॥
 प्रिया शोच ऐसे समय तू न धरै ॥ छन्द नाराच ॥ चलयो सवेग
 भाखियों विलोकि भानुजातही ॥ भिरे उभै सकुद्ध बालि मारि मुष्टि
 धातही ॥ कियो विहाल भूरिसो सुकंठ हारि भाग्यज ॥ प्रहार मुष्टि
 बालिको समान वज्रलाग्यज ॥ कह्यो कृपालु मै जु बालि बन्धुमोन
 आरि है ॥ स्वरूप एक बन्धु दौ सुभेद हौ न मारि है ॥ कृपासु दृष्टि
 हेरि फेरि पाणिमेलि मालही ॥ पठाइयो बहोरि दैवलै विशाल जा-
 लही ॥ लग्यो सुहोन युद्ध ॥ कुद्ध वीर दौय भावतै ॥ शिरामओट बृक्ष
 हेरि चोट कयो बचावते ॥ जवै शिराम जानियों सुकंठ हीय हांखज ॥
 दुमाड़ बाणतार्कि बालि हीयमांस माखज ॥ पस्यो विकल वीरभूमि
 भूमि खाय घावही ॥ उठ्यो बहोरि ठाढ़ अग्र देखि राम चावही ॥ शि-
 रामश्याम रूपको सुधारि हीय फेरिकै ॥ कह्यो कठोर बैन बालि राम
 ओर हेरि कै ॥ सवैया ॥ रामप्रभाव अपार सुन्यो तव देख्यो कर्म
 किरातन केरो ॥ व्यापक ब्रह्म चराचर में समदृष्टि सदां सब काहुहि
 हेरो ॥ हे नहिं अप्रिय कोउ तुम्हें रस एक सदा श्रुतिसन्त-निवेरो ॥
 सो भगवंत कहौ प्रभु क्यों हित मानि सुकंठ कियो बधमेरो ॥ हेहम
 निर्वल केर सदां हित मानिनको गहि मान निदारी ॥ तै अभिमान

त्रिंशत्तारा उर अति शोभन् ॥ बहुविधि रोचत जोवत मुख भरतार ।
 हृदे केश न रहित न वसन सैमार ॥ सवैया ॥ सै सिख देत रहिजे
 ह भौरि कहां वश काल न सो श्रुति अन्यो ॥ पूरण बह चराचरं
 ॥ यति है वश मान है मानव मान्यो ॥ त्यागि सवै बुधि चातुरता
 कि धाय सु बैरहि राम सो दान्यो ॥ पायो क्रियो फिले आपन कंत
 यो अब अंत अनंतहि जान्यो ॥ लीला छंद ॥ ताराको विकल
 तानि । प्रोले प्रभु कमल प्रानि ॥ किचित्त न वायु व्योम पावक स-
 गोणि पारिषद मे सुतत्वे मै शरीर जो प्रगटतीहि जोवती । जीव
 नो सुनित्य भृत्य ईशको न द्वाशान्तासु आरुके विचार जाग राग
 रेनि सोवती ॥ मीलन वियोग दुखि सुख सो समान जानि मोहही
 विहाय कयो न भैल भ्रम धोवती ॥ भाग्यवंत आनुही मुज्ञान त्यागि
 रोच पोच वस्तुही अनित्य लीगि वादि कयो ति रोवती ॥ पद्धरी
 छंद ॥ सुनि राम बैन वर भारतंड । गयो तिसिर ज्ञान प्रार्थ्यो अखं-
 ड ॥ कीन्ही प्रणाम पद प्रद्वल्लंगि । लीन्ही सुभक्ति वर परम मांगि ॥
 तव सुकण्ठ प्रभु कहे सप्रीती ॥ सुतुक कर्म किन्हे जसि सीती ॥
 राम कछो अनुजहि पुर जाई ॥ सुग्रीवहि नृप का करौ भव जाई ॥
 उरतहि लपण चले पुर आये ॥ जगर लीगे दिज चंद्र बुलाये ॥
 सुगरहि दीन राजा सजि साजू । बालि जत नय हकीन्हे सुवराजू ॥
 सवैया ॥ राम गरीब निवाज सदैव शरण गत प्रलक पुंज प्रभा-
 ऊ जो विन क्राज द्रवै जनपै विरदा बलि भेद पुराण च गाऊ ॥ त्यो
 भगवन्त सनेह लिये जग को न सरहित श्रील सुभाऊ न राम सो
 कौन कृपाल वियो जिन कीन सुकण्ठहि रक्त ते राऊ ॥ हनीक
 पुनि सुकंड संग लिये अतन्ता ॥ आये जहै राजत भगवन्ता ॥
 सुग्रीवहि प्रभु निकट बुलाई ॥ राजनीति कह भाति सिखाई ॥

। कुंडलिया ॥ प्राल्यो प्रजहिं समान सुत सुजनन को सुख देव ॥
 देखि करव दुष्टन प्रवल देश कोशा सुधि लेव ॥ देश कोश सुधि
 लेव शत्रु पै करव न दाया ॥ धर्म धखो हठ ताकि कखो संग मित्र
 नमाया ॥ मानि मयोसिख सत्य कुपया करवहुं नहिं चाल्यो ॥ भा
 ग्यवन्त श्रुतिरीति समुझिसन्तत प्रतिपाल्यो ॥
 सो ॥ अब सुनु सखा सुजानि जाहु भवन अंगदसहित ॥
 ॥ करेहु राजकल्यान भूल्यो जनि मम क्हाजही ॥
 ॥ सोइत गिरिपरछाय बरपीभरि रहिहो ॥ निकट ॥
 ॥ चतुर्दशताय ॥ पुरान जाऊ आयसु जनक ॥
 ॥ सुनि सुकंठधरि चैल करि पूर्णामी गवने भवत ॥
 ॥ राम उ पूर्णशैल आय ॥ वासकीन्दे हरिपी ॥
 ॥ राम रहनहिता आयो प्रथमहिं देवने गिरिगुहान ॥
 ॥ राखे रुचिर वनाय मितभायक सन्तत सुखद ॥
 ॥ त्रोटक छन्द ॥ धनराघवी आय रहे जवते । प्रद आनंद पुंज भयो
 तवने ॥ धूम भौतिन भौति सुफुलि फलै ॥ खग बृन्दसु बोलत बोल
 भले ॥ अलि गुंजत पुंज प्रमोद पगे ॥ अवलोकि प्रभा मनमैन ठगे ॥
 मुनि सिद्ध सदेव प्रसन्नहिये ॥ स्वर्ग भृंग कुरंग सुवेपकिये ॥ प्रभु से
 वहिं सादर शुद्धहिये ॥ वसुधाम शिराम सनेहलिये ॥ स्थुनाथ कौ
 वहु भौति कथा अनुजै नृपनीति सुभक्ति यथा ॥
 ॥ दो ॥ वरपा नृत सुन्दर सुखद देखहु ॥ तति सुजानि ॥
 ॥ घनघमण्ड जनु यामिनी रविपै कौन पियान ॥
 कवित ॥ धरे नम संकुल घमण्ड घनचोर जोर गोजितजि घु
 मडि अधीराति छैरही ॥ कोपकरि यामिनी सुसाजिकै समूह सैन
 धाई जनु भानुपै गरजि हौकदै रही ॥ भाग्यवन्त धारिधनु इन्द्र ई

नडिताआसि वारिवुन्दवाणनकि। वृष्टिजालहैरही। भागिगो। सुभानु
 है सशंक पाय जैत रैनचैन सौ निशंक त्यो सुखैनराज कैरही।।
 आयो है मनोज साजि सैन चतुरंग संग कीन्हो है निशंक जगडे-
 रहि सचावनै।। श्यामल। ससेत पीतरकन घटाके जाल दीन्हे है
 वितान तानि मंजुल सुहावनै।। चंत्रली चमाक। तडिताके फहरात
 ध्वज डुंडुभी सौ देतघन। गर्ज घहरावनै।। भाग्यवंत गांवत विरद
 वंदि मोरपीक धायो है मदनकोपि विरही सतावनै।। घेरयो गिरि
 वृन्दन शतक्रवो सुसाजि सैन वारिवुन्दवाण करि भूतल भरतुहै।
 मारै ताकि वज्रकंडू डारित तडपि गाजि धावन से मोर गांव गांवन
 फिरतुहै।। भाग्यवंत गावति सुयज्ञचार। कोकिलो सुमेघनक्री गर्ज
 धारनै जति भरतुहै। तानि दुम वेलिन वितान त्यो सुजैति रिपु पाय
 कै अचल अंपुरांजही करतुहै।। ऊदधि संकोप चढयो भूपर कि
 साजि सैन दीन्हे करि मुदित। न खोज महिपांडयो। नदीनद नारसो
 अपार परे वारिदल कीन्हे शिरपंजर सुत्राण बुंदछांडयो।। वाणवमि
 विज्जुनाद धीरनकी गर्जघोर मारुत भकोरजोर शोरको मचांडयो।।
 हाहाकारहोत दिशि दशहू न जानिजात कंपमान भूमिगहि सिधु
 कैधो लाडयो।। सवैयो।। वहुँओरते घोर छटाउनये घनघेरिके दामिनि
 शोभसचै। भकभोरित पौन भकोरजशोर शिखंडि रहे चहुँओर मचै।।
 पपिहा पिवपीव रटे न घटै कलकुकनि कोमल न्तेगगचै। विरहीजन
 मान सतावन ज्यो ऋतु। पाविसकोपि चढयो न वत्रै।। घहरात वटा
 घनघोर धिरे तमतोम तमी महि ज्योम चढयो। चमकै चपला चहुँ
 ओरनते धुनि दाडुरत्यों अतिजोर वटयो।। वरपे वरवुंदनवारि वहै
 पवति उदात न जातकहयो।। भगवंत मतोदल साजि सुलै विरही-
 नीपे पाविस। कोपि चढयो।। नवपल्लव वेलि प्रसूनलये दुमभारन रु-

मैं बानरः पशुः विप्रियनिकेता । मायावशोः सुरनरः सुनिजेता ॥
 ज्यहिर कृपा नाथ तव होई ॥ विप्रयः वन्धते ॥ छोटै सोई ॥
 सुनि रघुवीरः परमप्रिय विानीने वैठाये ॥ कसगुहिः सत्तमानी ॥
 रावाकरहु आवः स्वई ॥ उपईव सिंग सुधिसिलै जाहि सुखदाई ॥
 यहिविधि कहत कृपासुखकन्दा ॥ त्रिवलीगिः आइगये कपिवन्दा ॥
 राम चरणः पंकजः शिरनावहिंते प्रभुहित्रिलोकिजन्मफलपावहिं ॥
 कपिदलप्रवल् अमितनहिलेखा ॥ स्वइजानै जिनु नैनतु देखा ॥
 वृष्णी कुशलः सन्नहिः रघुवीरा ॥ विश्वरूपाव्यापकः मति धीरा ॥
 ॥ छपै ॥ तुव बोले सुग्रीवः सुनेहु मर्कट समुदाई ॥ करहु राम कर
 काजः सिंयहिः खोजहु सबजाई ॥ मास दिवस केसाहिः अवशि
 दीन्हो सुधि मोही ॥ अविधिः मेदि विनु खोज आव जो मासै वौही ॥
 यहि भौति पाय शासनः हरिपिः जहै तहै चले तुरन्त सब ॥ कपिराज
 कह्यो पुनि बोलिः अस अंगद नलः हनुमंत तव ॥ सवैया ॥ हेनल
 अंगद वायुतनै ॥ तुम नक्षपतेः सन्न दिक्षिण जाहु ॥ सीतहि खोज
 किह्यो ॥ सब और मिलै मग जो जहै पूछेहु ताहु ॥ त्यो भगवन्त सु
 काय गिरा मन काज किह्यो प्रभुको सउछाहु ॥ जाहु तद्वै धरि राम
 प्रदै प्रभु काजक आज तुम्है वडलाहु ॥ इह जिनि मोलपाये
 ॥ दोन आयसु प्राय कपीश को हरि नायः पद शीरा ॥
 ॥ तलै सँग मर्कट भालु बहु चले सुमिरि जगदीश ॥
 ॥ कुंडलिया ॥ नायो शिरः हनुमानः जव तव प्रभु निकट बुलाय ॥
 दीन्हे निजकर मुद्रिका दीन्हयो सीतहि जाय ॥ दीन्हयो सीतहि
 जाय यहै मेरी सहिदानी ते आयो फिरि कपि वेगि विरद मम प्रि
 यहि वखानी ॥ खानिः सुकृत सुखदानि पानि ॥ मुंदरी जव पायो ॥
 पवनततय मैन हरि चख्यो रामहिं शिरनायो ॥

जले सुभेद सब खोजती सीतै । सुमिरि राम सज्जन भवभीतै ॥
 गये सीतनगिन सकल । भुलाने । भये तृपित जलविनु अकुलाने ॥
 त्र हनुमान विवर एक । देखा । गायउ तहाँ लै कपिन अशोखा ॥
 यहि भीतर मन्दिर यका सोहा । श्वरणिन जाइ देखि मनमोहा ॥
 यहि माहँ दीख वैठि शक नारी ॥ तपसमूह शोभा अति भारी ॥
 तनजाय त्यहि शीशुनवाये । पूछ्यउ सो निज चरित सुनाये ॥
 दो ॥ गत्यहि तव कथा कि खहु फल करहु पाना शुचिनीरा ॥
 इह सुनि फल खाय । मुपाय । जल आय पुनि त्यहि तीर ॥
 ती अतुरसाचन्द ॥ तव निज होला । स्वइ तर्पवाला ॥
 क्रेहासि वसीती । कपिन सुवाती ॥ कुण्डलिया ॥ हेमानामिसु अप्सरा रही
 एक छविवात ॥ मयदानव त्यहि देखिकै हरिआन्यो यहि थान ॥
 हरिआन्यो यहि थान इन्द्रसुनि माख्यो ताही ॥ यह सब विभव वि-
 नास बहुरि दीन्ह्यो विधिवाही ॥ वाहीकेर निदेश करौ यहि थलकी
 रमा । स्वयंप्रभा मम नाम सखी जानो यहि हेमा ॥
 दो ॥ मे हो मनुसावरण की सुता कहियो तपवन्द ॥
 अब जेहा खुबीर जह कृपासिधु सुखकन्द ॥
 तुम अब मूढ़हु नैन निज जाहु विवर तजि वीर ॥
 तजहु शोच पैहो पसयहि धरहु हृद सब धीर ॥
 तोटक छंद ॥ दृग मृदि विलाकहि करि जव । कपि ठाढ़ स-
 मुदके तीर सबै । वह राघव पै पुनि जात भई ॥ शिरनाय विनय
 बहु भाति कई ॥ हरिमक्ति अनूपम पाय भली । बदरावन गे शिर
 नाय चली ॥ इत शोचत कीश खड़े संवहीं ॥ गती औधि न
 शोध मिल्यो अबही ॥ कह अंगद तौ सब कीश सुनौ ॥ मम
 मृत्यु भई अब भाति दुनौ ॥ सुधि सीय मिली कतहं नो इतै ॥

कर्पिराज करी बध जात उते ॥ अवंलोकि दुखी अति बालितने
 कह ऋक्षपते गुनि वात मनै ॥ मोदकबंद ॥ तात गनौ जनि मा
 नुपारमहिं । पूरणब्रह्म सदा सबअमहिं ॥ लीन सुइच्छहिते अ
 तारक ॥ गोद्विजे देव धरा दुख टारका ॥ त्रोटक बंद ॥ यहिभांति कि
 कहि बंदरति । सम्पाति सुन्यो गिरि कंदरते ॥ ह्वै वाहेर क्रीश ल
 ख्यो जवुहीं ॥ जगदीश अहार दियो घरहीं ॥ अब भक्षण आर
 करौ जितयो ॥ बहुवार अहार विना विनये ॥ डरपे कर्पि गीध गिर
 सुनिकै ॥ तब अंगद वाते कह्यो गुनिकै ॥ सवैया ॥ धन्य जटार
 समाने नही ॥ कउ रामके काज जु देहहिं त्याग्यो । रावणसे भट हारि
 हिये बल जासु ॥ विचारि सिये लै भाग्यो ॥ जोसु क्रिया निज प्राणि
 कियो रघुनायक दिव्य सु कीरति जाग्यो । आपुगयो हरिधाम सवै
 छले छांडि जु रामहिं सो अनुराग्योनी ॥ अंगद वाते कह्यो गुनिकै ॥
 अनुज कथा सुनि इमि बहुभाती । कपिन समीप चल्या सपाती ॥
 करि बहु शपथ निकट सो आवा । परम प्रेम सब कह शिरनावा ॥
 जामे पक्ष तिलाजलि दीन्हा । प्रभु प्रभाव बहु वरणन कीन्हा ॥
 पुनि निज कथा कही सब गाई । जरे पंच ज्यहि विधि तरुणई ॥
 सीता के सुधि बहुरि सुनाई । पैहु धीर धरहु मनभाई ॥
 शत योजन यह सागर जाई । नाथे काज कर भट सोई ॥
 असकहि गयो जवहि सपाती । कपिन कियो विस्मय बहुभाती ॥
 निज निज बल तव सकलवखाने । प्रारजान हित सबहि सकाने ॥
 कुण्डलिया ॥ जायो पर समुद्र में कह अंगद सब पीहि ॥ फि
 रति वार पर होतहे कछु संशय मनमाहिं ॥ कछु संशय मनमाहिं
 ऋक्षपति कहत हंकारी ॥ रघो कहा ज्युप साधि पवननंदन बने भारी ॥

हनुमत्पुत्र श्रीगणेश । त्रिभुवन विनाश करि । गिरिजाकांठे ।

। तारापुत्र ।

॥ मलिन हृदि ।

। गारुड ।

॥ अक्षय ।



। शिव ।

। शिव ।

। शिव ।

। शिव ।

। शिव ।

श्रीशिवसुन्दरकाण्ड ॥

। शिव ।

कुंडलियां । पायो जज्ञं चक्षुको आशुसु पवनकुमार । कृदि चढयो भूधर तमकि करि उर प्रभुहिं सभार ॥ करि उर प्रभुहिं सभार जवहिं कृद्यो बलवन्ता । मसकिं धर्यो महि भेरु गैर्यो शिरिचोट अनन्ता ॥ चोट दल्यो उर कूर्म उखलि ऊपर जल आयो । कंपमान सब लोक विकल दिग्गज डरपायो ॥ कीन्हें जलधि विचार मन कपिहि जातपथ देखि । रामचन्द्रको दूत यह है है श्रमित विशेषि ॥ है है श्रमित विशेषि कह्यो मैनांक हँकारी । जाहु उपर उतराय हुवो कीशै श्रमहारी ॥ हरित्यहि तरल विलोकि परसि पदपंकज दीन्हा चल्यो कहत विश्राम कहाँ कारजविनुकीन्हे ॥ आगे रोक्यो आयकै सुरसा वदन वढाय । त्यहि आनन है निकरि कपिचल्यो आशिपापाय ॥ चल्यो आशिपा पाय राहु जननी तहँरहई । करै गगनचर भोग उड़तलाखि छाँहै गहई ॥ गहन चहेसि तिमि कपिहि करखि ताहु त्यहिलागे

मारिः पवनसुत वीर त्रल्योः सुमिरत् प्रभुआगे ॥ ताहिमारि, मारुत
सुवन भायोः समुद्र वहिपारः । तहाँ जाइः देख्यो विपिन शोभा अति
अनपारः ॥ शोभाअति अनपार सुतरु फूले फलनाना । गुञ्जत म-
धुकरवृन्द, मगन, देखत हनुमाना ॥ माना मन आनन्द चढयो, भूधर
भयनाहीं । जापर कृपा शिराम सुगम, अगमौ सत्रताहीं ॥ लङ्का रा-
वणकी लख्यो पर्वतते, हनुमान् । अति, उत्तम शोभाअमित, क्यो
करिकरौः वखति ॥ क्योकरि, करौ वखान पुरीफौजैँ अनगन्ती । श-
हर कहर क्री, वनति कहैको-कहत न वन्ती ॥ वन्ती कहत न भूति
वसै रावण, निरशङ्क ॥ देखत दुःख नशाय वनी कंचनमय लङ्का ॥
धारयो मशक समान तत्र रूप पवनसुत वीर । त्रल्यो लंकगढ वंकको
सुमिरि राम-रणधीर ॥ सुमिरि राम-रणधीर, त्रल्यो लखि । लंकिनि
दोक्क्यो ॥ सुनत, क्रुद्धि बलवन्त भूपति मुष्टिक, थक, ठोक्क्यो ॥ ठोकते
सो महिरिरीः सत्यवर ब्रह्म विचारयो । जायकरौ, प्रभुकाज नगर ति-
रशंक सिधारयोती । लंका पुर घर घर सकल हूँढयो पवनकुमार । कं-
तहुँ न देख्यो जानकी गयो रावणगार ॥ गयो रावणगार । तक्यो
ताको, तहँ सोवत । परी न कहँ सियदृष्टि फिरयो, व्याकुल पुनि जो-
वत ॥ जोवत देख्यो एक भवन उत्तम अतिवंक । रामनाम अंकृत्य
सुभग न्यारो सब लंका ॥ पुनिलागे निज मनहि मन हनुमत करन
विचार । जागि विभीषण कीन तत्र रामनाम उच्चार ॥ रामनाम उ-
च्चार करत, कृपि संज्जत, जान्यो । यासौँ होइनाहानि करनचाहिय
पहिचान्यो ॥ आन्योँ तव द्विजरूप कहत हरिगुण अनुरागे । सुनत
विभीषण आयहरपि पाँयत पुनि लागे ॥ पूँछे तव हनुमन्त, सो
सकल विभीषण हाल । कह्योनाम निज विपिन जिमि आये राम
कृपाल ॥ आये रामकृपाल जनकतनया जिमि खोई । खोजनहित

कपिभालु विपुल पंथये प्रभु जोई ॥ जोई हग सब लंकसदन देखे
 सिय छूँछे सुनती भगन द्वउ प्रेम विभीषण पुनि त्यहि पूछे ॥ कहहु
 पवनसुत कहहु प्रभु मो कहँ जात्रि अनाथ। करि है कृपा कृपायतेन
 दीनबन्धु रघुनाथ ॥ दीनव-धुरघुन थ सकल सार्धन भै हीना। प्रीति
 नपंकज पार्थ सतत संसृत मनलीना ॥ लीना दृढ़ विश्वास प्रहै
 जानत सब अहहूँ । मिलै सन्त भगवन्त कृपाविनु क्यो तुम कहहु ॥
 राम सुभाव सुरीति बर सुनहु सखा चितलाय। करहि सदा निज
 दासपर प्रेमप्रीति अधिकाय ॥ प्रेमप्रीति अधिकाय कहाँ हम बानर
 नीचा । कीन्ही कृपा कृपाल सुयश दीन्हें जगवीचा ॥ बीच न राख्यो
 नेकु कियो आपन कपिराऊ ॥ कहौ कहौ लंगि तात सुखद जसैराम
 सुभाऊ ॥ सत्रैया ॥ श्रीरघुवीर सो दीनदयाल कृपाल वियोकहुँ स्वा-
 मि सुहैन ॥ कीनसखा कपि के बटभालु कुचालके रूप रहे अधेना ॥
 यो भगवन्त सुस्वामि सुभावहि जानि सनेह सो जो न भै जैना । सो
 मतिमन्द कुभाग्य जयोजग अन्तसु क्यो हडि नक परैना ॥ ऐसेहि
 कहत शिरामगुण मगन प्रेम द्वउगात । कह्यो विभीषण तब सकल
 जनकसुता कै वात ॥ पवनतनय कहँ मातुसिय देखन चाहौ वीर ॥
 कही विभीषण युक्ति तत्र जान जानकी तीर ॥ मारुतसुत धरिरूप
 स्वइ चलयो सुमिरि जगत्रातु ॥ वनअशोक जहँ जानकी रहति
 सकल जगमातु ॥ सवैया ॥ मारुत नन्दन जायलख्यो भीथिलाधिप
 नन्दनि राजत जाहीं ॥ कीन प्रणाम मनै मन धेरि सुजात दशा
 कहि सो सिय नाही ॥ शीशजटा कृशगति जपै गुणवात सुरावकै
 उरमाहीं ॥ देखिदुखी हनुमन्तभयो दुरिजाय रह्या तरुपल्लव छाहीं ॥

इति श्रीमद्भक्तिसिंहवर्मामुजभगवन्तासहस्रनामभक्तिशिरोमणिग्रन्थे
 सुन्दरकाण्डे श्रीजानकसमापहनुमानप्रतिवर्णनानाम
 तृतीयोऽध्यायः ॥ १ ॥ प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥

दो० जासु सुयश तिहुँलोकमे रह्यो न्यापि भगवन्तव

। चरणकमल वन्दनकरौ ॥ सारत्सुत हनुमन्त

। नान्तसहि अवसर रात्रण तहाँ किन्हे विविध बनाव

। संगलिये बहु तियनको आयो खलकुल राव ॥

। नानाविधि सो जानकिहि कह्योमूढ समुझाय

। सामदास ॥ अरुभेद भस बहुविधि देख्यो देखाय ॥

। सवैया ॥ हे सुदि सुंदरि प्राणप्रिया सिय कान सुवानि करौ यह

मोरी ॥ मै ब्रजवंत सुसासुर नाथ प्ररिच्छ न है प्रभुता समथोरी ॥ जौ

पूण पूरण मोर करौ एक वार विलोकहु त्यों मम ओरी ॥ तौ धनिज

रानि मदोदरि आदि सु यावत चेरि करौ सबतोरी ॥

दो० सुनि रावण के वचन इमि सुमिरि हृदय भगवान् ।

। तृणधरि ओट विदेहजा बोली वचन प्रमान ॥

। लपैछंद ॥ रे रावण कस कहसि भयो चाहत तव नाशा ॥ क

रहि कि नलिनि विकास कलहुँ खद्योत प्रकाशा ॥ हरि आने म्हि

मूढ समय सुने प्रभुपाछे ॥ सो फल पैहसि वेगि अधम आपन कृत

आछे ॥ अब जाहि इहांते उठि सुपदि कहौ तोहि समुझायकै ॥

मम वचन विसीले सर्प त्वहि इसहि न जौलगि धायकै ॥

सुनत वचन रावण रिस टानी ॥ कादि सद्ग बोला अभिमानी ॥

मम अपमान करसि तै सीता ॥ जानि परत आय तव वीता ॥

अस कहि मूढ चला उठि भागन ॥ मयतनया गहि कीन्ह निवारन ॥

तव सूकोप निशचरिनि बोलाई ॥ कहेसि जानकिहि त्रासहु जाई ॥

दो० मास दिवस के माहि जो कहा न करि है कान ॥

। तौ विशेषि मै मागिहो तिजकर कठिन कृपान ॥

। यहि विधि रावण मवसन भाखी ॥ गयो भवन सीतहि उरगखी ॥

विविधरूप धरि निशिचरनारी । लगी देन सीतहि दुखभारी ॥
 तव त्रिजंटा संवहिन समुभावा ॥ कहि निज स्वप्न प्रसंग सुनावा ॥
 जो निज हित तुम चहहु सयानी । सेवहु सियहि कर्म मनवानी ॥

कवित्त ॥ वानर भटाकी एक आयो है अचोकी लङ्कजारी छार
 साकी को न त्रासतासु छाकी है । खंडित भुजाकी बीस मुडित शि-
 राकी देहनग्न रावणाकी बैठ पृष्ठि गर्दभाकी है ॥ ऐसी गति ताकी
 गौन दक्षिण दिशाकी राजपायो सब वाकी भाय पूरण प्रभाकी है ।
 जै जै सुरहाकी लोक लोकन में जागी भाग्यवंत कीर्तिवाकी राम-
 चंद्र भूमिजाकी है ॥

दो० यह स्वप्ना में आपनो सबसों कहौ विचारि ॥

भूँठ न सो फुर होइहै अवशिगये दिन चारि ॥

छंद चामर ॥ तामुवैत श्रूययो भई समीत राकसी । धाय सीय
 पाँय धारि छाँय मूह लाकसी ॥ बार बार सीय सो निहोरि पायके
 क्षमा । यत्र तत्र जातते भई प्रणाम कैरमा ॥ सीय हीय लीय नौ
 विचारि शोच भारि है । मांस द्योस बीतते सुरारि मोहि मारि है ॥
 भाखि बोलि त्रैजटै उपाय मातु सो करै । होय भस्म देह मा
 विपत्तिजाल ज्यो टरै ॥ आर्त वैन सीय के सुश्रूय बोलि त्रै-
 जटा ॥ रामके प्रताप केन शोकसिंधु है पटा ॥ पाइये न रैन
 अग्नि सीय धीर को धरो । बार बार भाखियो पथान धाम सो
 करो ॥ छंदनाराच ॥ वदेस शोच जानकी भयो विरश्चि वामहै । मि-
 लैन आगि हरिये मिटै न शूल मामहै ॥ परे विलोकि ऋक्ष व्योम
 जाल ये अंगारसो । न आव भूमि एकहु अभाग था हमरिसो ॥
 शशी सदैव अग्नि ज्यो सुबीरहीन जास्तो । सुजानिके कुभागिमो
 न आगि आजु डारतो ॥ मुने विने सुदीनकी दयाल है अशोक

तैं । करै सुनाम सत्यमो हरे कलाप शोकतैं ॥ समान अग्नि रावरे
 जुजाल कीशलेनये । करौ सुआगि दै निदान भूरिदुःख में तये ॥
 भयो दुखी सु वायुपुत्र देखि राजपुत्रिका । दियो अंगार डारि ज्यो
 अशोक ते सुमुद्रिका ॥ कुंडलिया ॥ ताहि देखि नृपजा हरपि ली-
 न्ह्यो धायउठाय । लागतकर सियरी चंकित भई आगिकसिआय ॥
 भई आगि कसिआय बहुरि सुंदरी तनदेख्यो । लिख्यो थिरामोज-
 यति वांचि मन भ्रमित विशेष्यो ॥ भ्रमित विशेष्यो चीन्हि समुद
 शोकित मनमाही । बारवार हियलाय निरखि पूछत सियताही ॥
 कवित्त ॥ प्रीतम पियारी प्राणहीतमदियारी ज्योति जागत तिहारी
 दीप दीपन में सुंदरी । धार्यो है अवालपनही ते रघुनाथ तोहि
 वीछरी सो हेत कौन कीन्हें मन तुंदरी ॥ वाउरी न होसितैं सुनाउरी
 कुशलनाथ छाउरी प्रमोद काटु शोकफांसकुंदरी । जाउँ बलि वेगि
 सो वताउ मोहि भाग्यवंत आई यहि ठाउँ क्यौतु नाथ हाथ सुंदरी ॥
 दोहा सुनि सिय वचन सुशासते शाखामृग सुखप्राय ॥ १०१ ॥
 परम मनोहर वचन मृदु बोल्यो प्रेम चढ़ाय ॥ १०२ ॥
 हरिगीतिका छन्द ॥ सुनु मातु पूषण वंशभूषण भूप दशरथ
 जानिये ॥ सुत रामलक्ष्मण नाम तिनके तात शासन मानिये ॥
 आये विपिनसंग सीय काहुहि हरी खल छल ठानिकै । द्रज फिरत
 खोजत विकल सुधि कछु गृह्य सोपुनि जानिकै ॥ आर्यो सो पंया-
 सरहि मिलि तहँ सुखा सुग्रीवहि किये । सो दीन पट भूषण मनो-

वहू ॥ येहि भौति श्रीं, रघुबीर क्रीरति विमल, कपि, वर्णन, क्रिये ॥
 सुनि-जनकजुमिन, मोद, संकुल, प्रेम, परिपूरण, हिये ॥
 दोशोचहुँ दिशि चितै श्रीजानकी कह्यो हं पि, मुन माहिं ॥
 ज्यहिवरगयो प्रहयिशाअमी सोप्रगुटत, कसंतुहिं ॥
 सुनिप्रिये, वचन, पवनसुत वीरा, आयो, जलि, सीताके, तीरा ॥
 शर्कटा, रूपे, देवि, महिंजाई, श्रेष्ठी, फिरि, प्रिसमय, मन, छाई ॥
 कपटरूपी, विरखे, यह, क्रीशा ॥ आवाँछलन, मोहिं, दशशीशा ॥
 कह, कपि, मै, मारुतोकर, पूता, हनुमत, नामाडिसामकर, दूता ॥
 लायचँ, मो, सुंदरी, सहिदानी, प्रभुकर, किरि, मानु, फुरवानी ॥
 कह, सीता, हरि, गुणहिं, सुनावै, तव, प्रतीति, मोरे, मन, आवै ॥
 कत्रित्त ॥ करुण, उदार, बल, वैभव, अपरि, नीति, प्रीतिके, अंगार
 हार, भूवभारांताके, हिये, शीलसम, शान्ति, सुठि, सुन्दर, कृपायतन
 दासे, खद्वारन, विरद, वेदहोके, है ॥ भास्यवन्त, सोहव, समर्थ, सो
 त्रिलोक, जासु, जागत, सुयशके, सुयुग, युग, शाके, है ॥ पावै, गनि
 पार, गुणगणको, अपार, त्रुप, क्रीशुलकुमार, त्यो, उदार, वीरवोके, है ॥
 संयुता, छन्द, सुनि, वानियो, हनुमान्क्री ॥ मन, सत्यमोनि, सुजा
 लकी ॥ पुनि, सीय, तासन, मो, कह्यो, नरसंग, नानर, कर्मो, लह्यो ॥
 हनुमन्त, सर्व, प्रसंगत्यो, वरयो, भयो, प्रभुसंगज्यो ॥ सुनि, मानि
 श्री, भुवपुत्रिका ॥ उरलायलीन, सुमुद्रिका ॥
 दोष, वारवार, उरलायके, प्रियो, सुद्रिका, निहारि, मो, न
 कहत, वचन, श्रीजानकी, कर्मलत्न, भरि, नारि ॥
 की, है, यह, रवि, किरण, सुहाई, मम, डख, इसह, हरण, तम, आई ॥
 की, शशिकला, सरिसि, न्यारी, आई, शीतकस्त, महि, स्यारी ॥
 की, यह, राज्यशिरी, सुवदेना, आई, जाहि, तजी, हरि, पेना ॥

की नारायण उर सैम सोहै । युत शुभ अंकेन श्रीमनमोहै ॥
 की निश्रय पडई ॥ पिगपाती ॥ आई शीतकरन मम छाती ॥
 की यह प्रतीहारिनी पर्यकी ॥ आई गति वृमल ममहियकी ॥
 की सिख मोहि देनके हेता ॥ पठई त्वहि इत कृपानिकेता ॥
 दो० यहिविधि कहि कहि प्रेमयुत पूछति सियमृदुवैन ॥

कहसि कुशल किन मुदिके सानुज राजिवनैना ॥

पुनि कर्षसन पूछति वैदेही ॥ जानि सोमपद कमलसनेही ॥
 तात कुशल प्रभु सहित सुधाता ॥ कहहु वेगि सेवक सुखदाता ॥
 करुणासिन्धु कृपा सुखसागर ॥ दीनबन्धु मृदुचित नयनागर ॥
 करत कवहु सुधि मोरि कृपालय ॥ दीनदयाल प्रणत प्रतिपालय ॥
 नसवैया ॥ दीनदयाल कृपा सुखशाल सदैव जनपाल सुद्वयक
 चैनन ॥ सुन्दर श्याम सरोरुह लोचन मोचन अंग प्रभाशतमैनन ॥
 त्यो भगवन्त सुतात कवौ कहु ॥ पैहहि कानसुने सुखवैनन ॥ छैहहि
 शीतलगात कवौ वह मूरति ॥ मंजुनिहारिके नैनन ॥ जासु सनेह
 सभारि हियेकरि खण्डन समु समर केवैना ॥ आयन संग विछोह
 भयो सौ वियोग तजे तनु प्राण अवैना ॥ जीवत दुख अनेकसहेरु
 देहे तनुपी विरहाग्नि मैना ॥ आयो कहु वनि मोसो नही जन
 जानि सुधारहि राजिवनैना ॥

दो० सुनिसियवेचन समीरसुत सजलनयन धरिधीर ॥

कह्यो मातु सानुज कुशल प्रभुजनिहोहु अधीर ॥

जनरंजन मंजन विपति प्रणतपाल सुखधाम ॥
 तिव वियोगसंभूत दुख दुहित रहत श्रीराम ॥
 नवरीधीरज सुनु मातु अत्रीप्रभुसदेश चितलाय ॥
 उलातव वियोग मोकह सकल मीमे सुखद दुखदाग ॥

॥ सबैया ॥ जादिन ते सुनु, प्राणप्रिया म्वहिं तोहिं निछोह, बिरझि
 क्रियो, है । तादिन ते कलहैन हमें, दुख दारुणदैं मुख द्वीनि, लियो
 है ॥ काह कहौ यह जान न कोउ कहते घटे दुखनाहिं, हियो, है । प्रेम
 को, तत्त्व त्वयामम, जौन सो जानत मोमन, एक प्रियो है ॥

सो० सोई मन सुनु मोर रहत सदा प्रिये पास तव ।

प्रेम प्रीति को डोर जानु, सकल यतनेहि मेह ॥

॥ प्रभु सँदेश सुनि सीय मगन, प्रेम भूली तनहि ।

॥ सुभिरसुभिर ब्रविहीय मोक्षति, जललोचनकुमल ॥

॥ कह हनुमंत प्रवीण मातु हृदय धीरज धरहु ।

॥ सुभिरि राम हित दीन करुणाकर भंजन विपुति ॥

सबैया ॥ राकसवृन्द पतंग सबै रघुनायक शायक घोर कृशान् ।
 मातु न कीजिय शोच, हृदै धरुधीर जरे, खलवृन्दन जानू ॥ होत
 लहे सुधि जो रघुवीर बिलम्ब न, तौ करते फुरमान् । उपै अब चाहत
 होत, उदै तम दुष्टन रामको, शायकमान् ॥ जो अत्रही में जाउं ले-
 वाई वनै, नहिं बात न रामरजाई । ताहित धीरधरौ कहु रीजमें आ-
 वहिंगे कपिलै द्रुउभाई ॥ मारि सबै खलवृन्दन को, लैं जैहहिं मातु
 तुम्हें सो, लेवाई । त्यों भगवन्त तिहूँ पुर में रहि कीरति पुंज मनो
 हर छाई ॥

दो० कह सीता सुनु सुतसकल हैकेपि तुमहिं समानि ॥

कयो लड़ि पैहै पार, अति ज्यातुधान बलवानि ॥

पद्धरी छंद ॥ तव तुरत स्वर्ण पर्वत समान । कीन्हो स्वअंग
 हनुमत सुजान ॥ विश्वास पूरि सिय मन भंभार । भई देखि कीश
 बल बुधि अपार ॥ हनुमंत बहुरि द्वै लघु स्वरूप । बोलो सुवैन सिय
 सों अनूप ॥ सबैया ॥ श्रीरघुवीर प्रताप बड़ो करि देखिय मातुहृदै

सुविधारे । जसु कृपावृणं होइ ज्यो वज्र-खगेशहि न्यालतनै गृहि
सारे ॥ खासति सीरुत्तर्षाप्रतिको गिरिहस मसा गृहि आयु-उखारे ।
त्यो भगवन्त कृपा प्रभुकी कृष्णी वात न सिंधु पिपील निवारै ॥

दो० राम कृपा । जापर करहि तुहि सुगम-सव वति ॥

प्रभुप्रभाव बड़ समुक्ति मन शंक न कीजिय मात ॥

सुनि कपि ब्रज न विदेह जहि भयो तोप भन माहि ॥

आशिप दीन्ही हिरपि हियु जानि राम प्रिय ताहि ॥

अजर अगार शभ सुण सदन जल ति धीन सुत होहु ॥

करहि सदा रघुवंश गणि बहु त तोहि पर जोहु ॥

छंद हरि गीतिका । बहु कुरहि रघुपनि प्रीह सुनि हनुमान अति

आनंद भयो । तन पुलक निर्भर प्रेम सिये प्रद वार वारहि शिरनायो ॥

तव विदित विश्व अमोघ अंशिप भातु सो अ पायके । भगवन्त

अव कृत कृत्य सुत्र विधि भयउ पूरण भायुके ॥

दो० अत्र स्वहि लागी अरु अति देखि सुफल समुदाय ॥

कपि वृधिवल अवलो कसिय कृह्यो खाहु फल जाय ॥

शक्ति प्रीम दोष्या अत्र हव मै तिम ज भनयन्ता संहरि रात्रि मै क्लि शिर मोगि प्रथे सुंदर काण्डे

श्री हनुमान जानकी समवा दवर्णनो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥

सो वन्दौ । पद शिरनायां मारुत सुत हनुमन्त केत ॥

ज्यहि सुमिरत हृख जाय भीर्य वंत संतत सुखद ॥

सिबैया ॥ सिय आय सुपाय । समीरत तै शिरु सादनाय सेहर्प

चल्यो ॥ धन नादिहुं ते धिकी वाग प्रिया हृदश कंधहि सो तह जाय

रल्यो ॥ फल खाय उखारन लीग हूमै लखि न ककवर्जत मारिद ल्यो ।

कहु भागि धने त्रे पुकार्यनि जिय दरीानन पै सुति हाल हल्यो ॥

पठये मट वोलि दशानन कोपि ज्वले सजिसेन समह छली । गर-

ज्यो हनुमंत बिलोकि तिन्हें करि क्रुद्ध सबै क्षणमाहिं दली ॥ ज्वड
भांगि वचे अंधमारे कछू दशमाथ पुकारबन्धि जायचली । भगवत
न जीतन योगहमें वह बानरहै अति वीरवली ॥

दो० सुनि रावण करिकोप पुनि पठयो अक्षयकुमार ।

चल्यो वीर रणधीर अति लै संग सुभट अपार ॥

भुजङ्गप्रयात छंद ॥ विलोक्यो जबै आवतै कीश ताको । च-
ल्यो गर्जिलै वृक्षधे वीरवांको ॥ सुकूद्यो तिन्है मध्य यों अनिक्रोधा ।
यथा मेघ वृन्दानिमें सिंह योधा ॥ निपाते अक्षैशेष जे रैनिवारी ।
तिन्हैलै कछू नाय भूमै पछारी ॥ कछू पाणि सों धारिकै अंगमर्दा ।
मिलाये कछू मारिकै मीजि गर्दा ॥ पुकारे कछू भांगिकै लंकरावै ।
महावीर सो कीश ना जीतिजावै ॥

सुनत पुत्र-वध रावण क्रोधा । कहेसि बोलि घननादहियोधा ॥
जाहु कपिहि गहिलावहु बांधी । चल्यो सुभटपितु आयसुकांधी ॥
संग सेन बहु सुभट जुभारा । आयो जहँ बानर बरियारा ॥
लखि बजरंग विटपु गहिधावा । तेरेसि रथत्यहि अवनि गिरावा ॥
पुनि सत्र सुभटन गहिगहिधाई । डारबसि मर्दि मसनकी नाई ॥
पुनि घननादहि भिरेउ प्रचारी । लागे लड़न सुभट द्रुमारी ॥
तव पवनज मुष्टिक यक मारी । परेउ मुर्च्छिमहि विकलसुरारी ॥
आपु चढ़यो तरु कूटि बहोरी । जागिकीन त्यहि युक्तिन थोरी ॥
जीति न जाइ पवनसुत योधा । ब्रह्मअस्त्र छांडेसि करिकोधा ॥
तव हनुमान हृदय अनुमाना । ब्रह्मिहिकीन विधि गिराप्रमाना ॥
दो० ब्रह्मबाण लागत गिर्यो दावि सुभट बहुकीश ॥
नागफाँस पुनि बाँधित्यहि लायोजहँ दर्शशीश ॥
सवैया ॥ हे गिरिराजसुता सुनु सत्य सुजाप्रभुको जपिनाम सुभा-

यो । काटत हैं भरफंदनको । नर ज्ञानमई यश वैद नगायो ॥ ताम्रभुको
हृयदूत कहौ । किमि राकसके वखंधन आयो । ताहि न वॉधतहार कऊ
प्रभु कारजलागि सो आपु वंधायो ॥ त्रिभंगी छन्द ॥ देख्योकपि
जाई निशिचरसाई अति प्रभुताई कौनकहै । करपुट सुरसारे रहत निहारे
मुखरुख भारे डरनिरहै ॥ गिरि सरिस विशाला तनु दशभाला लो-
चनलाला क्रोधभरे । देखत प्रभुताई त्यहि बहुताई कपि नहिराई
शंकधरे ॥ कुंडलिया ॥ तव रावण कपितन चितै बोला विहंसि क-
ठोर । रेवानर कहुकौन तैं क्योंमारे सुतमोर ॥ क्यों मारे सुतमोर
वाटिका जाय उजारे । रक्षक रक्षाहेत तिनहैं वर्जत संहारे ॥ संहारे बहु
रजनिचर डारे डर ममते चितै । कहुकहु काकेवल निडर कह रावण
कपितन चितै ॥ सुनुरावण परिहरि कपट भैहौं ताकोदूत । जो मृजि-
पालत हस्त जग जाकोवल अनकूत ॥ जाकोवल अनकूत अवंध
नृप सुवन सलोने । राम लपण शुभनाम भये असि अहै न होने ॥
हने असुर त्रौदह सहस खर दूपण त्रिशिरा सुभट । त्यहि प्रभुको
में दूतहौं सुनुरावण परिहरि कपट ॥ खायोंफल म्रहिलागि जव
सुनुरावण अतिभूख । कपि सुभाव चंचल सदा ताहिते तोखउरुख ॥
ताहिते तोखउरुख हमें मारा ज्यहि वोही । मारेउं मैं त्यहिलागि सु-
वन वॉध्यउ तव मोही ॥ मोहि न सो कछुलाज काज प्रभु चहौं व-
नायो । परिहरु प्रभुसो वैर मानु यह मोर सिखायो ॥ क्यहि का-
रण आये इहाँ खोजन हित सिय चोर । सीयकौन कन्याजनक
जाको यश नहि थोर ॥ जाको यश नहि थोर स्वयम्बर में ज्यहि
नीचा । रह्यो तुमहुँ अरुत्राण भयोतहँवाँ शिरनीचा ॥ नीच न सुधि
श्रुति नासिका काटि प्वसा तव किय रिहा । तासु नारिचोर लखे
यहि कारण आये इहाँ ॥ कौहै पठवा तोहि इत बालिचन्धु सुग्रीव ।

वालि कौन। वतलाउरे सोई कपि बलसीव ॥ सोई कपि बलसीव
 मासपट जाकी कोखी रहे सुरति करुतासु बहुरि पौरुषा निज भाखी ॥
 भाखे कटुजनि मूढ खोलि बीसोदग जोहै ॥ ज्यहि भाख्यो शरणक
 वालिशठ तुच्छतु कोहै ॥ ताते तजि अभिमान। सब सुनुरावण सिख
 मोर ॥ कृपासिंधु स्थुनाथसां वैर न करि भलतोर ॥ वैर न करि भल
 तोर देहिलै सीतहि जाई ॥ मरसि ज ज्यहि विनमोत चहसि जो
 कुशल भलाई ॥ चाहसि कुशल जो आपु होय कुलखीस न जाते ॥
 गहसि रामपद जाय मानि सम शिखहि ताते ॥ सबैया ॥ कोम्बहि
 मारनहार हवै तव कर्महि को। तिनसां फिरि राखै ॥ श्रीरघुवीर कृपा
 करकी शरणगत तें मुखसां जत्र भाखै ॥ मां शरणजु त्रिलोक
 नवो क्यहि जाय न जाय जुतौ फल आवै ॥ श्रीरघुवीरके कोपकिये
 खलातु न बचै पुनि यत्न न लाखै ॥ रेकपि पोचि डरै नहिं काहि हम
 कहु तें खल तुच्छ कहै ॥ आयसु दीन न श्रीरघुराज न तो करत्यों
 जस ख्याल चहै ॥ तोहि ससन पछारि अबे डरत्यों गढलके स
 मुद्र महां है ॥ त्यों भगवन्त फलाकम एक मुलैसिय जात्यउ राम
 जहां हौ ॥ पै अवरावण मोर सिखावन तें करुका न चहै भल जेरे ॥ से
 वक जोसु सुरासुर सब्ब किये भल वैर न है ॥ त्यहि सोरे ॥ सो कहि मानु
 सवेर अबे लय सीतहि प्राय परौ कर जेरे ॥ त्यों भगवन्त गये शरणे
 क्षमि है अपराध सबे प्रसु तोरे ॥ धरि गमके प्रकज पाय हृदै निज
 लक अशक है राजकरै ॥ शशि सो यश दिव्य पुलस्त्य जगै त्यहि
 वंश न होसि कलक खै ॥ करिकान सिखावन रावण मो लै सादर
 सीतहि पाय परे ॥ जिनि रामके रोप दवानलमें सुत वंश पतंग सो
 धायमरै ॥ शाय सो वैर कियो हठिकै जिन देखि विचारि न ते मुख
 लठे ॥ एकन बीज करोरनके रण रोपरै गढ़ मानके दूटेगा तो सम

चारिहु ओर फिरोय पुरै पुनि आनि कै बालधि अग्नि प्रकाशी ॥
 तोमर छंद ॥ जव वर्त पावक दीश ॥ लघुरूप है तव कीश ॥ रिपु
 भौन ऊपर जाय ॥ चहुँ ओर पुच्छ भवाय ॥ गीतिका छंद ॥ चहुँ ओर पुच्छ भवाय गज्जत वाहि नम सौं
 लंगिगयो ॥ इत उत अटारिन कृदि ठौरहिँ ठौरपर पावक दयो ॥ अ-
 चलोकि पावक प्रवल धर धर खिलन परिगै खल भली ॥ त्यहिस समय
 श्रीरघुवीर प्रेरित मरुत उंचा सह चली ॥ व्यान उद्यान समान अपाना ॥ शरद तेजे पाण्डव निखाना ॥
 सरप सरोपा शोष फरमाना ॥ भोपन जन भाधव लौमाना ॥
 क्षिति संताप कुवर्षण कर्मा लम्पट लीभे तोप धुहधर्मा ॥
 तामोत्कर्ष जैल शय चाना ॥ सन्निपात अरु विग्रह दाना ॥
 धातु धरि धोपन अरु ब्रह्मा ॥ दमनद रोचन तामसरीहा ॥
 किंकर तिवनु धन जय लाना ॥ अरु उद्वेग चिन्त्रि सा पाना ॥
 युद्ध उच्चसि पत्रन के निमा ॥ मोहिँ जो मिले धरे सो यामा ॥
 दो प्रवल पवन भक्त भोरते चहुँ दिशि वाढी आगि ॥
 तजि तजि निज निज भवने सब चले निशाचरे भागिनी ॥
 कवित्त ॥ रावणके भौन उच्च कंचन कंगूर चढि ठाढो कप्रि कौ-
 तुकी कराल क्रुद्ध भाखऊ ॥ भौरी भयदायक लगाये लूम न्योम
 लगी विप्र त्रिकराल देखि धीर्य को न डाखऊ ॥ भाग्यवंत वीर रण-
 धीर त्यों समीर सुत गाज्यो करि कोप जवै हाहाकार प्राखऊ ॥ भोगी
 भौं भीत कहैं निश्चरन कीश यह लीलिते को लङ्काल रसना प-
 साखऊ ॥ प्रावक प्रचण्ड ज्वाल उठी ओर चारिहुते कञ्चन कंगूर भू-
 गिरन लागे जरि जरि अपख्यो हाहाकारना सँभार कोऊ काहुकार
 जरे बाल बालकी अनेक रहे मरि मरि ॥ देखै एक एकन उठावै

जनि सौजसो भागो भागो ध्यान लैलें यारौ धीर धरि धरि । देखि
यह हाल है विहाल दशभाल कह्यो मेघन बोलाय वारि नारोजाय
भरि भरि ॥ पायकै निदेश दशभाल को सुवृन्द वृन्द प्रलय प-
योद चले वारि बहु भरतै । चारों ओर घेरि लागे वरपे मुशलधार
प्रगटी कृशानु त्यों अधिक वारि परतै ॥ लागे सब जरन पराने घन
हारि हीय आये लंकनाथ पै पुकार द्वार करतै । भाग्यवंत महाराज
वृभिषेको कौन कहै जीवन सो जागी आगि राखो हमें जरतै ॥
सवैया ॥ द्वादश भानु कला भगवन्त विलोकि न तेज तहां अस
चीन्हें । कौल प्रलय कि कृशानु लखे असि तीक्ष्ण ताति नहै स्वउ
लीन्हें ॥ दीख विपाग्नि जु शेषमुखे घृत होत न पै कहु वारि के दी-
न्हें । कहि कहैं हम वायुतनै अति अद्भुत मै यह कौतुक कीन्हें ॥ १ ॥
दो० सुनि बोल्यो मंत्री चतुर अग्नि न असि बरियार । इन्द्र
ईश वामता कर प्रभु है यह सकल विकार ॥ २ ॥
द्वेषै ॥ पावक पानी पौन भानु हिमि भानु समेतै । इन्द्र वरुण
यम काल घनद लोकन पति जेतै ॥ ममदर डामाडोल शम्भु अर-
चावन आवैं । सडर विष्णु विधि बस्यलोक तीनिहु म्वाहि ध्यावैं ॥
मम राज आज तिहु लोक मे करौ रुचै मन जौनहै । पर उजुर न
करता कीउ कहु ईश वाम वह कौनहै ॥ पद्मरी छंद ॥ वह ईशवाम
स्वइ राम होय । ज्यहि वाम धाम लायौ सु गोय ॥ ज्यहि क्रोध पावक
प्रबल जानि । विरहाग्नि श्वास सिय वायु भावि ॥ द्वय वामता
कपिरूप तांमु । निरशंक लंक जाख्यो सो आसु ॥ ३ ॥
दो० सुनि राघव करिकोप तव सवसन कह्यो बुझाय ।
धाय धरौ कपि कहै सुभट । भागि न पावै जाय ॥
कवित्त ॥ लै लै सेल शूल पाश परिघ प्रचंड दंड धाये बहुवीर

धीरुं कैकै हाहाकार है । देख्यो तिनहै आवतः सकौप कपि कूट्यो तंत्र
गाज्यो घनघोर ज्यो कठोरकै चिकार है ॥ लाज्यो एक और सों संहारः
न सुभद-वृन्दः भाग्यवंतः कहै कौन गति-सौ अपार है ॥ धातुधान
धारि भूषि क्षणमें संहारि धीर दीन्ही भेलि केलि कपि केशरी कुमार है ॥
दो० ॥ सौ जासमिध मंत्रकुंड पुर निशि चरयव तिल धान ॥ विग
भाषउ श्रुत्रः लंगूल स्वाहा शवद हुते हौं कि हनुमान ॥ ६ ॥
॥ ॥ ॥ ग्रह ॥ दुर्दशा ॥ निहारिकै ॥ रावण ॥ रानी ॥ रोया ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ प्रदकिं प्रदकिं करउरि वचन कहत वीशु दिशि ज्यो ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ कवित्त ॥ केतहु उपायी करि हारी हौ सुखाय पर प्रविश्यो न ज्ञान
नेह्यु याके माल वाढा में ॥ हाखजं विभीषण बुझायपै सुभास्यवत्त
कीन्ही सौ न कान सतिपागी सर्व गोढा में ॥ प्राइहै सों फला आपु
कीन्हो अव भौति भली ताचिहै न भागि लोक तिहू राम रादामे ।
वार वार रोइयो मीदोवरी पुकारि कहै देत क्यो न लायः कपि लूम
याके दादामें ॥ सवैया ॥ भौवहु भौति बुझायथकी यक वात न पै
मम कान कस्यो है ॥ लीतदई हरि बुद्धि सवै प्रभु सो ज्यहि नाहक
जाय अस्यो है ॥ क्रील कराल गह्यो प्रिय लाहति ताहिते योहठ जानि
धस्यो है ॥ आपने हाथ लगाइकै आगि कुभारि सवै अबजाल जस्यो है ॥
दो० ॥ कुम्भकरण कीर्ति भासिनी ॥ इधिनवत ॥ जोरेहाय ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ जस्त ॥ बृहदते ॥ राखिये ॥ मेरोपति ॥ रघुनाथ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ भवन ॥ विभीषणकर ॥ अरु कुम्भकरणकर ॥ दर ॥ ॥ ॥
वच्यो ॥ और गढ़लंक सव जास्यो अपवन कुमार ॥ ॥ ॥
छपै ॥ जारि लंकगढ बंक सिंधुमें लूम बुतायो ॥ धरिल हुरूप
वहोरि जहाँ सीता तह आयो ॥ करि प्रणाम कर जोरि कह्यो जननी
करि नेह्यो दीन्हो प्रभु जिमि मोहिं जिह तैसो कछु देह ॥ हनुमान

जामवंत, सब, प्रभुहि सुनाये । सियसुधिपवनतनयजिमिलाये ।
 सुनि मन सुदित बहुरि भगवाना । हृदय लाय लीन्हे हनुमाना ॥
 परम प्रीति समीप वैठाई । बोले मधुर वचन सुरसाई ॥
 दो० कहहु तात क्यहि भांतितुम लायहु सियसुधिजाय ।
 सुनिबोलेयो हनुमंत तव चरण कमल शिरनाय ॥
 सुनहु नाथ अंजन भव त्रासन । तुम्हरी कृपा सुलभ सबदासन ॥
 प्रभु आयसु कृत खोज सिधायन । चलत चलत सागर यकपायन ॥
 शतयोजन तावर विस्तारा प्रभु प्रतापसो ह्वै करि प्राण ॥
 तहँ त्रिकूट गिरि ऊपर लंका । हरि मय वसत दुर्ग अतिवका ॥
 तहँ नृप रावण रहै अशंका । जासु कोप त्रिभुवन उरशंका ॥
 त्यहि अशोक उपवन में सीता । रहति गहै प्रभु नाम पुनीता ॥
 जाय चरण पंकज शिरनायो । दै मुँदरी कहि कुशल सुनायो ॥
 मनभावत आशिष वर पाई । पैठेउँ वाग रजायसु पाई ॥
 वन विभंजि हति अक्षय कुमारा । तव प्रताप लंकापुर जारा ॥
 बहुरि आइ सियपद शिरनायो । लै चूड़ामणि सपदि सिधायो ॥
 सो प्रभु लेहु हरपि भगवंता । लीनलाय उर कृपा अनंता ॥
 दो० कह हनुमंत कृपायतन सुनिये परम प्रवीत ।

सुगल नैन भरिवारि सिय वचनकहे कछुदीन ॥

सवैया ॥ सानुजपार्थ गह्यो प्रभुके सुकह्यो यह मोर सँदेश सुभा-
 गी । हौ प्रभु दीनदयाल सदै प्रणतारति भंजन कीरति जागी ॥ त्यों
 भगवन्त सुकाय गिरामन राउरके पदहौ अनुरागी । कौनसो तूक
 परी म्हाहिसों ज्यहिकारण नाथ इतै अवत्सागी ॥ अवगुण एकमया
 मैं जानत प्राणतजे ने तजे हरिजावत । लागसो नैननको हठिहीत
 जे बाधक प्राणचलै चहै तावत ॥ पौन उसास शरीर रुई विरहागिनि

तौ क्षणमाहिं जरावत । त्यो भंगवन्त सुहितहितै जलनैन खवै न
 जरै तनुपावत ॥ जाभुजसों सहसैन सुबाहु निकन्दनकै शिवचाप
 चढ़ायो । जाभुजसों खर दूपण शीर्ष त्रिमारि अभय मुनिबृन्द व-
 सायो ॥ जाभुजसों वधि बालिवली शुभकंठहि रंकते राउवनायो ॥
 वैभुज कहिभये भगवन्तजु आहुलौ नाथ हमै विसरायो ॥ कुण्ड-
 लिया ॥ सीताकै अति विपति प्रभु क्यंहिविधि कहौ बुझीय । पल-
 पल धीतत कल्पसम ॥ तव वियोग रघुराय ॥ तव वियोग रघुराय
 साजिदल संप्रदि सिधावो । मारि असुरयुत वंश समररजमाहिं
 मिलावो ॥ लावो विलंब न नेकु समुझि निज विरदपुनीता ॥ तव-
 लिप्रावेगि रिपुजीति नाथलै औइय सीता ॥ सीता सुनि सियको
 दुखहरना दुख रामकृपा सुखएन ॥ सीता
 ॥ सुजलनैन धरि धीर तव बोले ॥ गद्गद वैत्र ॥
 ॥ त्रोटक छन्द ॥ मत्तकायगिरा गति मोरिज्यही । सपन्यो
 दुखचाहि कि तातत्यही ॥ सुनियो प्रभुहौ दुखभार त्यही ॥ तजि
 आपुहुवैगति आनजप्रही ॥ क्यंहि लागि करौ प्रभु शोचहियै ॥
 रिपुजीति लयाउव वेगिसियै ॥ भुजङ्गप्रयात छन्द ॥ कहौ लंकनाथै
 ससेना संहारौ । कहौ लीयकै ताहि तौ पायँडारौ ॥ कहौ लैकऊ-
 पारि सामुद्रवारौ । कहौ कूटत्रै कुम्भकाचेसो फोरौ ॥ कहौ अदिलौ
 भूरि सामुद्रपाटौ । कहौ पातकै वारि यों मार्गठटौ ॥ कहौ अंगको
 देउ कै सेतुआपै । तिरै सैनसारी पलैमाहि जापै ॥ कहौ लै तुम्है
 जायँ सीतै देखावो । कहौ सीयकोलायँ आपै मिलावो ॥
 ॥ दोहा ॥ तव प्रताप रघुवंशमणि करौ जो आयसुहोयै ॥
 ॥ सुनिबोले रघुवंशमणि । ऐसै बल सुत पतोरौ ॥

... लहि समान्तीतिहुँलोकमेंग्रहिलून दूजो मोरीं ॥ ...
 ... प्रतिवपकारने योग तत्र दिश्यो क्रिय अनुमाना ॥ ...
 ... इन्तातेः सन्तवहौ ॥ ...
 सुनिं रघुवीर विजान अंतमोला मिसकुत्तिनायुसुतं सुनिअसवोला ॥
 सवैया ॥ सोइवडो सुवभाति प्रसो प्रभुताअ्यहि आपुदियो सु
 नायका नीचुतिं प्राद विप्रदेभरो उरलीय किंयो प्रभुसो सुविदायका
 ताहि अगम्य सुकाज क्कहा सुस्राज अहौ ज्यहि आपु सहायका
 त्यो भगवन्तप्रवाफ त्वया सव मै मृगशाखकहौ क्यहि लायकी ॥
 असकहि प्रस्यो ज्ञरेण शिरनोई प्रमु उठायजालीहे उरलीई ॥
 निकट राखि बहुविधि सनमानी ॥ कपिपति तोलि क्यह्यो प्रभु प्राती ॥
 लैकपि भालु कटक विभिजाना ककरहुवेगि गढलीक प्रयाना ॥
 सुनि कपीश साजी कठकई कहितजाय यथपत्रविपुलाई ॥
 असी शंख मुनि शर्त भट्टसाथा ॥ ज्ञानरत्नगात्र गवाक्षके तसथा ॥
 सात पद्म ज्ञावरु जर्स क्रोरा ॥ हृद्वर गजसंग कपि भट्टपीरा ॥
 साठ सहस शत तिइसलाखात्रोसंग ॥ बलवीरलिपे मृगशाखा ॥
 छप्पनकोटिं शिखरडीतासंग ॥ कपिचला मृद्व मनरेगा ॥
 पद्मवारि इंसत्तासी ॥ लचक्रालै संगकीश कुमुद भट्टमच्छा ॥
 पौडश खर्व ॥ लशीला ॥ जलसंगलै गजत जनीला ॥
 गेरहं अर्वा कीशा वलवाना भोगन्ध्रमदनलै ॥ कीनप्रयाना ॥
 कोटि सतासी ॥ नवेलाखी ॥ तारावखत मलिये मृगशाखा ॥
 छविससहसानवलख दिशक्रोरी ॥ लयी केशरी ॥ ब्रह्मा रिपुओरी ॥
 द्वादशकोटि सहसशत ॥ वंदर वाणवसन्त मलिये संगसादर ॥
 पद्म आठा नौसै ॥ इकर्यासी ॥ रतिमुख मलिये क्रीशवलरासी ॥
 पद्म एक शतलाख ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥
 ... कीशने सिधाये ॥

लास पचीस कीशोऽयक शोरी । लैः सँगचला द्विविद सुखवोरी ॥
 सात पद्मसु अर्ध श्रमाना । लैः कपिकीन्हो पनसं पयाना ॥
 दो० जामवन्त के साथसें भालुनको । दल जौनः ।
 सो नकिमि वरणों पारु भै । जनिहि देखे नतौन ॥ ६० ॥
 यहि विधि युधप चहुत है । कहै ल गि कहौ वृत्तानि ॥ ६१ ॥
 किराम तनके काजहित । वट्टे रात है मसवा आनि ॥ ६२ ॥
 प्रभु आयसु तव प्राय । मालु कपिकटक सुखायो ॥ ६३ ॥
 वोरु कठोर शब्द । तिहुँ पुरमे छायो ॥ ६४ ॥
 यथयूथ चलवन्त अन्त कहि
 कोहुत पायो । कृपित अहि महि व्योम शेष दिग्गज सकुचायो ॥
 श्रीराम कटक को विभव जड़ । जनिहि जिन देखया लियो ॥
 यहि भौति जाय तिसये दिवस समुद्रतीर डेर कियो ॥ ६५ ॥
 इति श्रीमदयोध्यासिंहसमात्मजभगवन्तसिंहविरचिते भक्तिशिरामणिग्रन्थे सुन्दर
 काण्डे श्रीगमचन्द्रसेनासहितसमुद्रतीरप्राप्तवर्षेणो नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ६॥ ॥
 दो० तस्वामी तुमसो नहि ॥ धरि भीतर वाहिर तैक । ॥ ६६ ॥
 गीः । ग्रहय समुभि निखाहिये । प्रणत पात तव टिके ॥ ६७ ॥
 सेवैया की कोउ स्वरूप करे । अनरूप कऊ गुणमाय हिये सुख पावै ।
 कोउ रह्यो रटिनाम नितै । अभिराम किराज पद सेवन लोत्रै ॥ कोउ कहै
 हरि । व्यापक ब्रह्म अनादि कऊ हरि एकावतावै । त्यों भगवन्त प्र
 तीत जिनहै ज्यहिमाहि तिनहै प्रभुहै त्रयहिवात्रै ॥ श्रीहनुमान महा
 बलवान सुकृदि जे वारिधि एक फलैका विराज जासि निशाचरमारि
 कै आयउ जारि महा गढ़लका ॥ तिह दिनते दिन राति हिये संव
 राकस वृन्द रहै सहशकौ । आजहु गार्भ खवै तिय दृष्टनकै सुधि
 श्रीहनुमान कि हका ॥ ६८ ॥ ॥ ॥ श्रीगोबुध गार्भ ॥ ६९ ॥
 दो० सँडर सकल निज निज भवेन गन । अस करै विचार ।

नहिं निशिचर कुलकर अब है क्यहुँ भांति उवार ॥
 जाके चरवर केर अति बल नहि बरणों जात ॥
 त्यहि प्रभुके आये नगर कहौ कवन कुशलात ॥

हरिगीतिकारखंड ॥ कपि भालुदल लै राम लखिमन आय सा-
 गर तटपरे ॥ यह पाय सुधि मंदोदरी उर कम्पअति शोचहि धरे ॥
 करजोरि सादर वार वारहि पाय गहि कह रावणै ॥ तजि कोह करि
 अति छोह पिय उर धरहु भांग सिखावने ॥ सवैया ॥ नार्थ विरोध
 तजौ प्रभुसों हित आपन जानि मयासिखही तै ॥ श्रीरघुवीर परा-
 त्पर ब्रह्मगनौ करि छोटे तिनहै नहिं जीतै ॥ त्याँ भगवन्त सुजानि
 भलो पिय दिहुपठाय शिरामहिं सीतै ॥ नाहिं तौ जो खरदूपण वालि
 कि भैगति चाहत तौ शिरवीतै ॥ तमिरखंड ॥ सुनि प्रियकै इति
 उत्तम शिक्षा ॥ विहंसि कह्यो कह वानर ऋक्षा ॥ त्रिभुवन वीरनहै मम
 आगे ॥ डरपति है प्रिय तू क्यहि लागे ॥ नर कपि भालु अहार ह-
 मारे ॥ हम मरि हैं तिनके किंमि मारे ॥ तमिरखंड ॥ यहि भांति ताहि
 सिखाय ॥ वैद्यो सभासह जाय ॥ तव लौ कह्यो कउ वैत ॥ कपि
 भालु लै प्रभुसैन ॥ तट सिंधु छेरहिं क्रीन ॥ सुनि बोलि मंत्रिन्ह लीन ॥
 कहियो मतो चित कौन ॥ सबही कह्यो रह्यो मौन ॥ छंद्र त्रिभंगी ॥
 घटश्रुति अभिमानी तव कहवानी अट हमसानी कौन जना ॥ जो
 सौह हमारी सकै निहारी नर अनुचारी कौन गना ॥ ब्रह्म निरस्त
 सदाया कह अतिक्रिया जो करि दाय हुकम लहौ ॥ अविही नशित
 सारी विनु नरहारी करे पुकारी सत्य कहौ ॥ सुनिकै कखिदा वद
 घननादा ममयश जादा जगत जहां ॥ विधि हरि हरसारे सुभद
 जुभारे विवश हमारे नृकपि कहां ॥ तव बोले कुंभा असुरानि कुंभा
 रतछल दंभा कलुपलदे ॥ त्वला विदित हेमारो सुरत न्यछारो शंकर

धारो मनुष्यदे ॥ यहिविधिः बल आपनः सवरुत पापनः करत प्रला-
 पनः विपुलः भये ॥ तव करि पुटहस्ताः कहयो प्रहस्ता सुखप्रद रस्ता
 सुतहु त्रये ॥ सियः देहु पठाई जो तिय पाई सहित सहाई फिरि जाही ।
 तौ तौ भलिवाता ननु हठिवाता करिय प्रभाता रणमार्ही ॥ सुनि
 मित सु तदाई निशि चरराई कह्यो रिसाई वशमानै । कीदर सी वातै
 दुरत कहात ममबला वातै नहिं जानै ॥ ११ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 दो ॥ नीति कहत हम आपुपै ठहरे कादरः माहो ॥ १२ ॥
 ॥ ॥ ॥ तौ तुम जाना सोइहौ भली भांति सुखे छाहै ॥ १३ ॥
 ॥ ॥ कह्यो विभीषण जोरि कर ज्ञाथ सुनौ सुतमोर ॥ १४ ॥
 ॥ ॥ सोमहिं सौ प्रहु जातकी सव प्रकार भलतोर ॥ १५ ॥
 ॥ ॥ सवैया ॥ रामहिं मानुष तांतगनौ जनि पूरण ब्रह्म चरचरनायक ॥
 गोद्विज देव सुसंत हितै अवतार धरयो महिभार नशायक ॥ दुर्लभ
 जो मुनियोगिन को शिव मानसहंस सदा सुखदायक ॥ सी भंग-
 वंत रूपाकर सो तजि वैर भजौ भजिवे प्रभुलायक ॥ कवित ॥
 नाथ करि दूरि रघुनाथ सो विरोधभूरि नाइयो सुमाथ जो कुशल
 चाहो प्रानकी ॥ त्यागिहै न पायकै शरण्य सो सुभायिरीति प्रीतिकै
 सुभायवात मानुमो प्रमानकी ॥ जासुनाम ताप त्रै विनाशक प्र-
 सिद्ध गाय नाथसो प्रकट चारि वेद जाहि गानकी ॥ भाग्यवंत नाथ
 सो समुक्ति विश्वनाथ वेगिसौ पियो सुजाय रघुनाथै नाथजातकी ॥
 सवैया ॥ ॥ हित कीन चहौ निज नाथ भजौ रघुनाथ तजौ द्वेषिता
 चितकी ॥ चितकी गति जानत मानत स्वै उर आनतहै न उते इत
 की ॥ इतकी न महासुखता सुखकै हरि आसु नखो त्रिशुता नितकी ॥
 नित कीन चहौ सुखनाथ भजौ भगवंत सुवात कहौ हितकी ॥
 बलकै धननादसे वीर जिते रण सम्मुख एकन जूटहिगे ॥ रजनी-

चरचन्द्रगुप्तानभरे हनुमानसवैगहिकूटहिंगे ॥ बखरीशमहेशके
 प्रेदशशीशजुतौ खगजम्बुकलूटहिंगे । धरि है धृति कौन कराल
 जबै रघुवीरके श्याक छूटहिंगे ॥ चहुँ ओरते वाजरभालुजबै प्रभु
 आयसुलंक्रमे भैपिलिहैं । भटभारतवैठियगालजिते न उलूक सो
 खोज किये मिलिहैं ॥ भगवंत उदैरविराम भये नादेशस्य कुमो-
 दिनि तौ खिलिहै । धरि है धृतिको करिकोप जबै रघुनायक बाण
 निजै दलिहैं ॥ नलनीलजन सेतु रचै जवलो जल राशि न राघव
 पारतरौ । सुत बालि न लंकदहै जवलो न प्रसजने जवत सरोपभरो ॥
 भगवंत अनंत सुकृष्टि हिये जवलो न शरासन बाण धरो । जगदी-
 रा न शीश हरे जवलो तवलो किनलै सिय पाय परौ ॥ प्रियवन्द ॥
 ताते मतभरो यह मानौ प्रियहीतौ । दीजो रघुनाथे सुखसाथे लैसीते ॥
 तोमरचन्द्र ॥ कह कोपितौ विसअक्ष रिपुकेरु ठानतपक्ष ॥ त्यहि
 तोउहै किनजात । अस भाखिमारयो लात ॥ त्रोटकवन्द ॥ मोहि
 मोरहु लात सो नीककिह्यो । किस्ताडिनके प्रभु सोह दिह्यो ॥ प्रभु
 पेहम तौ अव जाहिभजेत परराउरको हित रामभजे ॥ अस भाखि
 सुमंत्रिनासंग पलियो । रघुवीरके तीरपयान कियो ॥ सवैया ॥ जे
 पदकजनासो प्रगटीशुभदेवसरी त्रयतीप नशर्विनग जे पदकजत
 पादुकनै मनभरत लायरहै करिवावेन ॥ जे पदकज कुरंग बली
 रंग धाय चले भवदापन दावन ॥ देखिहौ जाइसु अजिभले भग-
 वंत स्वई पदकज पावन ॥ जे पदकज धूरिखुये ऋपिनारि तरी
 शिवमनस गोये ॥ जे पदकज सभम हिये सुविदेहनिलै लय सादर
 धोये ॥ जे पदकज परेभे हरे चनद डक घापा सयाप्रके खोये । पाइहौ
 आजु सवै सुखमे भगवंत सोई पदकज जोये ॥ कवित्त ॥ दानि
 सुखदान के प्रमान है निगम बीच रावरी । सुगति क्यो न देखतै

संभरिहैं ॥ जानैराय जानि जेनजीकी रुचि लोलसाहु भायके न
 भायसी सुभायहौं निदरिहैं ॥ भाग्र्यवन्त दीनबंधु जानिकै सुजन
 दीन कृपया कटाक्षकौ विषम पीर हरिहैं ॥ किरुणानिधान रघुवंश
 अबतस आजु मेरो शीश कजपाणि जानकीश धरिहैं ॥ १७ ॥
 यहिविधि मनमहं करत विचारा । आवत भयो सिधु यहिपारो ॥
 कपिन विभीषण देख्यो आवत । रिपुचरजानि राखित्यहितावत ॥
 कपिप्रतिसन बरयो त्यहिवाता ॥ सुनितिनजाय कह्योजगत्राता ॥
 नाथ अनुज रावण रिपुकेरा ॥ आवा मिलन तुम्है यहिवेरा ॥
 कह प्रभु शरण जो आवा होई । मर्म बूझि लै आवहु सोई ॥
 प्रणतपाल मेरो यह वाना । शरणगत यहि प्राणसमाना ॥
 मुनि कपि वृन्द हरपि उठि धाय । सादर त्यहि प्रभु यह ल आयै ॥
 अनुज समेत देखि प्रभु शोभा । बोल्यो वचन विगत मनक्षोभा ॥
 जोसवैया ॥ नाम विभीषण रावणको लघुभ्रात निशाचर को कुल
 जायो ॥ तास देह परायण पाप सुधर्म अचार ल भूलिहु भायो ॥
 त्यों भगवन्त सु आपु यशै मुनि पावन मै शरणे त्तकि आयो । की-
 जियात्रातु कृपालमया शरणगति पाल तुम्है श्रुतिगायो ॥ दासन
 के रहित राम सदासहि दुख कियो निज दास सुखारे । सो बरवात
 प्रसिद्ध प्रभो यश पावन वेद पुराण पुकारे ॥ ज्यों प्रह्लाद मयदहु
 की मुनि टि न देर किये दुख टारे । त्यों भगवन्त अनार्यके नाथघरी
 प्रभु हाथ सुभाय हमारे ॥ राम गरीव निवाज हस्यो तुम दीन अनै-
 कन को दुख गाढो । शीत सुकड कियो स्खोजात जु बालि के
 त्रास महानल डाढो ॥ त्योंहि विभीषणहू कि सुनी भगवन्त सु-
 दास विनै करे ठाढो । रावण के अघओघ समुद्र में घुड़त नाथ
 भुजागहि काढो ॥

॥ कुंडलिया ॥ कीन्हो ब्रह्मप्रणाम अमुलीन्हो हृदय-लगाय । निकट
 राखि पूछी कुशल-सानुज । श्रीरघुराय ॥ सानुज श्रीरघुराय कुशल
 पद-पुंज देखे । मिथ्यो अमंगल मूल धन्य निज भागहि लेखे ॥
 भाग्यवन्त बड़े जानि राम जल सागर कीन्हो ॥ कहिल केशव
 ताहि तिलक लङ्काकर कीन्हो ॥ सवैया ॥ जो सुख संपति सिवण
 को शशिभाल दिये दशभाल जेहावत । जातल तीनिहुँ लीकनमें
 दशकधर राजकर मनभावत ॥ सोइ विभूति विभीषणको रघुनाथ
 दिये पदीमाथहि नावत ॥ यो भगवन्त सुसौहेवसे भजि केन कहौ
 सन भावत पावत ॥

॥ राम सुभाव सुराति लखि हरपे सब कपि भालु ।
 ॥ सखा निकट वैठाय तव बोलै राम कृपालु ॥
 ॥ सवैया ॥ हे कपिराज सुलंकप्रती कपि भालु जे औरहुहौं प्रति
 आगरा देखहुँ सिंधु न मारुमरे सुख उरग न करौ कल्प-मारुग ॥
 थाहि लहै नहि घाट कहूँ सुअराध मेहा तहि वाटकि सागर गंत्यो
 भगवन्त विचारि कहौ क्यंहि भोतिवरी यह इस्तर सागर ॥ पछरी
 बंद ॥ कहल कलाथु सुनु दीनबन्धु । शोभै सुवाणि तव कोटि सिन्धु
 पर कहत नाथ अस नीति गाय । कुरिये समुद्रसन विनय जाय ॥
 सुनि अमु अंत्र विभीषण केरा । बोलै उचित कह्यो यहि विरा ॥
 रुष्यो लक्षण मन यह मत नाही । जोरि पाणि बोलै प्रभु प्राही ॥
 नाथ रूप कुरिये शोभिय नाही । विनय किहे जेइ मानत नाही ॥
 कह्यो करन ऐसहि परिणाम । अस कहि गये सिंधु तटाराम ॥
 कुरि प्रणाम । जेडे कुराडासी कृपासिंधु । सुंदर सुखोसी ॥
 दो० जवहिं विभीषण गम पहुँ आये शरण सिंधु निगम

तत्रहि दशनिना बोलिकै प्रथये दूत दुरायु ॥

बल मै सबै गरुड ते धारी ॥ रहे निरामकर चरित इनिहारी ॥
जानि सो मर्मन्कपिनज्जत्र पाये ॥ तुरत बोधि कपिपति पहुँलाये ॥
कह कपीश नासा श्रुति काटी ॥ पित्रहु फेरि इन्हिं बहु डाटी ॥
त्रासत ॥ दीन्है नारामि दुहाई ॥ मुनतु सदयदियलंपण छुड़ाई ॥
दशमुख कर यह पत्र हमारा ॥ दै संदेश बरगयो मुख द्वारा ॥
जो निजकुशलचहेसि दशमाथा ॥ सीतहि देइ मिलौ रघुनाथा ॥
नाहि तो चलि अब कालतुम्हारा ॥ आवा कठिन न होइ उवारा ॥
करि प्रणाम चरलंकहि आये ॥ दै दशमुखहि पत्र सब गाये ॥
मुनि संदेश बैचायसि पाती ॥ सभयविहसि बोला कुलघाती ॥
जान्यउँ मै उनके प्रभुताई ॥ वृथा करहु तुम निकर बड़ाई ॥
सचिव विभीषण सम जिनकेरे ॥ कबहुँक पूर परै तिन तेरे ॥
यहि विधि रह्यो गालसो मारी ॥ मुनहु राम यश भव भयहारी ॥

दो० तीनि दिवस सागर निकट विनये राजिव नैन ।

जब नहिं मान्यो कोपि प्रभु साध्यो शायक पैन ॥

भुजंगप्रयात छंद ॥ जबै राम शारंग लैवाण तान्यो । भयोक्रुद्ध
श्रीराम सामुद्र जान्यो ॥ समै विप्र है रत्नलै भेंट आयो । रचै सेतु
नलनील मंत्रै वतायो ॥

ये द्रुव कीश महाबल वीरा । रहत रहे ऋषि आश्रम तीरा ॥
जब कहुँ कुटी छोड़ि ऋषिठरहीं । तब ये अमित उपद्रव करहीं ॥
शालिग्राम शिला गहि ल्याई । जलमें फेंकि देहिं अन्याई ॥
यहिते ऋषिन शाप इमि दीन्हा । इनकर पाहन परशान कीन्हा ॥

दो० जल में नहिं बुड़िहै कबहुँ यहै हेतु जियजानि ।

इनकर दर्शन लोग जेकरि है जगमहँ सुजन ।

ते तजिकै सब शोग बसिहै ममपुर जायकै ॥

यहिविधि अमित महातम गाई । कहेउ कृपानिधि सबहिं सुनाई ॥

पुनि रघुवीर रजायसु पाई । चलेउभालु कपि कटक बजाई ॥

कउ जलचरन्ह उपरचढ़ि जाहीं । कउ मगसेतु कऊ नभमाही ॥

कौतुक देखि मुदित रघुराई । सादर शिवपद शीशनवाई ॥

अनुज सहिन प्रभुकीन्ह पयाना । भये सगुन सुन्दरशुभ नाना ॥

दो० सेन सहित रघुवंशमणि उतरि वारिनिधि पारि ।

देरा कीन्ह्यो जायकै हरण अखिल भवभार ॥

दशमुख सुन्यो अपार तरि आये । सहित सेन कोशल नृपजाये ॥

व्याकुल मनमहँ करत विचारो । गयउ भवन कुल विटप कुठारो ॥

तव मयसुता जाय पगलागी । बोली बचन परम अनुरागी ॥

परिहरि क्रोधे । नाथ ममवानी ॥ करहु श्रवण हित आपन जानी ॥

हरिगीतिका छन्द ॥ नाथतजि रघुनाथ सौं सब वैर नावहु मा-

थही । लयदेहु सादर जाय मिय परिपाय करिपुट हाथही ॥ श्रीराम

करुणासिंधु आस्तबन्धु जनरक्षक सदा । अवैलोकि क्षमिहै शरण

निज अपराधे पिय कीन्ह्यो यदा ॥

दो० मधु । मुरकैटभ से सुभटो जिनमारो । रणजीति

तिनकहँ जनिमालुपगनहु मानहु बचन प्रतीति ॥

सवैया ना रामकि वाम जु अन्यों । चोराई बिसाहिहु सो पिय वैर

महाहै । जलमि क्षीरसमुद्र मथ्यो यह तुच्छ त्वया गढ़लक कहाहै ॥

सीयस्वयम्बर क्यों न बख्यो यह पीरुपका तब तौ न रहाहै । जानि

परै युतवंश तुम्हें अब चाहत काल कराल गहाहै ॥ तारक छन्द ॥

तेहिते तजिमान भजौ रघुवीर । हित आरत भजन भौ मय भीरै ॥

ज्यहितो अहिर्वात रहै पिय भैरो । अशु पावन पुञ्ज जगै जगत्तेरो ॥
 मुनि नाम किं वानि कही अभिमानि । इरु नाहकते मनसों प्रिय-
 मानी ॥ सत्तरात्रु वरुण अहै जग मोरे । कयैहि लागि प्रिया उपजा-
 भय तेरे ॥ किरिद छन्द ॥ मै निज बाहुन केवलसों युग चौसठि राज
 कियों मन भासत । देव सुता लक्ष्मी नाग सुता मत्त रूचक जे वरि वरस ला-
 यन ॥ त्यो भगवन्त जिन अनि गन्यों भद्र कल्लुक ज्यो शिव शैल उठा-
 यन । देखत सो भुज भामिनि क्यो कहु जाय परी अत्र शत्रुके पायन ॥
 यहि विधि प्रियहि बहुत सुमुखाई । तदि अट्टालक त्रैक्यो जाई ॥
 तहां होइ अति रुचिर अखारा । देखन लाग जाई मदभारा ॥
 परम प्रबल रिपु शिर पर आयो । तदपि न शोचतने कर्मलायो ॥
 कोटि इन्द्र सम विभव विलासा । सन्तत करत न भिन्न भेदासा ॥

नाराज छन्द ॥ इहां शिराम सैनसा सुवेला आयकै रहे । बढयो
 प्रमोद जल तत्र मालशोक के दहे ॥ विलोकि राम चन्द्र त्रन्द ओर
 पूर्व सो कही । कहौ निशेश माहि रयामे तसि कौन है सही ॥ कही
 सुकण्ठ भूमि छौह श्रय भाख यो कर्ड । हत्यो ज राहु चन्द्र हीय शरी-
 मताति है स्वई ॥ रज्यो जवै विरधि है रत्यास्य काठितो लियो । निर-
 शेष सार भाग बहिकोइ छिद्र सो हियो ॥ सुवाद तत्र व्योम छौह
 पर्व जोहि जानियो । सुश्रय राम चन्द्र आपु फेरियो सुभानियो ॥
 दो ॥ गारुड अचुज शशिकरु प्रिया निज उर दीन्हो वासु । तत्र नृ-
 पतिस विप्र निकर कर कौहु सो जारत विरहित आसु ॥ १ ॥ म-
 सो ॥ सुनि प्रभु तत्र ज बहोरि चरण कमल शिर नायक ॥ भि-
 ष्या प्रवत नय कर जोरि बोल्यो अति संजुल वचन ॥ २ ॥ इ-
 ॥ सवैया ॥ हेरघुवीर कृपाकर धीर सुसेवत धीर डरो तनी खोई ॥
 अहुत आयु चरित्र सवै भगवन्त सुजानि जा पावत कोई ॥ है प्रभु

पूरण दास त्वया शशि आसना आन लियो मनकोई मूरति आपु
 वसौ विधुको उर श्यामलता रघुनायक सोई ॥ दौधक छन्द ॥ मा
 रुतनन्दनकी सुनिवानी ॥ भेति प्रसन्न शिराम सुजानी ॥ दक्षिण
 ओर निहारि वहोरी ॥ राजिवनैन कही सुखवोरी ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ दो ॥ हेलक्षेश्वर देखा यह हैका दक्षिणओर ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ घनइव गरजत होत जनु उपलवृष्टि अलिघोरगा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 तव लक्षेश कही सब हाला ॥ दशमुखकर अतिविभवविशाली ॥
 सुनि प्रभु विहसि नराच चलीयो ॥ छत्र मुकुट ताटक गिरायो ॥
 रावण सभा चकित रहि गयऊ ॥ होत महा यह असगुन भयऊ ॥
 बोला शीश गिरे भल जाको ॥ खसे मुकुट कस अनमल ताको ॥
 ॥ दो ॥ अहिविधिकहि सबसन कहेउ करहु जाय गृह शैन ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ समय प्राय मन्दोदरी बोली ॥ भरि जल नैन ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ सवैया ॥ पति मानहु बात कही हमरी रघुवीरसों दूरि विरोध
 करौ ॥ जनि मानुष जानि तिन्हें मनमें वश मोह न यो हठ आनि
 धरौ ॥ सचराचर व्यापक ब्रह्म उन्हें भगवन्त विचारि सुहित्त सरो ॥
 प्रभु मोहिंसमेत सुलै सियको रघुवीरके पायन जाय परौ ॥ होरी ॥
 पिय मानो कही मम बात सही रघुवीरसों शरि रचौना ॥ आदिपुरुष
 अलखित गति जाकी ब्रुभि प्रभाउ परौना ॥ नितिनेति ज्यहि वेद
 पुकारत पावत पारि हौना ॥ सकलसुख मंगल भौना ॥ शंकरचाप
 कठोर महा अतिविदित भुवन तिहु जौना ॥ राजसभा रघुनन्दन
 तोरयो कमलनाल सम तौना ॥ कही तुम वाण रहौना ॥ वालि
 महाबलशालि रह्यो है प्रतिभट जासु कतौना ॥ एकहि वाण प्राण
 तेहि लीन्हे बल बल एक चलौना ॥ तुम्हें किय काखमें जौना ॥
 जाको दूत एक पुर आयो कीन्हो सवहि खलौना ॥ जोरि कै लंक

रच्यो होरी अहि विरघर कीच सुरगौनारी । रच्यो तबो ह्यै कत मौना ॥
 यो भगवन्ता कहत मंदोदरि सुनुहुती धुदै श्रौता । सीता देहामिलो
 स्थिताथै नाहि ती मीरन सिचौता ॥ भागि तिहुँलोक वैचौता ॥ अछ
 दो० मंदोदरी ज्वनन मरुति विहसि कह्यो अतिमन्द ॥ अछ
 ॥ अछ अहो मोह समता मवल कीच प्रस्यो त्यहि फन्दी ॥ अछ
 ॥ सुवैया ॥ औगुण आठ सेदा निमसै उर-तासित केकवि बन्दन
 गाया । सिहस भै अवित्रेक अशौच अत्युददै अरु चंचल साया ॥
 तेरिपुरुष करलि महाप्रिया गाय ह्यै अति भौ उपजाया ॥ सो स-
 हजै वर मोहि प्रिया सत्र जाँन प्रसादु लया अविपुया ॥ अछ
 दो० यहिस प्रसुता अमित मम प्रीति ह्ये प्रिया अविपुया ॥ अछ
 ॥ अछ तुम समति जातुर प्रिया जन ह्यो जराँ तहि जानी ॥ अछ
 असे कहि सो अछ सेवत लीगि ॥ मंदोदरी ह हृदय ॥ अछ जागा ॥
 काल विवशा प्रिय मति बौरानी । सुमिपरै कछाँ लामि त हुहानी ॥
 आत प्रगट दुरी कछेरा जागा ॥ अछ समी खडि अविपुया ॥
 जागे किरि गुण गण गावन । वैठ अशंक ल्यै कपति जावन ॥
 दो० मित्रभाव क्यहै अजै अहै भिजै अरिभावा । अछ
 ॥ अछ राम मिलन संशय । तहीं भागवन्त श्रुति गाव ॥ अछ
 ॥ अछ अहो मोह समता मवल कीच प्रस्यो त्यहि फन्दी ॥ अछ
 ॥ अछ अहो मोह समता मवल कीच प्रस्यो त्यहि फन्दी ॥ अछ
 ॥ सुवैया ॥ करुणालय पालय दीनजन अमदाल सपालय शोक
 लदा । यशामवन जावन छावन त्यो रिपुरावन द्रावन हुवेद्वदा ॥
 खल खरहन मरदन भूमि अखण्ड अखण्ड प्रतापु गगड अदा । पद
 बन्दन ह्यो भगवन्त करौ युत जानकि जानकिनाय सदा ॥
 दो० अहो मोह समता मवल कीच प्रस्यो त्यहि फन्दी ॥ अछ

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ कहहुवेगि क्रा करिय कह जामवन्त शिरनाय ॥ ॥ ॥
 ॥ जामवन्त सवैमा ॥ हेरघुवीर कृपा सुखसिंधु सुआरतवन्धु दया
 उरधरौ ॥ नीति निशुनी सुजान ॥ शिरोमणि कीरति पुञ्ज सुखन्द
 पुकारै ॥ जानत हौ सब पूंछत मोहिं सुमंत्र कहौ निज बुद्धनु-
 सारै । जीभगवन्त सुभाव मनै प्रभु दूत पठाइय वालिकुमारै ॥
 रामसवैयाग वालितनय बलबुद्धि निलै ममकारज आजु सु लं-
 कहि जावो ॥ रावन देव सतावन सो कहि पावन धर्म हिये दर-
 शारो ॥ हौ अतिचातुर ताततुम्हें बहुभाति कहा कहिकै समुझावो ॥
 काज हमाराहुवै हित तासु सो दै उपदेशन आतुर आवो ॥ ॥
 वंगमछंद ॥ हेरघुवीर सुसिद्धि स्वयं तव काजहै । दीन्हैयउ आदर
 जानि सुसेवक आजहै ॥ बदि कृपानिधि प्राय शिरायसु राखिकै ।
 अंगदकीन पयान सु जयजय भाखिकै ॥ त्रोटकछंद ॥ पुरपैठत
 शत्रिणपुत्र मिल्यो कृपि कौन कहा इत जात बल्यो ॥ हेमदूत
 अहै रघुनायकके ॥ त्रिशिरा खर दूषण हायकके ॥ पितु आन्यउनाम
 जिन्है कि स्वई तिव फूफुहि कौन्है कुरूप अइ ॥ सुनि लाताउ-
 ठायउ अंगदको ॥ पठक्यो गहि पाव तवै बदको ॥ ॥ ॥
 यह कौतुक विलोकि चुपसाधी ॥ जहँ तहँ चले भगि अपराधी ॥
 कोलाहल पुरमभेयउ अपारानी आवा कीश जगत् ज्यहिजारा ॥
 परम त्रास उपजा सवकहौ ॥ विनु पूछे कहि मार्ग देही ॥
 यहि विधि जाय बालिसुतवका ॥ रावण द्वार अट्यो निरशका ॥
 ॥ दोक तुस्त निशाचर एक तव प्रथयो रावण तीरा ॥ ॥
 ॥ ॥ जाय कहौ तरेनिकट आये कृपि न्यकावीस्वामे ॥ ॥
 दूततोमरछंदगा सुनियो सुनिशचर राजा यकदूत श्रीरघुराजा
 कर आपुके दरवार ॥ पर अइयो वलमार ॥ रावण कृपि वेगि ला-

धर्म विचारिन् ननेकहुलाजः हियेतेवः लागी ॥ त्वाभगत्रन्त सुशी-
 लताधर्मदर्शनन पुंजत्वयाञ्जगज्जर्गीनः रामप्रतापिप्रतापवली
 तवपायनदर्शः हमौ वडभागीनीं रात्रण पद्धरी बंदः ॥ राठ कीश
 काहः जलपै तुव्यर्थ ॥ भिटः अहै कौनः हमेसों समर्थ ॥ ज्यहिः सहित
 रामसु कैलास शैल ॥ लीन्हीउठाय मुनंप्ररमाचैलु ॥ अंगद वधुबंदः ॥
 कौन वुडी प्रभुता तुमाकीन्हे ॥ कीश फिरोबहुशैलीर्नलीन्हे ॥
 प्रोक्त तत्र श्रीराम सुवर्ण दोहाना ॥ १ ॥ अंगदः स्वयं प्राण
 रज्जु कौं अंगदतिरे कटकमि कौन अहै अस शूराहुः प्राण त
 ईति ॥ जो मोसन करिके समरप्राय सकै कहू पूर्ण ॥ १ ॥ श्रीरामः
 ॥ कविता ॥ हीनवर्लनाथतव नारिके विरह आपु अनुजहुति सुदुख दु-
 खित विनायकै ॥ तुम शुभग्रीवदौज कूलके विटपअहौ अनुज हमार
 हवै भीरु सो सुभासकै ॥ शिल्पकर्मजानै नल नील भालु जीमवन्त
 बूढोसो अत्यन्त मीयो जर्जर सुखायकै ॥ माग्यवन्त अहै कपि ए-
 कही सुभटजौन आयकै प्रथमगयो लंकही जंरायकै ॥ अंगद कुण्ड-
 लिया ॥ मुनु रावण साँचीकहै जारयो पुरा हनुमान ॥ म्वाहि अचरज
 मुनि होतहै तेरो पुर वलवान ॥ तेरो पुरा वलवान दह्यो किमि कीश
 अकेला विरान सो बहुचलत कहौ ज्यहि भटाअलवैला ॥ अल-
 वैला सुग्रीवकेर सो धावन प्राचीअहै ॥ खवरिलेनी पठवा हमै मुनु रा-
 वण साँचीकहै ॥ सही वचन तै जो कही मोहिन मुनि कहु शोभा
 कोउन हमरे कटक अस तोसन लडिलहै शोभा ॥ तोसन लडिलहै
 शोभ वधे मेहुक मृगराई ॥ कहैत कड भलताहि हवे ॥ विमि त्वहि
 घुराई ॥ घुराईहि लघुतो प्रस ससुभ्ति नै त्वहि मारुनत्रही ॥ तुदपि
 रोप शवण कठिन क्षत्रिजाति करै है सही ॥ १ ॥ श्रीरामः ॥ १ ॥
 दोहा ताते मर्म सिख मानिके छोडि सकल फरफन्द ॥ १ ॥

नीचु तसादरधादि ॥ श्रीजानकीष्टि परुपायंत ॥ रघुचन्द्रा ॥ नि म
 किरावाणसवैया ॥ है कपिकेगुण एकवडोवहु मलकरै प्रतिपालक
 काजै ॥ धन्यसुसाहवहेत जहाँ तहाँ नीचत जो करि त्यागन जाजै ॥
 त्यों भगवन्त सुसाहवको गनित नाचि सुकूदिकै करजुसाजै ॥ अं
 गद्वजाति त्वया प्रभुसक्त कहै गुण स्वामि न करयो इमिआजै ॥ अं
 गदकवित्ति ॥ तेरी गुणगार्हता समीरसुत सत्य मोहि नीकेकै सुनयो
 जाय राघव समाजहै ॥ कानन उज्जारि सुतमारि पुरजारे तव तदपि
 न तासु कष्ट कीन्हे तू अर्काजहै ॥ कह्यो तू नृमानसो बिलोके हम
 आनि सब सँचेहू नृमाखंमन तेरे रोप्रलाजहै ॥ आग्यवन्त सोई
 तव प्रकृति विचारि भली कीन्हीं अति दीठताय तोसों हम आजहै ॥
 रावण इन्द्रवज्रा छन्दजी जो पै कुबुद्धी असि तोहि आई ॥ तौ तौ
 सुतातै लियु होतखीई ॥ अंगदजी खायों प्रितकिो अब खातवीहीई
 पै वृष्णिआयो कहु आजु मोहीं ॥ सवैया ॥ वीलि महत्तलशाखि
 रह्यो सुशापावनपुंज जगै जगजकिा ॥ जसिम वीर त्रिलोकनेमे
 भगवन्त नहीं हम दूसर जाका ॥ ता अश खोलन को दशकन्की
 जीवत जौलीगि है तु प्रताका ॥ सोई विचारि सुनै शठ रावण अजि
 करौ नहि तोहि हलाका ॥ रावण कवित्त ॥ बोलु रेसभारि क्यो न
 वानर लुवां नीचा मीलको सुदानिहै वताऊ कौन मोहिरे ॥ जासु
 त्रास किमिपत सकललोक लोकपाल कालहु कराल न्याल कीज
 वश्य बोहिरे ॥ होसि क्यो न आनिहौं शरणछोडि वा शरण आस्य
 वन्त ब्राह्म्य प्रवल वीस जोहिरे ॥ कालिहीं संहारिकै सवन्तसो नृ
 पालेपुत्रा नीलिपुत्र करिहौं सु बानरेश तोहिरे ॥ अंगद कवित्त ॥
 आयो दूत जाको एक बैसि अनेका नीच नीचनी संहारि गद
 लंक गयो जारिकै ॥ थाक्यो करि बुद्धिवललाग्यो न उपायक

क्रिपिको चरितदेखि वैष्यो । सर्वैहारिके ॥ सोई बल रावण विचारि
 मनमाहिं । तव आयो । सिखेदेनी कहौ । तोसना पुकारिके ॥ भाग्यव्रत
 देहु लयी जानकी शरण जाय पाइहौ न । पार रघुवीर जूसों शारिके ॥
 सवैया ॥ सादरलै मिथिलेश लली किन अधिरहोसि । न संगहमारे ।
 मे प्रभुसों क्षमवाइहौ । भूरि जरुरे कर कसूर तिहारि ॥ त्यों भगव्रत
 विचारि लखै करि वैर । उनहै क्यहु पार न पारे ॥ ईशदई बखशी शिद-
 शानन खीसकरै । जनि वातके भारे ॥ तेरेइ कर्म सुबाहु गये । मिटि तेरेइ
 कर्म खरादिकानासे । तेरेइ कर्म मरयो सुतअक्ष सुतेरेइ कर्म जरगृह
 खासे ॥ तेरेइ कर्म प्रधान सबै शठ । तेरेइ कर्म यवैर प्रकासे । खानचहै
 सुनु तोहिं दर्शानने तेरोइ कर्म तुम्हें अब गांसे ॥ १० ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 एदो कृताते रावण । अंडिके । उरसि । दैत ॥ की । वास । नि । ॥ ॥
 भइउ । कर्म वचन । मनाकपट । तजि होमि । रामको । दास ॥ ११ ॥
 श्रीरावण सवैया ॥ जोतुमहीं तजि आसभयो । हरिदास भलोफल
 कौनहै प्रायो । दीहिनि काल कराल सुखे त्वहि । मे लिन निकुं दया
 उर्नलायो ॥ क्यो वत्रिहौ । हमसों । अब आजु । सलोकहु । तो । परलोक
 नशोर्यो । ऐसेहि । नाथ भजे । हितअंगद । मो । कहें । देन । भलीसिखी आ-
 यो ॥ अंगद सवैया ॥ री । त्रियचोर । कथेनरते । जिन । बाखिवली शर
 एकहिमारयो ॥ भीखड़े । त्रिशिराखरदूपण । भागि वचे । नरदुर्जरणपा-
 स्योगा । तोरि शरासन । सीयवस्यो । भृगुनदनको । जिन । भव । उत्तरयो ॥
 क्यो । लडि । पारहुपार । तिन्हें । दशकंधरु । वंदरसो । ज्यहिहारयो ॥ रावण
 सवैया ॥ देखि । डेर । दिजगाग्रनजे । रघुनाथ । अनाथहि । सेवतचन्हें ।
 छोड़तहै । परद्रव्यसदे । परदार । विलोकत । लाजहि । तिन्हें ॥ हीत । न । है
 प्रदोह । जिन्हें । भगवन्त । रतीमन । धर्महि । दीन्हें । तैलडि । है । कहु । मोसन
 क्यो । बन । छूमत । विप्र । यतीकर । कीन्हें ॥ अंगदहरिपदछंद ॥ श्रीरावण

बलवन्ती तोहिं मैं अनसें तनक नं डती हौं । रामकृपा बलपाय स्वामि
 क्रो संतत अभै विचरती हौं ॥ त्वहिं प्रितुको गुनि । मित्र आपने हित
 उपदेश उचरती हौं । भाग्यवन्त ग्राहु शरण रामकी । याही सिखवुन
 कर्ता हौं ॥ रावणी । ती निलोक मम शरण अजिहै हम । क्यहि शरणहिं
 जावैगो । का करि है तपसी वै मेरो साजि । सेत जो आवैगो ॥ है है
 एक दिवस को चरि । कुंभकरण । छकि जावैगो । उतकरा है है मृत्यु
 हमारो सुयश देव गण । गवैगो ॥ अंगद सवैया ॥ रावणी रावण कै
 जगमै कहु मै जे सुने सो सुनावत तोही । एक प्रताप गयो बलि
 जीतन वांछनि प्राल कहै गृह जोही । खिलहिं लखि कबुद्ध तहां करि
 कौतुक मारहिं ते बहु औही । त्यों भगवन्त सुदेखिस दै बलि जाय छं-
 डाय दिये सुरदोही ॥ एक विलोकिं सिंह लभुजा । जल जन्तु प्रथा
 धरि धाय कै लियनि । कौतुक लीगि मयोलै मन्दिर जाय छं डाय
 पुलस्त्य रो दीन्ह्यनि । एक सीको चो मृतवित है मरिहं खालि निजै
 ज्यहि कांखमै कीन्ह्यनि । त्यों भगवन्त अहै इनिमि कहु रावण कौन
 नही हम चिन्ह्यनि ॥ रावण कवित्त ॥ जेरे री शीठ क्रीश । सुनु सोई द-
 शशीश । श्रीश बाहुको प्रभाव जान । शिभु शील जाकी है । जानै शिव
 शूरता । सरोज सो अतारि शीश । प्रज्यो । निज पाणिं जायवार । भूरि
 ताको है ॥ जानै बलवीह जालु जाको दिश । दिग्गोपाल आजौ उर
 होत शाल जाके सुनि हौको है । सोई दशशीश । लोकी लोकनको
 ईश । जौन भाग्यवन्त धीर । त्यों प्रसिद्ध श्रीरवाको है ॥ सवैया ॥
 जानत दिग्गज है दशह सुनु अंगद हौ उरकी । कठिनीई ॥ है मंद-
 मस्त जत्रै । जव जाय । जजाय भिख्यो तितिसो धरि आई ॥ त्यों भगवन्त
 सुदन्त नसो । जिन क्रौरि । कराल दिये बहुताई । न लागत चोट अहं
 उरकी । रदा दृष्टि गये स्वइ मूलक । नाई ॥ करिको प्रजवै सुनु अंगद हौ

बलवन्त सुभाय चलो धरणी । तत्र डोलत है यहि भौतिनसों चढ़ते
 राजमस्त यथा तरणी ॥ भगवन्तसु गायकहौ कहँलौ निज प्रौरूप
 की वरमै करणी । लघु बोलसि क्यों त्यहि रावण जासुन कीरति
 पुंजपरै वरणी ॥ अंगद सबैया ॥ दाहकवह्नि कुटार यदा मुजसा
 हसुवाहु अरण्य भयो है । सागरसों परसावर जामधि बृद्धि महीपति
 भूरिगयो है ॥ भागिगयो ज्यहि देखत गर्व सुकीरति पुंज त्रिलोक
 छयो है । सो भगवन्त अहै नर कयो महिभारहै अवतारलयो है ॥
 सुनु शठ राम मनुजहै कैसे । सत्र धन्विनसम काम न जैसे ॥
 नहि सुरसरि सबनदिन समाना । कामधेनु नहि पशुप्रमाना ॥
 सुरतरु कयो सत्र तरुसम होई । दान न अनसरिसहै कोई ॥
 नहि पियूपसम रसहै आना । नहि खगेश सबखगनसमाना ॥
 अहिन सरिस सबहै न अनन्ता । नहि सबउपल यथामाणचिन्ता ॥
 नहि वैकुण्ठ सरिस सबलोका । लाभन जसि हरिभक्ति अशोका ॥
 तिमिनमनुजसम राम त्रिचारयो । पूरणब्रह्म मनुजतनु धारयो ॥
 जासु भजनविनु सुनु मतिमन्दा । छूट न विषय मोह भ्रमफन्दा ॥
 दो० रामभजन विन जो चहै भवनिधि पारहिजान ।
 सो मतिमंद कुभाग्य शठ पांवर परम अयान ॥
 रावण सबैया ॥ बालिके वंश कुटार भयो तुम अंगद नाम धरा
 यह सोऊ । दीख नही अस जायपरै पितुघातक पाथेन के तरको
 ऊ ॥ ज्यों भगवन्त अहै जनतै प्रसु आनिमिले त्वहि तैसहिओऊ ।
 बोलसिरे बढिकाहवृथा करिदीन दऊ तुमहै कुलघोऊ ॥ अंगद सबैया ॥
 रावणदेखु त्रिचारि हिये सब नस्वररूप अहै जगजोऊ । या जगमें
 रहना न क्यहूँ उठिजैहहि एकदिना सबकोऊ ॥ अन्तसमय कउ
 कामन आवत छूटत प्राणप्रिया तनु सोऊ । त्यों भगवन्त सुजानि

- आन वीर शठहै कहा मम आगे वर जोर ॥
 अद्भुत सबैया ॥ कौन कह्यो करतृति बड़ी तुम वारहि वार जु
 मोहि सुनायो । शैल उठाय धरयो करपै उन कीशान सो यह काज
 करायो ॥ सागर दूत तस्यो उनको धनुरेख न पै तुम नोधन पायो ।
 जानि परयो बलपुंज दशानन जाय जवै पर वास चुरायो ॥ कुंड-
 लिया ॥ सुनु रावण काटे गिरहि होत नहीं कोउ शूर । इन्द्रजालि
 तनु काटि सब डारै स्वकर हजूर ॥ डारै स्वकर हजूर शलभ जरते
 वश मोहै । वहत भार खखवृन्द कहत तिनको भटकोहै ॥ कोहै अ-
 धम अबुद्धि सरिस तेरे शरमावन । वकसि वृथा कत मूढ विवश
 सुवके सुनु रावन ॥ सबैया ॥ जनि रावण वात वढावसिरे सुनु में
 जु कहौ तजि मानसही । न पठायउ नाथ वसीठ हमै कह्यो वारहि
 वार पुकारि यही ॥ यश सिंहहि नाहिनु स्याखधे सु विचारि सह्यो
 कैटु जौन कही । दशकंठ नतौ मुख भंजनके तव जात्यउ लै सिय
 राम जही ॥ सुन्दर छंद ॥ प्रभु सेवक को लघु सेवक मै रजनीचर
 ईशतु गर्व भरौरे । अपमानहि रामहि जो न डरौ त्वहि देखत कौ-
 लुक यों सु करौरे ॥ पटकौ महि सेनस तोहि अवै करि चौपट तौसब
 गाँउ डरौरे । युवतीनस तौ सिय लै भगवन्त शिरामके पाँयन जाय
 परौरे ॥ तू मद अंध दशाननरे यहि भाँतिन वैठ जु मारत गालहि ।
 सो त्वहि देतवताय भले इन बातनको कुल घातक हालहि ॥ वीस
 भुजा दश शीश उपारिके मेलत मारि अवै मुख कालहि । पै भ-
 गवन्त बिलम्ब यहीशठ आयसुहै नहि राम रूपालहि ॥
 ॥ दो० सुनु रावण में आजु जो करौ दशा असि तोरि ।
 तदपि न होवै वीरता सुयहि वधे कहु मोरि ॥
 ॥ सबैया ॥ मार्ग वाम चलै नितही वश काम विमूढ अहै रुज

खानी । सुममहा अयशी अतिमूढ़ विरोधक वेदन विष्णुहि जानी ॥
 क्रोधित निर्धन पोषक अंग अधी परनिंदक जो नितठानी । त्यों
 भगवन्त विचारि लखै यइजीवत शवसम चौदह प्राणी ॥ तोमरछंद ॥
 अस जानिरे त्वहि आज । नहि मार तो निरलाज ॥ सवैया ॥ तोस-
 नरे समुभाय कहीं दशकन्धर वात विचारसिहीतै । राम विरोध न
 पैहहि पार सु यद्यपिहै अनपार बलीतै ॥ देखु कहां खरदूपण बालि
 सु कारक औरहु जे अनरीतै । त्यों भगवन्त सवेर अबै किन् रामहिं
 जाय मिलै दय सीतै ॥ रावण ॥ मारिकै बानरराजहिं जो त्वहि अंगद
 बानरराज बनावै । फोरहिं सेतु जो सागर को म्वहिं बाधि विभीषण
 भीरु पठावै ॥ पूछ दहै रिपु अक्षकि जो शिर सादर आय मुरुदहि
 नावै । तौ भगवन्त उन्हें सिय देउ जो वारिधि पार दूज तरि जावै ॥
 अद्भुत दोहा ॥
 लङ्कहि आजु उत्तारिकै देत्यो उलटि स तोहि ॥
 भये विभीषण राज पर याही डर अति मोहि ॥
 रावण ॥
 सुनु शठ जिनके बलहिते बोलत वात वढाय ।
 ऐसे मनुज निकाय नित डारत निशिचर खाय ॥
 छपै ॥ तव अंगद करि कोप अवनि दोऊकर माख्यो । मुखभर
 गिर्यो दशास्य मुकुट भूतल शिर पाख्यो ॥ शिर धार्यो त्यहि क-
 ल्हक कल्हक अद्भुतकर लीन्है । प्रेरु प्रभु के पास धर्यो पवनज
 प्रभु चीन्है ॥ दिनराज सरिस परकाश बर निरखि भालु कपि मुख
 भिये । पुनि राम विभीषण के शिरहि स्वकर स्वई भूपित किये ॥
 भुजङ्गप्रयात छंद ॥ उहाँ रनिचारों से लंकेश बोला । करौ वद्धरे
 धारिकै कीश लोला ॥ उठौ और चारो निशाचार धावो । करौहीन

मर्कट्टुभ्रुमारिखावो ॥ तपस्वीन दोऊ धरौ जाय जीतै ॥ लयावो
 विभीषन्न ह्यां बाधिभीतै ॥ अंगद ॥ वकै क्या बृथा मूढ़रे लाजछोरे ॥
 भयो है कहाँ सन्निपाताजु तोरे ॥ कहै राम मानुष्य तै ऐसिवानी ॥
 गिरै क्यों जिह्वा त्वयोभिमानी ॥ गिरैगी तुजिह्वा सही शंक
 नाही ॥ परंतु सशीशों के संग्राम माही ॥ त्वया रक्तके राम नाराच
 प्यासे ॥ तजौ आशतेही तुम्हें मूढ़ खासे ॥ हुवै क्रोध ऐसो दसौ आ-
 चतोरौ ॥ त्वयालंक ऊपारि सामुद्र वोरौ ॥

दो० गूलरफल सम लंक तव बसहु जंतु तुमबीच ॥
 नै वानर फल खात सोइ वार न लावत नीच ॥
 पै प्रभु आयसुहै नही करौ स्वई गम आज ॥
 याको फल अल्पहि दिनन पावहिगो निरलाज ॥
 रामप्रताप विचारि तव वालि तनै अति कोपि ॥
 सुमिरि राम प्रण कै कठिन दीन सभा पदरोपि ॥
 सुनु रावण मम चरण जो सकसि आजु तैं टारि ॥
 फिरहि राम श्री जानकी जाउँ तोहि मैं हारि ॥

रावण बसुंमतीछन्द ॥ गहि पद पटको ॥ महि कपि भटको ॥
 ज्युताछन्द ॥ घननाद आदिक वीरजे ॥ बहु माखिगे कपि तीरते ॥
 पद धार्य अंगदको धरै ॥ बहुभांति पौरुपसो करै ॥ तोटकछन्द ॥
 उसके पग वालिकुमारकना ॥ फिरि बैठहि आसन मारि मना ॥
 नहि डोलत अंगदको पगयो ॥ नर कामिनवैन सती मनज्यो ॥
 कवित्त ॥ हाल्यो गिरि मेरु और हाल्यो गिरिअस्तशृंग हाल्यो उ-
 दयाद्रिशैल मंदर विहाल्यो है ॥ हाल्यो शिवशैल और सोतहू पताल
 हाल्यो हाल्यो सब लोक सप्तसागर उछाल्यो है ॥ हाल्यो अहिक-
 च्छप वराहहू विशेषहाल्यो ॥ हाल्यो दशौ दिग्मज विहायधीर चा-

ल्यो है । भाग्यवंत हा ल्यो अति लंक दराकंठ, हा ल्यो वालिसुत वीर
को न पगनेकु हा ल्यो है ॥ सधैया ॥ वीरवडे घननादसो भूरि
सुभट्टन में जिनलीक जहां है । हारि उपाय गये करि कै बलकाहुन
आयउ काम तहां है ॥ डोलत यों न मनो विधना प्रथमै रचिभू
तल संग रहा है । ल्यो भगवन्त टै पग क्यों कपि रामको आम
प्रताप महा है ॥ अंगद दोहा ॥

रे रावण जिन भुजनको वरणे बहुत प्रभाउ ।
सो भुज रहे लुकाय क्यों आय न दारत पाउ ॥

तोटकछन्द ॥ तव आपहि कोपि उज्जो बढ है । भट्टजाय गह्यो
कपिको पद है ॥ गहतौ पद वालिकुमार कही । पट्टतायुत वात समै
जुचही ॥ अंगद सवैया ॥ मतिमंद बुझाय कह्यो हितमै प्रथमै नहि
कीन्ह्यसि कान स्वया । नहि मानत वातन सो बह है शठ लातनको
नरनीच ज्वया ॥ अब आयसि आखिर कर्म वही खल डारेसि तै
सबलाज धया । भगवन्त परै किन रामके पाव परे पदहौं न उवारत्वया ॥

दो० सुनि अंगदके वचन इमि है लज्जित सुरआरि ।

॥ वैठ सिंहासन घूमि कै जनु सब संपति हारि ॥
॥ वृणहि करत जो वज्रसम वज्रहि करिवृण देत ॥
॥ तासु दूत प्रण क्यों टै समुझौ सुमति सचेत ॥
॥ अंगद रावण मान मथि कहि प्रभु कीरति गाय ॥
॥ भाग्यवन्त श्रीराम पद आय नवायो माय ॥

श्रुतिधर्मदयोध्यासिहवर्माम्जोभगवन्तीनिहविरचितेभक्तिशिरोमणिप्रदये
लङ्काकाण्डेअंगदरावणसत्वादवर्णनोनामद्वितीयोऽध्याय २ ॥
दो० वन्दो श्रीशंकराचरण कमल अमल भवपोत ।
जिनकी कृपा कटाक्षते उदय ज्ञानरवि होत ॥

सौंके जानि रावण वहां गयो, भवन, सकुचाय ।
 मधतनया पुनि आय त्रहि बहुविधि कहावु भाय ॥
 सो शठ कीन नेकु नहि कानै । काल, विवश, कैसे हित मानै ॥
 होत प्रात उठि सभा सिधावा । बैठ सिंहासन भय विसरावा ॥
 इहाँ राम सब सचिव बुलाई । आयसु दीन चढहु गढ धाई ॥
 मुनि लंकेश ऋक्षेश कर्पाशा । चारि अनी कीन्हे, दल कीशा ॥
 चहुँ दिशिते करिकै, अति शोरा । लीन्हेनि धेरि लंक गढ घोरा ॥
 पूरुव दिशि नलनील सिधाये । दक्षिण द्वार बालि नृप जाये ॥
 मारुती सुत पश्चिम अरणधीरा । सानुज उतर रहे रघुवीरा ॥
 धानर राज विभीषण योधा । चहुँ दिशि रहे लेत पुर शोधा ॥
 यहि विधि भालु कीश भटवका । लीन्हेनि धेरि लंक दै हंका ॥
 जैति राम जै लक्ष्मण बोलहि । चहुँ दिशिलिये शैल द्रुम डोलहि ॥
 दो० सुन्यो दशानन कपिन पुर धेल्यो । चहुँ दुवारी ॥
 अतिरिसलीन्हेउ बोलि तैव निशिचरचमू अपार ॥
 कहेउ जाय कपि भालु सब गहि गहि दरिहु खाय ॥
 यो नहि मनिहै पाय मुख चढ़े नीच शिर आय ॥
 आयसु पाय चले तमचारी । शूल कृपाण परिध बरधारी ॥
 पूरुव द्वार प्रहस्त पठावा । दक्षिण सुभट महोदर धावा ॥
 मेघनाद पश्चिम । दरवाजा उत्तर रहेउ दशानन राजा ॥
 विरूपाक्ष मधि देशहि राखा । लीन्हे शोध रहै मृगशाखा ॥
 नारान्तकहिने कह्यो चहुँ ओरा । लीन्हे शोध रह्यो बरजोरा ॥
 यहि विधि चहुँ दिशि सैन पठाई । दीन्हेसि युद्ध निशान वज्राई ॥
 दो० उतते रजनीचर चमू । उतते वानर रीढ ॥
 चले धाय जय जय करत । युगुल जैतिकी ईछ ॥

सवैया ॥ इतते करि दूह निशाचर दूह समूह सुसंयुग पै बु-
 टिगे । उतते कपि शूक्ष्म चमूशर तीव्र सुबेल शूरासनते छुटिगे ॥
 तरु तोमर शूल त्रिशूल पर्वारत मारत घायने लुटिगे । भगवन्त
 सुजयजय करेण मेंदल रावण राम दऊ जुटिगे ॥ दुहुँ ओरते मारु
 कराल परी करि अद्भुत वीर रहे करणी । ललकारि प्रचारि भिरै भट
 भुण्ड सुखंडित मुण्ड परै धरणी ॥ कहैं भट घायल पुंज परे वहिशो-
 षित जाल चलीतरणी । भगवन्त महारण रोस्मत्तयो गति कौन कहै
 कवि सो वरणी ॥ अतिकुद्ध सो बानर भालु बली रजनीचर सैनमे
 धायरले । भटकोटिन कोटि चकोटि वकोटन डारिकै भू धरिपाय-
 मले ॥ भय व्याकुल भूरि निशाचर नीच सुपायकै बीच परायचले ।
 भगवन्त शिरामप्रताप श्वंगन आरिनवंगन मारिदले ॥ छन्द
 भुजंगप्रयात ॥ चली यातुधानावली भागिकैसे । बली पौनके जो-
 रते मेघ जैसे ॥ परयो लंक हाहा भयो शोरभारी । रुदैं बालभामा
 सु हाहापुकारी ॥ दियैं रावणै गारि ते खोरिडारी । जुकर्ते निलै राज
 मौतै हँकारी ॥ विचलते सुन्यो रावणसैन ज्योही । क्यो टेरिकै
 यातुधानो से त्योही ॥ जुसंग्रामते पावैं पाछेक फेरयो । सही बद्ध
 ताको भयो पानि मेरयो ॥ फिरै मानिकै ग्लानि तौ रैनिकारी । दुहुँ
 ओरते मर्ण सौचो विचारी ॥ सुलै अस्र शस्त्रादि ज्ञानाप्रकारे । महा
 युद्धकै भालु कीशोकोमारे ॥ त्रसे भालुकीशालि भागे पुकारी ।
 सके एक एकै न संभारकारी ॥ रह्यो द्वारपच्छे हनुमानियोधा । करै
 तत्र संग्राम शकारि क्रोधा ॥ टुटै द्वारना सो जुटै रैनिकारी । महा
 युद्धकुद्धे दऊवीरभारी ॥ फिरै सैन्य कीशो किसी श्रूयपायो । भयो
 क्रोध अत्यन्तही द्रायुजायो ॥ प्रलयकालसो गर्जिदै हँकधायो ।
 फलंकामे एकै सुलंकापे आयो ॥ लियो शूल उत्पाटि तौ एकभारी ।

हन्यो धायकै मेघनादै प्रचारी ॥ विभंज्यो स्थै सारथी शत्रुपाख्यो ॥ महा
 क्रुद्धकै तामुही लातमारयो ॥ दुजे सूत बेहालसो देखिधायो । द्वि-
 ती स्पन्दनै घालि लंकाहि लायो ॥ हंनूमान् तौ क्रोध कैकै अपारा
 पिल्यो फेरिकै वीर लंका मभारा ॥ सवैया ॥ अंगद वातसुन्यो गढपै
 चढि वातकोजात अकेलगयो है । त्यो भगवन्त सुवीर वडो तहँ
 आवत एक फलंकभयो है ॥ गुद्धसों क्रुद्धभगे दउवीर सँभारि श्रि-
 रामप्रताप लयो है । रावण भौनचढे दउ धाय कहाँ हय रावण हॉक
 दयो है ॥ श्रीरघुवीर कि जयजय हॉकि लगे उतपात करै दउवंदर ।
 दीनदहाय सकलसनिलै अवलोकि समीतभयो । दशकन्धर ॥ हाय
 सुहायपख्यो गढलंक जुभागि दरे बहुहै गिरिकन्दर । त्यो भगवन्त
 कहै छवि क्यो जनु क्रुद्धित सिन्धुमथै इइमन्दर ॥ हरिर्गातिका
 छन्द ॥ पुर नारिखन्द पुकारि रोवहि हांय अवहै है कहा । उतपातके
 यइरूप दौऊ कीश भट आये महा ॥ बलविपुल इनको विदित घर
 घर सुभट नहि इनसो जहाँ । अव कुशल नाहिन अहय जीवन
 भागिकहु वचिये कहाँ ॥

दो० कपिलीलाकरि तिनहि बहु डरपावहि दउघेरि ।

रामनाम कहवाय मुख जानदेहि तव फेरि ॥

कवित्त ॥ लीन्हे हेमखम्भन उखारि पुनि धारिकर दौऊ कपि
 धीरपरे कूदि रिपुदलमे । करि हरिनाद मनुजादन भपटिधारि प-
 टकन भूमिते फुटत बेलफलमे ॥ फेकत लँगूरनै लपेटि भट कोटि
 कोटि फटकत ठौरठौर परे जलथलमे । भाग्यवन्त वीर रणधीर त्यो
 युगुल कीश दीन्हे विचलाय रिपुदल एकपलमे ॥

दो० रिपुदल मारि विहाल करि अंगद अरु हनुमन्त

सौंफ जानि आये तड़कि राजत जहँ भगवन्त ।

गये जानि अंगद हनू फिरे सकल कर्प भालु ।

चितय कृपा दृग श्रम विगत कीन्हे राम कृपालु ॥

छापै ॥ फिरे भालु कपि जानि बहुरि निशिचर गण धाये । इतते कपिन बिलोकि पलटि रण सन्मुत्र आये ॥ द्रुदल प्रवल प्रचारि सुभट महिसंयुग जूटे । राम कृपावल पाय कपिन निशिचरदल कूटे ॥ निज हारि हेरि कायादि भट रवेन्हि असुर माया विकट । क्षण माहिं भयो अधियार अति सूभन काहू कछु निकट ॥ पुनि वरपै बहु लागि दुष्ट रुधिरोपल छारा । देखि निविड़तम पुंज भयो कपि दल खम्भारा ॥ जानि राम सब मर्म कह्यो अंगद हनुमाना । सुनत चले अति क्रुद्ध सुभट दौऊ वलवाना ॥ पुनि राम साजि शायक बृहद माख्यो रिपु दल दिशि तरल । मिटिगई तुरत माया न तम भवप्रकाश हरपे सकल ॥ कवित्त ॥ पायकै प्रकाश कपि ऋक्षन विगत त्रास धाये धुकि हरपि सुगिरितरु तूरिकै । हाँक हनूमान युवराजकी सुनत घोर भागे भटकौणप समर मुहँ मूरिकै ॥ भाग्यवन्त जैतिजै पुकारि कपि दौरि धारि पटक पछारि महि डारे बहु धूरिकै । मारिकै हटाय रिपु दल विचलाय कीश आये रघुनाथ पै सकल मोद पूरिकै ॥

दो० निशा जानि चारिउ अनी आये जहँ रघुवीर ।

रामचन्द्र मुखचन्द्र लखि भये विगत श्रम पीर ॥

शक्तिश्रीमदयोध्यासिंहचर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थे लङ्काकाण्डेप्रथमयुद्धकपिदलजयप्राप्तवर्णनोनामतृतीयोऽध्याय ३ ॥

दो० भवनिधि पारहि जानको वोहित जाको नाम ।

भाग्यवन्त वन्दन करौ करि प्रणाम स्वइ राम ॥

वहाँ सचिव सबवोलिकै पूंछयो निशिचर नाह ।

"अर्द्धकटक मास्यो कपिनं कहहु करी अब काह ॥
 माल्यवन्त तव वचन मृदु बोला परम सुजान ।
 तात कहौ मत मै कछुक करहु जानि हितकान ॥
 जवते श्रीमत जानकी हरिआन्यो हठितात ।
 तवते तुम्हरी एक नहिं परी पूरि कहुं वात ॥
 अवही भललै जानकिहि जाइ देहु रघुनाथ ।
 जो चाहौ आपन कुशल कहौ सत्य दशमाथ ॥
 सुनि रिसाय रावण कह्यो कहा कहसि रे नीच ।
 करिया मुखकरि जाहि उठि नतुआयो तव मीच ॥
 कालविवश त्यहि जानिसो चला कहत दुरवाद ।
 सन्मुखआइ सदरप तव बोला वच घननाद ॥
 प्रात पराक्रम तात मम देख्यो करिहौ जौन ।
 रिपु सन्मुख अवही कहा कहौ वराणि क्रमतौन ॥
 सो० सुनि सुत वचन भरोस पायो मन रावण परम ।
 होत प्रात करि रोस लागि गये कपि द्वार चहुं ॥

तोमर छन्द ॥ करि कोप तौ कपि धाय । गढ धेरि लीन्ह्यनि
 आय ॥ इतते तमीचर धारि । लिय दौरि क्रुद्धि प्रचारि ॥ अति
 होन लाग्यउ मार । दुहुं ओरते चहुंद्वार ॥ बहु भौंति आयुध पानि ।
 गहि सौह मारत तानि ॥ कपि ऋक्ष वीर पूचण्ड । गहि वृक्ष शैल
 निखण्ड ॥ रिपु सैन ऊपर डारि । रघुवीर जैति पुकारि ॥ गयपेलि
 निशिचर सैन । कपि भालु धै बलएन ॥ गहि पाँव कोटिन कोटि ।
 पटके महीखल खोटि ॥ भय यातुधान विहाल । सुनि मेघनादय
 हाल ॥ चढियान लै सँग नीच । रण आइगो त्यहि वीच ॥ दय
 हौं कर्ज्यउ घोर । कहँ दौउ भूप क्रिशोर ॥ कहँ नील औ नलवीर

शुभग्रीव है कहँ भीर, ॥ कहँ बालि पुत्र लवार । कहँ वीर पौन कु-
 मार ॥ कहँ है विभीषण द्रोहि । हठि आजु मारुँ ओहि ॥ असहँकि
 सर्प समान । बहु लाग छॉड़न वान ॥ लखि ठौर ठौरन व्याल ।
 चले भागि वानरभाल ॥ तव देखि भाजत कीस, । हनुमंतकै अति
 रीस ॥ उतपाटि पर्वत एक । त्यहि धाय माखु उ नेक ॥ गिरि देखि
 आवत सोइ । स्थ सारथी दिय खोइ ॥ भजि आपु व्योम लुकान ।
 हनुमान मर्महिजान ॥ इतते प्रचारत वीर । नहिँ आवसो कपितीरा
 रघुवीरपै पुनि जाय । कटुवैन दुष्ट सुनाय ॥ बहु अस्त्रशस्त्र प्रचारि
 रह्यो व्योमते शिरडारि ॥ रघुवीर आयुध तासु । किये काटि ति-
 लसों आसु ॥ अवलोकि पुंजप्रताप । निरलंज्ज लज्यु आप ॥

दो० है लज्जित घननाद तत्र मायहि कीन प्रकाश ।

वरपैलाग अंगार बहु शंठ चढिजाय अकाश ॥

जलधारा महिते विपुल भये प्रकट चहुँओर ।

रटहिँ पिशाच पिशाचिनी मारु काटु धुनिघोर ॥

रक्त पीप विण्ठा उपल छार हाइ कचधूरि ।

वरपिकीन अधियार अति सूक्त न कहु ढिगदूरि ॥

त्रोटक छन्द ॥ अति व्याकुल वानर भालुभये । तजि जीवन
 की सब आशदये ॥ करुणाकर राम सुजानहिये । मुसकाय शरा-
 सन वाणलिये ॥ शर एकहि मायहि कीनजुदै । तमपुंज यथा
 दिनराज उदै ॥ कृपया दृग वानर भालुलखे । सब त्रास विनाशहि-
 ये हरखे ॥ हरिगीतिका छन्द ॥ तव राम आयमुपाय लक्ष्मण अं-
 गदादिक कपिभले । लय साथ कटिकसि भाथ धनुशर हाथरण
 सन्मुखचले ॥ तन गौर बाहुविशाल लोचनलाल नखशिखे शो-
 भही । भगवन्त अंग अनन्त छवि लखि कामकोटिन लोभही ॥

दो० उतते रावण सुभट बहु दीन्हे बोलि पठाये ।

अस्त्रशस्त्रलै विविधते सन्मुख पहुँचे आय ॥

भूधर नख विटपायुधन धरि इत वानर भालु ।

धाय लिये सन्मुख दुवन कहि जे रामकृपालु ॥

नाराचखंड ॥ भिरे प्रचारि वीरत्यो यथा सुयोग पायकै । अनेक
अस्त्र शस्त्र डारि दीनमारि धायकै ॥ सुमारि मुष्टिकानलात घात
दांत काटही । प्रवल्ले भालु कीशधारि मारिफेरि डोटही ॥ सुमारु
मारु काटु काटु धारु धारुबोलही । महावली सुराक्षेसालि सौहते न
डोलही ॥ परे अनेक भूमिरुंड हीनमुंड धावही । सुजैति जै पुकारि
मुंड खान आस्य वावही ॥ अनेक वीर धायले सुभांतियो विराजते ।
मनो पलास वृक्ष फूलि जालशोभसाजते ॥ रहेअनंत मेघनाद क्रुद्ध
युद्ध कैद्रऊ । युगुल्लवीर वांकुड़े न पावजैति त्यों क्रऊ ॥ करैअ-
नेकभांति छल्ल बल्ल रैनिचारका । भयो सुक्रोधवंततौ अनंत अंत
कारका ॥ दल्योरथै तुरंग सूत मारिपुंज वाणनै । कियो विकल्लशेष
भूरि यातुधान प्राणनै ॥

दो० मेघनाद तौ विकल है मनमहँ कीन विचार ।

परम सुभट यह लेन अव चाहत प्राण हमार ॥

तव सकोप रावण सुवन वीरघातिनी सांगि ।

हनि मारेसि लक्ष्मण हृदय तेजपुंज सो लागि ॥

लागत शक्ति परेउ महिवीरा । मुर्च्छितलखि आवा चलितीरा ॥

हारे असुर उठाय अशोपा । जगदाधार उठै किमि शोपा ॥

तव खिसियाय चलयो बलवंता । त्यहि अवसर आयो हनुमंता ॥

ताहि देखि उपजा अतिक्रोधा । माखो हनि मुष्टिक कपियोधा ॥

परेउ भूमिकरि चरण प्रहारा । गहिपद वहरि लंकपर डारा ॥

सांभ जानि हनुमान अनंता । लाये जहँ राजत भगवंता ॥
 अनुज देखि प्रभु अति दुखमाना । तव करजोरि कह्यो हनुमाना ॥
 नाथ लप्रणहित शोच न कीजे । सोइविधिकरउँजो आयसुदीजे ॥

कवित्त ॥ कहियो निशेश गारि पट इव राघवेश अमृतचुवाय
 मुखज्यावों अहिनाथ ही । कहियो विबुध वैद्य आनौ गहि मारि
 मौत भेटौं दुख सबके सकल एक साथही ॥ कहियो पतालपेलि
 दलि नाग अमीकुण्ड आनौ यहि ठाँवसो उपारि निजहांथही । क-
 हियो सुतनु त्यागि उठौं जागि घटंशेष आयसु जु होयकरोँ कृपा
 पाथ नाथही ॥

सुनि हनुमान वचन रघुवीरा । हरपे सहित भालु कपिभीरा ॥
 जामवन्त तव कह सुनु रामा । वैद्य सुखेन रहत अरिग्रामा ॥
 पठवहु कोउ तेहि लाव तुरन्ता । आयसुपाय चल्यो हनुमन्ता ॥
 भयनसमेत सुखेनहि लायो । प्रभुपद वंदि सो वचनसुनायो ॥

दो० द्रोणाचल ऊपर ललित अहै सजीवनिमूरि ।

जाहु पवनसुत आपही लावहु विगिहि भूरि ॥

रामचरण उरं राखिकै प्रबल प्रभंजन जात ।

चल्यो सजीवनि हेतु पुनि सुमिरि रामजगंजात ॥

हालपाय यह रावणा कालनेमि पहुँ जाय ।

पठयो वनि सो कपटमुनि वैठ पंथ त्यहि आय ॥

छपै ॥ मारुतसुत मग जात लख्यो आंश्रम शुभ सोई । कीन्ह्यो
 मन अनुमान अहैमुनिवर इतकोई ॥ याच्यो जल द्विगजाय दीन
 सरसुभंग वताई । पेटत पंकरयो पांव धाय मकरी दुखदाई ॥ हनुमान
 ताहि माख्योतुरत गई गंगनकहि मुनिमरम । पुनि असुरलंगूर लपेटि
 महिपटक चल्यो हर्षित परम ॥ कवित्त ॥ देखि शैल सूखमा विला

समान मांति मांति औपधी सुचारु यत्र मोदको निधानहै । रंग रंग
वृक्षनललित वर वेलि फैलि छवि को सकेलि मैतानि ज्यों वितान
है ॥ डोलत समीरत्यों त्रिविध मंजु कोकिलालि बोलत भ्रमरमाल
जालकर गानहै । भाग्यवंत हेखिहु बुद्धिपै न मूरितव सहसा उपारि
द्रोण लीन्ह्यो हनुमानहै ॥

दो० गहि गिरि रातिहि गगनपथ चेल्यो वेगि कपिधाय ।

अवधपुरी ऊपर जवहिं पहुँच्यो आय हहाय ॥

वसंततिलका छन्द ॥ देख्यो सुव्योमपथ भारतदुष्ट जानी ।
माख्यो विहीनफर शायक तीव्रतानी ॥ लाग्यो नराच परिमुर्च्छित
राममाख्यो । द्रोणाद्रि व्योम पवमान सुसाधि राख्यो ॥ इंद्रवज्राछंदा ॥
सुन्ते सुवानी उठिभर्त धाये । यत्रांजनीजा तुर तत्रआये ॥ उपेन्द्र
वज्राछन्द ॥ विलोकि कीशै अति भे दुखारी । सुवानिवोले ढरिनैन
वारी ॥ सवैया ॥ कायगिरा मन छांडिछलै म्वहिं रामकेपायँन जो
रति होई । त्यों भगवंत सुएक हिये गति जानतजान शिरोमाण
ओई ॥ होहिं प्रसन्न जु मोपर आजु कृपाकर राम सुसाहेव सोई ।
तौ उठिवैठहु कीशअवै श्रम शायकशूल सवै तनखोई ॥

सो० सुनत भरतके वैन श्रवण सुखद सांचे सरल ।

कहि जै राजिव नैन उठि वैच्यो मारुत सुवन ॥

सवैया ॥ लीन लगायहिये हनुमानहि भारतपुंज प्रमोदहिछाये ।
प्रीति पुनीत अपार हिये न समात उभै भरिलोचन आये ॥ तात
कहौ कुशलातभली सिय सानुजराम न हालहिपाये । त्यों भगवंत
शिरामचरित्र समास सवै कपि गाय सुनाये ॥ हरिगीतिकाछन्द ॥
सुनिराम सिय मुधि भरंत व्याकुल नयन युगजल छायाऊ । हाँदैव
भै कतजयउँ जग प्रभु काज एकन आयऊ ॥ पुनिजानि कुसमय

धीरधरि बलवीर्यों कृपिसन भणी । चढ़ि मामशायक तात वेगिहि
 जाहु जहँ रघुकुल मणी ॥ सुनि भरतके इमिवचन उपज्यो गर्वमन
 हनुमानहै । अस वीरको चलि सकिहि मोरे भार ज्यहिकर वानहै ॥
 प्रभु प्रभाव पुनिसमुभिकपीशा । बोला वचन चरणधरि शीशा ॥
 तव प्रताप उर राखि कृपाला । जैहौ जहँ रघुपति यहिकाला ॥
 अस कहि नाथ रजायसु पाई । लै गिरि चलयो पवनसुत धाई ॥
 इहां देखि अनुजहि रघुवीरा । बोले नर इव वचन अधीरा ॥
 सवैया ॥ तात स्वभाव त्वया मृदुमोहिं सकौ न कवौ दुख दीन
 निहारी । मोहित लागि तज्यो पितु मातु सह्यो वन आय सुसंकट
 भारी ॥ त्यों भगवन्त कहां अब सो अनुराग हवै वह आनंदकारी ।
 जो नहिं होत खड़े उठिकै लखि व्याकुलता अति आजु हमारी ॥
 ज्यो खग पंखविना अति दीन भ्रंगं विनामणि व्याकुल जैसे ।
 जीवन बंधु मया विनु तोहिं जियावहि जो जड़दैव है तैसे ॥ जैहँहुं
 औधमुहै क्यहि लै हित नारि गंवाइ सुभाइहि ऐसे । त्यों भगवन्त
 संभारि सनेह उठौ किन तात प्रस्यो महि कैसे ॥ प्राणप्रिया सुत
 अंवहि तात सु सौप्यसि मोहिं तुम्है गहि पानी । देहहुं जाय कहा
 त्यहि उत्तर जीवन जासु तुम्है सुखदानी ॥ देखि महा यह संकट
 मोहिं सिखावत क्यो उठि वेगि न आनी । मै विनु तोहि जियों
 पल ना एक तात पुकारि कहौ फुरि वानी ॥

दो० सुतवित नारि सुधाम धन पुनिपुनि हैं जगजात ।
 पै भगवन्त न विछुरि फिरि मिलत सहोदर भ्रात ॥

सो० असविचारि जियतात चतुरशिरोमणि मृदुसुचित ।
 उठहु वेगि सुखदात सुठि सनेह संभारि मम ॥
 नर इव राम कृपालु करत विलाप अनेक विधि ।

सुनतसकल कपिभालु भयमगन करुणाजलधि ॥

त्यहि अवसर हनुमत आइगयो शुभ मूरिले ।

हरपि मिले भगवन्त परम प्रीति उर लायकै ॥

छपे ॥ कीन्ह्यो वैद्य उपाय तुरत बैठे उठि शेषा । भैद्यो अनु-

जहि राम मुदित कपिभालु अशेषा ॥ पहुचायो गिरि वैद्य हनू जहते

जिमि लायो । देखि सुभट वलवत परम रघुपति मन भायो ॥ श्री

राम चरित अद्भुत परम को जानि कवका करत । नित गाय गाय

भगवन्त स्वइ परमानन्द उरमें भरत ॥

इति श्रीमदयोध्यासिंहचमत्सजभगवन्तासिंहविरचितभक्तिशिरोमणिप्रमथेलङ्काकाण्डे
लक्ष्मणहितरामविरहहनुमानसजीवनीशृङ्खलासामनवर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

दो० परब्रह्म परमात्मा पूरण विश्वावीश ।

भास्यवन्त श्री राम पद पद्म नवावो शीश ॥

जेहि विधि लपणहिरामजियाये । सो वृत्तान्त सुनि रावण पाये ॥

हैं अति विकल दशानन वीरा । आवा कुम्भकरण के तीरा ॥

बहु उपाय करि ताहि जगावा । पूछासि सब वृत्तात सुनावा ॥

निशिचर सुभट जिते बल भारे । तात कपिन सो सब संहारे ॥

कुम्भकरण बोला सुनि वानी । कीन्ह्यो तात परम निजहानी ॥

जक्क मातु सीतहिहार आन्यो । पूरण ब्रह्म न प्रभु पहिचान्यो ॥

दो० अब चाहत कैसे कुशल बसह्यो काल कराल ।

प्रथम तात न आय किन मोहि जनायो हाल ॥

ताते अब भरि अंक मोहि लेहु भेटि तुम तात ।

जाय करौ लोचन सफल देखि श्याम मृदगात ॥

रोलाछन्द ॥ तव रावण बहु ताहि महिप मदिरा भगवाइ । दी-

हैसि अशन कराइ भयो मदमस्त अघाई ॥ गरज्यो घोर कठोर

चल्यो रिपु सन्मुख धाई । देखि विभीषण भाय मिल्यो आगे तेहि
 आई ॥ करि प्रणाम करजोरि सकल निज हाल सुनायो । सुनि
 बहु ताहि सराहि बहुरि प्रभु पास पठायो ॥ कहां विभीषण आय
 सुपदि सुनियो रघुवीरा । कुम्भकरण रिपु भाय सुभट आवत रण-
 धीरा ॥ सुनि सब वानर भालु चले गिरितरु धरिधाई । डारन्हि ए-
 कहवार तासु ऊपर लै आई ॥ वरपत सुमन समान जानि धायो
 सुखवाई । धरिधरि भक्षण लाग भालु मर्कट समुदाई ॥ श्रुति नासा
 सुख वाट निकरि भागहि कपि कैसे । गिरिवर गुहा विहाय विपुल
 टीङ्गीगण जैसे ॥ कोटिन पटक भूमि पकरि कोटिन तज मदै ।
 कोटिन लीन्है खाय मेलि कोटिन दिय गदै ॥

दो० कुम्भकरण मदमस्तयों मर्दत वानर भालु ।
 जाय दीख शोभासदन आगे राम कृपालु ॥

करि प्रणाम मनही मनहि भरि लोचन छवि हेरि ।

बोला वचन सक्रोध तव कुम्भकरण अस टेरि ॥

भुजङ्गप्रयात ॥ न हौ ताडुका शुभ्रवाह हौ मैना । न हौ शम्भु
 कोदण्ड मारीच पैना ॥ न हौ खर्न दूषन्न त्रैशिन वाली । अहो
 कुम्भकरणीय मे शत्रुशाली ॥ करौ राम संग्रामको आय मोसो ।
 पुजौ काम आयोहिते जासु सोसो ॥ यमुन्त हनुमन्त के कोपधायो ।
 हन्यो मुष्टिका ताहि भूमि आयो ॥

एनि सम्भारि उठा बलवन्ता । मारिस घूमि परा हनुमन्ता ॥

नलनीलाहरीहिअवनिपञ्चारेसि । काखदाविकपिराज सिधारेसि ॥

डारेसि पटकि अनेकन वानर । चले भागि टस्त करुणाकर ॥

सुख्या विगत समीर कुमारा । जागि कीन सुग्रीव सभारा ॥

वीच पाय सोउ निकरत भयऊ । काटि श्रवण न

काटि श्रवण नासिका जिनी । फिरा मानि मन परम गलानी ॥
 कीन्हसिकपिदल मारि विहाला । काहुन रहा धीर तेहि काला ॥
 दो० सहज भयावन रूप तेहि पुनि श्रुति नासा हीन ।
 उपज्योकिपिदल त्रास लखि चहत घासजनु कीन ॥

सजि शारंग कृपायतन तव छाडि शर लख ।
 चले शत्रु सन्मुख मनहु काल व्याल युत पक्ष ॥

क्षण मह सकल निशाचर सेना । डारेनि काटि सम शर पैना ॥
 कुम्भकरण तव करि रिस भारी । प्रभुदिशिचल्यउशेल करधारी ॥
 राम भुजासो खण्डन कीन्हा । तवत्यहि वामपाणि गिरिलीन्हा ॥
 सोउभुजमहि प्रभु काटि गिरावा । तव पसारिमुख करि रिसधावा ॥
 तव प्रभु बिलग कीन हतिशीशा । गिरा जाय आगे भुज वीशा ॥
 विनु शिर भुज धावा चिकारी । करि युग खण्ड राम महि पारी ॥
 तासु मरण लेखि सुर मुनि भारी । मुदित कहहि जय सम खरारी ॥
 को कृपालु त्रिभुवन सम रामा । दीन्हो अस अथमहिनि जधामा ॥

दो० समरभूमि रघुवंशमणि राजत करुणा केन्द ।
 भाग्यवन्त शोभा निरखि मुदित मालु कपिवृन्द ॥

इति श्रीमदयोध्यासिंहवमात्मजभगवन्तसिंहविरचिते मत्स्यपुराणे प्रथमे अर्धे
 लङ्काकाण्डे कुम्भकरणवध उल्लेखो नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥

दो० श्रीरघुनन्दन जानकी वंदो पद शिरनाय ।
 जासु कृपा वारिधि अगम विनु प्रयास तरिजाय ॥
 कुम्भकरण को शीश निहारी । दशमुख हृदय भयो दुखभारी ॥
 मेघनाद तेहि अवसर आयो । कहिवहु भातिपितहिसमुभायो ॥
 होत प्रात चडि यानु सिधावा । समरभूमि अतिआलुर आवा ॥
 प्रलय पयोद सरिस घहराना । तजनलाग आयुधाविधिनाना ॥

इतते बानर भालु समूह । धरिगिरि तरु धाये करि हूहा ॥
 होन युद्ध लाग्यो अति भारी । निजनिज प्रभु जै जैति पुकारी ॥
 मेघनाद विरच्यो तव मया । स्थ चह्नि गयो गगन खलराया ॥
 अस्त्र शस्त्र बहु भांति चलायो । मारि दुष्ट वाणन करि लायो ॥

दो० गहि गिरि तरु बानरनिकर धावहि तसकि अकास ।

जव नहि देखहि ताहि फिरि आवहि परमउदास ॥

सवैया ॥ रावणको सुत वीखली कपि भालुन मारिके व्याकुल
 कीन्हें । छटिगये धृत धीरनके हनु अद्भुत आदि जिते भद्र चीन्हें ॥
 मारिके वाण त्रिशूल कृपाणन आयुध पाटि दशौदिशि दीन्हें ।
 बोलतवैन कठोर महा पुनि आइ सु धरि शिरुमहि लीन्हें ॥

दो० नागफांस में बांधि पुनि लीन्हेंसि राम कृपालु ।

प्रभु बंधन अवलोकिके भये विकल कपि भालु ॥

जामवन्त लखि धाय तेहि हतिमहि दियो गिराय ।

परम क्रोध पुनि गहिचरण दीन्ह्यो लङ्का बहाय ॥

तव खगप्रति सब आइके डारे पन्नग लाय ।

विगतत्रास कपि भालु लखि उठसकल हसप्राय ॥

गहि गिरि नखविटपायुधन लिये कपिन पुनिधाय ।

देखत रजनीचर कटक व्याकुल चल पराय ॥

मेघनाद उत जागिके तुरत गयो गिरि खोह ।

करन अजय मुख लागतह शठ निलज्ज रतद्रोह ॥

हरिपद छंद ॥ यह सुधि पाय विभीषण प्रभुसा कह्यो जोरियुग
 पानी । मेघनाद मुख करे अपावन सुरदावन अघखानी ॥ जो प्रभु
 सिद्ध होन सो पाइहि वेगि जीति नहि जैहै । पठवहु कीश जाय
 मखभंगे तव तजिके चलि गेहै ॥ मनि सघवीर बोलि लिय तुरत

अङ्गद-अरु हनुमाना । लक्ष्मण संग जाहु सब भाई करहु भंग
मख ठाना ॥

दो० तुमलक्ष्मण रण मेघ रव अवशिकिह्यो खलहंत ।

प्रभु आयसु शिर राखिके गवने तुरत अनंत ॥

कीन्हे कपिन विध्वंस मख अतिआतुर तहँ जाय ।

लै धनु शर घननाद तव धावा कपिन रिसाय ॥

मारि शरन व्याकुल कियो कपिन कहत दुरवाद ।

रामानुज सन आय पुनि भिख्यो प्रबल घननाद ॥

अस्त्र शस्त्र छडि विपुल तिल सम काटे शेष ।

निजवाणन पुनिमारि तेहि व्याकुल कियो विशेष ॥

विविध रूप धारि धारि असुर करै समर बलवन्त ।

जाने प्रबल रिपु लपण उर उपज्यो क्रोध अनंत ॥

तव लक्ष्मण मारिउ शर एका काटि तासु भुज लंकहि फेका ॥

पुनि धावा करि घोर चिकारो । तुरत लपण शर दूसर मारा ॥

लागत वाण समेत सनेहा । राम लपण कहि छडि सि देहा ॥

देखि देव नभ वरपहि फूला । जयजय करहि परम अनुकूला ॥

तव लक्ष्मण रघुपति पहुँ आये । सादर चरण कमल शिरनाये ॥

दो० दशकंधर सुनि सुवनवध कीन्ह्यो विपुल विलाप ।

नारि बृन्द रोवत निरखि समुझाई बहु आप ॥

छप्ये ॥ नाम सुलोचनि नारि तासु अतिशय छविराशी । पति

भुज देखि सशोक शोच निज हृदय प्रकाशी ॥ कलम दई कर

तासु लपण क्रीरति लिखि दीन्ही । पावन परम अपार निरखि अति

रोदन कीन्ही ॥ पुनि सखिन सहित रघुवीर पहुँ जाय माँगि शिर

भै सतीय श्रीराम कृपा धननाद प्रिय लही परम उत्तम गती ॥

इति श्रीमदयोप्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथे
 । । सद्गुणाकारमेघनादवधवर्णनोत्तमपद्यमोऽध्याय ॥ ६॥ ॥

दो० मिघनाद जूमेउ जवहि तव रावण स विप्रादि ।
 कौन्ह्यो हृदय विचारि निज अहिरावण को याद ॥
 तुस्ताहि सो आयो तहां कद्यो दशानन हाल ।
 घाला लै देविहि इन्हें देहो वलि पाताल ॥

सवैया ॥ वेप विभीषण को धरि कै अहिरावण बंधु द्रुज हरिला-
 यो । जाय पताल सु देविहि को वलिदेन हितै द्रुज ठाढ़ कगयो ॥
 श्री हनुमान सुजाय तवै हति दुष्ट ससेनहि धूरि मिलायो । त्यो
 भगवन्त शिरामहि सानुज आनि सयाजको शोक नशायो ॥

दो० अहि रावणको नाश सुनि है रावण अति कुच्छ ।
 साजि सेन तुरंग तव चला आपुहित युद्ध ॥

सवैया ॥ साजि चमू चतुरङ्ग अपार चल्यो रण रावण वाजिन
 वाजे । पूरि रही नभ मण्डल धूरि सुप्राविट मेघ मनो दल साजे ॥
 गव्व गुमान भरै रजनीचर नाद करै जनु केहरि गाजे । त्यो भ-
 गवन्त दशानन लै दल आइगयो रण संयुग काजे ॥ धाय
 लिये कपि भालु विशाल कराल ज्यो काल महाबल पूरे । मा-
 नहुँ शैल सपक्ष विराजहि वृन्दन वृन्द अनुपम खरे ॥ आयुध
 दन्त नखोचल धारि प्रचारि चले तरु तालिन तूरे ॥ त्यो भगवन्त
 दुहू दिशिते कहि जाति सुजय निज जोरिन जूरे ॥ मारु क-
 राल मेघी रण में भट एकन एक जहाँ तह जूटे । अस्त्र सुशस्त्र
 अनेकन भौति सुआयुध जाल दुहू दिशि कूटे ॥ मारि पछारि उ-

खारि भुजा शिर फेकि दिये नभ गृह्णत लूटे । कालकराल सो भालु
 वलीमुख पेलिकै सैन निशाचर कूटे ॥ शोणित प्राणि भरे कपि
 भालु सकुद्ध महाबलवन्त विराजै । मर्दहि सैन निशाचरकी करि
 केहरि नाद मनो धनगाजै ॥ मारि चपेटत काटिकै दौतन डाटि
 गिराइके लातन गाजै । देखत युद्ध प्रवंगनकी तजि धीरज धीर
 निशाचर भाजै ॥ धाय धरै पटकै भट भूतल तोरि भुजा शिरयोम
 चलावै । फारहि गाल विदारि उरै पुनि अतन काटिकै मालाव
 नावै ॥ रूपधरै नरसिंह मनो बहु आंगन युद्धमे खेल मचावै । त्यो
 भगवन्त सुधोर गिरा रहिछाय तिहुपुर उवनदावै ॥ तोमरछन्द ॥
 विचलात सैन सुदेखि । दशकरुण कुद्धि विशोखि ॥ भुजवीस ती
 दश चाप । गहि वीर धायउ आप ॥ लखि आवतै दशशीश
 उर मोभकै अति रीश ॥ उत पाटि पर्वत वृक्ष । लिय धाय वानर
 ऋक्ष ॥ यकवार ऊपर तासु । लयजाइ डारिन्हि आसु ॥ तिल सा
 रिवे भय भंग । द्रुम शैल लागत अंग ॥ चहुँओर धै दशशीश
 गहि लाग मर्दन कीश ॥ अवलोकि सो जिमि कालु । चले भागि
 बानर भालु ॥ सब त्राहित्राहि पुकारि । रघुवीर राम खरासि ॥ कपि
 भालु भागत जानि । दशत्राप शर संधानि ॥ सबैया ॥ तानिदशौ
 धनु शायक तीव्र दशानन कोपित पुंज पवाँख्यो । लागहिते ह्य
 पन्नग धाय रहे नभ छाय धरा दिशि चाख्यो ॥ भागि चले कपि
 भालु भयातुर सैन समूह कलाहल पाख्यो । आस्त वैन पुकुरत रा
 महि रक्षहुनाथ दशानन माख्यो ॥ भुजङ्ग मयात छन्द ॥ चित्रल्ले
 चम कीश देख्यो सुज्योही । चलयो साजि शारंगसौमित्र त्योही ॥
 रहे नीचका मारि ते कीश भालु । विलोकै इतै मोहि मँ तोरि कालू ॥
 तोटकछन्द ॥ सुनि रावण तो अस कोपि कह्यो । सुतघातके खोनी

जत तोहिं रह्यो ॥ अब आजु निपाति त्वही डरिहो । रण माहि
सुशीतल ही करिहो ॥

दो० अस कहि रावण कोप करि मारुत बाण प्रचण्ड ।

तुरत लपण सो काटिके करिडारे युग खण्ड ॥

कवित्त ॥ कोटिन कराल किये आयुध प्रहार खल तिल सो ल-
पण काटि डारे एक हाथही । फेरि निज बाणन प्रहार करि शेष
तासु स्यन्दन विभंजि सूत माख्यो त्यहि साथही ॥ शत शत बाण
पुनि वेधे दशौ शीश उर मारि शत बाण महिपाख्यो दशमाथही ॥
कोप करि रावण बहोरि उठि ब्रह्मदत्त माख्यो सो प्रचण्ड शक्ति लागी
अहिनाथही ॥ संवैया ॥ लागत शक्ति पख्यो महि वीर अनंत उठाय
दर्शनन हाख्यो ॥ भूरि रही महिमान उठ्यो बल सागर नागर को-
शलवाख्यो ॥ चौदह भूवन जो शिरये भगवन्त यथा रजको कण
धाख्यो ॥ चाहत ताहि उठायन रावन मूढप्रभावन पुञ्ज त्रिचाख्यो ॥
मोदक छन्द ॥ देखि दशौ यह मारुतनंदन । आयुध धाय जहां
जंगवन्दन ॥ दौरि दिशानन मुष्टिक माख्यो । भूमि रह्यो कपि
भूमिन पाख्यो ॥ माख्यो फेरि हनु दशकन्धर । भूमि पख्यो जनु
धूमित मन्दर ॥ लो लपण हनुमान सिधायउ । देखत राम महा-
दुख पायउ ॥

दो० काल कोटिन तुम कालके जंग रक्षक बल ऐन ।

उठि बैठे लक्ष्मण तुरत सुनत सम मूढ वैन ॥

कवित्त ॥ साजि चाप शायक निपंग संग वानरालि क्रोधके
लपण शत्रु साह फेरि आयउ । मारि पुञ्ज बाणन विभंजि यान सूत
हति रावणो विहाल करि अवनि गिरायउ ॥ दूसरे सुसारथी विली-
किके विकल ताहि धाय घालि स्यन्दन सुलक बेगि लायउ ।

भाग्यवन्त राघवेश त्रिभुक्त्यो प्रताप युद्ध आयकै बहोरि स्वामि प्राय
 शीश नायक ॥ १११ ॥ अथ यो मन्त्रिणः तावन्तः सन्तः ॥ ११२ ॥
 दशमुख उत मुख्या ते जागा । कर्णलाग कच्छ यज्ञ अभागा ॥
 सो मुधि कतहुं विभीषण प्रायो ॥ सपदि आय रघुपतिहि जनायो ॥
 तुरत कपिनः पठ्ये रघुराई । यज्ञ विध्वंस किहिनि ते जाई ॥
 तव सकोप रावण बल ऐना । रण सन्मुख आवा सजि सैना ॥
 दोष यहां देवतन आइकै प्रभुसन विनती कीन ॥ ११३ ॥
 सुनि सुरद्वार रघुवंशमणि धनुष बाण कर लीन ॥ ११४ ॥
 सवेया ॥ ११५ ॥ धनु शायक श्रीरघुनायक वाधि जटा शिर जुट
 ह्वारे । श्याम तमाल सो गात मनोहर लोचन शोक विमोचन
 हारे ॥ आनन पूरण चंद्र उसयत बाहु विशाल महाबल भरे । त्यो
 भगवन्त त्रिलोकि प्रभा भरि फूलन देवन जैति उचारे ॥ त्यहि बीच
 निशाचर नीच चमू करि हूह सु सन्मुख आइगई । अवलोकत वानर
 भाल इतै करि क्रुद्ध विरुद्धन बाइलई ॥ जुटगे भट भूरि दुहुं दिशि
 ते निज नाथनकी कहि जैति जई । भगवन्त उमंग भरे सब वीर प्र
 चारि पुकारिकै युद्धई ॥ त्रिभंगी छंद ॥ रजनीचरधारी जनु धद
 कारी सघन डरारी धिरि आई । तखारी चमकै चहुं दिशि भमकै दा
 गिनि दमकै जनु धाई ॥ गज वाजि चिकरही जनु खकरही जलद
 घुमरही नभ धरे । लंगूर विराजै जनु नभसाजै धनु सुरराजै बहुतेरे ॥
 उडि धरि अपारा जनु जलधारा वाण महारा बुन्द धनो । दुहुं दि
 शिन अपारै करत महारै पर्वत पारै वज्र मनो ॥ रघुवीर रिसाई शर
 भरिलाई रिपु समुदाई लागि मरै । लागत तन तीरा चिकरहि
 वीरा घुमि अधीरा अवनिपरे ॥ शोणित सखिधारा चली अपारा सु
 भट पहारा फोरिमनो । द्रुम कुल सजेता दल स्थ रेता चक्र परता

भवैरघनो ॥ जलजंतु समाना करि हरिनाना विविध विधाना कौन
गने । करपद भस्त्रजारा केशसेवारा विपुल पसारा सुकविभने ॥ शर
शक्ति भुअंगा चाप तरंगा मगर निपंगा पट फेनू । कच्छप जनु ढाला
विविध विशाला कठिनकराला भयदेनू ॥

दो० भूत प्रेत वैतालबहु मज्जहि योगिनिमाल ॥
महायुद्ध रणमें मच्यो दोऊ दिशि विकराल ॥

कवित्त ॥ धाय धाय कालसो कराल कपि भालुजाल वेप विक-
राल गहि यातुधान मारहीं । तोरि शीश बाहुन उखारि महिपारि
भूरि लूमन लपेटि बहु सागर मे डारहीं ॥ काहरे अनेक परे घायल
विकल वीर लोथिन अनेक लिये स्योर पेट फारहीं । भाग्यवंत मुंडन
के भुराडविनु मुंडरुंड धावहिं सुमुंड बहु जैजय पुकारही ॥ लीन्हे कंक
काकबहु बाहुन उडात नभ एकन सो एक तहां छीनि छीनिखाव-
हीं । एककहें ऐस्यहू समूह में अघात हौ न दारिद तुम्हारे कहुं कव-
हूनजावहीं ॥ तटनी समरतीर खैंचें गहे आंत गीध मानहु ख्यलारि
भूरि वनशी वभावहीं । जात भटवहे भूरिचढे खग वृन्दजनु खेलत
सुखैल लिये नावरि सुहावही ॥ योगिनी जमाति मिलि भातिभाति
मुंडनके खप्पर सुधारिचली गावतें सुजूटि जूटि । लोथिनसों जाल वही
लोहुन प्रवाहहेरि आनंद उमंगि त्यो पियनलागी घूटिघूटि ॥ चारौ
ओरि धावत पिशाच प्रेत वृन्दवृन्द भावत सुमनमांस खावतहें लूटि
लूटि । भाग्यवंत पूरण प्रहर्ष त्यो करतशोर रही स्वछाय तिहुँलोकन
में फूटिफूटि ॥ युद्ध तटनी के तट समिटे पिशाच प्रेत भूत वैताल
जाल योगिनी जमातहें । खप्पर कपालके कमंडल सो मूड़ लिये
तीरतीर बैठत जे न्हायन्हाय जातहें ॥ ओभरी कि भोरीसन कांढि
कांढि रावजनु घोरिघोरि पियत प्रमोद सरसातहें । कोऊ प्रेत भूत

भट्ट मूडनको फोरि फोरि सतुवा सो सानि सानि गूदा खून खातहैं ॥
 सबैया ॥ शोणित धार अपारचलीं बहि दुष्टनफोरि शरीरनकारे । सो
 हतसो भगवंत मनोगिरि कज्जल सो चले गोरु पनारे ॥ देखलगे बहु
 लोथिन के लिखि कायर ही है जात दरारे । छांय रही ख सोरामहा
 सुनि शूरन चित्त उद्याहन भारे ॥ वानर भालु वली विकराल निशा-
 चर सेनसमूह सँहारे ॥ कोटिन मारि चकोट चपेटन लूमलपेटिकै
 सागरडारे ॥ गर्जत तर्जत धावतहैं चहुँ ओर महाबल पुंजनभारे ।
 र्यों भगवन्त लवंगन की रंजनीचर युद्ध विलोकतहारे ॥ ६७५-
 तव रावण निज हृदय विचारा । निशिचर वंश भयउ संहारा ॥
 मैं अकेले कपि भालु अपारा । करौ कलुक माया विस्तारा ॥
 प्रभुहिं पयादे लिखि सुरराई । दीन्ह्यो निज स्थ तुरत पठाई ॥
 वाणि न जाइ मनोहरताई । हरपि चढे तापर खुंराई ॥
 ६७६- हरिगीतिका छन्द ॥ आरूढ स्थ रघुवंशमणि अवलोकि सुरे
 जयजयकियो । कपि भालु हर्षित तोरि गिरितरु धाय अरि सैनहि
 लियो ॥ नहिं जात कीशान मारु सहि दशशीश तव मायाठनी ।
 बहुरूप कीन्हे प्रकट लज्मण वालिसुत मर्कटधनी ॥ अवलोकि ड-
 स्ये भालु कपि हंसि राम धनुशायकलियो । क्षणमाहिं कीन्ह्यो दूरि
 माया निरखि सब हरण्योहियो ॥ तव राम सबसन चित्तय बोले श्र-
 मित श्रीरवनायकौ अवमाम रावण दन्दयुद्धविलोकियो वितलायकौ ॥
 दो० असकहि श्रीरघुवंशमणि विप्रचरण शिरनाय ।
 सुमिरि शम्भु गिरिजा गणप दीन्ह्यो यानचलाय ॥
 प्रभुहिं देखि रावण सुभट चला क्रुद्धि बलपेत्त ॥
 गर्जत तर्जत आइकै सन्मुख बोला बैन ॥ ॥
 ! सबैया ॥ जीत्यहु जे भट संयुगमे सुनु तापसहों तिनके सममैना ।

सर्वानाम सुजाहिर है यश लोकपजासुपरे वैदिएना ॥ दूपण वालि
 कवन्धवधयो घटकर्ण समेधरवादिक सैना ॥ आजु निवाहि ल्यहौ
 सत्र त्रैरजु त्यागि धरा रण भागहि नैना ॥ तीमिर छन्द ॥ वश काल
 रावण जानि । रघुवीर वोल्यउ वानि ॥ सबैया ॥ जिनि जल्पसिरे
 यश नीशत है सुनि नीति विचारिकरै सुक्षमा ॥ जग पूरुप तीनि प्रे-
 क रिकहे कवि पाटल औ पनसौव समी ॥ प्रद एक प्रसून प्रसून
 फलौ यक केवल होत फलेकनमा ॥ न करै कहि एक करै कहिके
 भगवन्त करै न धरे मुखमा ॥ श्रीरघुवीर के नीतिमई करि भंजुल धेन
 दशानन कानै ॥ नेकुधरयो हियरे न विचारि सुमूढ कुजाति कुबुद्धि
 अयानै ॥ त्यों भगवन्त सगर्व कह्यो सुनु तापस मोहि सिखावत
 जानै ॥ वैखटावत तौ न हर्यो अव लागत प्रीव वचावत प्रानै ॥
 त्रिभंगी छन्द ॥ अस कहि दशशीशा करि उर रीसा गहि भुज
 वीसा धनुतीरै । शर कुलिश समाना भारन नाना लिंग अयाना
 रघुवीर ॥ दिशि विदिशिते पाटे महि न भडटे लखि प्रभुकाटे श
 घोरी । तवतौ । खिसिग्रीई शक्तिचलाई दत अजधई प्रभुओरा ॥ लरि
 आवत ताही शर संगमाही प्रभुदिशि वाही फेरिदई । रावण चहु
 मरि आयुधसारे काटि निवारे कृपामई ॥ शतबाण पर्वरिसि सारथिमा
 रिसि रामपुकारेसि विकल सुनी । तुरतै प्रभुधायो सूत उठायो अ
 तिरिस पायो रामपुनी ॥ सजि चाप विशाला विशिष कराला रा
 कृपाला बहु माखो । करि वाजि निकंदन सूत सस्यंदन हति रघु
 नंदन महि पाखो ॥ दश वदन लजाना छटि रथ आना आयु
 नाना विधि छोड़े । निफल भयसारे शूल पवारे दश महिपारे च
 घोड़े ॥ प्रभु वाजि उठायो अतिरिस पायो विशिख त्रलागो व
 आम् ॥ दश दश शर साथे दशहुन माथा हति रघुनाथा दि

तासू ॥ लखि रुधिर प्रवाहा निशि चरनाहा । करिकै हाहा धुकि
 धायो ॥ अँड्यो शरतीशा तव जगदीशा । रिपु भुजशीशा महि
 आँयो ॥ भयतुरत नवीनि पुनि प्रमुखीने डमि हरिकीने बहुदाँवे ।
 छाये नभमाहू बहु शिर वाहू केतु सराहू जनुधाँवे ॥ प्रभुवाण च
 लाँवे गिरत न पावै छिदि नभ जाँवे शोभ लह्यो ॥ मानहुँ ॥ दिन
 राई सुकर रिसाई राहुहिं धाई पोहि रह्यो ॥ रघुवरी शर चण्डै जिमि
 जिमि खण्डै रिपु शिर मण्डै फेरि नये ॥ लखि वाँढत शीशा इमि
 खलईशा गहि मुजवीशा धनुष लये ॥ शर मारि सकोपा प्रभु रथ
 तोपा भयउ सोलोपा तकि न पस्यो ॥ लखि मुरन दुखारी कार्मुक
 धारी शरण निवारी शिरनि हंखोना दिशि विदिशि ते डोलै जै
 जय बोलै करत कलोलै भय जाँवे । कहँ राम अहीशा प्रवल क
 पीशा कहि कहि शीशा बहुधाँवे ॥ दश मुख रिसवोरा करि अति
 शोरा शक्कि कठोरा हनेसि छली । लंके श्वर ओरा शक्कि सु घोरा तुरत
 सजोरा चमकि चली ॥ लखि रघुकुल भूपण टारि विभीषण शक्कि
 सुतीषण आपु सही ॥ श्रम वश जग भूपण देखि विभीषण देत सु
 सीखिन जैसचही ॥ गहि गदा सिंघाख्यो हनि उरमाख्यो प्रभु बल
 पाख्यो प्रवल अरी ॥ पुनि उठा सँभारी भिरा प्रचारी द्वउ बलभारी
 समर करी ॥ देखत हनुमाना अति बलवाना गहि पीपाना सर्पदि
 चल्यो । करि चरण प्रहारा दश मुखपारा सारथिमारा रथहि दल्यो ॥
 उठि बहुरि मुरारी कपिहि प्रचारी हन्यो करारी भट दोऊ । भै युद्ध
 अपारा गगन मँभारा प्रावनपारा कहि कोऊ ॥ मारुत सुत व्यंकट
 लखि वश संकट धाये मर्कट समुदाई । लखि क्रीश निक्काया नि
 शिचरराया विरच्यो माया दुखदाई ॥ कपि मालु समेते कटक मजेते
 तहँ तहँ तेते दश शीशा ॥ भय प्रगट निहारी डरि चनचारी भगे

पुकारी जगदीश ॥ जगदीश विलोका कटक सशोका सुर मुनि-
 योका दुखभारी । हंसि चापसुधारी शरयकमारी सकल सुरारी भय
 टारी ॥ हरपे सब बन्दर यक दशकंधर लखि तरु मंदर धरि धाये ।
 जै जै कृतलेखा गगन अशोपा दशमुख देखा रिसवाये ॥ रिसवाय
 सुरारी सुरन प्रचारी भगे पुकारी रघुवीरै । सुनि अद्भुत धार्यो मारि
 गिरायो पुनि चलिआयो प्रभुतीरै ॥ उठि बहुरि दशानन हति
 निज वानन कपि बलवानन विचलाये । लखिरोम प्रवीने शिर भु-
 जछीने तुरत नवीनि हैआये ॥ लखि वाढ़त शीशान भुजरिपु की-
 शान भरिउर शीसन बहुविधये । दशमुखहि प्रचारी बहुविधि मारी
 गिरितरु भारी विपुलहये ॥ नल नील जुभारे कूदि विदारे नखन
 लिलारे रिपुकेरे । लखि रुधिर प्रवाहा निशिचरनाहा डुनहुनगाहाक
 रतेरे ॥ पटकत छुटिभाजे रिपुपर गाजे तवधनुसाजे लंकेशा । हति
 सवन गिराये कपि मुर्छाये लैदल धाये ऋक्षेशा ॥ सवैया ॥ ऋक्ष-
 पते दलसाजि तवै रिपुरावणको बहुभातिन मास्यो । कोपिदशा-
 नन वीरवली हति भालु अनेकन भूतल पारयो ॥ देखि सुसेन सै-
 हार ऋक्षेश प्रहारिपदै रिपु मूर्च्छित डारयो । त्यो भगवत सुजै
 कै सहसेन शिराघवपाहि सिंधारयो ॥ संयुताछन्द ॥ तवसूत दूर
 रात्रनै । स्थवालिंगो लै भावनै ॥ मिलियातुधान सर्त्रासही । लिय
 घेरि रावण पासही ॥

दो० जामवन्त योधा प्रबल अति बल वरणि न जाय ।

समरभूमि ते रावणै जो गृह दीन भगाय ॥

इति श्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहचरितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थलङ्काकाण्डे
 रामरावणसमरजाम्बवानपदमहाराद्रावणमुर्छावर्णनोनामसप्तमोऽध्याय ७ ॥

दो० चरण केकमल रघुवीर के वंदौ सुरतरु तोर ।

जासु कृपा भगवन्त नित सिद्ध मनोरथ मोर ॥
 तेहि निशि त्रिजटा जायके जनकमुता के पास ।
 समाचार रिपु के सकल कहि सो कीन प्रकास ॥
 कवित्त ॥ शीशवाहु बादसुनि शत्रुकी सुसीय हीयऊपजी सु-
 जाल त्रास नैनजल छाड़यो ॥ बारवार त्रिजटासों पूंछती सशोच
 सीय होइहै सुकाह कहि मोहि समुभाड़यो ॥ नाथ शरलाग्यहू न
 होत दर्शमाथ नाश मोरही अभाग भूरि मातुवाहि ज्याड़यो । भा-
 ग्यवंत त्रिजटा समेम सुनि कहीवात उर शरघात रिपु मरीधीर ला-
 ड्यो ॥ याकेउर वास तव रावरे सु उरमाहिं प्रभुको निवासनित वेदन
 प्रकाशिहै । राम उर धाम सुखभुवन अनेक वास लागते सुत्राणसव
 साथही विनाशिहै ॥ भाग्यवंत जानिमन याही रघुवंश नाथ मारते
 न ताहि मन मेरे सत्यभासिहै । काटने शिरनि जब होइहै विकल
 आपु जाइहै सुद्धटि ध्यान मारितव ताशिहै ॥ सवैया ॥ यहवातमु-
 नाय जवै सियको त्रिजटा उठि मंदिर आपुगई । रघुवीर वियोगं कि
 पीरगंभीर सुधीर सिया उर माहिं जई ॥ फरक्यो तव वाम भुजा दृग
 वाम सुमंजुल मंगल मोदमई । भगवंत विचारि भले संगुनै मिलिहै
 रघुनाथ प्रतीति भई ॥ प्रात दशानन जागिउतै चदि स्यंदन संयुग
 कोपि सिधायो । गर्जत तर्जत घोर कठोर सुवीरवली रण सन्मुख
 आयो ॥ देखतवानर भालुइतै धरिभूधर वृक्ष प्रचारत धायो । त्योभ-
 गवंत दशाननके दलपेलिके दुष्टन मारिहटायो ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥
 कियो मारि हैरान दुष्टेशकीशा । रच्यो कोपिमाया तवै वाहुवीशा ॥
 भये भूत वैताल संभूत जाला । धेर चाप नाराच धाये कराला ॥
 लिये योगिनी यूथ कर्वाल हाथै । गहे पाणि दूजे सुमर्त्यान माथै ॥
 पिये शोणितै सद्य सो नाचि गावैं । रैँ मारु मारु मुखै वाय धावैं ॥

भये भीतकीशालि भगो पुकारी । जहें जायें देखे भवतग्नि भारी ॥
 लग्यो फेरि वेंपे महातस वाहू । भये भूरि व्याकुल्लकीशालि
 भालू ॥ सुगज्यों महा कोपकै शब्द घोरा ॥ पश्यो लोक तीनों ह-
 हाकार शोरा ॥ समौ मित्र सुग्रीव राघव समेता ॥ क्रिये रावणा वीर
 सारे अचेता ॥ हरिगीतिकाबन्द ॥ ग्रहि भांति वीर अचेत करि सब
 प्रबल पुनि माया करी ॥ हनुमान प्रगटैसि भूरि घेरोन्हि जाय रामहि
 गिरिधरी ॥ चहुँ ओर धाय उठाय लूसन मारु मारु पुकारही ॥ रघु-
 वीर भंजनभीर ताके बीच यो छवि धारही ॥ तोमरबन्द ॥ जनु इंद
 ज्ञाप अनेक ॥ लिय वारि विरची नेक ॥ त्यहि मध्य राम कृपाल ॥
 जनु सोह वृक्ष तमाल ॥ चतुरंसाबन्द ॥ तत्र रघुनाथा ॥ धरि धनु
 होया ॥ एक शर हाया ॥ निशित्वर माया ॥ सकल विनाशी ॥ प्रभु
 अविनाशी ॥ पुनि बहुवारी ॥ शिर भुज आरी ॥ हति शरकाटे
 महि नभ पाटे ॥ पुनि जमि आवैं ॥ विलंबन लवैं ॥ मरुतत
 आरी ॥ श्रमित खरारी ॥ राम विभीषण ओर तैव त्रितयो आँखि उठाय ॥
 ज्यो कैं कंधो विभीषण जोरि कर सुतियो श्रीरघुराय ॥ प्रभु
 प्रभु सर्वज्ञ ॥ कृपायेतन जानत सब उर हील ॥ राम
 निजजन गुरुता देन हित मोहिपुंछेउ ग्रहिकाल ॥
 हरिगीतिकाबन्द ॥ हे दीनबंधु कृपाल प्राक्रोनाभि अमृत कुं
 डहै ॥ चल तासु जीवत मरत नोहि न प्रबल अरि दशमुण्डहै ॥ मुनि
 राम जग अभिराम वाणकराल हर्षि सुधरिज ॥ अति होनि असंगुन
 लागि हाहाकार त्रिभुवन परेऊ ॥ हरिपदबन्द ॥ श्रुति प्रजंत प्रभु
 खैचि शरासन सारे शर यकतीशा ॥ शोप्यो वाण एक नाभी शर
 अपर हेर भुज शीशा ॥ शिर भुज हीन रुख महि नाच्यो धरीणि

धरै धरंधाई । तव युग खंड दिये करि ताको विशिख मारि रघुराई ॥
 गरिज्यो भरत घोर खभारी कहाँ राम रणमारो । अस कहि परचो धरणि
 दशकन्धर देवन जैति उचारो ॥ सवैया ॥ जय राम कृपा सुखकेन्द
 स्वद्वन्द निकन्दन द्वन्द प्रताप महा । प्रति अंग अनंग अनिकप्रभा
 भगवन्त त्रिलोकत शोक दहा ॥ सुकुटाहुत जूटजटानि विचित्र प्र
 सूनन की । अति शोभ जहा । छवि पावल शेष न पारि कही लघु
 बुद्धि बखानि कहाँ सुकहा ॥ करि दृष्टि दया सुखन्द अमै रघुनाथ
 अनाथन नाथ किये । हरपे लखि वानर भालु सवै जय राम कृपा
 सुखा पुंज हिये ॥ वरपे नभ देव प्रसूनन माले निहाल सुदुंदुभि जालि
 दिये । भगवन्त दशानन पाप समुद्र में वूडंत दिवसें राखि लिये ॥

दो० जै जै करि वरपहिं सुमन सुर नभ चढे विमाने ॥ १॥

भाग्यवन्त रणभूमि में शोभिते श्रीभगवान ॥ २॥

सवैया ॥ गवण रामको सुद्ध महा यह को कहिकै कवि पारहि
 पावै । शारद शेष गणेश त्रिरश्चि महेश थके श्रुति नेति बतवै ॥

जादल सुद्ध प्रचण्ड बलै कहिवाति कठोर विचार ना आवै । स्थो

भगवन्त त्रिराम चरित्र यथा मूर्ति गाये हिये सुखे छावै ॥ ३॥

दो० निज कर जाको मारिकै राम परमपद दीन ॥ ४॥

तेहि रावणको कौन विधि वरणै सुकवि प्रवीन ॥ ५॥

इति श्रीमद्भगवद्गीतासिंहयमोक्षमगवन्तसिंहविरचिते श्रीकृष्णार्जुनसंवादे श्रीकृष्णप्रथमेऽध्याये ॥ १०५ ॥

॥ १०५ ॥ काण्डे रावणवधप्रकरणे नाम त्रैष्टोमोऽध्यायः ॥ १०५ ॥

॥ सवैया ॥ दीनदयाले सुजान सुशील शिरोमणि वेद पुकारत

गाथे । घोर भवार्णव बोहित नाम सुसेवक पद्म प्रदानंद पाथे ॥ गोद्विज

देव धरा सुखभजन रजन भक्त धरे धनुभाथे । विदतहे भगवन्त सदा
 करसंपुट कै पद श्रीरघुनाथे ॥ पद्धरी छंद ॥ मय नादि नारिसुनि

भये भीतकीशा ॥ त्विभागे पुकारि ॥ जहै जाय देखै प्रवर्ताग्नि भारी ॥
 लग्यो फेरि वरै महातसः वालू ॥ भये अरि व्याकुल्लकीशालि
 भालू ॥ सुगज्ज्यो महा कोपकै शब्द घोरा ॥ पंथो लोक तीनों ह-
 हाकार शोरा ॥ समौ मित्र सुग्रीव राघव समेता ॥ क्रिये रावणा वीर
 सारै अचेता ॥ हरिगीतिकाछन्द ॥ ग्रहि भांति वीर अचेत करि सब
 प्रवल पुनि माया करी ॥ हनुमान प्रगटेसि भूरि घेरोन्हि जाय रामहि
 गिरिधरी ॥ चहुँ ओर धाय उठाय लूमन मारु मारु पुकारहीं ॥ रघु-
 धीर भंजनभीर ताके बीच यो छवि धारही ॥ तोमरछन्द ॥ जनु इन्द्र
 चाप अनेक ॥ लय चारि विरची नेक ॥ त्यहि मध्य रास कृपाल ॥
 जनु सोह वृक्ष तमाल ॥ चतुरंसाछन्द ॥ तव रघुनाथा ॥ धरि धनु
 हाथा ॥ एक शर हाया ॥ निशिचर माया ॥ सकल विनाशी ॥ प्रभु
 अविनाशी ॥ पुनि बहुवारी ॥ शिर भुज आरी ॥ हति शर क्राटे ॥
 महि नभ पाटे ॥ पुनि जमि आवै ॥ विलंबत लावै ॥ मरुत
 आरी ॥ श्रमिता खरारी ॥ राम कृष्ण लक्ष्मण सीता
 राम विभीषण ओर तब चितयो आखि उठाय ॥ ने प्रभु
 कृत्यो विभीषण जोरि कर सुनियो श्रीरघुराय ॥ प्रभु मा
 प्रभु सर्वज्ञ कृपायतन न जानत न सब ॥ उर होल ॥ प्रभु
 निजजन गुरुता देन हित मोहि पृच्छे अयहिकाल ॥ हरि
 हरिगीतिकाछन्द ॥ हे दीनवंधु कृपाल आके नामि अमृत कुं-
 डहै ॥ चल तासु जीवत मरत नाहिन अरि दशमुण्डहै ॥ सुनि
 राम जगु अभिराम बाण कराल हर्षि सुधरिऊ ॥ अति हौन असगुन
 लागी हाहाकार त्रिसुवन परेऊ ॥ हरिपदछन्द ॥ श्रुति प्रजंत प्रभु
 खैचि शरसन मारै शर एकतीरा ॥ शोष्यो बाण एक नाभी शर
 अपर हरे भुज शीशा ॥ शिर भुज हीन रुखंड महि ताच्यो धरणि

मरणकृत । है विकल रुदत धाई तुरंत ॥ गति नाह देखि रोवै पु-
 कारि । उर ताड़ि ताड़ि तन सुरति डारि ॥ गुण तेज रूप बल बुधि
 प्रताप । बहु वरणि वरणि करतीं विलाप ॥ बल बाहु जासुतिहुं
 लोकराज । प्रिय कीत ताहि खग भवत आज ॥ ज्यहि कमठ शे प
 सहि सक न भार । महि परेउ आजु तन भरि सो धार ॥ भुज बलहि
 काल यम जित्यो नाथ । अत्र आजु पखो कस ज्यो अनाथ ॥ कुंड-
 लिया ॥ नाथ बैर रघुनाथ सो करि फल पायो एहु । रही न तुम्हरे
 कुल विपे रोवनहारो केहु ॥ रोवनहारो केहु कालवश कहा न मा-
 न्यो । त्रिभुवत्पति श्रीराम तिनहिं करि मानुष जान्यो ॥ जान्यो
 कछु न कुभाव मुनिन दुर्लभ रघुनाथा । दीन्ह्यो गति प्रिय तुमहि
 राम सम और न नाथा ॥

दो० तत्र रघुवीर विभीषणहिं सादर आयसुदीन ।

देश काल विधिवत सरिस मृतक कर्म सब कीन ॥
 कह्यो अनुजसन तव भगवन्ता । कपिप्रतिजामवन्त हनुमन्ता ॥
 अंगद अरु नल नील समेता । जाहु सकलमिलि लंकसत्रेता ॥
 राज तिलक सुन्दर सुखदाई । देहु विभीषण शीश चढाई ॥
 भलेहि नाथ कहि जाय सप्रीती । कीन्ह्यो तिलक यथा श्रुतिरीती ॥
 वाजे वाजन विविध प्रकार । लगे होन शुभ मंगल चारा ॥
 सहित विभीषण बहुरि अहीशा । आइ रामपद नायउ शीशा ॥
 प्रभु हनुमानहिं कह्यो बहोरी । जाहुतात जई जनककिशोरी ॥
 समाचार कहि लै कुशलाता । आवहु बेगि घूमि नलब्राता ॥
 दो० पवनतनय तव जायकै सियपद नायो भाष ॥
 पूछि कुशल बरयो सकल चरित जोरियुग हाथ ॥
 सवैया ॥ मातु दशानन संयुग मै रघुनायक शायकसो निज

जीते । लंककि राज विभीषणकोदय देवनवृन्द किये दुखरीते ॥ हेँ
कुशलात धरौ धृति मात कृपा सुखवात सबन्ध पिरीते । त्यों भग-
वन्त मिलै अब चाहत नाथ तुम्है फुरा मानहुँ हीते ॥ तिलका छन्द ॥
मुनि वायुतनै विखानि मनै ॥ सुखपुंज सिया । साति मानिकिया ॥

॥ दो० सुनु सुत तोको देउका कीन्ह्यो मन अनुमान ।
तीनिलोक नाहिन कछु है यहि वचन समान ॥

॥ सवेया ॥ मातु त्रिलोकन राजससाज लहे हम आज न संशय
यामै । आनंदकन्द कृपा सुखवृन्द स्वछन्द सदा परिपूरणकामै ॥
रावण दिव सतावनको रणजीति सुपाय विजय अभिरामै । हेरि
अनन्त प्रभा भगवन्त उदार अपार सुसानुज रामै ॥ संयुता छन्द ॥
सुनु पुत्र सदगुण जावतै । निवसे त्वया उर तवितै ॥ करुणा सदा
रघुनाथकी । रहि है सु लक्ष्मण साथकी ॥

मुनि हनुमान हरपि शिरनाई । आइ प्रभुहि सिय कुशलसुनाई ॥
मुनिसियकुशल सकलसुखएना । भये प्रेम वश साजिवनैना ॥
हरिपद छन्द ॥ तव रघुवीर विभीषण अंगद हनुमत संग प-
ठये । सादर सियहि चढाय पालकी प्रभुसमीप लैआये ॥ राख्यो
प्रथम अनेलमह सातै करि उर अन्तर शाखी । सो प्रभु प्रकटकीन
चहै ताते वचन कटुक कछु भाखी ॥ मुनि लक्ष्मणते तुरत जानकी
पावक प्रबल भंगई । चितारचाय कह्यो जो मोरि मनकर्म वचन
सदाई ॥ ताजि रघुवीर आनगति नाहिन तौ कृशानु उरवासी । होहु
हम श्रीखण्ड सारिखे यहि अवसर सुखरासी ॥ असकहि गई प्र-
विशि सिय तामे धरि पावक द्विजरूपा । सोप्यो प्रभुहि लाय श्री
सादर पावन परमअनूपा ॥

दो० राम वागदिशि जानकी राजती स्वइ सुखसार ॥ नि
 भाग्यवन्त शोभा अमित क्यों सुखवरणों पार ॥
 तम निशान वाजहि विपुल वरपहि निर्जर फूल ॥
 भाग्यवन्त सिय राम छवि हृदय वसहु सुखमूल ॥
 दशरथसहित सकल सुखवृन्दा । आये जहँ प्रभु करुणाकन्दा ॥
 सानुज उठि रघुपति शिरसाई । करि विनती कहि कथासुनाई ॥
 तव प्रसाद रण सम्मुख ताता । जीत्यो असुर अजयवलेवाता ॥
 सुनि दशरथ अति आनन्दभारे । दै अशीश सुखलोक सिधारे ॥
 राम लपण सियरूप निहारी । विधिमनभयो प्रगट सुखभारी ॥
 नखशिख निखिल रूप अनुसारे । करन सप्रेम विनय विधिलागे ॥
 कवित्त ॥ जयति जै उदार भूमिभार हार कारुणिक रूप शील
 भाम त्यो न हेरि शोभ आनकी । धीर वीर साहसी समर्थ दानि
 अर्थ धर्म काम मोक्ष चारिहूके वेद कीर्त्ति गानकी ॥ भानु वंशपद्म
 के प्रकाशकास भानुचंड पारब्रह्म दार जाल भीति देवतानकी । भा
 ग्यवन्त जानिदास देहु पाँय प्रेमचारु नौमि नौमि नौमि त्यो संबधु
 राम जानकी ॥ शिव अस्तुति कवित्त ॥ मोह तम तरणि विशुद्ध
 बोध कारुणिक दीनबन्धु साहेव सदैव दास हित्तही । पूरण प्रताप
 यश जाहि अखिललोक सुखमा समृद्धि मन लेत तित्तु वित्तही ॥
 धारि अवतार भवभारको विधंसि भूरि तूरित्रास देवत प्रसादपूरि
 चित्तही ॥ भाग्यवन्त राम सिय सानुज कृपायतन कीजिये निवास
 त्यो सु दास हीय नित्तही ॥ इन्द्र अस्तुति कवित्त ॥ श्याम गौर
 गत मञ्जु वारिजात दिव्य नैन सुखमा समृद्धिवास मैन कोटि
 कीजिये । पाणिचाप बाण धृत्य कृत्यनाश राकसालि पालि निर्ज
 रालि दालि शोक सुख भीजिये ॥ छाइयो प्रतापलोक लोकनै क

लाप, आप नामके प्रताप पापताप, तीनि छीजिये । भांग्यवत जानि
 दास-जानकी सवन्धु, रामकृपया, कटाक्षकै स्वभक्ति चोरुदीजिये ॥
 दो० करि विनती करजोरि पुनि कह्यो हरपि सुरराज ॥
 जो प्रभु आयसु होय मोहि करौ वेगि स्वइकाज ॥
 तात भालु कपि विपुलमम हने, निशाचर जौन ॥
 महित, त्योगे प्राणतिज सकल जियावहु तौन ॥
 मुनि सुसुपति अमृतो वरपाई । दिये भालु कपिसकल जियाई ॥
 जै, जै करि सुरासकल सिधाये । आग्र विभीषण सब शिरनाये ॥
 करि प्रणाम विनती करि सादर । बोले वचन सुनिय परभांशर ॥
 नाथ जानि जन कीन्हयो दाया । सब प्रकार मोकह अप्रनाया ॥
 कहै लिंगि करौ प्रशंसा भूरी । त्रिभुवन रह्यो सुयश भरिपूरी ॥
 अब तलि जनगृह पावन कीजै । कह रघुवीर सखा सुनिलीजै ॥
 मोहि तोहि कह अंतर नाही । परस्यह समुक्ति देखु मनमाहीं ॥
 सम मन भरत विलोकौ जाई । गये अवधि पुनि मिलवत भाई ॥
 करहु कल्प भगिराज सुहाई । अन्तधाम ममे निवस्यो आई ॥
 मुनि पुनि भवन विभीषण जाई । भूषणपट भरि पुष्पक लाई ॥
 प्रभु आयसु नभ चढि वरपाये । मनभावत सबहिन सोपाये ॥
 पहिरि पहिरि कपिभालु अनूपा । आय जई रघुपति सुरभूषा ॥
 देखि राम हरपित करिदाया । बोले वचन प्रेम जनुजाया ॥
 सवैया ॥ हे कपिभालु सुनो, सगरे तुम्हरे बल मैं, रिपु रावण
 जीता । राज विभीषणको सुदई करि, आपनि पायगई हमसीता ॥
 जाहु घरे अपने अब मोहि भज्यो भगवन्त कस्यो जनि भीता । आ-
 यसु पाय चले कपिभालु सुधारि, दिये सिय राम पुनीता ॥ हरिपद-
 धंद ॥ जामवंत कपिराज विभीषण अद्भुतदि हनुमंता नीलनला

दिग्युथपति औरौ सुभट जिते बलवन्ता ॥ सीता अनुज सहित
 रघुनन्दन चढ़ि विमान सब साथी ॥ उत्तर दिशा चलायो सादर
 नाथ विप्रपद माथा ॥ जय जय करहि देवनभ संकुल कोलाहल बहु
 होई । होहि सगुन सुन्दर सुखदायक मुदित राम सिय जोई ॥ सादर
 सियहि देखावत रघुवर जहँ जहँ असुर सँहारे । दरशे आइ सेतु
 सागरको शंकर अरचन करे ॥ दण्डक पंचशटी मिलि कुंभज अत्रि
 आदि ऋषिराजै करि प्रणाम । अनसूयहि आये त्रिप्रकूट सुख
 साजै ॥ करि मज्जन पय भेटि मुनिन कहँ बहुरि विमान चलाये ।
 यमुनहि पूजि वन्दि मुनि वन्दन मुदित प्रयागहि आये ॥ करि
 मज्जन सादर तिरवेणहि द्विजन दान बहु दीन्हे ॥ वास्वार शिर
 नाथ प्रयागहि चले अवध सुधि कीन्हे ॥ हनुमानहि रघुनीर बोलि
 तव तुरतहि अवध पठायो । कहि भरतहि मम कुशल कुशल उन
 लै तुम आतुर आयो ॥ गवन्यो हरपि प्रबल मारुत सुत प्रभु आये
 जहँ गंगा उतरे देखि देवसरि पावनि करणि सकल अधभंगा ॥
 सिय सुरसरि हि पूजि बहु भातिन लेहि अशीश मन भाई । सुनत
 निपाद नाथ अति आतुर पस्थो चरण तल आई ॥

दो० देखि राम उठि सादर भेंट्यो हृदय लगाय ।
 परम प्रीति वैठाय दिगं पूछी कुशल सुभाय ॥

पद ॥ नाथ कुशल पदपद्म निहारे । जे पद कमल पूज्य अज
 शङ्कर शरण समीत हरण अधभारे ॥ दीनदयाल प्रणत आरत
 हर सुयश पुनीत पुराण पुकारे । पूरण काम धाम सुख सुन्दर राम
 कृपाल प्रेमो रसभारे ॥ सब विधि अधम निपाद नीच मै कुटिल कु
 जाति कुकर्म अगारे । सो उरलाय भरत जिमि भेंट्यो गहिगुण

दोपन एक विचारे ॥ यह शोभा यह रूप माधुरी यहय सुभाव
कृपाचित धारे । सीता राम लपण तीनो जन भाग्यवन्त उर बसहु
हमारे ॥

दो० रावण राम सुयुद्ध यह जे गावहिं करि प्रीति ।
बिनु श्रम भवनिधि पास्ते जाहिं मोह दल जीति ॥

इति श्रीमद्भगवद्गीतासहितयमोक्षमार्गमजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशरोमणि
ग्रन्थेलङ्काकाण्डेशीरामचन्द्रागमनशुद्धवेरपुरप्राप्त
वर्णनोनामनघ्नमोऽध्याय ६ ॥

इतिलङ्काकाण्डसमाप्तम् ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

भक्तिशिरोंमणि उत्तरकाण्ड ॥

॥ सवैया ॥

श्याम शरीर सुभाय सुहावन पावन पीत पटाडुत भ्राजै । पा-
एव कार्मुक वाण कसे कटितूण-विभञ्जन दुष्ट समाजै ॥ सीय सपु-
ष्पक यान अरूढ़ सुमेवत बंधु महा सुखसाजै । वंदतहै कर सम्पुट
कै भगवन्त सप्रेम सदा रघुराजै ॥ छप्यै ॥-रह्यो अवधि दिन एक
अवध आये प्रभु नाही । कृश तनु राम वियोग सकल शोचहिं मन
माही ॥ सगुन होहिं शुभ देखि मुदित जहँ तहँ सब कहही । मन
अनंद अस होत मनहुँ आवन प्रभु चहही ॥ तव भरत नयन भुज
दक्षिण उठे फरकि पुनि पुनि सुतन । शुभ सगुन जानि उर हस्य
अति लागे करन विचार मन ॥

सो० तेहि अवसर हनुमान विप्ररूप धरि कै सुभग ।
आय गयो तेहि थान गत आसन श्रीभरत जहँ ॥

सवैया ॥ शीश जटा कृश गात किये मुनि वेपमनै प्रभु पांवरि
दीन्हे । लागि रही रट राम सिया रसनासन चारु कुशासन कीन्हें ॥
त्यागि दिये पट भूषण भूरि सु ओधि अधार हिये दृढ लीन्हे । त्यो
भगवन्त विलोकत भारत वृष्णि मिले हनुमानहिं चीन्हें ॥ शोचहु

जोहि सप्रेम सदा कुशलात महाभुद मंगल छीवत ॥ जीतिरणै
रिपुरावेणको दर्य स्वस्थलवासि सुदेवत यवित ॥ भूपविभीषण
को करि कीरति नारद शारदे शंकर गवित ॥ सानुज सीयसभो
भगवन्ते विमान चढे प्रभु औं धिहि आवत ॥ ताते निरुपम पाप
मुनत भरत अति आनंद छाये । परम प्रीति गीहि हृदयलीलाये ॥
वार वार अति आदर देई ॥ निले वचने प्रेम जनु भई ॥
तात संदेश कियो ॥ जिस मोही ॥ तसो कह्य है न देउ जो तोही ॥
ताते तव अष्टाण्यां मै ताता ॥ मुनिहरण्यो कपि पुलकित गाता ॥
वार वार प्रद रीशन ब्रह्म ॥ चलो उपवन मुती आयसु पाई ॥
भक्त आसन पुर ॥ गुरुहि सुनाये ॥ कहि प्रसुकुशल जननिसमुभाये ॥
दो ॥ सदल जीति रावण ॥ असुरा सानुज सीयसमेता ॥
॥ गीत गावत यश ॥ सुर नर सुंदित आवत ॥ कृपानिकेत ॥
॥ हरिपद छन्द ॥ प्रभु आगमन मुनत उठिवाये ॥ सकल अवधपुर
वासी । मंगलसाज साजि बहु सातिन चले मिलनी सुखरासी ॥ हरि-
पित भरत प्रथु गुरु परिजन सहित ॥ प्रेमरसपागे कृपानिधान राम
कह्य सादर चले लेन हित आगे ॥ परमार्तन्द अवधपुर धार्यो ज्वादी
अटारिनी वारी ॥ निरखहि गगने विमर्ति मनोहर दरश आशि उर
भारी ॥ श्रीहनुमान जोय उत राम ॥ भरता कुशला कहि गार्थी ॥ त्वदि
विमान रघुवंश विभूषण आतुर अवधसि धार्यो ॥ कृपासिन्धु सर्वा क
पिन देखावत अवधपुरी कै शोभा ॥ महिमा अमित कही श्रीमुख जो
कहै सुकानि असिकोभा ॥ अवित देखिलोगासव रघुपति पुरटिग यान
उतारे दीन्है प्रथे धनदपहं पुष्पक रामसुजान उदारे ॥ ताते ॥
दो ॥ भिरा संगी मपुरलोग ॥ सर्वा आयो ॥ जहाँ रघुवीर ॥ ॥
॥ देवि राममुख चंद्र छवि ॥ भये विगांत तन पीर ॥ ॥

कुंडेलिया ॥ कीन्हे राम प्रणाम तव सानुज गुरुपद धाय । भेंटि
 कुशल द्विभी प्रभुहिं प्रीतिसहित मुनिराय ॥ प्रीतिसहित मुनिराय
 कुशल हमरे तवदाया । पुतिविप्रन्ह शिरनाय सवहिं भेंटेरघुरीया
 आय भरतपुनि शीश राम प्रायँन धरिदीन्हे । प्रेम मगन नहिउठत
 राम बहुविधि चलकीन्हे ॥ १० ॥
 दो० बलकरि कृपानिधान-पुनि लीन्ह्या-हृदयलगाय ॥
 ॥ ११ ॥ भरत रामकै प्रीति अति नहिं सुख वराणि सिराय ॥
 ॥ १२ ॥ कृपीसिंधु ब्रह्मत कुशल कहत भरत शिरनाय ॥
 ॥ १३ ॥ सब विधि मंगलकुशल अब नाथदर्श तवपाय ॥
 पुनि रिपुहर्नहि मिले रघुनाथो । लपण भरत पद जायो माथो ॥
 वहुरि लपण रिपुहर्न द्रुड भाई । मिले परस्पर प्रेम बढ़ाई ॥
 सानुज भरत सीयप्रद । वन्दे अभिमत आशिपपाई अनन्दे ॥
 पुनि सानुज कृपाल सुखरासी । क्षण महँ मिले सवहि पुर्वसी ॥
 दो० यहि विधि सर्वहिं न देतसुख चले-राम सुखकंद ॥
 कौशल्यादिके मातु सत्र लखि धाई सानुद ॥
 सवैया ॥ पूरणप्रेम प्रमोदभरी जननी सब देखत रामहि धाई
 ज्यो दिनअन्त सुवर्द्धन हेरि हुंकारि कै धावहिं धेनुलवाई ॥ सानु-
 जराम मिले सव मातन जात नसो कहि प्रीतिमुहाई त्यों भग-
 वंत त्रिलोकतरामहिं दूरिभयो दुख आनंद छाई ॥
 दो० तव सीता सांसुन सकल जाइ नवायो शीश ॥
 नानु द्विभी कुशल मनभावती दीन्ही सवन अशीश ॥
 हरिगीतिका छन्द ॥ श्रीराम रूप अनूप नखशिख मातु सकल
 निहारहीं । लय हेमथार खवारिआरति वारवार उतारहीं ॥
 भूपण वारि साँदर वायु अचल ते करौं । भगवंत सानुज रमसीतहि

निरखि उर आनंदभर ॥ हरिपदवृन्द ॥ जमिवंत कपिराज विभीषण
 अंगदादि क्रपिवीरा । नील नलोदि वायुसुत सुन्दर धारुमनुजश-
 रीरा ॥ भरतसनेह शीलव्रतनेमै सांदर सकल सरोहें ॥ पुरजनरीति
 प्रीति रघुवरकी निरखि निरखि सुखलोहै ॥

दो० प्रभु आँसु तिनपायकौ गुरूपद त्रिषि शीशी ॥
 जानि राम प्रियलाय उर दीन्ह्यो मुनि आशीश ॥

सो० पुनि तिननायो शीश कौशल्योके चरणतल ॥
 दीन्ही हरपि अशीश जानि राम प्रिय भावती ॥
 गंगन सुमन सुर वृन्द ; वरपि हरपि जै जै करहिं ॥
 गवने गृह रघुनन्द त्रिभुवनपति शोभा सदन ॥
 कवित्त ॥ द्वारद्वारप्रति चारु कंचन कलशधारि वन्दन पतीक
 केलु सवहिन साजे है । वीथिनै सिंचाय शुचि सुन्दर सुगन्ध जाल
 गजमणि चौकल्यो सुमणि दीपराजे है ॥ साजे पुरलोगन सुभोति
 भोति मंगलांग वाजे बहु वाजन सुगर्जवाजि गाजे है । भाग्यवन्त
 सूत्रमाश्रि औधकी वखान कौन देखतै सुखविजासु सुरराजलाजेहैं ॥
 सत्रैया ॥ कंचनथार सवारि सुआरति अंगन अंग शृंगार शृंगारी ।
 गावित्त मंगल राग मुनोहर वृन्दन वृन्द चली मिलि नारी ॥ अरिति
 भंजन राघवकी शुभ आरतिकै धन भूषणवारी । त्यों भगवन्त वि-
 लोक्त रूप अनुप्र लोहै सब आनंदभारी ॥

दो० प्रथम केकयी के भवन गये राम सुखदेन ॥
 बहुविधि ताहि प्रबोधिकै पुनि आये निज ऐनजा ॥
 महामोद छायो अवधा आये रामसुजनि ।
 भाग्यवन्त श्रीरामेश करौ सुदित सब गाना ॥

इति श्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविद्युत्चित्तैभक्तिशिरोमणिप्रथमोत्तरकाण्डे
 श्रीरामचन्द्रायो
 गजमादि
 २ ॥

दो० श्रीरामलिपण श्रीजानकी भरते रात्रुहन साथ । श्री
 -पदमांगवन्त । वन्दनकरों धरि । पद । पंकज । मीथ ॥

श्रीशिलाप्रसूत । व्रशिष्ठ बुलाइकै । गुरुजन विप्रसमाजन ॥
 कह्यो राज्यपद रामको देहु । मुसाइति आज ।
 मुनिवीले । द्विजगण हरषि भली कह्यो मुनिराज ।
 अव । विलम्ब नहिं । कीजिये वेगिकरौ यह । राजि ॥

त्रोटक छन्द ॥ तव वोलि व्रशिष्ठ मुमन्ता लिये । सब सार्जहु
 साज निदेशी दिये ॥ पर्ये बहु धावन वोलि तवै । भयलित मंगल
 द्रव्य सबै ॥ जेहु ओर सजीवत भे नगरे । सिंचाय । सुगन्ध दिये डगरौ ॥
 रथ वाजि । गयन्द्र सजे सगरें । मुद्र ठौरन ठौरन पै बगरे ॥ बहु भौतिन
 वाजि । तिशानरहौ । छविपावत पारन शेषकहे ॥ नम देवन इन्दुभि
 जाल दिये । भरि फूलन कै जय जैति किये ॥ हरिपद छन्द ॥ प्रभु
 प्रभुसु तव पाय सेवकत प्रथम सखन अन्हवाये । सुग्रीवादि । साजि
 जट्टे छेड़ये । उतिहुं । आतन अन्हवाये । आपही पटभूषण पहिराये ॥
 विवराये पुनि जटा । आपने करि । अज्जन तन साजे । भूषण वसन
 मत्तीहर मञ्जुल निरखि काम बहु लाजे ॥ सासुन सकल जानकि
 हिं सादर मज्जन तुरत कराई । दिव्य वसन भूषण बहु । सुन्दर अंग
 अंग सजे बनाई ॥ राजति राम वास दिशि सीता छवि समुद्र सुख
 खानी । शोभा अमित देखि सब मातन जन्म सफला करि माती ॥
 दो० महादिक सब देवता । नारदादि मुनि वृन्द ॥
 चन्द्रि विमान आयि अवध देखन । हित सुखकन्द ॥
 प्रभुशोभा अद्भुत अमित । खलि हरि मुनिनाहा ॥
 स्तन सिंहासन दिव्य तव मांग्यो सहित उच्चाह ॥

कवित्त ॥ कोटि शशि सूर सों प्रकाशपुंज होत जासु जगमग
ज्योति मन मीननको जारहै । हेमहीरे आदि कल कलित ललित
चारु चित्रित विचित्र कौमदायक बहार है ॥ जात चकचौधि दृष्टि
हेरिये सुविधि कौन तेजि को समृद्धि मोहतम तोमहार है । भाग्य-
वन्त शेष शम्भु शारदा चकित देखि रामको सिंहासन कि सुखमा
अपारहै ॥ जटित विचित्र मणि माणिक्यवाहिरादि पन्नन प्रकाश
पुंज होत तमनीशनै ॥ मंजु मुक्त भालरै तिराजमान और चारिक-
मलाष्टादल चारु भ्राज मध्य आसनै ॥ अवनि अकाश लोकलो-
कने प्रकाश दिव्य प्रगटी सुद्युतिजाल प्रद भव्य दासनै । भाग्यवन्त
सुखमा समृद्धि सो चखान कौन भ्रमते विरश्चि बुद्धि राघव सिंहासनै ॥
दोष्टगतापर श्रीसीता सहित विप्रन श्रीशान्तरायन ॥ १३
॥ १४ ॥ रामचन्द्र वैटे हरपि मुनिवर आयसु पाय ॥ १५ ॥
॥ १६ ॥ प्रभु शोभा अद्भुत अमित लखि हरपे सुरवृन्द ॥ १७ ॥
॥ १८ ॥ हरपि सुमन डुंडुभि दिये जयो कृपाले सुखकन्द ॥ १९ ॥
॥ २० ॥ गङ्गमुनि वंशिष्ठ प्रथमै तिलक कीन्हो रघुवर माथ ॥ २१ ॥
॥ २२ ॥ मुनि सब विप्रन को दियो आयसु श्री मुनिनाथ ॥ २३ ॥
राज तिलक सुन्दर शुभ देखी । हरपे सब नरनारि विशेषी ॥
प्रमानन्द मगना सब माता । करहि आरती पुलकित गाता ॥
दिये दाना बहु दिजेन हँकारी । कहि न जाय उर आनंद भारी ॥
जयजय करहि कोलाहल होई । मन भावने पोये सब कोई ॥
वाजहि त्रिपुल निशान सुहाये । जहँ तहँ युवतिन भंगल गाये ॥
पढ़े वेद भूसुर । समुदाई ॥ मागध सूत वन्दि गुणगाई ॥
॥ कवित्त ॥ वेद मंत्र ब्राह्मण उचार जयकार नभ देवन अपार
वृष्टि सुक्त सुमनातकी । पोवन प्रताप यश कीरति कलाप

सागधःसवन्दि,सूतं गायकनगानकी ॥ नाग ज्ञान नगर,तिशान
 धुनि,धूमधमि,विरची,विचारि,वेद रचना,वेधातकी ॥ भाग्यवन्त
 विस्तृत्,प्रताप पुंज,आसठाम हेममै,सिंहासनै,विराजै,राम जानकी ॥
 सज्जितांग,भूपण,विचित्र पद,धौम धारि,गामिनी,द्विद,वाम दा-
 मिनी,समानकी ॥ दूब,दधि रोचना,कर्नकथार,भार भरि,आरती स-
 वारि,चली आरतीसि,गानकी ॥ आरती,उतारि,वारि,तन,धन
 प्राण,हेरि,सूखमा,समृद्धि,मार्ग दृग,चारु,पानकी ॥ भाग्यवन्त
 राजनके,राज रघुवंश,राज हेममै,सिंहासनाजु,राजै,राम,जानकी ॥
 सेवा,साज,साजि लिये सेवक,सखादि बंधु आस प्रास राजत,वि-
 चित्र,शोभाठानकी ॥ व्यजनादि चामर सुद्वत्र चारु,भरतादि धृत्य
 कृत्य गान,नृत्यदार,देवतानकी ॥ हेमहीर आदि वखशीश,गंध
 होत पाय देतहै अशीश आश पूर्ण यात्रकानकी ॥ भाग्यवन्त राज
 वंश शीशताज,महाराज हेममै,सिंहासनाजु,राजै,राम,जानकी ॥
 फर्श फेन,क्षीर,सों फटिक,भीतिकान,फोरि प्रगटी सुभास्य सम
 चन्द्र चन्द्रिकानकी ॥ ज्योति,दीप,वृक्षनकि,ऋक्षन,विमन्दुकार हार
 कृतकेतु मन,सूखमा वितानकी ॥ चौघड़े चगेरे चारु गेरुलय गंध
 पार्त्र,पान,प्रीकदान,दिव्य द्युति,माणिकानकी ॥ सोह साज राजसी
 समाज पुंज,भाग्यवन्त,हेममै,सिंहासनै,विराजै,राम जानकी ॥
 चौघड़े मयन्द,कर केशरी,चगेरे धारि,आरसी पिनसू,नील सज्जै
 सौज,पानकी ॥ द्विविदेत्रदान,दधिमुख,खासदान,साजि,गवलै
 गिलौरिकाग्रनल,प्रीकदानकी ॥ अंगदा,सि,चाप,खेकनार्यक,सुगर
 ढाल,तूण,जामवान,शक्ति,आगे,हनुमानकी ॥ भाग्यवन्त राजसी
 समाज साज पुंज आज,हेममै,सिंहासनाजु,राजै,राम जानकी ॥
 धारि धर्म धरिका,निकारि,भवभूरि,व्याधि,पूरि,प्राणराज शत्रुतुरि

तारि भ्राजते । चेलद्वै त्रिलोक दलि मेदिनी कदम्बभार पारकैस
 दिव्यभीति आश्रय समाजते ॥ क्रूरकर्म खोजिनासरोज धर्मरीजरोज
 पायभे प्रकाश साधु संज्जनालि गाजते । भाग्यवंत राजनके राज
 राजा रामचन्द्र जानकीस आजु भद्र आसनै विराजते ॥ मंडिताक्र
 जालसों प्रकाशपुंज हेम क्रीट क्षौम जरतांर दिव्य अम्बरांगु भ्राजि
 ते । मंजु मुकुमाल कल कारमुक धृत्य पाणि जग मगर्ज्योति मणि
 भूषण सुसाजते ॥ श्यामजलदाभ तन सुखमा संसृद्धि चारु हारि
 हेरि ऊर्पमान रतिकाम लाजते । भाग्यवंत राजनके राजराजा राम
 चन्द्र जानकीस आजु भद्र आसनै विराजते ॥ भानुसों प्रताप जग
 जालभो उदित चारु जैतिजै निशान दिव्य लोक लोक वाजते ।
 पापताप यामिनी विनाशपाय कामक्रोध चौर वृन्द ओर चारित्रास
 भूष भाजते ॥ साजि भेंट राजसी नरेश देश देश आनि धारि अग्र
 अस्तुती समग्र भूष साजते । भाग्यवंत भूपवंश शीशताज रामचन्द्र
 जानकीस आजु भद्र आसनै विराजते ॥ पंथ सतसाफभे अपन्यवन्द
 धाम धाम खुलिगे कपाट कुलिसज्जित सुसाजते । नीतिकों प्रचार
 जग रीतिप्रीति सोहियत जोहियत जाहिमन मोद पुंज भ्राजते ॥
 पूर्ण सौजभावती समस्त नेकु इच्छयान दूरि दुष्कृताघहंत भीतिभक्त
 राजते । भाग्यवंत भानुसों उदितराजा रामचन्द्र जानकीस आजु
 भद्र आसनै विराजते ॥ व्योमतन श्याम दिव्य भूषण नक्षत्र जाल
 चन्द्रमास्त्र मालशोभ दामिनीकि साजते ॥ कौमुदी सुकीर्ति मंजु
 भ्राजती भुवनभूरि खंवतो सुधासो सुखसंकुल सुराजते ॥ आनंदाब्धि
 वादिबल विदिशि दिशान फैलि भव्य मूल मूर्त्तमा सरतिमार लाज
 ते । भाग्यवंत राजनके राज राजा रामचन्द्र जानकीस आजु भद्र
 आसनै विराजते ॥ स्वच्छसार शोभ मै प्रकाशमान दीप दीप जा

गती सुकीर्तिजाल वीच वेद गाथके । ज्योतिजग ज्योतिथौ ज्वलित
 आदिज्योति ज्योतिष्योति पुंज उपमान सभाएक साथके ॥ अक्ष-
 तादि चन्दन सरोचना कलित त्रारु सूखमा बलित पाणि कंजमुनि
 नाथके । भाग्यवन्त शिव मन मैनको हसनहार राजसी तिलक माथ
 सोहै रघुनाथके ॥ भ्राजपुंज राजसी समाज साजा भाग्यवन्त सूखमा
 अदभपीर शेष सो न पावते । शोकते विशोक लोक लोकनै प्रहर्ष
 दात्रि चात्रि कालिदास कीर्ति स्वाति स्वामि गावते ॥ विप्र साधु
 सज्जनालि देवता मुनीद्र वेद आनंदाढ्य जाल भावलोकि प्रेम
 भावते । कारुणिक रामचन्द्र जानकीस भद्रधाम धामिदा समग्र
 अग्र अस्तुती सुनावते ॥ वशिष्ठ स्तुति कवित्त ॥ वेद तत्त्वसारमे
 समर्थ हंस वंशराज उपमान भ्राजसमा उपमावगाहिये ॥ विप्रसाधु
 सज्जनार्थ आनि द्वै नृपति खील भंजिभर भूवजाल यश कयो
 सराहिये ॥ नाम गुणधाम बल पार है न श्रुति गाथ हाथके सु खोह
 भक्ति भावना निवाहिये । भाग्यवन्त भानुवंश शीशुताज रामचन्द्र
 रावरी सु राजस्यो अचलु निच आहिये ॥ सबैयाती साधु महीश्वर
 सज्जन हेत कृपाकरि है अत्रवेगके वारे । पालन देवनके खिल घा-
 लन धर्म प्रचारि यश विस्तारे ॥ आगुर्क वेद पुराण कहै सब अ-
 द्भुत कर्म है राम तुम्हारे । जैति सुजै भगवन्त सदा नृपतंदन द्विख-
 निकंदन हारे ॥ ब्रह्मा स्तुति कवित्त ॥ पावतो नमर्म शेष शारदा
 निगर्म शम्भु अद्भुतवतार कर्म रावरे सकल है । भक्त भूमि भूषण
 मरुत काज धारि तनु कृत्यकार आतुपुंज खीलया अमल है ॥ भा-
 ग्यवन्त पालिप्रद भव्यदास वृन्दनै सु घालि द्वैष्ट दुष्टकृतोप दालि-
 पुंज दुल है । भानुवंश भूषणवतार पूर्णनाथ आपु भ्राजते प्रताक
 जग पशके अचल है ॥ ॥ राम चरित्र अपार सबै तेव शंकर

भीजै । ॥ त्रिपया वंश नाथ सदा जन्तु जानि स्वभक्ति कृपा करि
 दीजै ॥ सूर्यस्तुति हरिगीतिका चंद्र ॥ जै राम जत्र ते वंश हमरे
 जन्म करि करुणा ज्योति विस्तार पावन सुयश ॥ तिहुँ पुर तो पं वद
 तव ते भयो ॥ भगवन्त करि अवनाथ दाया ॥ भक्ति आप्रति दीजियो
 त्रिरंजीव जोरी चारु संतन प्रेमरस हंम भीजियो ॥ अग्निस्तुति स
 वैया ॥ आजत राजा तिहुँ पुरमें प्रधुराजा समाज स आज तिहारो ।
 संतं तं संतन देवन के हितकारक वेदापुराणि मुकारो ॥ खडनके खल
 इन्दन भूमि विमरोडनके दुखदन्दनाटारो ॥ जै जय जै भगवन्ता सदा
 रघुवंश विभूषण राम उदारो ॥ मरुतस्तुति किरीट चंद्र ॥ भूप शि
 रोमणि चक्रवती ॥ अवधेन्द्र कुमार प्रशंसन लायक ॥ न्ययपक ब्रह्म
 चराचर मै अवतार धर्यो महि भारी नशायक ॥ गावत है यश पावन
 वेद अदभ सदा सुर संत सहायक ॥ जै जय जै भगवन्ता सदै प्रण
 तारति ॥ भंजन श्रीरघुनायक ॥ भूमिस्तुति सवैया ॥ खलु कर्मना कु
 त्सित पातक भार जवै जव भोपर आनि पर्यो ॥ अवतार अनूप
 अनेक न धारित वै तव दुष्कृत नाथ हस्यो ॥ यश विस्तृत पावन
 लोक तिहुँ जन्म रज्जन भंजन शोक करयो ॥ भगवन्ता प्रशंस करौ प्रभु
 क्यो तुम सो प्रभु और न जन्म धर्यो ॥ वेदस्तुति सवैया ॥ रघुना
 थक नायक देवनके तहि पावन योगिनि प्रियकरे ॥ प्रचिहारि अनेक
 विरक्त गये नित ध्यावत शंकर ध्यानधरे ॥ स्वइ राघवं पाणिगहे कपि
 भालु स्वइ छित बोलत भारी भरे ॥ भगवन्ता सुजै जय नाथ त्वया
 चरिताहुत जाल जिते वगरे ॥ इन्द्रो टको इन्द्रता ॥ जय रामकृपा सुख
 धाम हरे ॥ सबरूप अनूप न भूप परे ॥ मुजदरुडा प्रवर ड प्रवारिहने ।
 दशक न्भर आदि सदृष्ट घने ॥ अवतार नृधारि सुभार हस्यो ॥ यशमा
 वन लोक तिहुँ वगस्यो ॥ सह शक्ति

सुसेवक जानि क्षमो ॥ राजशकर इस्तर कौनतै ॥ नरनागे सुरासुर
जौनहरे ॥ करुणाकरि आपु लखे जिनहीं । भवसिन्धु अराधतै
तिनहीं ॥ भवे दुःखनिफन्दना नामजदा । कुरुत्रातुमधी स्वइरोम
सदा ॥ सुररत्ने मंजन भारमही ॥ स्थुनाथ अनथिन नाथसही ॥

। दो० अक्षरकर्मल । अनपावनी । भक्तिदेही । जगदीश । श्री
नाथ ॥ भाग्यवन्त । करजोरिकौ ॥ नोयनवावों । शीश । श्री
नोत्तारदस्तुति । जगस्वरूपिको । छन्द ॥ निमामि रामनागर । कृपा
सुशील सागर ॥ भवाधि धोरतीरण ॥ त्रिताप प्रापहारण ॥ समस्त
विश्वपालन ॥ सुरासिन्दु घालन ॥ स्वभक्ति चारु दीजिये । कृपा
कटाक्ष कीजिये ॥ शारदस्तुति छप्यै । जैजै श्रीरघुवीरवीर त्रि-
भुवनहितकारी । राजवंश अत्रतंस वरित अद्भुत भयहारी । सेवित
सुलभ उदार भक्तवत्सल गुणरसी । पूरणवर्हा समान सिद्धा अग
जगमो वासी ॥ निज भक्तहेता धरि विविधतनु करत कठिन संकट
शमन । धरा गायगायनर भवतरते । जयजै श्रीसीतारमन ॥ श्री

दो० । यहिविधि सुररत्नमुनि सेवता प्रभुसन । अस्तुतिकीना । श्री
रत्नप्रभु भाग्यवन्त । अनपावनी । भक्तिमोगिल बरुलीना ॥ श्री
श्री श्रीमद्वेद्यासिंह उमोत्मज भगवन्त । सिंहविरचिते साहित्ये रोमणि प्रभुये उत्तरकाण्डे
श्री सीता रामचन्द्रराज्याभिषेकसुरसुनिश्रादिस्तुतिवर्णनोत्तमद्वितीयोऽध्यायः ३ ॥
॥ सवैया ॥ सुन्दर श्यामशरीर सुहावन पीवनपुंज लज्जानमैना ।
चारु सुचर विभूषण मंजुल अंगन अंग । सजै छविपैना । सिजत
राजसिंहासनपै रघुनायक दीयक दीसन छैना । विन्दतहै करस-
म्युटेकै भगवन्त ससीयो । श्रीराजिवनेला । गेरजत । रामसिंहासनपै
सुखिमा भगवन्त न सो कहिजाती । गानाँदमंगल छोररह्यो पुर
वाजि निशान रहे बहुभोती । गानाँकनटी बहु नावकै गुण । किंकर

गावतुहो दिनराती प्रत्यात्रिकप्राय सुदानः अशीशत जातनही। उर
 मोद समातुनी। विन्ती कि प्रान्ति विन्ती ॥ विन्ती
 तद्रोश्रयहि आनन्दसमेत सत्रागये सार्सा पटवीति ॥ विन्ती
 ॥ जितव स्थुपति निज सखनसने तोले वचनसंप्रीति ॥ ॥ विन्ती
 सवैया ॥ हे नल नील सुकृष्णपते युवराज विभीषण वानरनाहू।
 काजकिहो तुम मोखंडो क्यहि भांति करौ भगवन्त सराहू ॥ भारत
 आदि सुभ्रातन ते बहु भीतम सोहिं सवे तुम आहू ॥ संतत मोहिं
 सप्रेमा भङ्ग्यो सहक्षेम सवै एवं मंदिरजाहूती ॥ ॥ विन्ती
 दोष सुनिर्गम सुवचनी सनेह रस भयमे मगर्न कपिचन्द ॥ विन्ती
 ॥ विन्ती निरखि यकटक सकल रामचन्द मुखचन्द ॥ विन्ती
 देखि प्रीतिप्रति राम कृपाला ॥ भूषण वसन विचित्र विशाला ॥
 भांति भांति चहु मोल भंगये ॥ निजकर भरत सवन पहिराये ॥
 शये सुदित मन सुख लसमई ॥ तिवरघुपति लिय सर्वत्र बुलाई ॥
 अति ॥ सादर सिसीप विवैठारी ॥ मुनि प्रति राम वचन उचारी ॥
 दिग्पाल छंद ॥ एताव शैलवासी निल नील बंधु दोऊ ॥ बुधि-
 वन्तवीर वांके मुनु काज क्रीति जोऊ ॥ इन सिंधु सेतु वांधे दशकंठ
 शीश फारे ॥ संग्राम शत्रुभारी बहु खोजि खोजि मारे ॥ मुनि राज
 काज मेरे इन देह गेह त्यागे ॥ भरतादि बंधु हूते बहु मोहिं प्रिय
 लागे ॥ ये बालिबंधु जानी सुग्रीव नाम प्राको ॥ किष्किंधा रजधा-
 नी कपिशज वीर वांको ॥ बहु यंत्र मंत्र जानै संग सेन भूखिवांकी ॥
 कखाय शोध सीते रण युद्ध कीन हांकी ॥ मुनिराज काज मेरे इन
 देह गेह त्यागे ॥ भरतादि बंधु हूते बहु मोहिं प्रिय लागे ॥ ये बालि
 पुत्र जानी है अंगद नाम याको ॥ यशवन्त बुद्धिराशी बलवन्त वीर
 वांको ॥ दशकंठ सभाजाई पगरोपिमान भंज्यो ॥ दहिलकंभवन

दीन्हेरणशत्रुभूरिगंज्यो ॥ मुनि राजकाज मेरे इन देह गेह
 त्यागे ॥ भरतादिबन्धुहू ते बहु मोहिं प्रिय लागे ॥ ये ऋक्षराज शूरो
 जामवन्त नाम जीनी ॥ दलपुंज संग याके बुधिवन्त वीरमांती ॥
 रिपुलात घात पाखोरणभूमि छोरि लीन्हें ॥ घननाद मान तूख्यो
 बहु दुष्ट घात कीन्हें ॥ मुनि राजकाज मेरे इन देह गेह त्यागे ॥
 भरतादिबन्धुहू ते बहु मोहिं प्रिय लागे ॥ ये राक्षस कुल माहीं द
 शकण्ठबन्धुशूरो ॥ हे विभीषण नाम याको यशवन्त भक्तूरु ॥
 तजि बन्धु आनि मोहिं मिलिकाज भूरि कीन्हे ॥ दर्शाय मीच्छ रिपु
 की कहि वैद्य नाम दीन्हें ॥ मुनि राजकाज मेरे इन देह गेह त्या
 गे ॥ भरतादिबन्धुहू ते बहु मोहिं प्रिय लागे ॥ ये प्रवन्पुत्र नामी
 हनुमान नाम याको ॥ मिलवाय मोहिं दीन्हें कपिराज वीरवांको ॥
 मुख मेलि मुद्रिका ले तरि सिंधुपार जाई ॥ पुरे जारि मारि अश्व
 सुधि सीधबेगिलाई ॥ सोमित्र दुःख मेढ्यो गिरिद्रोण रेनि लायो ॥
 करि युद्ध कुद्ध भारी ॥ रिपु सैन मारि दायो ॥ मुनिराज काज मेरे
 इन देह गेह त्यागे ॥ भरतादिबन्धुहू ते बहु मोहिं प्रिय लागे ॥

दो० कपिसमाजके गुण अमितवराणि पार नहिहोहि ॥

प्राण सरिस मुनिराज ये संततहे प्रिय मोहि ॥

मुनि प्रभुवचन हरपि मुनि नाहू ॥ पुनि उठिमिले मुदित सबकाहू ॥

तव रघुपति सवहिन सनमांती ॥ त्रिदाकीन कहिकहि मृदुवांती ॥

उर धरि राम रूप प्रभुताई ॥ चले सकल वरण शिरनाई ॥

तव अंगद प्रभु पद शिर नायो ॥ जोरि पाणि मृदुवचन सुनार्यो ॥

कुंडलिया ॥ कहा हमारो काजहै प्रभु तजि कहियो गेह ॥ तुम

सर्वज्ञ कृपायतन जानहु शील सनेह ॥ जानहु शीलसनेह मरणे

अवसर मोहिवाली ॥ करुणासिधु कृपालु गयो कोंछे तवघाली ॥

धालि सकल दुख द्रोप-कियो प्रतिपाला महा है। तुम तजि दीन द-
 याल काज समग ह कहा है ॥ रोखिय शरण कृपायतन अहिं जनि
 त्यागौ नाथ ॥ दीनबंध दाय्या सदन विनै करौ धरि माथ ॥ विनै करौ
 धरि माथा टहल गृहकी लघु करिहौ ॥ प्रभु पद पंकज देखि अगुम
 वारिधि भव तरिहौ ॥ हौं बालक अज्ञान विनय कैसे प्रभु भाखिय ।
 भाग्यवन्त जनु जानि शरण पंकज पद रोखिय ॥ कीन्ह्यो अंगद
 बहु विनै वार वार शिरनाथ । देखि प्रीति रघुवंशमणि लीन्ह्यो हृदय
 लुगोय ॥ लीन्ह्यो हृदय लरोय माल जनि ज उर पहिरायो । सजल
 नैत मृदुवैत राम बहु विधि समुभायो ॥ समुभायहु बहु भक्ति जल्यो
 चरण नाहितु दीन्ह्यो ॥ वार वार उर लीया विदा रघुपति कपिकीन्ह्यो ॥
 दोष भरत लपणे रिपुहंन अनुज सहित संग हनुमान ना क
 ली ॥ सो सकल कपिन कहै पठय फिरि आये जहै भगवान ॥ गो
 ॥ अक तत्र रघुबीर निपाद कहै दीन्ह्यो ॥ बोलि निदेशी ॥ वि
 ॥ राजाहु सखागृह आपनो आवत रह्यो ॥ हमेश ॥ ल
 ॥ सुनि प्रभु चेत सप्रेम गृह बहु विधि वितय सुनाय ॥ ह
 चरण कमल उर राखिकै जल्यो भवत शिरनाथो ॥ ०
 प्रभु चरित्र सुंदर सुखद देखि देखि पुर लोग ॥
 ॥ कहहि धन्य हम भागवत ॥ जो यह भयो सयोग ॥ ॥
 ॥ इति श्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मज भगवन्तासहविरचिते भक्तिशिरोमण्यन्ते
 ॥ उत्तरकाण्डे श्रीरामचन्द्रवाशिष्ठप्रतिकपिसमाजप्रशस्तोत्तुप्रोवादे ॥
 ॥ ॥ निज भवनगमन वषणै ना नाम वृत्तायु ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ दोष बंदो ज श्री सीता ॥ रमणा ॥ शमना ॥ पाप संताप ॥ ॥
 ॥ ॥ भागवन्त तिहु लोक ॥ ज्ञाको विदित प्रताप ॥ ॥
 यहि विधि नाम सकल सुखदाता ॥ राजहि सभा सहित लघु भार्ता ॥
 श्यामलगात सुभग सब अज्ञा ॥ लांजि हिंछ विलखिको टिअनडा ॥

प्रीतवसनं न्युति तद्धित लंजावनं भूषणविविध सुदेश सुहावन ॥
 चरणकमल शुभ चिह्न सुहाये ॥ मुनिमन भृंग रहत जहै छाये ॥
 कटिकिंकिणी मनोहर सोहै ॥ मुनिख मधुर मदन मन मोहै ॥
 नाभी रुचिरा उदर अतिभ्राजा ॥ उर आसत मणिमाला विराजा ॥
 केहरि कंध दिंडो मुज मीरीगी अङ्गदादि भूषण बहुधारी ॥
 कर धनुवाण सुभगदर शीघ्र ॥ अतिन चिन्द असल छवि सवि ॥
 दो० वारिज लोचन गोल मुठि सोहै अमल कपोल ॥
 आभी चारु चिह्न क रदा अधर शुचि हस्त हृदय मृदुबोल ॥ चिह्न
 कानन कुंडल सोहहि लोला ॥ नीक बुलाक सुखधि अनमोला ॥
 चितवेनि चारुचितै मन हारी ॥ भृकुटी बंके अलक छविकारी ॥
 मृग मद तिलक सोह वै भाला ॥ हिमक्रीट शिर परम विशाला ॥
 नख शिखर रूप अनूप विराजै ॥ देखत काम कोटि शतलाजै ॥
 निरखहिं छवि सादर सब भाई ॥ होहि मुदित जीवन फलपाई ॥
 दो० राम रूप शोभा अमिता वरणि सकै नहि शेखान ॥
 ॥ ॥ ॥ भाग्यवंत लघु बुद्धि मै करौ कवनविधि लिखी ॥
 ॥ ॥ सवैया ॥ रामप्रताप उदै रवि सों अघओध मेहोतम पुंजनशाने ॥
 सज्जन संत सरोज खिले खल लम्पट कैरवसों मुरझाने ॥ धर्म
 लिंद उड़े सब ठाय अधर्म उलूका समाजलुकाने ॥ सकनकोक अ
 नंदलह्यो भगवंत विशोके बसे सुरथाने ॥ राम भिकरी जा सुखी सब
 लोक मिटे दुखदारिद दोष त्रितापा ॥ पूरिह्यो जग धर्ममई बचमा
 नसकर्म नहीं कहें पापा ॥ वैर निहाय वैर मृग कानन तिर्मायसाधु
 कैं तपजापा ॥ काहुहिं लिश कलेश नहीं भगवंत उदै रवि रामप्र
 तापा ॥ कामदरूप भई प्रसुधा सुखसपति ब्यारह्यो सब ठाई ॥ द्वा
 रणंदर हुकाल गयो तजि बाल कुत्राल सुचाल चलाई ॥

।अमी,सरितान सुवे साणि,आकरहैं गिरि संकुल जाई ।कोशलराज
 ।समाज विभौ भगवंत सकै नी अहीशहू गाई ॥
 ॥ दो० ॥ रामराज सुख सम्पदा रह्यो सकल जग द्वीपी ॥
 ॥ चारिहुवर्ण सुधर्म रत रहे चारामोयश जगार्य ॥
 ॥ आनंदमंगल अवधपुर दिनोदिन प्रति अधिकार्य ॥
 ॥ मुदित सकल निज निज भवन बहुविधि रचेवनाय ॥
 कुंडलिया ॥ धवलधाम अभिराम अति कंचनखंभ विशाल ।
 चामीकर मै कलशाशुभ धरे दीपमणि जाल ॥ धरे दीपमणिजाल
 देहरी, विदुम सोहै । रचना अमित अनूप देखि मुनिजन मनमोहै ॥
 मोहै विधि चटप्रट कुलिश तोरणवर सुखमा लखति । सुरपति सी
 दन नापटतरति धवलधामे अभिराम अति ॥ जातरूपे मौरचित
 अति सोहत पुरवाजार । धनिक वाणिक वैठे विविध लैलै वस्तु अप
 पार ॥ लैलै वस्तु अपरिपार गनिको त्यहि पावै । देखित विभुजिन
 केर धनदमनमाहिं लजावै ॥ जावै जो विनुवस्तु तहां लहै वस्तु भा
 वत सुमति । किमि बिजार सुखमा कहै जातरूप मौरचित अति ॥
 सोहत पुर चहुँ दिशि अमित सुभग वाटिकावाग । सदा सुमनफल
 सहित दुर्म गुंजत मधुप सराग ॥ गुंजत मधुप सराग उंडत लैलै
 मकरंदा । करत सुख खगवृन्द जहां तहै सहित अनंदा ॥ सहित
 अनंद वसंत नित रहत जहां निशिदिन रमित । कहिन सकै भग
 वन्त छवि सोहत पुर चहुँ दिशि अमिति ॥ पुर उत्तर सरयूसरित सो
 हत पावनधार ॥ लठत तरंगे विविधविधि भवै अवल अंपार
 भवै अवल अंपार घाट सुन्दर सर्वविधि ॥ मणिमय शुभ सोपान पर्व
 कहुँ लोखियन रोधि ॥ रोधि पानिघट सुभग बहु करत जहां मज्ज
 वनित । देवालय रंजित तटनि पुर उत्तर सरयूसरित ॥ जावै

दरशनके किहे पाप ताप भिटिजाय । तेहि सरयूवरसरित की को
कहै महिमागाय ॥ को कहै महिमागाय प्रेम युत मज्जत प्राणी ।
रामधाम पथ पाव लहत जो कोउ मुनिज्ञानी ॥ ज्ञानी मुनिजन वृन्द
वासकीन्हे दिगताके । पियै सदा शुचिनीर नभै सन्तत शिरजाके ॥

दो० जहँतहँ तुलसीवृन्द बहु लाये सकल मुनीश ।

कहिनसकै भगवन्त सो सुखमा गणपअहीश ॥

कवित्त ॥ ठौर ठौर सोहन तड़ांग दिव्य वारि मंजु पूरित वि-
काश पद्म रंगरंग हैरहे । आसपास चंचरीक भीरभूरि वृन्दवृन्द भूमि
धूमि वासनै सुगंजिगंजि लैरहे ॥ धारि धारि मोदही मराल भौति
भौतिनै सुकूजि कूजि पुञ्जपुञ्ज शोर घोरकैरहे । काकिला चकोर
कीर सारिका मयूर चक्र वाटिकान वागैमे कलोलनै मचैरहे ॥

दो० पुरशोभा अद्भुत अमित क्यहि विधिकहौ बखानि ।

परब्रह्म श्रीरामजी भये भूप जहँ आनि ॥

पुर नर नारि सप्रेम सब करहि रामगुण गान ।

लहहि परम आनंद निरखि रघुकुल पकजमान ॥

छप्पै ॥ सेवहि सादर बन्धु सकल रामहि दिन राती । राखे रुख
नितरहहि यथा चातक दिशि स्वाती ॥ समचन्द्र बहु भौति करहि
भ्रातनपर प्रीती । सिखवहिं तिनाहि सप्रेम सदा सुन्दरविधि नीती ॥
प्रभु कहहिं कथा इतिहास बहु सुनहि सकल मनुलायके । ब्रह्मादि
देव सन्तत सकल नावहि पद शिरआयके ॥ विश्वामित्र वशिष्ठ
आदि यात्रत मुनि गुरुजन । जुरहि सभासद आइ सहित सवमंत्री
पुरजन ॥ रामरूप अविदेखि सकल जीवन फलपावै । शासनलै
सब लोगसहित मुद भवन सिधायै ॥ नित नारदादि मुनिवरनिकर

आय आय पायन नमत । लखि भाग्यवन्त नखशिख सुखवि बहु
प्रकार अस्तुतिकरत ॥

दो० बहुप्रकार अस्तुति करहिं नावहिं पदरज माथ ।
कमलनेन श्रीराम छवि लखि सबहोहिं सनाथ ॥
सानुकूल सबपर सदा करहिं कृपा श्रीराम ।
सेवहि पद भगवन्त सब सहित प्रेम वसुयाम ॥
रामराज वैभव अमित को कहि पावै पार ।
निजसुखहित भगवन्त कह्यो सुमति अनुसार ।

इति श्रीमद्दयोध्यासिंहचर्मात्मजभगवन्तसिंहधिरचिनेभक्तिशिरोमणिग्रन्थे उत्तरकांडे
श्रीरामराज्योत्सववर्णनोनामचतुर्थोऽध्याय ४ ॥

दो० बन्दौ श्रीरघुवर चरण भवनिधि तारक पोत ।
भाग्यवंत सुमिरत जिन्हें उदय ज्ञानरवि होत ॥
द्वैसुत सुन्दर जानकी जाये सब गुण धाम ।
सूरवीर विजयी समर लवकुश पावन नाम ॥
पुष्कल तक्षक भरतके भये पुत्र युग आनि ।
नित्रकेनु अद्भुत उभय लक्ष्मण के सुत जानि ॥
सुभज शत्रुघाती उभै रिपुसूदन सुत पाय ।
सब गुणधाम अनूपछवि कहौ कवन विधिगाय ॥
आदि अंत जाके नही पावत वेद न पार ।
नरतनु धरि भगवन्त सो कृत शुभचरित अपार ॥
यक दिन एक श्वान मगमाही । वैठो रहै मुदित डर नाही ॥
विन अपरार्थ विप्र यक आई । माखो चरण श्वान दुख पाई ॥
फिरियादी प्रभु पहुँ स्वड आयो । तुरत राम दिज बोलि पठायो ॥
कह्यो श्वान तें तव सुरनाहा । याको दंड देउं कहु काहा ॥

कह्यो श्वान याको रघुआई । यती बनाइ गयंद चढाई ॥
 पुर फिराय चहुँ दिशि ते लीजै । शिव मंदिर अधिकारी कीजै ॥
 सुनि ऐसे कीन्ह्यो जग त्राता । कह्यो श्वान ते पुनि प्रभुवाता ॥
 यामें कौन दंड यहि भयऊ । तव शिरनाय कहत सो भयऊ ॥
 पूरुव विप्र जन्म में धारा । धान्य गोसाईं कै यकवारा ॥
 खायउं भयउं श्वान सो आई । जन्म प्रयंत स्पई यह खाई ॥
 है है कौन दशा यहि केरी । सुनि सब मुदित भये तेहि बेरी ॥
 दो० एक उलूक कर गृद्ध एक लीन्ह्यो भवन छड़ाय ।

भगरत दोऊ रामपहँ फिरियादी भे आय ॥

पूछयो प्रभु काको यह गेहा । कह्यो गृद्ध गृह मेरो येहा ॥
 कह उलूक प्रभु भवन हमारा । मूठ कहत यह गृद्ध लवारा ॥
 तव प्रभु पूछयो सचिवन पाही । कहौ भवन काको यह आही ॥
 सवहिन भवन उलूक बतायो । तव प्रभु ताको तुरत देवायो ॥
 पुनि गृद्धहि पूछयो जगत्राता । कोतैं अहसि सत्य कहु वाता ॥
 जो मम राज्य माहि निखाधा । कीन्ह्येसि दंडयोग अपराधा ॥
 बोला गृद्ध सुनहु जगदीशा । पूर्व जन्मकर मैं अवनीशा ॥
 ऋषयशाप यह तनु में धारा । अब तव दरश भयउ उद्धारा ॥

दो० एक विप्रकर सुत मर्यो विनु अवसर दुख दीन ।

आय कह्यो सो रामसों आरत वचन अधीन ॥

हे प्रभु राज्य आपुके माहीं । होनअनीति चहियअसिनाही ॥
 विनु अवसर अकालमृतु घेरो । मर्यो कवन कारण सुतमेरो ॥
 सुनि पूंछेउ प्रभु मुनिनविचारी । कह सुनि नारद सुनहु खरारी ॥
 शूद्र एक तप करै अपारा । तेहि अघ मर्यो सु विप्रकुमारा ॥
 उमनि विमान चढिकैं रघुआई । तुरतहि जात भये तेहि ठाई ॥

साधवविलास =)

साधवप्रसाद तेवारी जी संग्रहीत इस में नायकारोद के कवि-
वर्णित है ॥

कृष्णप्रिया ॥=)

भंगलीप्रसाद विरचित ब्रजविलास की तरहपर श्रीकृष्णजी
का जन्मसे वैकुण्ठगमन पर्यंत चरित्र है यह काव्यालंकार युक्त बहु-
तही सुन्दर पुस्तक है ॥

रामसुधा -)

जिसको ब्रजचन्द्रजी ने महाराजाधिराज कार्शनरेश की
आज्ञानुसार अनेक रागो व कवित्तो से श्रीरामचन्द्रजी का गुणा-
लुवाद गाया है ॥

कविप्रिया सटीक ॥-)

टीला हरिचरणदास कवि कृत-जिस में नृपवंश व कविवंश
वर्णन, कवित्तद्रूपण, कवि व्यवस्था, गणगण फलाभाव सामा-
न्यालंकार, नखशिख, नायक नायका भेद और चित्रालंकारादि
वर्णित हैं ॥

इयामकेलि -)

लाला गोविन्दसहाय वगयस्थ भदनागर सिकन्दरावादी कृत-
इसमें श्रीकृष्ण व राधाजी के चरित्र और तीलाओ का वर्णन है ॥

कुंडलिया गिरिधरदास मूल ॥॥

इसमें गिरिधरदासजीने सामयिक वार्त्ता, चैतानर्ना कुण्डलि-
वर्णन की है ॥

